मैं विश्वास करता हूँ
(I Believe)

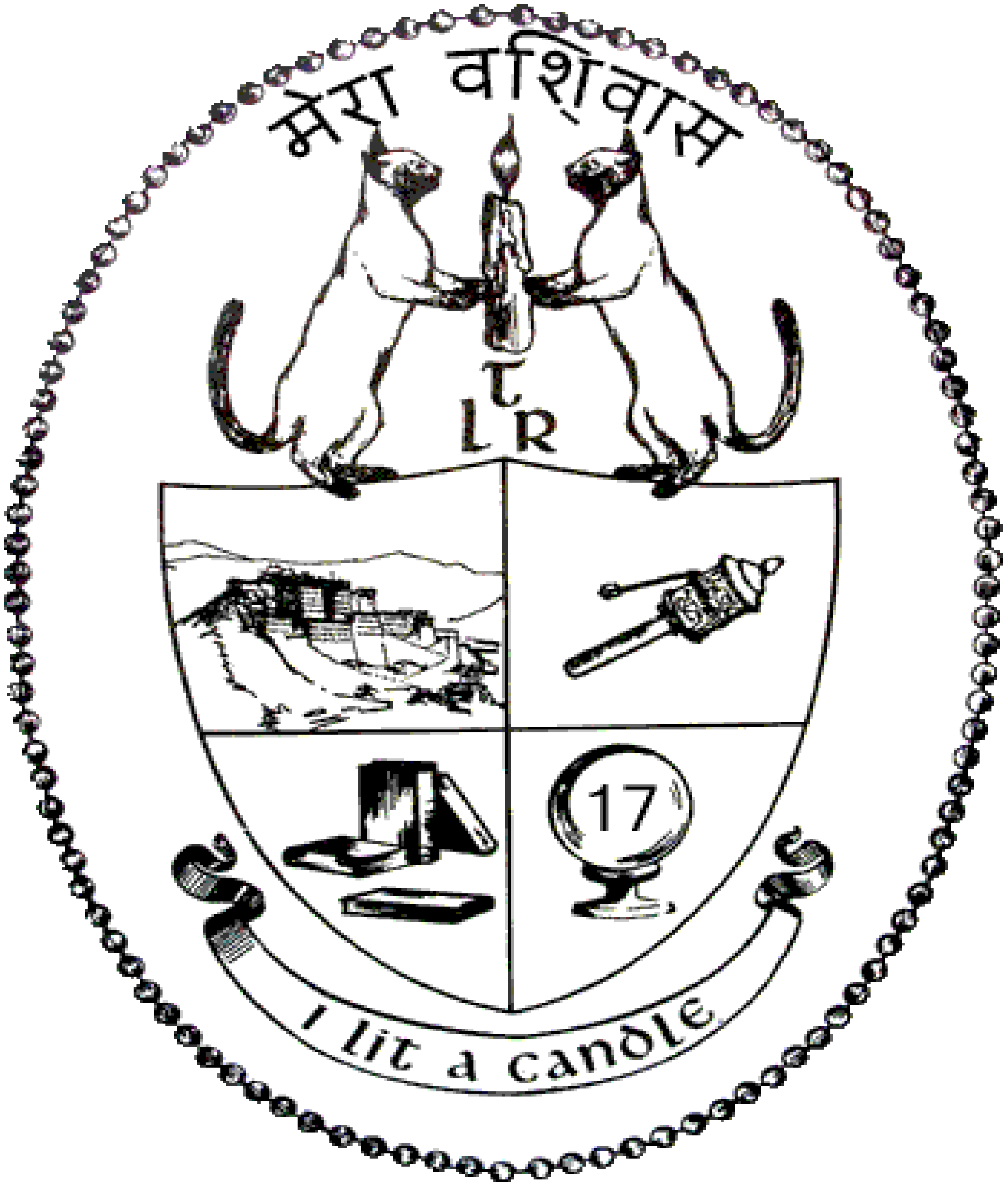

(I Lit a candle)
मैंने दीप जलाया

मैं विश्वास करता हूँ
(I Believe)

मूल लेखक
टी. लोबसांग रम्पा

हिन्दी रूपान्तरण कर्ता
डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता

शोधकार्यों के हितार्थ

निःशुल्क वितरण के लिये

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्राप्ति स्थल : www.lobsangrampa.org
www.bookstranscriptedinhindi.yolasite.com
email : tuesday@lobsangrampa.org
drguptavp@gmail.com

विषय सूची

अनुवादक का निवेदन	:	i
अध्याय एक	:	1
अध्याय दो	:	10
अध्याय तीन	:	20
अध्याय चार	:	31
अध्याय पॉच	:	43
अध्याय छैः	:	56
अध्याय सात	:	69
अध्याय आठ	:	83
अध्याय नौ	:	94
अध्याय दस	:	105
अध्याय ग्यारह	:	116

अनुवादक का निवेदन

लोबसांग रम्पा की सत्रहवीं पुस्तक, " I Believe" का हिन्दी अनुवाद, ''मैं विश्वास करता हूँ'' प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। ये पुस्तक, जन्म के पहले जीवन (life before birth), पृथ्वी पर जीवन (life on earth), और पृथ्वी से गुजरने (passing from earth) और उसके परे के जीवन (life beyonds) में वापस लौटने के बारे में बताती है। माननीय रम्पा द्वारा, इस पुस्तक में, भिन्न भिन्न पात्रों एवं कथानकों के माध्यम से, विभिन्न विषयों, जैसे आकाशीय अभिलेख (Akashic records), सूक्ष्मशरीरी यात्रा (astral travel), स्वर्ग के क्षेत्र (The Heavenly fields), मानवीय प्रभामंडल (human aura), आत्महत्या (succide), नारीमुक्ति (women's libration movement), पुजारियों की कूटरचना और पाखंड के द्वारा भोलेभाले नागरिकों का शोषण आदि पर चिंतन किया गया है। विशेषकर आत्महत्या को घोर अपराध बताते हुए, मृत्यु के बाद जीवन, पुनर्जन्म, आदि पर सविस्तार लिखा गया है। अध्याय आठ में, बाबा घड़ी (Grandfather Clock) और नातिन घड़ी (Grand daughter Clock) के वार्तालाप के रूपक से युगों के कालचक्र (time cycle of Yugas) को समझाया गया है। अंत में, यंत्रवत्, सहानुभूतिहीन, चिकित्सा जगत की दुर्व्यवस्थाओं, आयकर और मीडिया के अनावश्यक हस्तक्षेप पर अपना अनुभव साझा किया है।

यहॉ रम्पा ने मृत्यु के बाद, आत्मा के निम्न सूक्ष्मलोक में जाने की बात कही है, डाक्टर न्यूटन, जो प्रख्यात हिप्नोटिस्ट हैं, ने भी हजारों व्यक्तियों को गहरी सम्मोहन निद्रा में ले जाकर, उनके कई पिछले जन्मों और दो जन्मों के बीच, अंतराल में आत्मा की स्थिति का अध्ययन किया है। अपनी पुस्तकों, 'Destiny of Souls' तथा 'Journey of Souls', में प्रमुख प्रकरणों और उनसे प्राप्त निष्कर्षों का सविस्तार वर्णन किया है। उन्होंने भी यही कहा है कि सूक्ष्मलोक में आत्मा अपने उर्जा शरीर में रहता है, हाल आफ मेमोरीज में वह अपने अतीत के सभी जीवनों की समीक्षा स्वयं ही करता है, *वहॉ एक सुधारगृह (purgatory) होता है। जीव स्वयं* अपने आगामी जीवन की, उद्देश्यपूर्ण योजना बनाता है, तदनुसार आगामी जीवन को ग्रहण करता है। दो जीवनों का लगातार होना आवश्यक नहीं है, यदि आवश्यक हो तो वह विश्राम का अंतराल भी ले सकता है, जो कई शताब्दियों का भी हो सकता है।

रम्पा की पहली पुस्तक 'तीसरी ऑख (The Third Eye)' 1956 में और अंतिम पुस्तक 'तिब्बती संत (Tibetan Sage)' 2007 में प्रकाशित हुई थी, परन्तु आज भी रम्पा की पुस्तकों के पाठक कम नहीं हैं। एक पाठक ने अपने ई–मेल में मुझे लिखा है कि वे रम्पा के बड़े भक्त एवं प्रशंसक हैं, और उन्होंने रम्पा की प्रत्येक पुस्तक न केवल पढ़ी है, वल्कि उनका गम्भीर अध्ययन भी किया है। उनके अनुसार पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद नहीं किया जाना चाहिये, क्योंकि ये उनकी मौलिकता का हनन करता है। मैं मानता हूँ कि किसी भाषा में व्यक्त भावनाओं को किसी भी दूसरी भाषा में, एकदम ठीक ठीक व्यक्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि भाषा केवल विचारों को ही व्यक्त नहीं करती, उसमें देश एवं काल की प्राकृतिक, राजनैतिक एवं भौतिक परिस्थितियों के साथ साथ, उसके दार्शनिक चिंतन, तथा धार्मिक एवं सामाजिक परंपराओं के साथ दूसरे अनेक कारकों का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष प्रभाव भी रहता है। और किसी भाषा का, किसी दूसरी भाषा में एकदम सही शाब्दिक अनुवाद करना नितांत असम्भव है। लखनवी बोली में जो तहजीब, नजाकत और नफासत है, उसकी तुलना हरियानवी, पंजाबी अथवा पश्चिमी उत्तर

प्रदेश या पूर्वी उत्तर प्रदेश या बिहार की भाषाओं से नहीं की जा सकती। आप एक ही वाक्य को इन अलग अलग भाषाओं में बोलिये और फिर उसके प्रभाव को अनुभव कीजिये, शायद आप मेरे कथन और उसके तात्पर्य से सहमत होंगे।

इस विश्व के एक भी आदमी से, विश्व की सभी भाषाओं को जानने की अपेक्षा नहीं की जा सकती, कि वह हर पुस्तक को उसकी मूल भाषा में पढ़ और समझ सके। हॉं, विश्व में, दर्जन भर भाषाओं के जानने वाले बहुभाषी व्यक्ति, कुछ हजारों की संख्या में मिल सकते हैं। यूरोप का आम आदमी भी पॉच, छै विदेशी भाषाओं को बोल एवं समझ सकता है। फिर भी ये एक स्थापित सत्य है कि व्यक्ति, मौलिक चिंतन केवल अपनी मातृभाषा में ही कर सकता है। अनेक भाषाओं का ज्ञान पढ़ने से नहीं, वल्कि देशाटन से, भिन्न भिन्न लोगों के सम्पर्क में आने से अधिक सरलता से हो सकता है। हमारे देश में, विशेषकर हिन्दीभाषी क्षेत्रों में पर्यटन की प्रवृति लगभग नहीं ही है, यहॉ लोग अपने व्यवसाय, व्यापार और बृद्धावस्था में तीर्थयात्रा के लिये ही बाहर निकलते हैं, अतः कितने लोग ऐसे है, जो अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त कश्मीरी, सिन्धी, पंजाबी, असमिया, बंगाली, उड़िया, मराठी, तमिल, तेलगू, कन्नड़ आदि भारतीय भाषाओं को जानते हैं। यूरोपीय देशों के नागरिकों में पर्यटन, पर्वतारोहण, खोज, एवं साहसपूर्ण कार्यों को करने और लेखन की सहज प्रवृति होती है, अतः अधिकांश लेखक, समीक्षक, आलोचक आदि उन्हीं देशों से होते हैं। जर्मनी के विद्वान, मैक्समूलर ने काशी में रहकर, काशी के पंड़ितों से संस्कृत सीखी थी और वेदों की विदेशी भाषाओं में, विशेषकर अंग्रजी और जर्मन में व्याख्या की थी, निश्चित रूप से, यह उसके कठोर परिश्रम, समर्पण, और लगन का ही परिणाम था कि हम वेदों के सम्बन्ध में कुछ जान पाये अन्यथा संस्कृत के चन्द ज्ञानी पंडितों को छोड़कर, वेद सर्वसाधारण के लिये अलभ ही रहे होते। मैक्समूलर के लिये संस्कृत विदेशी भाषा थी, और उसके लिये, उसे सीखना, पूर्णतः समझना, निश्चय ही, अत्यंत दुष्कर कार्य रहा होगा। अब हम उस पर आक्षेप लगाते हैं कि उसने हमारे ग्रन्थों को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत किया।

संचार एवं आवागमन के साधन सर्वसुलभ होने के कारण, आज विश्व एक गॉव बन गया है। अतः विभिन्न प्रकार के ज्ञान और अनुभव, सभी के लिये आवश्यक और सहज सुलभ हैं। रम्पा की पुस्तकें मूलतः अंग्रेजी में लिखीं गईं थी, बाद में इनका स्पेनिश और जर्मन भाषाओं में अनुवाद हुआ और अब तो तीस से अधिक भाषाओं में इनका अनुवाद हो चुका है। अंग्रेजी और चीनी (मेंडेरिन) के बाद, हिन्दी, विश्व में तीसरे स्थान पर, सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, ऐसे में विभिन्न विषयों की अंग्रेजी एवं अन्य विदेशी भाषाओं की पुस्तकों को हिन्दी में अनुवादित करना हमारी अनिवार्य आवश्यकता बन चुकी है, अन्यथा अंग्रेजी न समझने पाने वाले हिन्दी भाषी लोग, ज्ञान और सभ्यता की दौड़ में पिछड़ जायेंगे। पहले हमारे देश में प्राकृत, संस्कृत, ब्राह्मी, पाली आदि भाषाऐं चलतीं थीं, अधिकांश वैदिक ज्ञान संस्कृत में और वौद्ध और जैन साहित्य पाली में है। हिन्दी के वर्तमान स्वरूप का प्रार्दुभाव, लगभग साढ़े चार सौ वर्ष पूर्व, भारतेन्दु हरिश्चंद्र के द्वारा हुआ था, तब मुसलमानों का शासन होने के कारण, उर्दू, अरबी, फारसी भाषाऐं चलन में थीं। तत्कालीन हिन्दी संस्कृत और उर्दू का मिश्रण थी, जिसका विकसित स्वरूप, पंडित रामचन्द्र शुक्ल, महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे मनीषियों के महान योगदान के साथ, वर्तमान हिन्दी के रूप में हमें देखने को मिलता है। अंग्रेजी शासनकाल में, अनेक अंग्रेजी शब्द,

हिन्दी भाषा में प्रविष्ट एवं समाविष्ट हो गये, वैसे ही ग्रीक, लेटिन, फ्रेंच, शब्दों के अतिरिक्त, अंग्रेजी भाषा में, अनेक संस्कृत एवं हिन्दी शब्द जैसे पथ, घिराव, जुगाड़, लूट, डकैती, मूंग, बाजरा, आदि प्रविष्ट एवं समाविष्ट हो गये हैं, आवश्यकतानुसार नये शब्द भी गढ़े जाते हैं, पुराने शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं, दूसरी भाषाओं के शब्द शामिल हो जाते हैं, वैज्ञानिक, व्यावसायिक, तकनीकी विकास का प्रभाव भी आवश्यक रूप से भाषा पर पड़ता ही है और न्यूरॉन, क्वाण्टम, इलेक्ट्रोन, प्रोटोन, न्यूट्रोन, क्वार्क, लेसर, मेसर, क्लोलिंग, एड्स, जीन, टेस्टट्यूब बेबी, सैरोगेट मदर आदि अनेक शब्द, वैसे ही कंप्यूटर के विकास के साथ ही डिजिटल, हैंग, हैकिंग, प्रोटोकॉल, वायरल, आदि शब्द सहज ही भाषाओं में, आम बोलवाल में घुसपैंठ कर लेते हैं। यह किसी भी गतिशील भाषा के विकास की एक सहज स्वाभाविक प्रक्रिया है, परन्तु सिनेमा, टेलीविजन और मोबाइल के कारण, आजकल हमारी स्थिति ऐसी हो गयी है कि न तो हम ठीक से हिन्दी पढ़–बोल सकते हैं और न ही अंग्रेजी ही पढ़–बोल पाते हैं, हिन्दी के साथसाथ अनावश्यक रूप से अंग्रेजी के शब्द घुसा देना, हमारा स्वभाव बन चुका है, आज का पब्लिक स्कूल में पढ़ा बच्चा, उन्नीस, नीला जैसे सामान्य शब्दों को नहीं समझ पाता, ये उसे नाइन्टीन, ब्लू कहने पर ही समझ में आते हैं। ऐसे में स्पृहा, प्रतीकार, प्रतिसाद, व्यर्थ, आम्र, ताम्र, नौका आदि तत्सम शब्दों को समझ पाना, साधारण आदमी के लिये भी थोड़ा मुश्किल हो गया है। स्थिति ये है कि आज साधारण आदमी संज्ञा, विशेषण आदि को तो अंग्रेजी में उपयोग में लाना चाहता है, जबकि क्रिया और व्याकरण हिन्दी का उपयोग करता हैं, रेल, ट्रेन, कोट, साइकल, पैन, अंग्रेजी शब्द हैं, परन्तु इनके बहुवचन के लिये क्रमशः रेलों, ट्रेनों, कोटों, साइकिलों, पैनों का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार आजकल हिन्दी के बजाय हिंग्लिश (हिन्दी+इंगलिश) का उपयोग प्रचलन में है। अन्तर्जाल और मोबाइल फोन ने तो स्थिति को और भी संकट में डाल दिया है, वर्तमान में हिन्दी को रोमन लिपि में लिखने की हिमायत और वकालत की जा रही है। इसलिये, जहॉ मुझे लगता है कि हिन्दी शब्द समझने में कठिनाई हो सकती है, मैंने अपने अनुवाद में रम्पा का मूल अंग्रेजी शब्द कोष्ठक में दे दिया है। हमें ध्यान रखना चाहिये कि हिन्दी हमारी मॉ है, और शेष सभी भाषायें, हमारी मौसियॉ है, उसकी सौतें नहीं, और मौसियों का तो परिवार में आना जाना और उपहारों, विचारों का आदान प्रदान लगा ही रहता है। हमें उनकी सौगातों के प्रेम के साथ स्वीकार करना चाहिये।

मेरे एक आदरणीय पाठक ने अनुवादक की टिप्पिणियॉ दिये जाने पर भी आपत्ति उठाई है, उनका मानना है कि इससे पुस्तकों का मूलस्वरूप विकृत हुआ है और उसके धाराप्रवाह अध्ययन में बाधा उत्पन्न होती है। इस सम्बन्ध में मेरा निवेदन है कि रम्पा की पुस्तकें, विदेशी, विशेषकर, पश्चिमी परिवेश में, लिखी गईं हैं, अतः वाक्यांश, लोकोक्तियॉ, मुहावरे, कहावतें, सन्दर्भ आदि भी वहीं के हैं, इसके अतिरिक्त विरी, वायरस, बैरा, ब्रूनहिल्डे, बनीयानवैरा, आदि अनेक वैज्ञानिक शब्द भी उपयोग में लाये गये हैं, ऐसे में उनका स्पष्टीकरण देना, मेरे विचार से अनुचित नहीं है, अन्यथा उत्तरी प्रकाश (अरोरा बोरियालिस), मृत सागर, मृत सागर की पुरातात्विक खोज, अल्टिमा थुले, गोबी मरुस्थल, 'किलराय यहॉ था', आदि शब्द, मात्र पठित शब्द ही रह जायेंगे, क्योंकि इनके संदर्भ ढूंढने का कष्ट आम पाठक नहीं लेगा और वह निहित जानकारी और कलेवर का आनन्द भी नहीं ले सकेगा।

अनुवाद में, यद्यपि पूरी सावधानी बरती गई है, फिर भी, त्रुटियॉ रह जाना सम्भव है, जिसके

लिये मैं पाठकों से क्षमायाचना करता हूँ, कि निवेदन करता हूँ कि वे त्रुटियों को मेरे संज्ञान में लाने की कृपा करें ताकि उन्हें सुधारा जा सके। इसके अतिरिक्त, उन पाठकों से, जो हिन्दी और अंग्रेजी दोंनों भाषाओं में समान अधिकार रखते हैं, मेरा नम्र निवेदन है कि वे प्रत्येक वाक्य को मूल से मिलाकर देखें और त्रुटियों से मुझे अवगत करायें, मैं निश्चित रूप से उनका आभारी रहूँगा।

यद्यपि मैंने, भाषा की सहजता, सुबोधता और उसके सतत प्रवाह को यथासम्भव बनाये रखने का भरसक प्रयास किया है, तथापि सम्भव है कि मेरे अल्प भाषाज्ञान के कारण, अनेक त्रुटियॉ हुई हों, मैं उन्हें विनम्रतापूर्वक स्वीकार करते हुए पाठकों से निवेदन करता हूँ कि भ्रम की स्थिति में वे मूल पुस्तकों से मिलान अवश्य कर लें। शब्दशः अनुवाद, अत्यन्त क्लिष्ट, अरुचिकर, नीरस एवं प्रवाहहीन होता है। अतः सुधी पाठकों से मेरा निवेदन है कि इसे शब्दशः अनुवाद न मानकर, (लगभग 80 प्रतिशत सही) सन्निकट पुर्नलेखन के रूप में लें और पुस्तकों का आनन्द लें।

इस पुस्तक को अनुवादित और लिपिबद्ध करने में, मुझे अपने शुभचिंतकों, मित्रों, सहयोगियों का अमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ है, मैं उन सभी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। विशेषरूप से, श्री प्रगल्भ शर्मा, श्रीमती प्रीति गोयल, जिनके सहयोग के बिना यह प्रयास मूर्तरूप नहीं ले सकता था, हृदय से आभारी हूँ, मैं अपने पाठकों श्री कामदेव चतौत, श्री ज्योर्तिविद पवन, श्री मनुभाई पटेल, श्री संजय शर्मा, और श्री नरेश विष्ट का आदि का आभारी हूँ, जिनकी प्रेरणा और प्रोत्साहन के फलस्वरूप, यह कार्य प्रगति कर पा रहा है। आशा करता हूँ कि ईश्वर कृपा एवं प्रेरणा, निरन्तर बनी रहेगी और मुझे भविष्य में आपकी सेवा करने का सुयोग प्राप्त होता रहेगा।

भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी, गणेश चतुर्थी, सम्वत् 2073,
तदनुसार 25 अगस्त 2017

फोनः मोबाइल 98931–67361
स्थानीय (0751) 2433425

email: drguptavp@gmail.com

डॉक्टर वेद प्रकाश गुप्ता
इंदिरा कालोनी, नया बाजार,
लश्कर, ग्वालियर, (मध्यप्रदेश)

अध्याय—एक

ऊपरी लिटिल पुडलपैच (Upper Little Puddlepatch) की, कुमारी मथिल्डा हॉकरस्निकलर (Miss Mathilda Hockersnickler) अपनी आधी खुली हुई खिड़की के पास बैठी थी। पुस्तक, जिसे वह पढ़ रही थी, ने उसका पूरा ध्यान आकर्षित किया। खिड़कियों को सजाने वाले, सुंदर लेस (lace) के परदों के आरपार, उसकी छाया पड़े बिना, एक शवयात्रा समीप से गुजरी। दो पड़ोसियों के बीच की कहासुनी (altercation), निचली खिड़की के केन्द्र को बनाने वाली, वर्म—तारा प्रजाति की वनस्पति (aspidistra)[1] की हलचल के द्वारा, अनुल्लेखित (unremarked) रह गई। कुमारी मथिल्डा पढ़ रही थी।

एक क्षण के लिए पुस्तक को अपनी गोदी में रखते हुए, अपनी लाल किनारी वाली ऑखों को रगड़ते हुए, उसने स्टील की किनारी वाले चश्मे को अपने माथे तक उठाया। तब, अपने चश्मे को, अपनी विशिष्ट (ऊँची) नाक पर, यथास्थान वापस रखते हुए, उसने पुस्तक को उठाया और कुछ आगे पढ़ा।

पिंजरे में, चमकीली छोटी ऑखों वाले, हरे—पीले तोते ने, कुछ उत्सुकता के साथ नीचे देखा। तब वहॉ, एक कर्कश चीख प्रकट हुई, *'पॉली (Polly) बाहर जाना चाहता है, पॉली बाहर जाना चाहता है!'*

कुमारी मथिल्डा हॉकरस्निकलर, शुरूआत के साथ, अपने पैरों पर उछल पड़ी, *'ओ, महान भव्य भगवान!'* वह हर्ष से चिल्लाई, *'मुझे अत्यन्त खेद है, मेरे बेचारे नन्हे प्रिय, मैं तुम्हें, अपने ठिकाने पर बदली करना, पूरी तरह भूल गई थी।'*

उसने एक हाथ अंदर डालते हुए, चमकदार तार के पिंजरे का दरवाजा सावधानी से खोला और उसने कुछ चिरकुट से बूढ़े तोते को, खुले हुए पिजरे के दरवाजे से, धीमे से बाहर निकाला। *'पॉली बाहर जाना चाहता है, पॉली बाहर जाना चाहता है!'* कर्कश स्वर में, तोता फिर चीखा।

'ओ, तुम मूर्ख पक्षी,' कुमारी मथिल्डा ने उत्तर दिया। *'तुम बाहर हो, मैं तुम्हें तुम्हारे अड्डे पर रख रहीं हूँ।'* ऐसा कहते हुए, उसने तोते को पॉच फुट ऊँचे खम्बे की आड़ी छड़ पर रख दिया, जो उसके दूरवर्ती किनारे पर एक तश्तरी (tray) फॅसाने वाले पिंजरे में परिणामित होता था। सावधानी से, उसने तोते के बांये पैर में एक छोटी जंजीर डाल दी, और तब ये सुनिश्चित किया कि एक किनारे पर टिका हुआ पानी का कटोरा, और दाने का कटोरा, पूरे भरे थे।

तोते ने अपने पंखों संवारा और तब चहकने की, चूं—चूं की आवाजें करते हुए जैसा कि वह करता था, अपने सिर को एक पंख के नीचे किया। *'आह, पॉली,'* कुमारी मथिल्डा ने कहा, *'तुमको आना चाहिए और मेरे साथ इस पुस्तक को पढ़ना चाहिए, ये उन सब चीजों के बारे में हैं, जब हम यहॉ नहीं होते। मेरी इच्छा है, मैं जानती कि लेखक, वास्तव में, क्या विश्वास करता है,'* जैसे ही वह फिर से बैठी, उसने कहा और बहुत सावधानी और संकोच पूर्वक, अपनी स्कर्ट को व्यवस्थ्ति किया ताकि उसके घुटने तक भी न दिखाई दें।

उसने पुस्तक को फिर उठाया और तब गोदी और पढ़ने की बीच की स्थिति में रुकी, हिचकिचाई और जब तक कि वह बुनाई की, लम्बी सलाइओं के लिये पहुॅची, पुस्तक को नीचे रखा और तब एक वयस्क महिला में एक ऐसे जोशीले आश्चर्य के साथ—उसने पूरी तरह से प्रसन्नतापूर्वक, कन्धों के बीच, अपनी पूरी रीढ़ की हड्डी के नीचे खुजलाया। *'आह!'* उसने आश्चर्य किया, *'ये कितना आश्चर्यजनक आराम है, मुझे विश्वास है कि मेरी लिबर्टी चोली (bodice) के साथ कुछ गलत है। मेरा ख्याल है, वहॉ कोई रूखा बाल या वैसा ही कुछ, होना चाहिए दोबारा खुजाती हूँ, ये कितना आराम है,'* इसके साथ ही उसने सलाई को जोर से हिलाया, जैसे ही उसने ऐसा किया, उसका चेहरा आनन्द

---

1 अनुवादक की टिप्पिणी : वर्म—तारा (aspidistra), लिली प्रजाति का, नुकीली पत्तियों के गुच्छे वाला, एशिया में पैदा होने वाला, एक पौधा है।

से दमकने लगा।

उस चीज को अपने पीछे रखते हुए, उसकी खुजली, एक क्षण के लिए व्यवस्थित हुई, उसने बुनाई वाली सलाई को रख दिया, और पुस्तक को उठाया। 'मृत्यु,' उसने खुद से या सम्भवतः उस असावधान तोते से कहा, *'यदि मैं केवल ये जानती कि ये लेखक,* **वास्तव में,** *मृत्यु के बाद के सम्बंध में क्या विश्वास करता था।'*

एक क्षण के लिए वह रुकी और वर्म–तारा (aspidistra) की लकड़ी के कटोरे के दूसरी तरफ पहुँची, ताकि, वह नरम कैंडियों (Candies), जो उसने वहाँ रखी थीं, में से कुछ को उठा सके। तब एक कराह के साथ, वह फिर अपने पैरों पर बैठी और एक (कैंडी) को, तोते के पास तक, जो तीखी नजर से उसको देख रहा था, पहुँचाया। पक्षी ने (कैंडी को) एक झपट्टे के साथ लिया और अपनी चोंच में पकड़ लिया।

कुमारी मथिल्डा ने, अब बुनाई की सलाई को फिर से एक हाथ में, और कैंडी को अपने मुँह में, और पुस्तक को अपने बायें हाथ में पकड़ते हुए, अपने आप को फिर से व्यवस्थित किया और अपनी पढ़ाई को जारी रखा।

कुछ पंक्तियों के बाद, वह फिर रुक गई। *'ऐसा क्यों है कि फादर (पादरी) हमेशा कहते हैं कि यदि कोई अच्छा कैथोलिक–चर्च को जाने वाला एक अच्छा कैथोलिक (ईसाई)–नहीं है, कोई स्वर्ग के साम्राज्य को प्राप्त करने में सफल नहीं होता? मुझे आश्चर्य है कि क्या फादर गलत है, और क्या दूसरे धर्मों के लोग भी, वैसे ही स्वर्ग को जाते हैं।'* सिवाय मंद सी बड़बड़ाहट के साथ, जो उसने की, जैसे ही उसने कुछ अन्य अपरिचित शब्दों को देखने का प्रयास किया, वह फिर से खामोशी में डूब गई। आकाशीय अभिलेख (Akashic records), सूक्ष्मशरीरी यात्रा (astral travel), स्वर्ग के क्षेत्र (the Heavenly fields)।

सूर्य, घर की चोटी के आर–पार चला गया और कुमारी मथिल्डा बैठी और उसने पढ़ा। तोता, अपने सिर को एक पंख के नीचे रखकर सो गया। केवल कभी कभार की एक खुजली ने, जीवन के चिन्हों को झुठलाया। तब गिरजाघर की घड़ी, कुछ हरकत में आई और कुमारी मथिल्डा एक झटके के साथ सचेत हुई। *'हे मेरे भगवान– हे मेरे भगवान,'* उसने विस्मय किया, *'मैं चाय के बारे में बिलकुल भूल गई थी, और मुझे चर्च की महिलाओं की बैठक में जाना है।'* वह तेजी से अपने पैरों पर उछली और उसने अत्यन्त सावधानी के साथ, कशीदाकारी को कागजी जिल्दवाली (paperback) किताब के बीच में रखा, जिसको उसने तब, सिलाई की मेज के नीचे छिपा दिया।

वह अपनी विलम्बित चाय को तैयार करने को चली, और जैसे ही उसने ऐसा किया, केवल तोते ने उसकी बड़बड़ाहट को सुना, *'ओह, मैं इच्छा करती हूँ कि मैं यह जान पाती कि ये लेखक वास्तविक रूप से क्या विश्वास करता था– मैं इच्छा करती हूँ कि मैं उससे बात कर पाती। यह कितना सुखद होता!'*

बहुत दूर के एक धूपदार द्वीप पर, जो अनाम रहेगा, यद्यपि, वास्तव में, इसको एक नाम दिया जा सकता था, क्योंकि ये सत्य है, निश्तेज विस्तृत रंग वाले, युगों पुराने एक पेड़ की बड़ी छाया के नीचे, एक सज्जन ने, अलसायेपन से, उसने पुस्तक को, जिसे वह पढ़ रहा था, नीचे रख दिया और एक आकर्षक फल, जो समीप में मोहक ढंग से झूल रहा था, के पास पहुँचा। एक सुस्त हलचल के साथ, उसने फल को तोड़ लिया, और यह देखने के लिए कि वह सूक्ष्म कीटों से मुक्त था, निरीक्षण किया और उसे अपने विशाल मुँह में डाल लिया।

'जी (Gee),' वह फल की रुकावट के ऊपर बड़बड़ाया। *'जी, मैं निश्चयपूर्वक जानता हूँ कि वह बिल्ली क्या खोज रही है। निश्चित रूप से, मैं इच्छा करता हूँ कि मैं जान पाता कि वह वास्तव में, क्या विश्वास रखता था।'*

उसने फिर से अंगड़ाई ली और अपनी पीठ को, पेड़ के ठूंठ के विरुद्ध, कुछ अधिक सुविधाजनक स्थिति में रखा। अलसाते हुए, उसने एक गुजरती हुई मक्खी के ऊपर प्रहार किया, उसे चूकते हुए अपने हाथ को चलता रहने दिया और आलस के साथ, अपनी पुस्तक को फिर से उठा लिया।

'मृत्यु के बाद जीवन (life after death), सूक्ष्मशरीरी यात्रा, आकाशीय अभिलेख।' कलर के (अश्वेत) सज्जन ने कुछ पेजों में होकर तलाशी ली। वह, शब्दशः पढ़ने की आवश्यकता में लिप्त हुए बिना, पुस्तक के पूरे काम के अंत तक जाना चाहता था। उसने एक पैराग्राफ यहॉं, एक वाक्य वहॉं पढ़ा, और तब आलसपूर्वक दूसरे पेज को पलटा। 'जी,' उसने दोहराया। *'मेरी कामना है, मैं जानता कि वह क्या विश्वास करता था।*

परंतु सूर्य काफी गर्म था। ऊँघते हुए छोटे कीटों की गूंज। कलर के सज्जन का सिर, धीमे से उसकी छाती में डूबा। धीमे से, उसकी काली उॅंगलियॉं ढीली पड़ीं और कागजी जिल्द वाली पुस्तक, उसके तंत्रिकाहीन (nerveless) हाथों में से फिसल पड़ी और नरम बालू के ऊपर लुढ़क गई। कलर का सज्जन खर्राटे भरता गया, और खर्राटे भरता गया, और सक्रियता के नीरस वृत में, खुद के बारे में जो कुछ हुआ, उस सब के प्रति बेखबर था।

एक गुजरते हुए नौजवान ने सोते हुए (अश्वेत) नीग्रो (Negro) के ऊपर नजर मारी और पुस्तक को देखा। सोने वाले के ऊपर फिर से नजर डालते हुए, नौजवान आगे बढ़ा और लालची पंजों के द्वारा, तेजी से पहुॅंचा, और उसने पुस्तक को उठा लिया, जिसे उसने मुड़ी टॉंग से, शीघ्रतापूर्वक हाथ में स्थांतरित कर दिया। सच्चाई के प्रति अत्यधिक भोला दिखते हुए, पुस्तक को बगल में पकड़े हुए, वह सोने वाले (अश्वेत) से आगे चला।

वह पेड़ों के दूर वाले छोटे झुंड की तरफ गया। गुजरते हुए, वह फिर से धूप में, और चकाचौंध करने वाली विस्तृत सफेद रेत में आया। काटने वालों की आवाज उसके कानों में गूंजी परंतु अनसुनी रही, क्योंकि यह उसका जीवन था, खाड़ी के आसपास चट्टानों पर तरंगों की आवाज, उसके लिए रोजमर्रा की आवाज थी। कीटों का गुंजन और झींगरों की आवाज, उसका जीवन थी और वैसे ही अनसुनी रहती थी।

वह, अपने पैरों की उंगलियों के साथ बारीक रेत को सरसराते हुए, आगे चला क्योंकि वहॉं हमेशा एक आशा थी कि कुछ खजाना या कुछ सिक्के जमीन में से निकल पड़ेंगे, क्योंकि, क्या उसके दोस्तों में से एक को, ऐसा करते हुए, एक बार सोने का आठ का टुकड़ा नहीं मिला था?

वहॉं, मात्र तीन पेड़ों से भरे जमीन के टुकड़े से उसे विभाजित करती हुई, पानी की एक तंग पट्टी थी। पानी में चलते हुए, शीघ्र ही, उसने इस अवरोध को पार किया और तीन पेड़ों के स्थान के बीच की राह पकड़ी। वह सावधानी से लेट गया, और अपने कूल्हे की हड्डी की टिकाने के लिए, धीमे से एक छोटा गड्ढ़ा खोदा। तब उसने पेड़ की जड़ के विरुद्ध, अपने सिर को आराम से टिकाया और पुस्तक, जो उसने सोने वाले से उड़ाई थी, को देखा।

सावधानीपूर्वक उसने, ये निश्चित करने के लिए कि उसे किसी ने देखा नहीं था, यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई उसका पीछा नहीं कर रहा था, उसने अपने आसपास देखा। पूरी तरह संतुष्ट होकर कि वह सुरक्षित था, वह फिर से, वापस व्यवस्थित हुआ और अपने घने बालों से, अपने एक हाथ को रगड़ा, जबकि दूसरे के साथ, उसने आलसपूर्वक किताब को पलटा, पहले पीछे की तरफ, जहॉं उसने पढ़ा, जो प्रकाशक को कहना था, और तब उसने पुस्तक के पन्ने पलटे और अपने नटखट होंठों को भींचते हुए, अधमुंदी लम्बी ऑंखों और रेखा बनाती हुई भौंओं से, चित्रों, और कुछ बातें, जो उसकी स्वयं की समझ में आने वाली नहीं थी, का अध्ययन किया और बड़बड़ाया।

उसने अपनी जॉंघ और धड़ के बीच के क्षेत्र (crotch) को थोड़ा खरोंचा और पेंट को खींचकर

सुविधाजनक स्थिति में बनाया और तब अपनी बायीं कोहनी पर टिकते हुए, उसने पेजों को पलटा और पढ़ना प्रारम्भ किया।

'विचार आकृतियॉ (thought forms), मंत्र, आदमी–ओह–आदमी, क्या ये, निश्चतरूप से, तटीय हौदियॉ (shore sumping) नहीं हैं! इसलिए हो सकता है कि मैं एक विचार तरंग बना सकूं और तब एक जिन्न (Abigail) को वह सब करना पड़े, जो मैं उससे कराना चाहूँ। जी आदमी, मैं निश्चतरूप से ऐसा करूँगा।' वह पीछे की ओर लुढ़का और अपनी नाक को थोड़ा पकड़ा और उसने कहा, *'आश्चर्य, यदि मैं इस सब के ऊपर विश्वास कर सकता।'*

कमरे के छायादार कोनों में से एक पवित्र वातावरण रिसने लगा। सिवाय इसके कि पत्थर वाली गहरी धूनी (अग्निस्थल, fireplace) में लकड़ियॉ जलीं और चटकती रहीं, सब कुछ शांत था। अधसूखी लकड़ियों के बीच में फंसी नमी के द्वारा पैदा हुई भाप, यदाकदा, भाप के एक फुहारे (jet) के रूप में बाहर निकल पड़ती और क्रोधपूर्वक, ज्वालाओं पर हिस की आवाज करती। लकड़ी, चिनगारियों के फुब्बारे को ऊपर की ओर भेजते हुए, यदाकदा, एक छोटे विस्फोट के रूप में भभक उठती। लपलपाती रोशनी ने कमरे में अजीब सी भावना, रहस्य की भावना, जोड़ी।

अग्निस्थल के एक तरफ, अपनी पीठ को दरवाजे की ओर किए हुए, एक गहरी, (काफी) गहरी, आराम कुर्सी रखी थी। पीतल की छड़ों से बना हुआ, पुराने फैशन का एक दीपदान, कुर्सी के बगल से खड़ा था, और हरे शेड (shade) की खोह के अंदर छिपाये गये, मध्यम सामर्थ्य वाले बिजली के बल्ब से, कोमल प्रकाश उत्सर्जित हो रहा था। प्रकाश घटा, और तब, कुर्सी की पीठ से रुकावट के कारण, गायब हो गया।

एक सूखी खॉसी और पेजों के पलटने की आवाज आई। सिवाय आग के चटकने के, वहॉ फिर खामोशी हुई और चूंकि नई सामिग्री का भेद खोलने के लिए, पढ़े हुए पेज पलटे गए थे, नियमित उंगलियों के द्वारा पृष्ठों को पलटने की आवाज हुई।

काफी दूर से, एक घंटी के बजने की आवाज आई, धीमे चलने वाले टेम्पो (tempo) की आवाज, और शीघ्र ही, पीछे से चंदन की चट्टी पहने हुए पैरों, और अत्यंत कोमल आवाजों की एक फुसफुसाहट आई। एक खुलते हुए दरवाजे की झंकार हुई और एक मिनट बाद, जैसे ही दरवाजा बंद हुआ, खोखला धमाका हुआ। शीघ्र ही, वहॉ एक ऑर्गन (organ) की आवाजें और गाने में उठती हुईं नर ध्वनियॉ आईं। कुछ समय के लिए गाना चलता गया और तब वहॉ खामोशी के बाद, सरसराहट हुई और समझ में न आने योग्य किसी चीज को बड़बड़ाते हुए, परंतु भलीभॉति पूर्वाभ्यास किये हुए, अस्पष्ट स्वरों के द्वारा, खामोशी नष्ट हो गई।

जैसे ही एक पुस्तक फर्श पर गिरी, कमरे में, पटकने की एक चौंका देने वाली आवाज हुई। तब एक गहरी आकृति ऊपर की ओर उछली। *'ओह मेरे भगवान, मैं नींद में गिर गया हो सकता था। कितनी पूर्ण आश्चर्यचकित करने वाली चीज करने के लिए है!'* गहरी पोशाक वाली आकृति, पुस्तक को उठाने के लिए झुकी और सावधानी पूर्वक उचित पृष्ठ को खोला। सतर्कतापूर्वक, उसने एक पुस्तक चिन्ह लगाया, और अत्यंत सम्मान के साथ, पुस्तक को अपने बगल की मेज के ऊपर रख दिया। वह, हाथों को आपस में फंसाये हुए, और परेशान भौहों के साथ, कुछ क्षणों के लिए यहॉ बैठा, तब वह कुर्सी से उठा और दीवार पर लगे हुए सूली के चिन्ह (crucifix) के सामने, अपने घुटनों को झुका दिया। झुकते हुए, हाथों को जोड़े हुए, सिर को झुकाये हुए, उसने, पथ प्रदर्शन के लिए अनुनय–विनय (supplication) वाली एक प्रार्थना गुनगुनाई। इसके पूरा होने पर, वह अपने पैरों पर खड़ा हुआ और तीव्र चमकते हुए अंगारों (embers) के ऊपर, दूसरी लकड़ी रखी। वह थोड़े समय के लिए, अपना सिर दोनों हाथों के बीच जकड़े हुए, दुबकता हुआ, अग्निस्थल के बगल से बैठा।

एक सहसा आवेग पर, उसने अपनी जॉघ पर चॉटा मारा और अपने पैरों पर उछल पड़ा। उसने

तेजी से अंधेरे कमरे को पार किया और काली छायाओं में छिपी हुई एक मेज की तरफ गया। एक तीव्र गति, एक डोरी का खींचना, और कमरे का वह कोना गर्म प्रकाश से पूरी तरह भर गया। आकृति ने कुर्सी को पीछे खींचा और मेज के ढक्कन को खोला और तब वह नीचे बैठ गयी। एक क्षण के लिए, वह खाली ऑखों के साथ कागज के पन्ने के ऊपर, जो उसने अभी अपने सामने रखा था, घूरते हुए बैठा। अनमने भाव से, उसने अपना सीधा हाथ, पुस्तक, जो वहॉ नहीं थी, के स्पर्श को महसूस करने के लिए बाहर निकाला, और खिजलाहट की चीत्कार के साथ बड़बड़ाते हुए, वह अपने पैरों पर खड़ा हुआ और कुर्सी के बगल वाली मेज में जमा की हुई पुस्तक को उठाने के लिए, कुर्सी की ओर गया।

वह अपनी मेज पर वापस बैठा और जबतक कि उसने पते को, जो उसे वॉछित था, नहीं पा लिया, पेजों की तलाश की। शीघ्र ही, उसने एक लिफाफे पर पता लिखा, तब अपने विचारों को छांटते हुए, आश्चर्य करते हुए कि क्या किया जाए, आश्चर्य करते हुए कि शब्दों को, जिन्हें वह उपयोग करना चाहता था, वाक्यांश में कैसे बदला जाए, बैठा और उसने मनन किया।

शीघ्र ही, उसने निब को कागज पर रखा और निब के खुरचने की आवाज और दूर स्थित दीवार घड़ी की टिकटिक के सिवाय, सब कुछ शांत था। '*प्रिय डॉ. रम्पा,*' पत्र प्रारम्भ हो गया, '*मैं एक रायल कैथौलिक पादरी (Jesuit priest) हूँ, मैं अपने महाविद्यालय में मानविकी (Humanities) में व्याख्याता हूँ, मैं रुचि के साथ, आपकी पुस्तकों को पढ़ चुका हूँ।*'

'*मेरा विश्वास है कि केवल वे, जो हमारी खुद की आकृति के धर्म का पालन करते हैं, हमारे प्रभु, जीसस क्राइस्ट (Jesus Christ) के माध्यम से, मोक्ष प्राप्त करने के योग्य हैं। मेरा विश्वास है कि जब मैं अपने छात्रों को पढ़ा रहा हूँ। मेरा विश्वास है कि जब मैं खुद चर्च के अंदर हूँ। परन्तु जब मैं रात के अंधेरे घण्टों में अकेला हूँ, जब मेरी प्रतिक्रियाओं को देखने, और मेरे विचारों का विश्लेषण करने के लिए के लिए कोई नहीं है, तब मैं आश्चर्य करता हूँ। क्या मेरा विश्वास ठीक है? क्या किसी कैथोलिक के अलावा कोई और नहीं है, जिसको बचाया जा सके? दूसरे धर्मों का क्या?, क्या वे सभी झूठे हैं, क्या वे सभी हैवान के कार्य हैं? या क्या मैं और मेरे विश्वास के दूसरों लोगों को बहकाया गया है? आपकी पुस्तकों ने काफी प्रकाश डाला है, और कॉफी हद तक मुझे आत्माओं के संदेहों, जिनमें मैं लिप्त हूँ, को सुलझाने के योग्य बनाया है, और मैं आपसे पूछूँगा, श्रीमान्, क्या आप मुझे कुछ प्रश्नों का उत्तर देंगे, ताकि आप या तो कुछ नया प्रकाश डाल सकें या उसको, जिसमें मैं विश्वास करता हूँ, मजबूत कर सकें।*'

सावधानी से उसने अपना नाम जोड़ा। सावधानी से, उसने पत्र को मोड़ा और जब वह पत्र को लिफाफे में डाल रहा था, उसमें एक विचार कौंधा। जल्दी से, लगभग दोषयुक्त भावना के साथ, उसने पत्र को बाहर खींचा उसे खोला, और एक पुनश्च *(postscript)* जोड़ा : '*सम्मानीय, मैं, आपके अपने विश्वास के प्रति समर्पित (व्यक्ति) के रूप में, आपको मेरे नाम का उल्लेख न करने के लिये कहता हूँ, चूँकि जो मैंने आपको यहॉ लिखा है, वह मेरे पंथ (order) के नियमों के खिलाफ है।*

उसने अपने संक्षिप्त हस्ताक्षर किए, स्याही को सुखाया, और तब तेजी से, मुड़े हुए पत्र को लिफाफे में डाल दिया और उसे सीलबंद कर दिया। उसने, जबतक कि उसे पुस्तक नहीं मिल गई, अपने कागजों को उलट पलट किया, और उसमें से कनाडा के लिये डाक का पता लिखा। दराजों (drawers) और दडबों (pigeonholes) में खोजते हुए, अंततः उसने उचित डाक टिकट पाये, जो लिफाफे पर चिपका दिये गये। तब पादरी ने सावधानीपूर्वक पत्र को अपने गाउन की अंदरूनी जेब में रख लिया। अपने पैरों पर खड़े होते हुए, उसने रोशनी बुझा दी और कमरे को छोड़ दिया।

'*आह फादर,*' बाहर गलियारे में एक आवाज ने कहा, '*क्या आप शहर में जा रहे हैं, या क्या मैं आपके लिए वहॉ कुछ कर सकता हूँ? मुझे एक काम से जाना है और आपकी सेवा करके मुझे प्रसन्नता होगी।*

'नहीं, आपको धन्यवाद, भाई,' वरिष्ठ प्राध्यापक ने अपने अधीनस्थ को कहा, *'मेरा विचार शहर में एक चक्कर लगाने का और कुछ अत्यंत आवश्यक अभ्यासों को प्राप्त करने का है, इसलिए मैं सोचता हूँ कि मैं अभी मुख्य सड़क पर, नीचे जाऊँ।'* गम्भीरतापूर्वक, वे एक दूसरे के सामने आधे झुके, और हरेक अपने रास्ते पर चला गया, वरिष्ठ प्राध्यापक समय के साथ धब्बे पड़ी हुई, युगों पुरानी, स्लेटी रंग के पत्थरों की, और चढ़ती हुई बेलों से आधी ढकी हुई इमारत, से बाहर चला गया। धीमे से वह, अपने हाथों से सूली (crucifix) को लगभग पकडे हुए, जैसाकि उन लोगों का, जो इस पंथ के थे, अभ्यास था, अपने आप के प्रति बड़बड़ाते हुए, मुख्य सड़क पर चला।

मुख्य सड़क पर, बड़े दरवाजे से थोड़ा आगे, लोग उसके दर्शन देने पर, सम्मान से झुके, और अनेक उसके सामने से गुजरे। धीमे से वह अधेड़ प्राध्यापक, सड़क पर नीचे, डाकघर के बाहर पत्र पेटी की ओर चला। दोषयुक्त भावना से (guiltily), चोरीचोरी उसने अपने आसपास देखा कि, उसके पंथ का, क्या कोई दूसरा, वहाँ आसपास में था। संतुष्ट होकर कि सबकुछ सुरक्षित था, उसने पत्र को अपनी पोशाकों में से निकाला और झटके से पत्रपेटी में डाल दिया। तब वह आराम की हार्दिक आवाज के साथ मुड़ा और अपने कदमों को वापस लौटाया।

चिनगारी देती हुई आग के बगल से और अपने निजी अध्ययनकक्ष में वापस दोबारा, अपनी पुस्तक पर एक अच्छी ढकी हुई रोशनी डालते हुए, रात के घंटों में, उसने पढ़ा, और गहराई से पढ़ा। अंत में, उसने पुस्तक को बंद कर दिया, ताले में बंद कर दिया, और स्वयं के प्रति बड़बड़ाते हुए, अपने प्रकोष्ठ में गया, *'मुझे क्या विश्वास करना चाहिए, मुझे क्या विश्वास करना चाहिए?*

नीचे उतरते हुए आकाश ने, रूठकर (dourly), रात के समय के लंदन को देखा। काँपती हुई गलियों में, हवा के विरुद्ध, अपनी छातियों से कसकर पकड़े हुए छातों के नीचे, झड़ी लगाती हुई बरसात, घबराकर भागते हुए यात्रियों के ऊपर छा गई। लंदन, लंदन की रोशनियाँ, और काम से लौटकर घर जाने की जल्दी में लोग। फुटपाथों पर सब तरफ पानी छितराती हुईं, आसपास दहाड़ती हुई बसें, बड़ी दैत्याकार लाल बसें, और उस गंदे झिड़काव से बचने का प्रयास करते हुए, ठिठुरते लोगों के समूह।

जैसे ही एक बस आई, अपनी बसों का इंतजार करते हुए, उत्सुकतापूर्वक भागते हुए, और चूंकि बस के संकेतकों ने गलत नंबर प्रदर्शित किए थे, तब चुपके से निराशा के साथ पीछे लौटते हुए, दुकान के सामने के लोग, समूहों में इकठ्ठे हुए। लंदन, आधा शहर घर जाते हुए, और दूसरा आधा काम पर आते हुए।

लंदन के चिकित्साजगत के हृदयस्थल, हार्ले स्ट्रीट (Harley Street) में, एक भूरे बालों वाले आदमी ने, दहकती हुई आग के सामने, एक भालू की खाल के कंबल के ऊपर बैचेनी से कदम बढ़ाये। वह तेजी से पीछे और आगे चला, हाथ उसकी पीठ के पीछे बंधे हुए, सिर उसकी छाती पर झुका हुआ। तब आवेग में, उसने अपने आपको, एक अच्छी गद्दीदार, चमड़े की हत्थेवाली, कुर्सी में फेंक दिया और अपनी जेब में से एक पुस्तक निकाली। उसने जल्दी जल्दी पेजों को पलटा, जबतक कि वह गद्यांश, मानवीय प्रभामंडल (human aura) के संदर्भ में एक गद्यांश, जो उसे आवश्यक था, नहीं मिल गया। उसने इसे दोबारा पढ़ा और पढ़ चुकने बाद वापस पलटा और एक बार फिर पढ़ा। कुछ समय के लिए वह आग पर टकटकी लगा कर बैठा रहा, तब उसने उदासीनता में अपना सिर हिलाया और वह अपने पैरों पर उछला। तेजी से, उसने कमरे को छोड़ दिया, और दूसरे में गया। सावधानीपूर्वक, उसने अपने पिछले दरवाजे को ताला लगाया, और अपनी मेज तक गया। अनेक चिकित्सकीय रिर्पोटों, जो अभी हस्ताक्षरित होनी थीं, को एक तरफ धकेलते हुए, वह नीचे बैठा और उसने किसी निजी लेखपत्र (notepaper) को दराज में से निकाला।

'प्रिय डॉ. रम्पा,' उसने लगभग न पढ़े जा सकने योग्य (indecipherable) हस्तलिपि में लिखा,

'मैंने, परम आकर्षण के साथ, आपकी पुस्तक पढ़ी है, मेरे ख़ुद के विश्वास से काफी बड़ा एक उच्च आकर्षण–अपने खुद के ज्ञान के द्वारा–कि आप जो लिखते हैं, वह सत्य है।'

वह पीछे बैठा और उसे, जो उसने अभी लिखा था, सावधानीपूर्वक पढ़ा, और पूरी तरह सुनिश्चित करने के लिए, दोबारा जारी रखने के लिए, एकबार फिर पढ़ा, *'मेरा एक बेटा है, एक प्रखर नौजवान, जिसका अभी हाल में ही दिमाग का ऑपरेशन हुआ है। अब उस ऑपरेशन के बाद से वह हमें बताता है कि वह मानव शरीरों के आसपास, अजीब रगों को देखने में समर्थ है, वह मानव सिर, परंतु न केवल मानव सिर, न केवल मानव शरीर–उसके साथसाथ पशुओं के आसपास भी, प्रकाश देखने में समर्थ है। हमने कुछ समय के लिए, आश्चर्य करते हुए कि वह क्या था, जो हमने ऑपरेशन मे गलत कर दिया, सोचते हुए, कि शायद, हमने उसकी प्रकाश नाड़ी (optic nerve) को विसंगठित (disorganised) कर दिया, इस मामले में गहराई से विचार किया, परंतु आपकी पुस्तक पढ़ने के बाद, हम इसे अच्छे से समझते हैं; मेरा बेटा, मानवीय प्रभामंडल (human aura) को देख सकता है, और इसलिए मैं जानता हूँ कि आप सत्य लिखते हैं।'*

'यदि आप लंदन में हों, मैं आपसे मिलना अत्यधिक पसंद करूँगा, क्योंकि मैं सोचता हूँ कि आप मेरे बेटे के लिए अत्यधिक सहायता करने योग्य हो सकते हैं। आपका अधिक विश्वासपात्र।'

उसने दोबारा पढ़ा, जो उसने लिखा था, और तब, उसके सामने के एक पादरी की भांति, वह पत्र को मोड़ने और लिफाफे मे डालने वाला ही था, परंतु उसकी ऑखें, एक चिकित्सीय अग्रदूत (medical poineer) की, ऊपरी धड़ तक की प्रतिमा (bust) के ऊपर गिरीं। विशेषज्ञ ने, मानो उसे एक मधुमक्खी के द्वारा डंक मारा गया हो, प्रारंभ किया और शीघ्र ही उसने अपना पेन पकड़ लिया, और अपने पत्र में पुनश्च लिखा। *'मैं विश्वास करता हूँ कि आप मेरा नाम, या इस पत्र का विषय, किसी को भी नहीं खोलेंगे, क्योंकि ये मेरे सहकर्मियों की द्रष्टि में, मेरी गरिमा को आहत करेगा।'* सावधानी से उसने अपने प्रथमाक्षर (initials) लिखे, और मोड़ा और उसको लिफाफे में डाल दिया। सावधानीपूर्वक, उसने बत्तियॉ बुझाईं और कमरे को छोड़ दिया। उसकी अत्यंत महंगी कार, बाहर प्रतीक्षा कर रही थी। जैसे ही विशेषज्ञ ने कहा, *'लाइस्टर स्क्वायर (Leicester Square) में डाकखाने को',* शोफर उछलकर, सावधान की मुद्रा में खड़ा हो गया। कार चली गयी और शीघ्र ही पत्र को पत्रपेटी में डाल दिया गया और अंततः वह अपने ठिकाने पर पहुँचा।

और इस प्रकार पत्र आते गये, यहॉ से पत्र, वहॉ से पत्र, हर जगह से पत्र, उत्तर से दक्षिण तक, पूर्व से पश्चिम तक–पत्र, पत्र, पत्र, न समाप्त होने वाला पत्रों का एक समूह, सभी उत्तरों की अपेक्षा करते हुए, सभी जोर डालते हुए, कि उनकी निजी समस्याऐं अद्वितीय थीं और इससे पहले किसी के भी पास, ऐसी समस्यायें नहीं थीं। निंदा के पत्र, प्रशंसा के पत्र, अनुनय–विनय के पत्र। सबसे सस्ती प्रकार की स्कूल की कॉपी के पन्ने पर, निरी अपढ़ हस्तलिपि में लिखा हुआ, एक पत्र त्रिनिडाड (Trinidad) से आयाः *'मैं एक पवित्र मिशनरी हूँ, मैं ईश्वर की भलाई के लिए काम कर रहा हूँ, मुझे दस हजार डालर और एक नई स्टेशन वैगन (station wagon) दें। ओ हॉ, और जब आप इसे भेजने वाले हों, मुझे अपनी पुस्तकों का एक निशुल्क सेट दें और तब मैं, जो आप लिखते हैं, उस पर विश्वास करूँगा।'*

सिंगापुर से दो नौजवान चीनी व्यक्तियों का पत्र आया : *'हम डॉक्टर बनना चाहते हैं। हमारे पास धन नहीं है। हम चाहते है कि आप सिंगापुर से अपने घर तक का, प्रथम श्रेणी का हवाई टिकट हमें दें और तब हम आपसे बात करेंगें और बतायेंगे कि आप हमें धन कैसे दे सकते हैं, ताकि हम डॉक्टर के रूप में प्रशिक्षण पा सकें, और मानव जाति का भला कर सकें और आप हमें फालतू धन भी भेज सकते हैं, ताकि हम न्यूयार्क, अमेरिका में अपने एक मित्र से मिल सकें। आप हमारे लिए ऐसा करें और आप जनता के भले के लिए कर रहे होंगे, और तब हम विश्वास करेंगे।'*

सैकड़ों की संख्या में, हजारों की संख्या में, पत्र आते गये, सभी उत्तर की अपेक्षा करते हुए। कुछ, दयापूर्ण कुछों ने लेखन के व्यय, स्टेशनरी के, डाकव्यय के सम्बंध में भी सोचा। उन्होंने लिखा, *'हमें और अधिक बतायें, मृत्यु के बाद क्या होता है, हमें और अधिक बतायें कि मृत्यु क्या है, हम मरण के सम्बंध में कुछ नहीं समझते आप इसे हमें काफी (ही) न बतायें, आप इसे स्पष्ट (मात्र ही) न करें, (वल्कि) हमें प्रत्येक चीज बतायें।'*

दूसरों ने लिखा, *'हमें धर्मों के सम्बंध में बतायें, हमें बतायें कि क्या हमें इस जीवन के बाद आशा है, यद्यपि हम कैथोलिक नहीं हैं।'* फिर भी, दूसरों ने लिखा, *'मुझे एक मंत्र दें, ताकि मैं आयरलैंड की घुड़दौड़ की बाजी जीत सकूँ और यदि मैं आयरलैड की घुड़दौड़ की बाजी में दस लाख डॉलर का पहला इनाम जीत सका, तो मैं आपको दस प्रतिशत दूँगा।'*

और दूसरे व्यक्ति ने लिखा, *'मैं न्यू मैक्सिको में रहता हूँ, वहॉ एक गुमी हुई खदान है। मुझे बतायें, ये गुमी हुई खदान कहॉ है–आप सूक्ष्मशरीर से जा सकते हैं और इसको खोज सकते हैं, और मुझे दिला सकते हैं, मैं आपकी सेवाओं के लिए आपको कुछ धन भेंट में दूंगा।'*

लोगों ने लिखा कि मैं उन्हें कुछ अधिक बताऊँ, उन्हें सब कुछ बताऊँ, उन्हें सब कुछ से भी अधिक बताऊँ, ताकि वे जानें कि किसका विश्वास करना है।

श्रीमती शीलगाह राउस (Mrs. Sheelgah Rouse), कठोरतापूर्वक, अपनी मेज पर बैठी, उसका सुनहरी किनारी वाला चश्मा, उसकी नाक के सेतु के ऊपर टिका था और वह अक्सर एक उंगली उस पर रखती और उसे वापस अपने स्थान पर ठेल देती।

उसने, अपने दरवाजे में से गुजरती हुई पहियेदार कुर्सी की ओर देखा और कुछ कुछ चुभते हुए कहा, *'आपने, लोगों को ये बताते हुए कि वह किस पर विश्वास कर सकते हैं, केवल सोलह पुस्तकें लिखी हैं, एक और क्यों नहीं लिखते, सत्रहवीं? इन सभी पत्रों को, जो आपके पास हैं, देखें, जिनमें आप से, उन्हें ये बताते हुए कि वे किस पर विश्वास कर सकते हैं, दूसरी पुस्तक लिखने के लिए कहा गया है–मै इसे आपके लिए टाइप करूँगी!'* उसने उल्लसित होते हुए अपनी बात समाप्त की।

कुमारी टाडालिंका (Miss Tadalinka) और कुमारी क्लियोपाट्रा रंपा (Miss Cleopatra Rampa), गलियारे में, पहिएदार कुर्सी के सामने बैठीं और संतुष्टिपूर्वक मुस्कराईं। कुमारी टैडी (Miss Taddy) को, जब उसने गम्भीर विचारों में, एक और पुस्तक के निहितार्थ के सम्बंध में केन्द्रित किया, अपने बायें पैर से अपना बायॉ कान खुजाना पड़ा। संतुष्ट होकर, वह अपने पैरों पर उठी और ठुमकती हुई, वापस अपनी पसंदीदा कुर्सी पर चली गई।

मामा सान रा'व रंपा (Mama San Ra'ab Rampa) ने, अपने चेहरे पर एक पीली सी आश्चर्यपूर्ण अभिव्यंजना के साथ देखा। शायद वह, बिना एक भी शब्द के–शब्दविहीन हो गई थी!–उन्होंने मुझे *'मामा सान रा'व रंपा, पूसी बिल्ली,'* शीर्षक के साथ, नीले कार्ड का एक टुकड़ा दिया, और तब पेज के केन्द्र में, मैने अपना खुद का उदास चेहरा देखा, मानो कि मैं बहुत लंबे समय से मरता रहा था, और काफी देर बाद खोदकर निकाला गया हूँ। और उसके नीचे, सबसे खराब दिखने वाला, सियामी बिल्ली का चेहरा, जो मैंने कभी देखा। ठीक है, इसने कुछ समय के लिए मुझे अवाक् बना दिया, परंतु मैं सोचता हूँ कि किसी की पहली पुस्तक का, पहला कवर देखना अच्छा होता हैं। मैं पक्षपातयुक्त (biased) हूँ, क्योंकि ये मेरी सत्रहवीं है, और किसी भी अर्थ में, इसमें विलक्षणता नहीं है। परंतु, *'मामा सान,'* मैंने कहा, *'दूसरी पुस्तक के सम्बंध में आप क्या सोचती हैं? क्या ये बिस्तर में पड़े हुए, एक मूर्ख पुतले की तरह, मेरे द्वारा पूर्ण प्रयास करने लायक है, या क्या मैं इसे छोड़ दूँगा?'*

अपनी पहली पुस्तक के आवरण के प्रभाव के बाद, मामा सान ने अपनी आखों को लाक्षणिक रूप से सीधा किया और कहा, *'ओ हॉ, वास्तव में, आपको पुस्तक लिखनी चाहिए। मैं अपनी दूसरी लिखने का विचार कर रही हूँ!'*

कुमारी क्लियो रंपा और कुमारी टैडी रंपा ने, आवरण को अच्छी तरह सूंघा और अपनी पूँछों को हवा में हिलाते हुए दूर चली गईं। स्पष्टरूप से ये उनका अनुमोदन था।

ठीक तभी, टेलीफोन की घंटी बजी और ये संयुक्त राज्य अमेरिका (यू.एस.ए.) के अनेक जलों के संगम पर, दूर बंजर इलाके में से, जॉन हेंडरसन (John Handerson) थे। उन्होंने कहा, *'हॉय बॉस, मैं आपकी प्रशंसा में, कुछ बहुत अच्छे लेख पढ़ता रहा हूँ। एक पत्रिका, जो मैने आपको भेजी है, में एक अच्छा लेख है।'*

'ठीक है, जॉन,' मैने उत्तर दिया, *'मैं दो हूटों की या मात्र एक हूट की भी, जो पत्रिकायें या समाचार पत्र मेरे सम्बंध में लिखते हैं, परवाह नहीं कर सका। मैं उन्हें नहीं पढ़ता, भले ही वह अच्छे या बुरे लेख हों। परंतु आप दूसरी पुस्तक के सम्बंध में क्या सोचते हैं, एक सत्रहवीं?'*

'जी, बॉस,' जॉन एच. ने कहा, *'यह वह है, जिसे सुनने की मैं प्रतीक्षा करता रहा था! ये समय है कि आपने दूसरी पुस्तक लिखें, हर आदमी उत्सुक है, और मैं समझता हूँ कि पुस्तक विक्रेताओं के पास अनेक पूछताछ आ रहीं हैं।'*

ठीक है, यह एक तगड़ा झटका था; हर एक गिरोह (gang) बनाता हुआ दिखाई दिया, हर एक दूसरी पुस्तक को चाहता हुआ दिखा। परंतु एक गरीब बेचारा क्या कर सकता है, जब वह अपने जीवन के अंत को पहुॅच रहा हो और उससे पूरी तरह सहानभूतिहीन देश के द्वारा, एक भयंकर कर की मॉग की जा रही हो—और घर की ज्वालाओं को जलाये रखने के लिए कुछ किया जाना आवश्यक है, या आयकर के गीदड़ों को सामने के दरवाजे पर बनाये रखना।

एक चीज, जिसके बारे में, मैं कड़वा अनुभव करता हूँ—(वह है) आयकर। मैं बहुत अपंग हूँ और मेरा अधिकांश समय बिस्तर पर बीतता है। मैं देश के ऊपर भार नहीं हूँ परंतु मैं बिना किसी कटौती के, एक भ्रष्ट कर को देता हूँ क्योंकि, मैं घर से काम करने वाला एक लेखक हूँ। और फिर भी, यहॉ तेल कंपनियों में से कुछ, कोई भी कर, बिल्कुल अदा नहीं करतीं क्योंकि उनमें से कुछ, पूरी तरह से मिथिकीय 'शोधकार्यों' में व्यस्त हैं और अपने आप में, कर से मुक्त हैं और तब मैं सभ्यतावादी पागलों में से कुछ की सोचता हूँ, जिन्होंने स्वयं उनको, उनके सम्बंधियों और ऊँचे वेतन पाने वाले उनके मित्रों को भुगतान करते हुए, अपना एक अलाभकारी संगठन (non-profit organisation) बना रखा है, परंतु वे कोई कर नहीं देते, क्योंकि वे, अलाभकारी संगठन के रूप में पंजीकृत हैं।

इसलिए ये घटा कि मेरे लिए सत्रहवीं पुस्तक को अनिच्छापूर्वक लिखना आवश्यक था, इसलिए सलाहों की आमराय, पत्र के पत्र देखने के बाद, कि इसका शीर्षक 'मैं विश्वास करता हूँ' होना चाहिए।

ये पुस्तक, जन्म के पहले जीवन (life before birth), पृथ्वी पर जीवन (life on earth), और पृथ्वी से गुजरने (passing from earth) और उसके परे के जीवन (life beyonds) में वापस लौटने के बारे में बतायेगी। मैंने इसका शीर्षक *'मैं विश्वास करता हूँ'* रखा है, परंतु ये पूरी तरह गलत है; ये विश्वास का प्रश्न नहीं है, ये ज्ञान है। मैं जिसके सम्बंध में लिखता हूँ, उस हर चीज को कर सकता हूँ। मैं सूक्ष्मशरीरी यात्रा पर वैसे ही जा सकता हूँ, जैसे कि कोई दूसरे कमरे में जाता है—ठीक है, कि यह वह है, जो मैं नहीं कर सकता, मैं बैसाखियों और एक पहिए वाली कुर्सी और शेष सबकुछ के बिना, दूसरे कमरे में नहीं जा सकता परंतु सूक्ष्मलोक में किसी को बैसाखियों, पहिएवाली कुर्सी या दवाओं की आवश्यकता नहीं पड़ती। इसलिए जिसके बारे में, मैं इस पुस्तक में लिखता हूँ वह सत्य है। मैं राय नहीं बता रहा हूँ, बल्कि चीजों को जैसी वे वास्तव में हैं, वैसी ही बता रहा हूँ।

अब यह समय है इस पर नीचे उतरने का— अध्याय दो पर

अध्याय–दो

अलगरनन रेगीनाल्ड सेंट क्लेयर डि बॉन्कर्स (ALGERNON REGINALD ST. CLAIR DE BONKERS), एक निस्तेज चरचराहट के साथ, स्नानगृह के फर्श पर गिर पड़ा। अलगरनन, फर्श पर पड़ा था और उनसे बुदबुदाने और कुनमुनाने की आवाजें आईं। एक नौकरानी (chamcermaid), जो बाहर गलियारे में, गुजर रही थी, अपने रास्तों पर रुकी और उसने अपनी रीढ़ पर, भय की बर्फीली उंगलियों को ऊपर नीचे रेंगते हुए अनुभव किया। थरथराहट के साथ, उसने दरवाजे में से पुकारा, *'श्रीमान् अलगरनन, क्या आप एकदम ठीक हैं? क्या आप एकदम ठीक हैं, श्रीमान् अलगरनन?'* कोई उत्तर न पाकर, उसने दरवाजे के हैंडल को घुमा दिया और स्नानगृह में प्रविष्ट हुई।

तत्काल ही, उसकी गर्दन पर, उसके रोंगटे खड़े हो गये और उसने जबरदस्त सांस खींचते हुए, अपनी जीवन यात्रा (carrier) की अद्भुत चीख को निकल जाने दिया और जैसे ही उसने ऐसा किया, पैमाने पर ऊँची, और ऊँची, आवाज में, वह लगातार चीखती रही। पूरी तरह से सांस के बिना, वह एकदम बेहोशी की अवस्था में, अलगरनन के बगल से, फर्श पर गिर गई।

वहॉ उत्तेजित ध्वनियों की आवाजें आईं। सीढियों के ऊपर, और गलियारे के साथ साथ, धमाकेदार कदमों की आवाजें आईं। पहले आने वाले, ऐसे सहसापन के साथ रुक गये कि उन्होंने गलीचे को उसके बंधन से फाड़ दिया, तब एक साथ जमा होकर, मानोकि एक दूसरे को विश्वास दिलाते हुए, उन्होंने खुले हुए दरवाजे में से झॉका।

अलगरनन रेगीनाल्ड सेंट क्लेयर डी बॉन्कर, अपने गले के एक कटाव में से खून उंडेलते हुए, और अपने बगल में अचेत पड़ी नौकरानी के शरीर में खून शोषित कराते हुए, अपने स्नानगृह के फर्श पर औंधे मुँह पड़ा था। अचानक ही उस (नौकरानी) ने लंबी हाफनी भरी, फड़की, और उसने अपनी ऑखों को खोला। कुछ सैकंडों के लिए, उसने अपने नीचे के खून के तालाब की ओर देखा, थरथराई और तब एक भयानक चीख, जिसने आसपास के लोगों की नसों को झंकार दिया, के साथ फिर से, अपनी बेहोशी में गिर पड़ी, इस बार उसका चेहरा, अपने नियोक्ता (employer) के कथित नीले खून में पूरी तरह डूबा हुआ था।

अलगरनन जमीन पर लेटा। उसने महसूस किया कि हर चीज घूम रही थी। हर जगह, कल्पनातीतरूप से, अवास्तविक थी। उसने (अलगरनन रेगीनाल्ड सेंट क्लेयर डी बॉन्कर, ने) शोकगीत की फीकी पड़ती एक आवाज सुनी, जो, जैसे ही खून, तेजी से, उसके अंगभंग किये हुए शरीर से बाहर निकला, धीमेधीमे कम बुलबुलेदार हो गयी।

अलगरनन को अपने अंदर की कार्य प्रणाली बहुत अजीब लगी। तब एक भयानक चीख हुई, और इस क्रिया में, नौकरानी उसके शरीर से टकराते हुए, उसके बगल से गिर गई। इस अचानक झटके के साथ, अलगरनन को अपने शरीर से ठीक बाहर धकेल दिया गया और वह डोरी से बंधे गुब्बारे की तरह, ऊपर की ओर उछला।

कुछ सैकंडों के लिए उसने आसपास देखा, अनोखे, अनजाने दृष्टिकोण पर आनंदित हुआ। वह मुँह नीचे किए हुए (औंधे मुँह), छत (ceiling) से नीचे की ओर तैरता हुआ दिखाई दिया, और तब, जैसे ही उसने अपने नीचे, दो शरीरों पर नजर डाली, उसने एक रजततंतु (silver cord) को, अपने *'नये'* शरीर से, चित्त पड़े हुए पुराने शरीर तक, विस्तारित होते हुए देखा। जैसे ही उसने ध्यान से देखा, तंतु गहरी स्लेटी हो गई, जहॉ वह जमीन पर पड़े शरीर को जोड़ती थी, घिनौने धब्बे प्रकट हुए, और तब वह गर्भनाल (umbical cord) की तरह मुरझाई और टूट कर गिर गई। परंतु, अलगरनन वहीं रुका रहा, मानो कि छत से चिपका हुआ हो। उसने, ये न अनुभव करते हुए कि वह अपने मृतशरीर के बाहर, और सूक्ष्मतल में था, मदद के लिए जोर से पुकारें लगाईं। वह, अपने पैतृक घर की सजावट वाली छत के विरुद्ध, नीचे की ओर चिपका हुआ, वहॉ ठहरा रहा। वह डरे हुए चेहरों से, जो स्नानगृह में झॉक रहे थे,

आसपास देखने के लिए असामान्य समय ले रहे थे, और तब दूसरों के द्वारा विस्थापित कर दिये जाने के लिए, वहॉ से गायब हो रहे थे, वहॉ अदृश्य रूप से, रुका रहा। उसने, नौकरानी में चेतना को वापस आते हुए देखा, उसने खून, जिसमें वह गिरी थी, पर नजर गढ़ाई, चीखी और फिर से बेहोश हो गई।

खानसामे (butler) की एक सोची–समझी आवाज ने खामोशी को तोड़ा। *'अब, अब,'* उसने कहा, *'हम हड़बड़ न करें। तुम, बर्ट (Bert), पैदल चलने वाले नौकर (footman) की ओर इशारा करते हुए (उसने कहा), जाओ और पुलिस को बुलाकर लाओ, डॉक्टर मेकिनतोश (Dr. Mackintosh) को बुलाओ, और मैं सोचता हूँ कि तुमको, इसके साथ, किसी जिम्मेदार आदमी को भी बुलाना चाहिए।'* इस भाषण को समाप्त करते हुए, उसने, दम्भपूर्वक, पैदल चलने वाले नौकर को इशारा किया और वह दो लाशों की ओर मुड़ा। अपने पैंट को ऊपर खींचते हुए, ताकि वे उसके घुटनों पर सिलवटें न डालें, वह नीचे की ओर झपटा और चूंकि उसका हाथ खून से भिड़ गया था, उसने अत्यंत सावधानीपूर्वक, अत्यंत खराब तरीके से चीखते हुए, नौकरानी की कलाई को पकड़ा। तेजी से उसने अपने हाथ को हटाया और नौकरानी के स्कर्ट के ऊपर खून को पोंछा। तब बेचारी नौकरानी को, एक टॉग से खींचते हुए–एक टखने से खींचते हुए–उसने उसे स्नानगृह से एकदम बाहर खींच लिया। चूंकि बेचारी नौकरानी का स्कर्ट, ऊपर उसकी कमर तक, और उसके कंधों तक लिपट गया था, वहॉ कुछ दबी हुई हॅसी हुई, मुस्कानें, जो खानसामे की तीखी नजर की तेजी से दबा दीं गईं।

गृहरक्षक (housekeeper) ने आगे कदम बढ़ाये और (वह) गम्भीरतापूर्वक नीचे झुका, उसने शालीनता के हित में, नौकरानी के घाघरे (skirt) को उसके आसपास पुनः व्यवस्थित किया। तब दो पुरुष सेवकों ने नौकरानी को उठाया, और उसको, उसके खून भरे कपड़ों के साथ घसीटते हुए, नीचे गलियारे में (ले जाने की) जल्दी की।

खानसामा स्नानगृह में ओर थोड़ा आराम से हुआ और उसने सावधानीपूर्वक आसपास देखा। *'आह, हॉ,'* उसने कहा, *'यहॉ वह औजार है, जिसके साथ अलगरनन ने अपना जीवन समाप्त किया था।'* उसने खून से सने खुले उस्तरे की ओर इशारा किया, जो उचट कर, स्नानगृह के फर्श पर बगल से गिर गया था।

जब तक बाहर दौड़ते हुए घोड़ों की टापों की आवाज नहीं सुनी गयी, वह स्नानगृह के दरवाजे में, पत्थर के एक खम्बे की तरह खड़ा रहा। तब वहॉ पैदल चलने पाला नौकर आया, जिसने कहा, *'यहॉ पुलिस आ गई है, और श्रीमान् हैरिस (Mr. Harriss) और डॉक्टर अपने रास्ते में हैं।'*

हॉल के पथ पर, दरवाजे के बाहर, उत्तेजित आवाजें थीं और तब एक अत्यधिक भारी, अत्यधिक राजशाही चाल जीने से ऊपर और गलियारे में नीचे आयी।

'ठीक है, ठीक है, और हमें यहॉ क्या है?' एक कर्कश आवाज ने कहा, *'मैं समझता हूँ, यहॉ एक आत्महत्या हुई है परंतु क्या आप सुनिश्चित हैं कि ये एक हत्या नहीं है?'* नीली वर्दी में, एक पुलिस वाले वक्ता ने, स्वाभाविकरूप से, अपने वक्ष की जेब में, हमेशा तैयार अपनी कॉपी को पकड़ते हुए, अपने सिर को स्नानगृह में घुसाया। एक पेन्सिल के ठूॅठ को लेते हुए, उसने उसे चाटा और तब सावधानी से कॉपी को खोला। तब वहॉ तेजी से दुल्लती भरते हुए घोड़े के टापों की आवाज आई और दरवाजे पर अधिक हलचल, और उसके बाद, सीढ़ियों पर, काफी तेज कदमों की, काफी हल्की आवाजें हुई। एक इकहरे बदन वाला, नौजवान आदमी, एक काला बक्सा हाथ में लिए हुए आया : *'आह, श्रीमान् हेरिस,'* नौजवान आदमी, जो वास्तव में डॉक्टर था, ने कहा, *'मैं समझता हूँ यहॉ आपको कुछ बीमारी है, हो सकती है, कुछ दुखांत घटना, एह?*

'अब, अब डॉक्टर,' लाल चेहरे वाले पुलिसवाले ने कहा, *'हमने अभी तक अपनी जॉच समाप्त नहीं की है। हमें मृत्यु का कारण पता लगाना चाहिये–'*

'परंतु, सार्जेंट,' डॉक्टर ने कहा, *'क्या आप निश्चिंत हैं कि वह वास्तव में मर चुका है? क्या हमें, इसे पहले देखना नहीं चाहिए?'*

निःशब्दरूप से, सार्जेंट ने लाश की ओर, और इस तथ्य की ओर कि, सिर गर्दन से लगभग पूर्णतः कट गया था, इशारा किया। घाव की दरार, अब चौड़ी हो गयी थी, और पूरा खून, शरीर के बाहर बह चुका था और स्नानगृह के पूरे फर्श पर, और गलियारे में पूरे गलीचे पर, रिसा पड़ा था। सार्जेंट ने कहा, *'अब, श्रीमान् हेरिस, हमें अपना हिसाबकिताब जानने दें, ये किसने किया?'*

रसोइये ने अपने उदास होठों के ऊपर जीभ फिराई, क्योंकि जिस ढंग से चीजें घूम रहीं थीं, वह बिल्कुल खुश नहीं था। उसने महसूस किया, मानो, उसे हत्या का दोषी माना जा रहा था, परंतु सबसे अधिक मंदबुद्धि वाला भी देख सकता था कि, शरीर के ऊपर चोट के निशान, स्वतः पहुँचाये गये थे। परंतु वह जानता था कि उसे कानून के साथ रहना है, इसलिए उसने (कहना) शुरू किया :

*'जैसा आप अच्छी तरह जानते हैं, कि मेरा नाम जार्ज हेरिस (George Harris) है। मैं इस घर का प्रमुख रसोईया हूँ। कर्मचारी (staff) और मैं, नौकरानी की आवाज सुनकर चौंके–ऐलिस व्हाइट (Alice White) –चीखते हुए, उसकी आवाज ऊँची और ऊँची होती हुई जबतक कि हमने ये नहीं सोचा कि तनाव के कारण हमारी नसें फट जायेंगी और तब वहॉ भीड़ इकट्ठी हो गई और इससे अधिक कुछ नहीं। इसलिए हम यहॉ दौड़े और हमने पाया–'*वह नाटकीय रूप से रुका, और तब अपने हाथों को स्नानगृह की दिशा में धकेला और कहा, *'ये!'*

सार्जेंट *(sergeant)* अपने आप में बड़बड़ाया और उसने अपनी मूछों को चबाया, एक लंबे झुकाव का मामला, जिसकी झलकी उसके मुँह के हर ओर थी। तब उसने कहा, *'इस ऐलिस व्हाइट (Alice White) को पेश करो। मैं अब उससे पूछताछ करूँगा।'*

गृहरक्षक (housekeeper), हड़बड़ाता हुआ, ये कहता हुआ, गलियारे में से नीचे आया, *'ओह नहीं, तुम नहीं करोगे, सार्जेंट, हम उसे नहला रहे हैं, वह खून मे लथपथ है, और उसे मिर्गी का दौरा पड़ा है। बेचारी आत्मा, मैं कैसे भी, इस पर आश्चर्य नहीं करता। अब क्या आप नहीं सोचते कि आप यहॉ हमें धमकाते हुए आ सकते हैं, क्योंकि हमने ये चीज नहीं की, और मैं इस सब चीज को, हर बार, जब आप मेरे पिछवाड़े के रसोईघर में, रात को अच्छा खाना खाने के लिए आते हैं, आपको याद दिलाऊँगा!*

डॉक्टर बहुत सतर्कतापूर्वक आगे की ओर बढ़ा, और उसने कहा, *'ठीक है, अच्छा हो, हम लाश पर एक नजर डाल लें, हम काफी समय बरबाद करते हुए, और प्रक्रिया में कहीं भी नहीं पहुँचते हुए, दिखते हैं।'* ऐसा कहते हुए, उसने अपने कदम आगे बढ़ाये और सावधानी से उसके खिंचे हुए कफों में से, कड़ियों (cuff links) को निकाला और उन्हें अपनी जेब में रखा और जाकेट को खानसामे की देखरेख में देते हुए, अपनी आस्तीनों को ऊपर चढ़ाया।

आगे की ओर नीचे झुकते हुए, डॉक्टर ने, सावधानीपूर्वक, बिना उसे छुये हुए, लाश की जॉच की। तब, उसने अपने पैर की तेज गति के साथ, जबतक कि उसका चेहरा, उसकी घूरती हुई ऑखें, ऊपर की ओर टकटकी लगाये हुए, ठीक ऊपर को नहीं हो गया, लाश को पलटा।

हस्ती, जो श्रीमान् अलगरनन रही थी, मोहित होकर, नीचे की ओर, इस सब को देख रही थी। उसे इस सम्बंध में बहुत अजीब लगा, क्षण भर के लिए, वह नहीं समझ सका कि क्या हुआ है, परंतु किसी शक्ति ने, उसको छत से उल्टा लटकाया हुआ था, जीवित अलगरनन, नीचे पड़े हुए मृत अलगरनन की चिकनी, खून भरी ऑखों को देख रहा था। वह इस अनोखे अनुभव पर, ध्यान में तन्मय होकर, जड़वत्, उल्टा, छत के विरुद्ध टिका हुआ था। उसका ध्यान, मिस्टर हेरिस के शब्दों से जड़ा हुआ था।

'हॉ, बेचारे श्रीमान् अलगरनन, बोयर युद्ध (Boer war) में, कप्तान के नीचे, एक अधीनस्थ

अधिकारी (subaltern) थे। वह बोयरों के खिलाफ बहुत अच्छी तरह लड़े, और दुर्भाग्यवश, वह एक सर्वाधिक मर्मस्थान पर, जिसको मैं उपस्थित महिलाओं के सामने अधिक विस्तार से वर्णन नहीं कर सकता, बुरी तरह घायल हुए और तब बाद में, आह–कर पाने की असर्थता ने, उनको बारबार अवसाद (depression) में गिरा दिया था और हमने और दूसरों ने, अनेक अवसरों पर उन्हें धमकी देते हुए सुना है कि बिना उसकी आवश्यकताओं के, जीवन जीने लायक नहीं था, और उसने इस सब को समाप्त करने की धमकी दी थी'।

गृहरक्षक ने तरस (commiseration) की एक सिसकी (sniff) दी, और दूसरी नौकरानी सहानभूति में सिसकी। पहले नौकर ने खामोशी से हामी भरी कि वह भी ऐसी चीजों को सुन चुका था। तब डॉक्टर ने टांड़ों (racks) में इतनी अच्छी तरह से व्यवस्थित की हुई सभी तौलियों पर नजर टिकाई, और तीव्र हलचल के साथ, उन सब को, स्नानगृह के फर्श पर बिखेर दिया। एक पैर से उसने खून, जो अभी भी थक्का बनना (coagulation) प्रारंभ कर रहा था, को पोंछा। तब स्नानगृह की, स्नान पटरी (bath rail) पर, अपनी ऑखों को घुमाते हुए, उसने एक काफी मोटी चीज, एक स्नान चटाई (bath mat) को वहॉ देखा। उसने इसे लाश के बगल से फर्श पर रखा और घुटनों के बल बैठ गया। लकड़ी की छड़ वाले, अपने स्टेथैस्कोप (stethoscope) को उठाते हुए, उसने लाश के कपड़ों के बटनों को खोला और लकड़ी के बटन वाले सिरे को छाती पर रखा और अपने कान को, उसके दूसरे सिरे पर लकड़ी में बनी खोह पर लगाया। हर एक शांत था, हर एक अपनी सॉस रोके हुए था, और तब अंत में, डॉक्टर ने अपना सिर, नकारात्मक रूप से, हिलाया, *'नहीं, जीवन बुझ चुका है, वह मर गया है,'* इसके साथ, उसने अपने लकड़ी के स्टेथैस्कोप को बंदकर के हटाया, उसे अपनी पैंट के अन्दर एक खास जेब में रखा और तब गृहरक्षक द्वारा दिये गये कपडों पर, अपने हाथों को पोंछते हुए उठ खड़ा हुआ।

सार्जेंट ने उस्तरे की तरफ संकेत किया और कहा, *'डॉक्टर, क्या वही वह उपकरण है, जिसने इस मृतक के जीवन को समाप्त किया,?'* डॉक्टर ने नीचे देखा, और उस्तरे को अपने पैर से हटाया, और तब उसे कपड़े की तहों के माध्यम से पकड़ कर उठाया। *'हॉ,'* उसने कहा, *'इसने उसको जुगुलर (jugular)[2] से होकर, और केरोटिड (carotid)[3] तक, और केरोटिड पर काट दिया है। मृत्यु लगभग तत्काल हुई होगी। मेरा अनुमान है कि मरने में, लगभग सात मिनट लगे होंगे।'*

सार्जेंट मर्डोक (Murdock), अपनी पेंसिल को चाटते हुए और काफी संख्या में अपनी किताब में टिप्पणियॉ लिखते हुए, बहुत व्यस्त था। तब वहॉ घोड़ों द्वारा, एक गाड़ी खींचे जाने की, एक भारी भरकम कुलबुलाहट हुई। फिर दरवाजे की घंटी, रसोई में गरजी। फिर हॉल में आवाजें हुई और तब एक फुर्तीला, छोटा आदमी, सीढ़ियों पर ऊपर आया, रिवाज के अनुसार, खानसामे को, डॉक्टर को, और उसी क्रम में सार्जेंट को, झुक कर अभिवादन किया। *'आह क्या लाश मेरे लिए तैयार है?'* उसने पूछा। *'मुझे यहॉ आने के लिए, और एक लाश, आत्महत्या वाली लाश, को ले जाने के लिए कहा गया था।'*

सार्जेंट ने डॉक्टर को देखा और डॉक्टर ने सार्जेंट को देखा, और तब दोनों ने श्रीमान् हेरिस को देखा। *'श्रीमान् हेरिस क्या आपको इस सम्बंध में और कुछ कहना है, श्रीमान् हेरिस? क्या आप जानते हैं कि मृतक के कोई दूसरे रिश्तेदार आ रहे हैं?'* सार्जेंट ने पूछा।

'नहीं, सार्जेंट, उनके पास इतनी जल्दी यहॉ आने के लिए समय नहीं होगा। मेरा विश्वास है कि

---

2 अनुवादक की टिप्पिणी : Jugular शब्द का आशय, गले या गर्दन से होता है, ग्रीवा शिरायें (jugular veins), गर्दन में होतीं हैं, जो ऑक्सीजन रहित खून (deoxygenised) को सिर, मस्तिष्क, चेहरे और गर्दन से लाकर, उसे हृदय की ओर ले जातीं हैं। बाह्य ग्रीवा शिरायें (external jugular veins) अधिकांश खून को, खोपड़ी के बाहरी भाग, और चेहरे के अंदरूनी भागों से, जबकि आंतरिक ग्रीवा शिरायें (internal jugular veins), मस्तिष्क, चेहरे के बाहरी भाग तथा गर्दन से प्राप्त करतीं हैं।

3 अनुवादक की टिप्पिणी : ग्रीवा धमनी (carotid) ऑक्सीजन से परिपूर्ण (oxygen rich) खून को हृदय से लाकर सिर, मस्तिष्क, और चेहरे तक पहुँचातीं हैं, ये गर्दन के दोनों ओर होतीं हैं। आप इन्हें अपनी श्वास नली के ऊपर, हल्के से अपनी उंगलियों को रख कर अनुभव कर सकते हैं।

सबसे अधिक नजदीकी रिश्तेदार, एक तेज घोड़े की यात्रा की लगभग आधे घंटे की दूरी पर रहता है, और मैंने पहले ही एक संदेशवाहक भेज दिया है। मैं सोचता हूँ कि गृहरक्षक को, उनके अपने दर्शन कक्ष (parlour) *में, लाश को ले जाने देना ठीक होगा, क्योंकि, स्पष्टरूप से, हम रिश्तेदारों के द्वारा, श्रीमान् अलगरनन को, ऐसी खेदजनक स्थिति में देखे जाना नहीं चाहेंगे, क्या हम चाह सकते हैं?'*

सार्जेंट ने डॉक्टर को देखा और डॉक्टर ने सार्जेंट को देखा और तब उन्होंने एकसाथ कहा,' हॉ।' इसलिए कानून के प्रतिनिधि के रूप में, सार्जेंट ने कहा, 'ठीक है, लाश को ले जाओ, परंतु हमें, जितना जल्दी संभव हो सके, चौकी पर, एक पूरी रिपोर्ट देना। अधीक्षक (superintendent) इसे सुबह से पहले चाहेगा।' डॉक्टर ने कहा मुझे मृत्यु समीक्षक (Coronar) को इसकी सूचना देनी पड़ेगी, संभव है कि वह इसका शव परीक्षण (autopsy) कराना चाहे।

डॉक्टर और सार्जेंट दूर चले गये। गृहरक्षक ने, खानसामे को, धीमे से, पैर से ठोकर लगाई, पैदल नौकर, गृहरक्षक और नौकरानियॉ, और तब, उसके दो आदमी, एक हल्की मंजूषा, (casket) लिए हुए, सीढियों पर आये। साथ मिलकर, उन्होंने मंजूषा को स्नानगृह के बाहर फर्श पर रखा और उसके ढक्कन को हटाया। इसके अंदर लगभग एक चौथाई, लकड़ी का बुरादा भरा हुआ था। तब वे स्नानगृह में गये और लाश को उठाया और उसे बिना किसी समारोह के, ढक्कन को सावधानीपूर्वक, वापस अपनी स्थिति में रखते हुए, मंजूषा में, बुरादे पर पटक दिया।

यंत्रवत् (perfunctorily), उन्होंने अपने हाथों को नल के नीचे धोया और कोइ साफ तौलिया न पाते हुए, उन्होंने अपने टपकते हुए हाथों को परदे से पोंछा। तब वे, अधजमे खून को पूरे गलियारे के गलीचे पर बिखेरते हुए, गलियारे में बाहर गये।

अनेक भुनभुनाहटों के साथ, उन्होंने मंजूषा को उठाया और सीढ़ियों की ओर आगे बढ़े। 'एक हाथ यहॉ लगाओ, तुम, आदमी,' गृहरक्षक ने दो पैदल नौकरों से कहा, 'निचले सिरों को पकड़ो, हमें उसे नीचे नहीं गिरने देना चाहिए। दो आदमी तेजी से आगे बढ़े और सावधानीपूर्वक, आसानी से, मंजूषा को सीढ़ियों से नीचे और खुले में लाया गया और काले ढक्कन वाली गाड़ी में खिसका दिया गया। गृहरक्षक अंदर गया, दो सहायक डिब्बे पर बैठे, लगामें पकड़ीं और घोड़ों को आराम की चाल से, धीमे धीमे चला दिया गया।

सार्जेंट मर्डोक, चिंतामग्न होकर (ponderously), दोबारा ऊपर की सीढियों पर चला और स्नानगृह में गया। एक कपड़े से उसने खुले हुए उस्तरे को पकड़ा और एक तरफ रख दिया। तब उसने ये देखने के लिए, कि क्या साक्ष्य के लिए उपयोगी कोई वस्तु मिल सकती थी, उसने निरीक्षण पूरा किया।

श्रीमान् अलगरनन की छत से चिपकी हुई आत्मा ने, अत्यधिक मोहित होकर नीचे देखा। तब किसी कारणवश, सार्जेंट मर्डोक ने अपनी ऑखें छत की ओर घुमाईं, भय की एक चीत्कार निकाली, और कॉय–कॉय (honk) करते हुए, नीचे गिरा, जिसने टायलेट की सीट को चटका दिया। इसके साथ श्रीमान् अलगरनन की आत्मा गायब हो गई और उसने, केवल एक अनजान भौं भौं की आवाज के प्रति सावधान होते हुए, एक खराब चक्कर खाते हुए, और मोमबत्ती के दीपक, जिसको अत्यधिक तेजी से हटा दिया गया हो और एक कमरे बिना देखरेख के छोड़ दिया गया हो, से निकले हुए धुऍं की भॉति घूमती हुई कालिमा, के बादलों को देखते हुए, उसने स्वयं अपनी चेतना को खो दिया।

और इसप्रकार अंधेरा उस पर गिरा, और श्रीमान् अलगरनन की आत्मा ने, कार्यवाही में, कम से कम थोड़े समय के लिए, आगे कोई रुचि नहीं ली।

अलगरनन रेगीनाल्ड सेंट क्लेयर द बॉन्कर्स ने, बैचेनी, जो गहरी बेहोशी की दवा में नींद (drugged sleep) दिखाई देती थी, के साथ, खलबली मचाई। उसकी आधी डूबी हुई चेतना में, अजीब विचार, भीड़ लगाकर खड़े हो गए। वहॉ स्वर्गिक (heavenly) संगीत की बौछारें आईं, उसके बाद

नारकीय (hellish) आवाजों का अत्यधिक प्रवाह हुआ। अलगरनन चिड़चिड़ेपन से कॉपा और अधिक चेतना के एक समय में, वह हिला और अपने आश्चर्य के लिए उसने पाया कि उसकी हलचलें धीमी, निष्क्रिय थीं, मानो कि वह चिपचिपे दलिये में डुबाया गया था।

अलगरनन रेगीनाल्ड सेंट क्लेयर द बॉन्कर्स, एक प्रारम्भ के साथ जगा और उसने सीधे बैठने का प्रयास किया परन्तु उसने अपनी हलचलों को संकीर्ण हुआ पाया, वह केवल मंद गति से हिलडुल सकता था। भगदड़ मची, और उसने अपनी वेदना में सोटे से पीटने का प्रयास किया परंतु उसने पाया कि उसका हिलना डुलना, मंद, आडंबरी थे, और इसने उसे बहुत कुछ हद तक शांत कर दिया। उसने अपनी ऑखों से, ये देखने के लिए कि क्या वे खुली थी अथवा बंद, क्योंकि वह किसी प्रकाश को नहीं देख सकता था, महसूस किया। इससे कोई फर्क नहीं पड़ा कि उसकी ऑखें खुली थीं या बंद, वहॉ प्रकाश का कोई ज्ञान नहीं था। उसने अपने हाथ, पलंग की बुनावट को महसूस करने के लिए नीचे रखे, परंतु तब वह सदमे में चीखा क्योंकि, उसके नीचे कोई बिस्तर नहीं था, वह लटका हुआ था–मानो–'मछली के तालाब में, चाशनी (syrup) में अटकी हुई मछली की भांति,' उसने स्वयं ही इसे रखा हो।

कुछ समय के लिए, उसने अपनी भुजाओं को, धीमे से, जैसे कि एक तैराक करता है, किसी चीज के विरुद्ध धकेलने का प्रयास करते हुए, ताकि वह कहीं जाने की संतुष्टि पा सके, चलाया। परंतु उसने अपने खुले हुए हाथों और भुजाओं से, और अपने पैरों से दबाव देते हुए, जितने जोर से वह कर सकता था, दबाया, इसलिए 'किसी चीज ने' उसे वापस पकड़ लिया।

अपने आश्चर्य के लिये, स्वयं को निश्वास बनाने के, स्वयं को थका हुआ बनाने के, उसके सभी प्रयास, असफल रहे। इसलिए, भौतिक प्रयास की अनुपयोगिता देखते हुए, वह केवल शांत लेट गया और उसने सोचा।

'मैं कहॉ था?' उसने वापस सोचा। *'ओ हॉ, मुझे याद है, मैंने स्वयं की हत्या करने का निर्णय लिया था, मैंने तय किया था कि अपनी असमर्थता की प्रकृति के कारण, मादा समाज के मुझ दीवाने के लिये, जैसे मैं आगे बढ़ा था, वैसे आगे बढ़ना बेकार था। ये कितना दुर्भाग्यशाली था,'* वह स्वयं में बड़बड़ाया, *'कि मोटे बोयरों (Boers)*[4] *ने उसको वहॉ गोली मारी होगी।'*

कुछ क्षणों के लिए, वह भूतकाल पर विचार करते हुए, दाढ़ी वाले बोयर, जिसने अपनी रायफल उठा ली थी और जानबूझकर, एकदम जानबूझकर, उसे मारने की दृष्टि से नहीं, परंतु एक निश्चित उद्देश्य के साथ, जिसे नर्म शब्दों में लूट कहा जाता है, उससे मर्दानगी लूटते हुए, उस पर निशाना साधा, का विचार करते हुए, वहॉ लेटा। उसने *'प्रिय विकार (Vicar)'* के सम्बंध में सोचा, जिसने कन्या सेविकाओं, जिन्हें अपनी आजीविका कमानी थी, के लिये, अलगरनन के घर की, एक अत्यंत सुरक्षित शरणस्थली के रूप में सिफारिश की थी। उसने अपने पिता के सम्बंध में भी सोचा, जिन्होंने, जबकि नौजवान, स्कूल जाने वाला एक बच्चा था, कहा था, *'ठीक है, अलगरनन मेरे बच्चे, तुम्हें जीवन के तथ्यों को सिखाना होगा, तुम्हें, नौकरानी लड़कियों में से कुछ के ऊपर, जो यहॉ हैं, इसका अभ्यास करना है। साथ खेलने के लिए, तुम उन्हें एकदम अच्छी और उपयोगी पाओगे, परंतु सुनिश्चित हो जाओ कि, तुम चीजों को अत्यधिक गंभीरता से नहीं लेते। 'ये निचली जातियॉ, वहॉ हमारी सुविधाओं के लिए हैं। क्या वे नहीं हैं?'*

'हॉ' उसने सोचा, *'घर के रक्षक ने भी, जब एक विशिष्ट, सुदर्शन नौजवान महिला नौकर काम*

---

4 अनुवादक की टिप्पिणी : बोयर (Boer), 'किसानों के लिये' एक डच और अफ्रीकी शब्द है। जैसा कि दक्षिण अफ्रीका में उपयोग में लाया जाता है। ये अठारहवीं शताब्दी में, दक्षिण अफ्रीका में पूर्वी केप सीमान्त (eastern cape frontiers) के, डच भाषा भाषी, विस्थापितों के वंशजों (decendants) को इंगित करता है। द्वितीय बोयर युद्ध, जिसे बोयर युद्ध (Boer war) भी कहा जाता है, 11 अक्टूबर 1899 को प्रारम्भ होकर 31 मई 1902 को समाप्त हुआ था।

पर लगायी गयी थी, मुस्कान, एक विशिष्ट छोटी सी मुस्कान, मुस्करायी थी। गृहरक्षक ने कहा, 'यहॉ आप पूरी तरह सुरक्षित रहेंगे, प्रिय, मालिक आपको बिलकुल परेशान नहीं करेंगे, आप जानते हैं, वह, क्षेत्र के उन अनेक घोड़ों में से एक, जैसे हैं, जिनको सिखाया गया है। हॉ, आप यहॉ एकदम सुरक्षित रहेंगे,' और गृहरक्षक, एक धूर्त, मंद, दबी सी मुस्कान के साथ मुड़ गया था।

अलगरनन ने, कुछ विस्तार के साथ अपने जीवन की समीक्षा की। गोली का झकझोर देने वाला प्रभाव, और वह कैसे दुगुना हो गया था, और पीड़ा में उसने उल्टियॉ कीं। वह, अभी भी, अपने कानों में, बूढ़े बोयर किसान की कर्कश हॅसी को सुन सकता था, जैसे ही उसने कहा, *'तुम्हारे लिये और अधिक तरलतायें (Gels) नहीं, मेरे बच्चे, हम तुम्हें परिवार के नाम को आगे जारी रखने से रोक देंगे। अब तुम वहॉ, नपुंसकों के रूप में, जिनके सम्बंध में हम सुना करते हैं, उनकी ही तरह होंगे।'*

अलगरनन ने, स्वयं को, इसकी शर्म से हर तरफ गर्म होता पाया, और उसने दीर्घावधि की योजना, आत्महत्या करने की योजना, जो उसने, यह निर्णय करने के बाद बनायी थी, कि वह ऐसी खराब परिस्थितियों में जिंदा नहीं रह सकता था, की याद दिला दी। उसने इसे एकदम असहनीय पाया जब विकार उससे मिलने आया और उसकी बीमारियों के तिरछे संदर्भ दिये, और कहा कि वह औरतों के साथ बैठकों में, और रविवार को शाम को सिलाई वाले सत्रों में, ऐसे सुरक्षित नौजवान की मदद पाकर कितना प्रसन्न हुआ होता, और इसीप्रकार की अन्य बातें, क्योंकि–विकार ने कहा–हम अत्यधिक सावधान नहीं रह सकते, क्या हम रह सकते हैं? *'हमको अपने चर्च के शुभ नाम के प्रति बहस नहीं करनी चाहिए, क्या हमें करनी चाहिए?'*

और तब वहॉ डॉक्टर था, परिवार का पुराना डॉक्टर, डॉक्टर मोर्टीमर डेविस (Dr. Mortimer Davis), जो शाम को अपने घोड़े वैलिंगटन (Wellington) पर सवार हुआ करता था। डॉक्टर डेविस अध्ययन कक्ष (study) में बैठता, और उस (अलगरनन) के साथ, शराब का एक सुखद गिलास पीता, परंतु जब डॉक्टर कहता, *'ठीक है, डॉक्टर अलगरनन मैं सोचता हूँ, मुझे आपकी जॉच करनी चाहिए, हमें ये सुनिश्चित करना है कि आपके अंदर जनाने लक्षण विकसित न हों, क्योंकि जब तक हम सर्वाधिक पराकाष्ठा के साथ, पर्यवेक्षण (supervision) नहीं कर लेते, आप पा सकते हैं कि आपके चेहरे के बाल गिर जायेंगे, और आपके अंदर खॉसी की नकली आवाज (ahem)[5]–मादा स्तन, विकसित होंगे। इन चीजों में से एक, जिसके लिए हमें सबसे अधिक निरीक्षण करने चाहिये, वह है, आपके स्वर की विशिष्टता में परिवर्तन, क्योंकि अब आप कुछ ग्रंथियों को खो चुके हैं और शरीर का रसायनविज्ञान (chemistry) बदल चुका है,'* सुख हमेशा नष्ट हो जाता था। डॉक्टर ने, ये देखने के लिए कि वह इसे कैसे ले रहा था, उसकी ओर पहेली बूझने के अंदाज में (quçzically) कहा, और तब उसने कहा, *'ठीक है, अब ठीक है, मेरा ख्याल है कि मैं शराब का दूसरा गिलास ले सकता हूँ, तुम्हें यहॉ बहुत बढ़िया शराब मिलेगी, तुम्हारे प्रिय पिता, जीवन की विलासिताओं, विशेषरूप से, विलासिताओं के स्त्री पक्ष (distaff), के महान कद्रदान (connoisseur) थे, हे, हे, हे!'*

वेचारे अलगरनन के पास वह सब कुछ था, जिसे वह पा सकता था, जब एक दिन उसने रसोइये को गृहरक्षक के साथ बात करते हुए सुना, *'एक भयानक चीज, तुम जानते हो, सर अलगरनन के साथ कैसे हुई, एक ऐसा जीवंत साहसी युवा, अपनी श्रेणी के लिए ऐसी साख। मैं अच्छी तरह जानता हूँ, जब तुम यहॉ आये, उसके पहले से और जब वह युद्ध में गया, उसके पहले से, वह शिकारी कुत्तों (hounds) पर सवारी किया करता था और उसने इस जिले की बूढ़ी स्त्रियों (matrons) पर अत्यधिक अनुकूल प्रभाव बना रखा था। वे हमेशा, श्रीमान् अलगरनन को पार्टियों में आमंत्रित करतीं, वे हमेशा, एक सर्वाधिक पात्र युवा, और एक योग्य पुत्री, जो अभी बड़ी हुई थी, के वर के रूप में, उसकी*

5 अनुवादक की टिप्पिणी : किसी की निजता में दखल न हो, इसलिये अपनी उपस्थिति बताने के लिये, पूर्वसूचना स्वरूप, जो नकली खंखार या खांसी निकाली जाती है, वह (ahem) कहलाती है।

ओर देखती थीं। परंतु अब–ठीक है, जिले की मातायें उस पर संवेदना (commiseration) के साथ देखती हैं, परंतु कम से कम वे जानती हैं कि जब वह उनकी पुत्रियों के साथ बाहर जाता है, उसे एक कुमारी कन्या संरक्षिका (chaperone) की आवश्यकता नहीं है। एक अत्यंत सुरक्षित नौजवान, वास्तव में, एक अत्यंत सुरक्षित नौजवान।'

'हॉ' अलगरनन ने सोचा, *'वास्तव में एक अत्यंत सुरक्षित नौजवान। मैं आश्चर्यचकित हूँ कि युद्ध क्षेत्र में खून बहाते पड़े हुए, अपनी वर्दी का जॉघियॉ सोखकर लाल होते हुए, और तब और मेरे कपड़ों को काटते हुए, और उन कटे फटे अवशेषों को, जो उसे एक औरत से अलग बनाते थे, एक तीखे चाकू के साथ अंगभंग करने के लिये क्षेत्र में आने वाले शल्य चिकित्सक, मेरे स्थान पर, उन्होंने क्या किया होता। ओह! उसकी पीड़ा। आजकल वह चीज है, जिसे लोग क्लोरोफार्म कहते हैं, जिसे कष्ट से मुक्त कराने वाला, शल्यचिकित्सा की पीड़ा से अवसान कराने वाला, कहा जाता है, परंतु युद्धक्षेत्र में, नहीं, कुछ नहीं, काटने वाले चाकू और किसी के दॉतों के बीच बंदूक की गोली ताकि कोई उस गोली को दांतों से काट सके और किसी को चीखने से रोका जा सके, को छोड़कर कुछ नहीं। और तब वहॉ, इसकी शर्मिंदगी, वंचित होने की शर्मिंदगी–किसी के साथी अधिकारी की स्तब्ध होती हुई नजर और उसी समय, किसी के पीठ पीछे, अश्लील (salacious) कहानियों का उच्चारित किया जाना।'*

'हॉ, इस पर शर्म आनी चाहिए, इस पर शर्म आनी चाहिए। एक पुराने परिवार, डी बॉकर्स परिवार का अंतिम सदस्य, जो नोर्मन (Norman) अतिक्रमण[6] के साथ आया और इग्लैंड के स्वास्थ्यप्रद (salubrous) भाग में आकर बस गया और (जिसने) एक बड़ा जागीरदारी घर (manor house) बनाया और किरायेदारी वाले किसान रखे। अब वह, अपनी पंक्ति का अंतिम व्यक्ति, अपने देश की सेवा में नपुंसक, नपुंसक, और उस पर अपने तीखेपन के साथ हॅसा। और वहॉ ऐसा क्या है जिसके ऊपर हॅसा जाय?' उसने सोचा, *'दूसरों की सेवा में अंगभंग किये गये एक आदमी में ? उसने सोचा कि अब, क्योंकि वह अपने देश के लिए लड़ा था, उसकी पंक्ति अप्रचलन (disuetude) में आ जायेगी।*

अलगरनन वहॉ पड़ा था, न तो हवा में, और न ही जमीन पर। वह निश्चय नहीं कर सका कि वह कहॉ था, वह निश्चय नहीं कर सका कि वह क्या था। वह वहॉ, जमीन पर निकाली हुई एक ताजी मछली की तरह फड़फड़ाता हुआ पड़ा था और तब (उसने) सोचा, *'क्या मैं मर चुका हूँ? मृत्यु क्या है? मैंने अपने आप को मरा हुआ देखा था, तब मैं यहॉ कैसे हूँ?'*

अपरिहार्यरूप से, उसके विचार, फिर, उसके इंग्लैड वापस लौटने से लगाकर, घटनाओं की ओर घूम गये। उसने अपने आपको कुछ कठिनाई के साथ चलते हुए, और तब अपने पड़ौसियों, अपने परिवार, और अपने नौकरों के क्रियाकलापों और उनकी अभिव्यक्तियों पर सावधानीपूर्वक ध्यान देते हुए देखा। विचार उत्पन्न हो चुका था कि उसको खुद को मार देना चाहिए था, कि उसे इस बेकार जीवन को समाप्त कर देना चाहिए था। एक बार उसने स्वयं को अपने अध्ययनकक्ष में बंद कर लिया था, उसने अपनी पिस्तौल निकाल ली, सावधानी से उसे साफ किया, सावधानी से उसमें गोली भरी और उसे तैयार किया। तब उसने उसकी नाक (muzzle) अपनी दायीं कनपटी पर लगायी और घोड़े को दबा दिया। मात्र एक मंद और दबी हुई आवाज परिणामित हुई। कुछ क्षणों के लिए, वह अपने विश्वस्त

---

6 अनुवादक की टिप्पिणी : 1177 से 1542 के बीच, आयरलैंड में सामंतवाद जारी रहा, जो कि आयरलैंड पर नोर्मन आक्रमण के बाद इंग्लैंड के राजा के साथ शुरू हुआ था। इस काल में इंग्लैंड के राजा को आयरलैंड के अधिपति का दर्जा प्राप्त था और आयरलैंड की जमीन पर अनेक नोर्मन सामंतों और जागीरदारों का कब्जा था। अधिकारिक रूप से, इस जागीरदारी को पैपल सम्पदा के रूप में इंग्लैंड के राजा के अंतर्गत अधिकारिक किया गया था। 16वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों के समय इंग्लैंड राजशाही ने आयरलैंड पर कब्जा कर लिया। वर्ष 1542 में इंग्लैंड के हेनरी अष्टम ने आयरलैंड की जागीर को एक राज्य घोषित कर दिया और स्वयं को आयरलैंड राजशाही का राजा घोषित कर दिया, और अंग्रेजों ने आयरलैंड पर कब्जा करना शुरू कर दिया। सन् 1607 तक, पूरा आयरलैंड अंग्रेजों के अधीन आ चुका था। वर्ष 1169 से 1171 के बीच इंग्लैंड से नोर्मनों ने आयरलैंड पर हमला किया और आयरलैंड के कई हिस्सों पर अपना कब्जा जमा लिया। इंग्लैंड के राजा, नोर्मन सामंतों की मदद से पूरे द्वीप पर आयरलैंड की जागीरदारी के नाम से इंग्लैंड के अधिकार का दावा करते थे। आयरलैंड के कुछ हिस्सों में, नोर्मनों की जबकि दूसरे हिस्सों में गेलिक लोगों की जागीरदारियां थी। नोर्मन और गेलिक कब्जे वाला क्षेत्र, पारस्परिक विवाद के कारण घटता बढ़ता रहता था और गेलिक सभ्यता, गैर नोर्मन क्षेत्रों में जारी रहती थी, धीरे धीरे नोर्मन क्षेत्र का विस्तार घटता गया।

पिस्तौल, जिसे वह साथ ले गया था, और पूरे युद्ध में, उसका उपयोग किया था, जिसने अंत में उसको धोखा दे दिया, पर अविश्वास करते हुए, आश्चर्यचकित होकर, वह अभी भी वहाँ जीवित था। उसने साफ कागज का एक पन्ना अपने सामने की मेज पर फैलाया और पिस्तौल को वहाँ उल्टा किया। हर चीज, पाउडर, गोली, और टोपी, वैसे ही थी, जैसा उसे होना चाहिए था। हर चीज पूरी तरह व्यवस्थित थी। उसने पाउडर गोली और टोपी, इसे फिर से जोड़ा और बिना सोचे हुए, घोड़े को दबा दिया। जोरदार धमाका हुआ और उसने अपनी खिड़की को उड़ा दिया था। वहाँ कोई दौड़ते पैरों से आया और दरवाजे पर थपकी की आवाज हुई। धीमे से वह अपने पैरों पर खड़ा हुआ और उसने सफेद चेहरे वाले, भयभीत खानसामे को अंदर प्रवेश कराने के लिए दरवाजा खोला। 'ओह, श्रीमान् अलगरनन, श्रीमान् अलगरनन, मैने सोचा कुछ भयानक हादसा हुआ है,' खानसामे ने पर्याप्त उत्तेजना के साथ कहा।

'ओ नहीं, सब कुछ ठीकठाक है, मैं अपनी पिस्तौल को साफ ही कर रहा था कि ये चल गई–खिड़की को बदलवाने के लिए एक आदमी लाओ, क्या तुम लाओगे?'

तब वहाँ घुड़सवारी के कुछ प्रयास हुए, उसने एक बूढ़ी भूरी घोड़ी (mare) को लिया और अस्तबल में से सवार होते हुए भागा, जब साइस लड़के के साथ, जो मुँह दबाकर हँस रहा था और फुसफुसाकर दूसरे से कुछ कह रहा था, *'दो बूढ़ी घोड़ियाँ एक साथ, एह, इस पर तुम क्या सोचते हो?'* वह मुड़ा और लहलहाती हुई अपनी फसल के साथ एक लड़के से टकराया, और तब लगामों को घोड़े की गर्दन पर फटकारा, जमीन पर कूदा और उसने घोड़े पर दोबारा फिर कभी नहीं चढ़ने के लिये, अपने घर वापस जाने की जल्दी की।

तब किसी दूसरे मौके पर, उसने उस अनजान पौधे के बारे में सोचा, जो लगभग अज्ञात देश ब्राजील से आया था, एक पौधा, जो उन्हें, जो इसके बेरों को चबा लेते थे, और विषाक्त रक्त को अपने गले के नीचे उतार लेते थे, तत्काल मृत्यु देने वाला माना जाता था। उसने ऐसा किया था, उसके पास एक ऐसा पौधा था, जो उसे एक विश्वयात्री द्वारा उपहार में उसे दिया गया था। दिनों तक, उसने पौधे को सावधानीपूर्वक सींचा, पहलोटी (first-born) बच्चे की तरह पाला पोसा, और तब जब पौधा पुष्पित और स्वस्थ हो रहा था, उसने बेरों को तोड़ लिया और अपने मुँह में भर लिया। *'ओह! इतनी पीड़ा,'* उसने सोचा, *'इस पर शर्म आनी चाहिए। मृत्यु नहीं, परंतु मृत्यु से हजारों गुनी खराब चीजें। पेट की ऐसी परेशानियाँ! पूरे इतिहास में कभी नहीं,'* उसने सोचा, *'काश ऐसा जुलाब होता, एक ऐसा जुलाब, जिससे वह स्वयं को, समय पर, सबसे छोटे से कमरे (शौचालय) में भी नहीं ले जा पाता। और गृहरक्षक का सदमा, जब उसे उसके अत्यधिक बिगड़े हुए कपडों को उतारना और धुलाई करने वाली औरत को देना पड़ना।'* उसका चेहरा, इसके विचार मात्र से लाल तप उठा।

और तब ये नवीनतम प्रयास। उसने, (किसी को) लंदन शहर के सबसे अच्छे तलवार बनाने वाले के पास भेजा, और वहाँ से उसके लिए सबसे अच्छा, सबसे तेज धार वाला उस्तरा (blade), एक सुंदर उपकरण, जिस पर बनाने वाले का नाम और उसके खोल पर, नक्काशी के द्वारा लिखा गया था, प्राप्त किया गया। श्रीमान् अलगरनन ने उस आश्चर्यजनक उस्तरे को प्राप्त किया और उस पर धार लगाई (stropped), और उस पर धार लगाई, और उस पर धार लगाई। और तब, एक तेज झटके के साथ, उसने कान से कान तक, अपना गला काट दिया था ताकि केवल रीढ़ के आधार ने, उसको गर्दन में सहारा दिया था, और उसके सिर को कंधों पर बनाये रखा था।

इसलिए वह अपने आप को मरा हुआ देख चुका था। वह जानता था कि वह मरा हुआ था, क्योंकि वह जानता था कि उसने खुद की हत्या की थी, और तब उसने छत से देखा और तेजी के साथ घूरती हुई आँखों के साथ, स्वयं को फर्श पर देखा। वह वहाँ अंधेरे–अत्यंत गहरे अंधेरे, में पड़ा रहा, और उसने सोचा, सोचा, सोचा।

मृत्यु? मृत्यु क्या थी? क्या मृत्यु के बाद कोई चीज थी? उसने और उसके साथी अधीनस्थ अधिकारी ने और भोजनालय के दूसरे अधिकारियों ने, बहुधा इस विषय पर वादविवाद किया। पादरी (Padre) ने, अमर जीवन के सम्बंध में, स्वर्ग में जाने के सम्बंध में, स्पष्ट करने का प्रयास किया और एक तेजतर्रार (हल्के हथियार रखने वाले) सैनिक (Hussar), एक मेजर ने कहा था, *'ओह नहीं, पादरी, मुझे पूरा विश्वास है कि यह एकदम गलत है। जब कोई मरता है, वह मर ही जाता है और यही सब कुछ है। यदि मैं जाऊँ और बोयर को मार दूँ, क्या तुम मुझे ये कह रहे हो कि वह सीधा स्वर्ग को या दूसरे स्थान को जायेगा? यदि मैं उसको दिल में गोली मार दूँ और मैं उसकी छाती पर अपने पैर रखे हुए वहॉ खड़ा रहता हूँ, मैं तुम्हें कह सकता हूँ कि वह, मरा हुआ, भूसे भरे हुए सुअर (stuffed pig) की तरह मरा हुआ, पूरी तरह मेरे अधीन है। जब हम मरते हैं, हम मरे हुए होते हैं और इसके आगे कुछ नहीं।'*

उसने, मृत्यु के बाद जीवन के सम्बंध में, अपने सभी तर्कों को फिर सोचा। उसने आश्चर्य किया कोई क्यों कह सकता है कि मृत्यु के बाद जीवन है। *'यदि आप एक आदमी की हत्या कर दें–ठीक है, वह मर जाता है और इसके बारे में यही सब कुछ है। यदि कोई आत्मा होती, तो तुम उसे मृत्यु के समय, शरीर में से कुछ निकलते हुए देखते, क्या तुम नहीं देखते?'*

अलगरनन वहॉ लेटा था और जो हो चुका था, उस पर आश्चर्य करता हुआ, पूरे मामले पर विचार कर रहा था, वह कहॉ था? और तब उसमें एक भयानक विचार आया कि शायद ये पूरा, एक दु:स्वप्न (nightmare) था, और उसमें दिमागी असंतुलन (brainstorm) हुआ था, और उसे पागलखाने में नजरबंद कर दिया गया है। सावधानीपूर्वक, उसने अपने सम्बंध में, कि क्या कुछ बांधने वाले फीते थे, अनुभव किया। परंतु नहीं, वह तैर रहा था, वहॉ यही सबकुछ था, वह पानी में मछली की भांति तैर रहा था। इसलिए वह वापस आश्चर्य करने लगा कि यह क्या था। *'मृत्यु? क्या मैं मर चुका हूँ? तब यदि मैं मर चुका हूँ मैं कहॉ हूँ, मैं इस अजीब परिस्थिति में, बेकार में तैरते हुए, क्या कर रहा हूँ?'*

पादरी के शब्द वापस उस तक आये: *'जब आप अपने शरीर को छोड़ते हैं, वहॉ एक देवदूत, आपका अभिवादन करने, और पथ प्रदर्शन करने को होता है। आपका न्याय खुद भगवान द्वारा किया जायेगा, और तब आपको, जो स्वयं भगवान द्वारा, जो कुछ भी दंड आदेशित हो, मिलेगा।'* अलगरनन ने इस पूरे मामले पर आश्चर्य किया। *'यदि भगवान एक दयालु भगवान है, तो किसी व्यक्ति को, उसके मरने पर जितना जल्दी हो, क्यों दंडित किया जाना चाहिए ? और यदि वह मर चुका है, तो कोई दंड उसे कैसे प्रभावित कर सकता है, और अब वह यहॉ था।'* उसने सोचा, *'शांतिपूर्वक पड़े हुए, कोई विशेष पीड़ा नहीं, कोई विशेष आनंद नहीं, केवल शांतिपूर्वक वहॉ लेटे रहना।'*

उस क्षण, अलगरनन ने डरना प्रारम्भ किया। किसी चीज ने उसके पास घिसा। ये किसी की खोपड़ी के अंदर हाथ डालने जैसा था। उसे एक प्रभाव मिला, आवाज नहीं, केवल एक प्रभाव, एक संज्ञान कि कोई उसके सम्बंध में सोच रहा था, *'शांति, निश्चल बने रहो, सुनो।'*

कुछ क्षणों के लिए अलगरनन ने भागने को प्रयास करते हुए सोटे से पीटा। ये अत्यधिक रहस्यपूर्ण था, ये अत्यधिक बैचेन करने वाला था पर वह वहॉ फंस गया था। इसलिए एक बार फिर उस पर ऐसा प्रभाव पड़ा, *'शांति, निश्चल बने रहो, और इससे मुक्त हो जाओ।'*

अलगरनन ने खुद में सोचा, *'मैं एक अधिकारी और एक सभ्य पुरुष हूँ, मुझे हड़बड़ी नहीं करनी चाहिए, मुझे अपने आदमियों के लिए उदाहरण बनना चाहिए।'* इसलिए यद्यपि वह भ्रमित था, उसने अपने आप को संभाला और नींद और शांति को अपने अंदर प्रवेश करने दिया।

अध्याय—तीन

अलगरनन ने सहसा सदमे में अपने कंधे हिलाये। हडबड़ी ने उसे जकड़ लिया था। एक क्षण के लिए उसने सोचा कि उसका दिमाग उसकी खोपड़ी में से बाहर फटने जा रहा है। उसके आसपास और भी अधिक काला अंधकार पैदा हुआ।

यद्यपि वह पूर्ण अंधकार में देख नहीं सका, वह, काले से भी और अधिक काले, आसपास घुमड़ते फूले हुए बादलों को, उसे अपने खोल में बंद करते हुए, दुर्गमता से अनुभव कर सका।

उसे प्रकाश की पेंसिल जैसी पतली, एक चमकीली किरण, उस तक पहुॅचती हुई और उसे छूती हुई, अंधकार में होकर दिखती हुई लगी, और उस पेंसिल जैसी पतली किरण से *'शांति, शांति, निश्चल बने रहो, और हम तुमसे बात करेंगे,'* प्रभाव आया।

अतिमानवीय (superhuman) प्रयासों के द्वारा, अलगरनन ने अपनी बैचेनी पर पकड़ बनाई। धीमे धीमे वह शांत हुआ और एकबार फिर, कमोवेश शांति के साथ, विकासों की प्रतीक्षा करते हुए विश्राम में आया। वे आने में तेज थे; *'हम तुम्हारी सहायता करने के इच्छुक हैं—हम तुम्हारी सहायता करने के लिए बहुत उत्सुक हैं परंतु तुम हमें नहीं करने देते।'*

अलगरनन ने विचार को अपने मस्तिष्क में घुमाया। *'तुम हमें नहीं करने दोगे,'* उसने सोचा, *'परंतु मैंने उनसे एक शब्द भी नहीं कहा तो वे ऐसा क्यों कहते हैं कि मैं उन्हें अपनी मदद नहीं करने दे रहा। मैं नहीं जानता कि वे कौन हैं, मैं नहीं जानता कि वे क्या करने वाले हैं कि मैं ये तक भी नहीं जानता कि मैं कहॉ हूँ। यदि ये मृत्यु है,'* उसने सोचा, *'ठीक है, ये क्या है? खंडन? शून्यता? क्या मैं शाश्वतता के लिए (for eternity), इसी तरह अंधकार में रहने के लिए, निंदित किया जाने वाला हूँ? परंतु वह भी,'* उसने सोचा, *'एक समस्या को खड़ी करता है, जीवित बने रहो? ठीक है क्या मैं जिंदा हूँ?'* विचार उसके आसपास घुमड़ते रहे और उसका मस्तिष्क खलबली में था। उसकी प्रारम्भिक जवानी की शिक्षायें उस तक आईं : *'मृत्यु नहीं है—मैं पुर्नजीवन (resurrection) हूँ—मेरे पिता के घर में अनेक भवन हैं, इसलिए मैं तुम्हारे लिए एक रास्ता बनाने के लिए जाता हूँ—यदि तुम ठीक व्यवहार करोगे, तो स्वर्ग को जाओगे और यदि तुम दुर्व्यवहार करोगे, तब नरक को जाओगे—केवल ईसाई लोगों को स्वर्ग का मौका है।'* इतने सारे विसंगति पूर्ण बयान, इतनी अधिक गलतफहमी, अंधों को दी जाने वाली इतनी अधिक अंधशिक्षा। पुजारीगण और रविवार के स्कूल के शिक्षकगण, लोग, दूसरों को, जिनको वे समझते हैं कि वे और अधिक अंधे थे, सिखाने का प्रयास करते हुए, अपने आप को अंधा कर लेते हैं। *'नरक?'* उसने सोचा। *'नरक क्या है? स्वर्ग क्या है ? क्या वहॉ स्वर्ग होता है?'*

उसके गहन चिंतनों (congitations) पर एक प्रबल विचार कौंधा : *'हम तुम्हारी सहायता करने के इच्छुक हैं, यदि तुम पहले ये आधार स्वीकार करोगे कि तुम जिंदा हो और ये कि मृत्यु के बाद जीवन है। यदि तुम निष्कपटता से* (congitations) *हमारे अंदर विश्वास करने, और ये विश्वास, कि हम तुम्हें पढ़ा सकते हैं, करने को तैयार हो, हम तुम्हारी मदद करने के इच्छुक हैं।'*

अलगरनन का दिमाग विचारों पर दौड़ा। इस मदद को स्वीकार करने के सम्बंध में ये क्या बकवास थी? विश्वास करने के सम्बंध में, ये क्या मूर्खतापूर्ण बेवकूफी थी? वह क्या विश्वास कर सकता था? यदि उसे विश्वास ही करना था, तो ये इसका आशय ये था कि वहॉ कोई संदेह था। वह विश्वासों को नहीं, तथ्यों को चाहता था। तथ्य ये थे कि वह अपने खुद के हाथ से ही मरा है, और दूसरा तथ्य ये था कि उसने अपने मृतशरीर को देखा था, और तीसरा तथ्य ये था कि अब वह पूर्ण अंधकार में है, स्पष्टरूप से किसी चिपचिपे, आडंबरी पदार्थ में डूबा हुआ था, जो अधिक हिलने डुलने को रोकता था। और तब मूर्ख लोग, ये कहते हुए कि उसे विश्वास करना चाहिए पता नहीं कहॉ से, अपने विचारों को, उसके दिमाग में भेज रहे थे। ठीक है—उसे क्या विश्वास करना चाहिए?

'तुम मृत्यु के बाद, अगले चरण में हो,' *ध्वनि, या विचार, या प्रभाव, या जो कुछ भी ये था,*

उसने उसे कहा। 'तुमको पृथ्वी पर गलत जानकारी दी गई है, गलत शिक्षा दी गई है, और गलत राह दिखाई गयी है, और यदि तुम खुद के द्वारा थोपी गयी जेल से बाहर आना चाहते हो, तब हम तुम्हें बाहर निकाल लेंगे।'

अलगरनन ने शांति से विश्राम किया और मामले पर विचार किया और तब उसने वापस सोचा। *'ठीक है,'* उसने जोरदारी से सोचा, *'यदि आप मुझे विश्वास कराना ही चाहते है, सबसे पहले आपको मुझे बताना चाहिए कि मेरे साथ क्या हो रहा है। आप कहते है कि मैं मृत्यु के बाद, पहले चरण में हूँ, परंतु मैंने सोचा था कि मृत्यु, हर चीज का अंत है।' 'अधिक शुद्धता के साथ!'* विचार भड़के या स्वर ने बड़ी जोरदारी से कहा।

'शुद्धरूप से! तुम अकारण ही, संदेह के काले बादलों के द्वारा, अकारण के काले बादलों के द्वारा घिरे हो। तुम अज्ञान की कालिमा के द्वारा घिरे हुए हो, और ये अलगाव खुद का बनाया हुआ, खुद का थोपा हुआ है, और केवल खुद के द्वारा ही नष्ट किया जा सकता है।

अलगरनन को ये थोड़ा सा भी अच्छा नहीं लगा। उसे, ये हर चीज के लिए दोषारोपण करने जैसा लगा। तब उसने कहा, *'परंतु मेरे पास विश्वास करने का कोई कारण नहीं है, मैं केवल उस तरह चल सकता हूँ, जैसाकि मुझे सिखाया गया है। मुझे गिरिजाघरों में विभिन्न चीजें सिखाई गयी हैं, और जब मैं बच्चा मात्र था, मुझे रविवासरीय स्कूल के शिक्षकों और एक संरक्षिका के पढ़ाया था और क्या अब आप सोचते हैं कि मैं इसे केवल मात्र इसलिए, कि कोई अज्ञात, बिना पहचाना हुआ प्रभाव, मेरे मन में आता है, एकदम रगड़कर साफ कर दूँगा? मुझे ये दिखाने के लिए कि इस कालिमा के परे कुछ है, कुछ चीज करो।'*

सहसा ही अंधकार में एक खोह दिखाई दी। सहसा ही, किसी रंगमंच पर, परदे एक बगल से लुढ़क जाने की तरह से, ताकि अभिनेता अपना श्री गणेश कर सकें, कालिमा एक तरफ लुढ़क गयी। अलगरनन, चमकीले प्रकाश और वातावरण में आश्चर्यमय कम्पनों के प्रवेश के द्वारा, लगभग अनुभवशून्य हो चुका था। उस क्षण के भावातिरेक (ecstasy) में, वह लगभग चीख पड़ा, और तब–संदेह, और संदेह के साथ फिर से कालिमा में लुढ़काव आया, जबतक कि वह, एकबार फिर, आडंबरी कालिमा में घेर नहीं लिया गया। संदेह, हड़बड़, स्वयं पर दोष लगाना (recrimination), संसारी शिक्षाओं के विरुद्ध दौड़ना। उसने अपने संज्ञान के ऊपर संदेह करना शुरू किया। इस प्रकार की चीजें, कैसे संभव हो सकती हैं? अब तक वह सुनिश्चित हो चुका था कि, वह पागल था, सुनिश्चित कि वह विभ्रमों (hallucinations) से पीड़ित था। उसका दिमाग, उस अत्यंत प्रभावशाली, ब्राजील के पौधे की ओर वापस गया, जो उसने हजम कर लिया था; ये मानते हुए कि इसके कुछ दुष्प्रभाव (side effects) रहे होंगे ये मानते हुए कि वह दीर्घ–विलंबित विभ्रमों से पीड़ित हो रहा था। वह अपनी लाश को फर्श पर देख चुका था –परंतु क्या वह देख चुका था? यदि वह मरा हुआ है, वह स्वयं को कैसे देख सकता था? उसने छत से नीचे की ओर देखने का विचार किया, उसने खानसामा के सिर पर, गंजे धब्बे को सोचा। ठीक है, यदि यह सत्य था, तो उसने इस गंजे निशान पर पहले क्यों नहीं ध्यान दिया? यदि ये सत्य था, तो उसने, पहले ये ध्यान क्यों नहीं दिया कि साईस, विग (wig) पहनता था? उसने समस्या के ऊपर चिंतन किया और इस विचार कि मृत्यु के बाद जीवन, संभव था और इस विचार कि वह अविवादितरूप से (undeniably) पागल था, के मध्य झूलता रहा।

'हम तुम्हें, तुम्हारे खुद के निर्णय तक आने के लिए छोड़ देंगे, क्योंकि नियम ये है कि किसी भी व्यक्ति की, जबतक कि वह व्यक्ति, मदद पाने की इच्छा न रखता हो, मदद नहीं की जा सकती। जब तुम मदद पाने के लिए तैयार हो, ऐसा कहना, और हम आ जायेंगे। और, याद रखना, तुम्हारे लिए, इस पूरी तरह स्वयं द्वारा थोपे गये अलगाव (isolation) को जारी रखने का, कैसा भी, कोई कारण नहीं है। ये कालिमा, तुम्हारी कल्पना का मनगढंत विचार (figment) है।'

समय का कोई अर्थ नहीं है। विचार आये और गये। परंतु, अलगरनन ने आश्चर्य किया, विचारों की गति क्या थी? उसे कितने विचार आये? यदि वह जानता, कि वह कितनी देर से इस स्थिति और इस हालत में था, तो वह पता लगा सकता था। परंतु नहीं, समय का अब और अधिक मतलब नहीं था। जहॉ तक वह देख सकता था, किसी चीज का कोई मतलब नहीं था। उसने अपने हाथों को नीचे तक पहुँचाया और वह अपने नीचे किसी भी चीज को अनुभव नहीं कर सका। धीमे से, अनन्त प्रयासों के साथ, उसने अपनी भुजाओं को, पूरी लंबाई तक ऊपर उठाया। वहॉ कुछ नहीं था, बिलकुल कुछ भी नहीं, जिसको वह अनुभव कर पाता, अजीब से खिंचाव के सिवाय कुछ भी नहीं, मानो वह अपनी भुजाओं को गाढ़ी चाशनी (syrup) में होकर खींच रहा हो। तब उसने अपने हाथों को अपने शरीर के ऊपर टिकने दिया और उन्हें अनुभव किया। हॉ, उसका सिर, उसकी गर्दन, उसके कंधे, स्पष्टरूप से उसकी बॉहें, वहॉ थीं, क्योंकि वह स्वयं का अनुभव करने में, अपने हाथों का उपयोग कर रहा था। परंतु तब वह, सच में उछला। वह नंगा था, और उसने इस विचार के ऊपर लज्जित होना प्रारंभ किया। क्या हो, यदि कोई व्यक्ति अंदर आ जाये और उसे नंगा पाये? उसके स्तर वाला समाज का कोई व्यक्ति, सरलता से नंगा नहीं दिखा। ये *'किया नहीं गया था'*। परंतु जहॉ तक वह बता सकता था, उसके पास, अभी भी, मानव शरीर था। और तब उसकी घूमती, जॉच करती हुई उंगलियॉ, एकाएक रुकीं और वह एक निश्चित निष्कर्ष पर, कि वह वास्तव में पागल था–पागल–पागल था, क्योंकि उसकी खोजी उंगलियॉ, उन अंगों से मिलीं, जहॉ उसे बॉयर निशानेबाज (marksman) के द्वारा गोली मारी गई थी, और उसके अवशेष, शल्य चिकित्सक के चाकू के द्वारा हटाये गये थे। इसलिए वह फिर से अक्षत (intact) था! स्पष्टतः, ये कल्पना थी। स्पष्टतः, उसने सोचा कि वह अपने मरते हुए शरीर को देख चुका था और वह अभी भी मर रहा था। परंतु तभी, अपरिहार्य विचार उसके अंदर आया कि उसने नीचे देखा था। ठीक है, वह नीचे कैसे देख सकता था, यदि वह वास्तव में, वह शरीर था, जो मर रहा था? और यदि वह नीचे देख सका, तब स्पष्टतः उसका कुछ भाग, उसकी आत्मा या जो कुछ भी कोई इसे कहता हो, शरीर से बाहर निकल जाना चाहिए था, और केवल ये तथ्य कि वह खुद के ऊपर, नीचे देख सकता था, इंगित करता था कि मृत्यु के बाद 'कुछ' था।

वह वहॉ, चिंतन करते हुए, चिंतन करते हुए, चिंतन करते हुए, पड़ा रहा। उसका दिमाग एक मशीन की तरह टिक, टिक करता हुआ लगा। धीमे धीमे, विश्व के विभिन्न भागों में से लिये हुए, ज्ञान के सूक्ष्मांश, विभिन्न स्थानों में फिसल गए। उसने किसी धर्म के सम्बंध में सोचा–ये क्या था? हिन्दू? मुस्लिम? वह, इन विदेशी धर्मों में से एक को नहीं जानता था, जिसमें केवल पुरातन निवासी (natives) विश्वास करते थे, परंतु फिर भी, उन्होंने सिखाया था कि मृत्यु के बाद जीवन है, उन्होंने सिखाया था कि भले आदमी, जो मर गये थे, एक स्थान को गये, जहॉ असीमित इच्छुक लड़कियॉ उपलब्ध थीं। ठीक है, वह उपलब्ध या अनुपलब्ध लड़कियों में से किसी को नहीं देख सका परंतु इसने उसे विचारों की गाड़ी पर चढ़ा दिया। मृत्यु के बाद जीवन होना चाहिए, कुछ चीज तो होनी चाहिए, और कोई तो होना चाहिये, अन्यथा वह ऐसी खोजी बत्ती (search light)–चमकदार विचार, अपने मन में कैसे पा सका?

अलगरनन खुशी से उछल पड़ा। *'ओह! भोर आ रहा है,'* वह प्रसन्नता से चीखा। वास्तव में, अब अंधकार कम गहरा था। वैसे ही, उसके आसपास का आडंबर कम था और उसने अपने आप को, मंद गति से, नीचे डूबता हुआ पाया, मंद गति से, जबतक कि शरीर के नीचे लटकते हुए, उसके फैलाये हुए हाथों ने, *'कुछ'* महसूस नहीं किया। चूंकि शरीर और नीचे डूब गया था, उसने पाया कि उसके हाथ जकड़े हुए–नहीं, ऐसा नहीं हो सका! परंतु और आगे की जॉचों ने पुष्टि कर दी कि, हॉ, उसके हाथ मुलायम घास के संपर्क में थे, और तब उसका बिरोध न करने वाला शरीर, एक छोटे, उगाई गई घास वाले मैदान, के ऊपर टिका हुआ था।

अनुभूति कि, अंततः वह किसी भौतिक स्थान में था, और वहॉ अंधकार के अलावा दूसरी चीजें

थीं, ने उसके अन्दर बाढ़ ला दी, और जैसे ही उसने सोचा, जैसे ही उसने इसका अनुभव किया, वैसे ही अंधकार कम हो गया और वह ऐसा था मानो प्रकाश के धुंध में ही कुछ हो। धुंध में होकर, वह अस्पष्ट आकृतियाँ देख सकता था, स्पष्टतः नहीं, यह पहचानने के लिए काफी नहीं, कि ये आकृतियाँ क्या थीं, परंतु वे 'आकृतियाँ (figures)' थीं।

ऊपर देखते हुए, उसने एक छायादार आकृति, अपने ऊपर बुनती हुई देखी। वह केवल, दो हाथों को, मानो वरदान की मुद्रा में उठे हुए देख सका और तब, इस बार उसके सिर के अंदर का कोई विचार नहीं, परंतु मना न करने सकने योग्य, ईमानदारी से भगवान के प्रति एक ध्वनि, स्पष्टरूप से, किसी ऐसे की अंग्रेजी ध्वनि!, जो वास्तव में, ईटॉन (Eton)[7] या ऑक्सफोर्ड (Oxford)[8] में रही होगी,

'मेरे बेटे, अपने पैरों पर खड़े हो,' ध्वनि ने कहा, *'अपने पैरों पर खड़े हो और मेरे हाथों को पकड़ो, अनुभव करो कि मैं तुम्हारी ही तरह ठोस हूँ, और ऐसा अनुभव करने में तुम्हें प्रमाण का एक और मद मिलेगा कि तुम जिंदा हो–एक भिन्न अवस्था में स्वीकार्य, परंतु जीवित, और जितना जल्दी तुम अनुभव करोगे कि तुम जिंदा हो और कि मृत्यु के बाद जीवन है, उतनी ही जल्दी, तुम महान यथार्थ में प्रवेश करने के लिए सक्षम होगे।'*

अलगरनन ने अपने पैरों पर खड़े होने के लिए हल्के से प्रयास किए, परंतु कैसे भी, चीजें, भिन्न प्रकार की प्रतीत हुईं, वह अपनी मॉसपेशियों को हिलाने में, जैसा वह किया करता था, सक्षम नहीं हुआ, परंतु तब आवाज दोबारा आईः *'अपने आप को उठता हुआ चित्रित (picture) करो, अपने आप खड़ा हुआ चित्रित करो।'* अलगरनन ने ऐसा किया और अपने आश्चर्य के लिए, पाया कि वह एक आकृति, जो जबतक कि उसने, अपने सामने, उल्लेखनीय चमकदार चेहरे और पीली पोशाक में लिपटे हुए मध्य आयु के एक आदमी को नहीं देख लिया, चटकदार और सादा, और चटकदार, और सादा होती जा रही थी, के द्वारा जकड़ा हुआ, सीधा खड़ा हुआ था। अलगरनन ने आकृति की पूरी लंबाई पर नजर डाली और तब उसकी दृष्टि की परास (range) स्वयं से मिली। उसने देखा कि वह नंगा था। तत्काल ही, उसने भय की एक चीख निकाली, *'ओह!' उसने कहा, 'मेरे कपड़े कहाँ हैं? मैं इसप्रकार नहीं दिख सकता!'*

आकृति उस पर मुस्कराई और उसने धीमे से कहा, *'वस्त्र आदमी को नहीं बनाते, मेरे दोस्त। कोई, पृथ्वी पर बिना कपड़ों के ही पैदा होता है, और कोई, इस विश्व में, बिना कपड़ों के ही पुनः पैदा होता है। कपड़ों के प्रकार के बारे में सोचो, जिन्हें तुम पहनना चाहोगे और उन्हें तुम अपने शरीर पर पाओगे।'*

अलगरनन ने स्वयं को, गहरे नेवी नीले रंग की, टॉगें ठीक एड़ियों तक पहुँचती हुई, पैंट और चटकदार लाल जैकेट, पहने हुए, एक प्रफुल्लित, युवा अधीनस्थ, के रूप में सोचा। उसने अपनी कमर के चारों ओर, एक झकाझक सफेद चौड़ी पट्टी वाली कमर पेटी (belt), जिसमें विस्फोटक रखने की जेब थी, चित्रित किया। उसने पीतल के चमकदार बटन, इतने तीखे पॉलिश किए हुए कि कोई उनमें से हर एक में, अपना चेहरा देख सकता था, चित्रित किये। और तब उसने अपने सिर पर, गाल से अपनी ठोड़ी के नीचे तक, और दूसरे गाल पर ऊपर तक जाते हुए, चमड़े के फीते के साथ, गोलियों के डिब्बे का, गहरे रंग का टोप, चित्रित किया। उसने अपने बगल में म्यान (scabbard) चित्रित की, और तब जैसे ही उसने सोचा, *'उन्हें उसे पैदा करने दो!'*, वह अपने आप में, अंदर की ओर एक रहस्यमय मुस्कान, मुस्कराया। अपने अवर्णनीय (ineffable) आश्चर्य के लिए, उसने कमर पेटी के कसाव के द्वारा, सैनिक

---

7 अनुवादक की टिप्पिणी : ईटॉन (Eton), इंग्लैंड की बर्कशायर (Berkshire) काउंटी में, विंडसर (Windser) की ओर, टेम्स (Thames) नदी के सामने वाले किनारे पर, बकिंघमशायर (Buckingghamshire) की ऐतिहासिक सीमाओं में, और विडंसर पुल के माध्यम से उससे जुड़ा हुआ, एक नगर है। इसकी आबादी लगभग 5000 है। नगर में सुप्रसिद्ध ईटॉन कॉलेज और एक पब्लिक स्कूल है।

8 अनुवादक की टिप्पिणी : ऑक्सफोर्ड (Oxford), मध्य–दक्षिणी इंग्लैंड का एक शहर है। ये अत्यंत प्रतिष्ठित ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, जो 12वीं शताब्दी में स्थापित किया गया, के आसपास स्थित है। इसके 38 महाविद्यालयों का वास्तुशिल्प, मध्यकालीन युग का है।

बूटों की तंगी के द्वारा, और अपने शरीर को वर्दी के द्वारा, संकीर्ण हुआ (constricted) पाया, उसने अपने बगल से, जहॉ म्यान और पिस्तौल के खोल का वजन, पैंट को नीचे खींचने का प्रयास कर रहा था, खिंचाव पाया। उसने अपनी ठोड़ी के नीचे, ठोड़ी के फीते का दवाब अनुभव किया और तब, जैसे ही उसने अपना सिर घुमाया, वह अपने कंधों पर लटकती हुई चमकीली पट्टी को देख सकता था। ये बहुत अधिक था– अत्यधिक। अलगरनन बेहोश हो गया और यदि मध्य–आयु के आदमी ने उसको धीमे से नीचे न कर दिया होता, तो घास के मैदान पर लुढ़क पड़ा होता।

अलगरनन की पलकें फड़फड़ाई और वह कमजोरी से बड़बड़ाया, 'मैं विश्वास करता हूँ, ओह ईश्वर, मैं विश्वास करता हूँ। मुझे अपने पापों के लिए क्षमा करो, मुझे उन अतिचारों (tresspasses) के लिए, जो मैंने किए हैं, क्षमा करो।'

उसके साथ वाला आदमी, कृपापूर्वक उस पर मुस्कराया, और उसने कहा, *'मैं भगवान नहीं हूँ, मैं केवल वह हूँ, जिसका काम उन लोगों की मदद करना है, जो पृथ्वी के जीवन से, माध्यमिक चरण में, यहॉ आते हैं, और जब तुम प्रस्तावित (proffered) मदद को प्राप्त करने के लिए तैयार हो, मैं तुम्हारी मदद करने को तैयार हूँ।'*

अलगरनन अपने पैरों पर खड़ा हुआ, इस बार बिना परेशानी के, और उसने कहा, *'मैं ऐसी मदद पाने के लिए, जैसे ही तुम मुझे दे सकते हो, तैयार हूँ। परंतु, मुझे बताओ क्या तुम ईटॉन को गये थे, क्या तुम बेलियॉल (Balliol)[9] में थे?'*

आकृति मुस्कराई और उसने कहा, *'मुझे केवल दोस्त कहो, और हम तुम्हारे प्रश्नों का बाद में जवाब देंगे। पहले तुमको हमारे संसार में प्रवेश करना पड़ेगा।'*

वह मुड़ा और उसने अपने हाथों को समेटने की गति में हिलाया, मानो कि वह असल में, परदों को खींच रहा हो, और वास्तव में, परिणाम समान था। अंधेरे के बादल बिखर गये, छायायें गायब हो गई और अलगरनन ने पाया कि वह हरी से भी अधिक हरी (greener than green) घास पर खड़ा हुआ था। उसके आसपास की हवा जीवन से जोशपूर्ण (vibrant), ऊर्जा के साथ धड़कती हुई थी। अज्ञात स्रोतों से प्रभाव (impressions) आये–ध्वनियॉ नहीं, परंतु उसने इसका वर्णन, संगीत की छाप, *'हवा में संगीत'* से किया होता, और उसने इसे उल्लेखनीय रूप से शमनकारी (soothing) पाया।

लोग आसपास वैसे ही टहल रहे थे, जैसे कि किसी सार्वजनिक उद्यान में टहल रहे होते। पहली नजर में, इसने उस पर प्रभाव डाला कि वह, ग्रीन पार्क (Green Park) या हायड पार्क (Hyde Park), लंदन, में टहल रहा होगा। जोड़े अपने स्थानों पर बैठे हुए थे, लोग आसपास टहल रहे थे और तब एकबार फिर, अलगरनन को डर का भयानक झटका लगा, क्योंकि कुछ लोग जमीन से कुछ इंच ऊपर चल रहे थे! एक व्यक्ति पूरी तरह से, देहाती क्षेत्र के पार, जमीन से लगभग दस फुट ऊपर दौड़ रहा था, और एक दूसरे व्यक्ति के द्वारा उसका पीछा किया जा रहा था, और वहॉ दोनों से आती हुई, आनंदयुक्त और प्रसन्नता की चीखें थीं। अलगरनन ने सहसा, अपनी रीढ़ के साथसाथ ठंड महसूस की, और वह कॉप गया, परंतु उसके मित्र ने उसे धीमे से बॉह से पकड़ा और कहा, *'आओ हम यहॉ बैठें क्योंकि, इससे पहले कि हम और आगे जायें, मैं तुम्हें इस विश्व के सम्बंध में थोड़ा बताना चाहता हूँ, अन्यथा दृश्य, जो तुम परे देखोगे, वास्तव में, तुम्हारे स्वास्थ्य लाभ को रोकेंगे।'*

'स्वास्थ्य लाभ,' अलगरनन ने कहा, *'वास्तव में स्वास्थ्य लाभ!, मैं किसी चीज से उबर नहीं रहा हूँ, मैं पूरी तरह स्वस्थ हूँ, सामान्य हूँ।'* उसका मित्र धीमे से मुस्कराया और उसने कहा, *'आओ, हम यहॉ*

---

9 अनुवादक की टिप्पिणी : बेलियोल (Balliol) शब्द, वास्तव में, बेलियोल परिवार (Balliol family), उसके लॉर्ड्स (Lords) और उनकी जागीर (Fief) को संदर्भित करता है, उनकी आनुवांशिक पीठ, उत्तरी फ्रांस के बेल्युल (Bailleul) नामक स्थान में है। इनके नाम पर ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय (Oxford University) के अंतर्गत, विश्वविद्यालय परिसर में ही, बेलियोल महाविद्यालय (Balliol College) स्थापित है। बेलियोल महाविद्यालय, वह स्थान है, जहॉ अपवादस्वरूप पात्रता (exceptionally qualified), क्षमता और सम्भावना वाले विद्यार्थी, उन अकादमीशियनों (academicians) के अंर्तगत अध्ययन करते हैं, जिन्हें अपने अपने क्षेत्रों में विशेषज्ञता और महारथ हासिल है।

बैठें, जहॉ हम हंसों (Swans) और पानी की दूसरी चिड़ियाओं (Fowls) को देख सकते हैं, और हम तुम्हें नये जीवन, जो तुम्हारे सामने है, की अंतर्दृष्टि दे सकते हैं।'

कुछ हद तक अनिच्छापूर्वक, और इस विचार पर कि वह बीमार था, अभी भी गुस्से में भरा हुआ (bristling) था, अलगरनन ने, खुद को समीप के स्थान पर चले जाने की इजाजत दे दी। वे बैठे और दोस्त ने कहा, *'चैन से आराम करो, मेरे पास तुम्हें बताने के लिए बहुत कुछ है, क्योंकि अब तुम दूसरे विश्व में हो, अब तुम अस्तित्व के दूसरे तल में हो, और तुम जितना अधिक ध्यान, मेरे ऊपर दोगे, उतनी ही सरलता से तुम इस विश्व में प्रगति करोगे।'*

अलगरनन अत्यधिक प्रभावित था कि पार्क का बैठने का स्थान (seat) इतना सुखदायक था, ये आकृति में समायोजित हो जाने वाले (form-fitting) जैसा लगा, लंदन में, जहॉ यदि कोई दुर्भाग्यशाली था, यदि कोई सीट बदलना चाहे, वह एक चपटी पट्टी प्राप्त कर सकता था, जो पार्क उसे ज्ञात थे, उनसे एकदम अलग।

उनके सामने, पानी नीला चमक रहा था और इसके ऊपर चौंधियाने वाले सफेद हंस, भव्य शानदार ढंग से फिसल रहे थे। हवा गर्म और कंपन करती हुई थी। तब, अलगरनन में सहसा एक विचार कौंधा, इतना सहसा और इतना स्तब्ध करने वाला विचार था कि वह अपनी सीट से लगभग उछल पड़ा; वहॉ कोई छायायें नहीं थीं! उसने ऊपर देखा और पाया कि वहॉ सूर्य भी नहीं था। पूरा आकाश चमक रहा था।

मित्र ने कहा, *'अब हमें चीजों के बारे में बात करनी चाहिए क्योंकि, इससे पहले कि तुम विश्राम गृह में प्रवेश करो, मुझे इस विश्व के बारे में, तुम्हें सिखाना है।'* अलगरनन टूट पड़ा *'मैं पूरी तरह से आनंदित हूँ कि तुम्हें एक पीली पोशाक पहननी चाहिये। क्या तुम किसी संस्कृति या समाज के, या किसी धार्मिक पंथ के सदस्य हो?'*

'ओह भले, भव्य, भगवान, तुम्हारे मन का रवैया कितना असाधारण है! मेरी पोशाक के रंग से क्या प्रभाव पड़ता है? इससे क्या फर्क पड़ता है कि मैं कोई पोशाक पहने हूँ? मैं एक पोशाक पहने हूँ क्योंकि मैं एक पोशाक पहनना चाहता हूँ, क्योंकि मैं इसे अपने लिए उपयुक्त समझता हूँ, क्योंकि ये उस काम के लिये, जिसको मैं करता हूँ एक वर्दी है।' वह मुस्कराया और उसने अलगरनन की पोशाक की ओर इशारा किया। *'तुम गहरे नीले रंग के पैंट और चटकीले लाल जैकेट, और अपने सिर के ऊपर, गोलियों के संदूक वाले एक विशिष्ट टोप की वर्दी पहनते हो। तुम अपनी कमर के चारों ओर एक सफेद बेल्ट पहनते हो। ठीक है, तुम ऐसे उल्लेखनीय ढंग में कपड़े क्यों पहनते हो? तुम कपड़े पहनते हो, क्योंकि तुम कपड़े पहनना चाहते हो। यहॉ तुम्हें, अपने कपड़े पहनने के ढंग के ऊपर, कोई फटकारेगा नहीं। वैसे ही मैं उस ढंग के कपड़े पहनता हूँ, जो मुझे उपयुक्त लगते हैं, और चूँकि ये मेरी वर्दी है। परंतु—हम समय बेकार गवॉ रहे हैं।'*

अलगरनन ने निश्चितरूप से, इससे अनुशासित होता हुआ (chastened) अनुभव किया, और जैसे ही उसने आसपास देखा, वह पीली पोशाक में, कुछ निश्चित लोगों को, आदमियों और औरतों को, वार्तालाप में देख सकता था, जो पूरी तरह से विदेशी पोशाकें पहिने थे। परंतु उसका साथी कह रहा था : *'मुझे तुमको बताना चाहिए,'* उसके साथी ने कहा, *'कि जीवन के सत्य के बारे में, और यहॉ के बाद के जीवन के सत्य के बारे में, पृथ्वी पर, तुमको अत्यधिक गलत सूचना दी गई है। तुम्हारे धार्मिक नेता, उन लोगों के गिरोह की भॉति, जो एक साथ इकट्ठे हो गये थे या हर एक अपने ख़ुद के सामान का विज्ञापन करते हुए विज्ञापकों के गिरोह की भांति, और उनमें से हर एक, जीवन के सत्य और जीवन के बाद के सत्य के सम्बंध में अनजान हैः* वह थोड़ी देर को रुका और अपने आसपास देखा और उसने कहना जारी रखा, *'यहॉ इन सभी लोगों को देखो, क्या तुम बता सकते हो, ईसाई कौन है, यहूदी कौन है, बौद्ध या मुसलमान कौन है, सभी एक जैसे दिखते हैं, क्या वे नहीं दिखते? और, वास्तव में, पीली*

वर्दी वालों को छोड़कर, शेष सभी लोगों में, जिन्हें तुम इस पार्क में देखते हो, एक बात समान है; उन सभी ने आत्महत्या की है।'

अलगरनन झटका खा कर पीछे लौटा—सभी ने आत्महत्या की है—तब उसने सोचा, संभवतः, वह पागलों के घर में था और पीली वर्दी वाला उसका रक्षक था। उसने सभी अजीब चीजों के बारे में सोचा, जो उसके साथ हुई थीं, और जिन्होंने उसके विश्वास में विकृति उत्पन्न की थी।

'तुमको पता होना चाहिए कि आत्महत्या करना एक बहुत, बहुत गम्भीर अपराध है। किसी को भी आत्म हत्या नहीं करनी चाहिए। आत्महत्या के सम्बंध में, किसी भी प्रकार का कोई कारण नहीं है, और यदि लोग जानते कि आत्महत्या करने के बाद उन्हें क्या झेलना है, तो उनमें अधिक संज्ञान होता। यह, 'शासी ने कहा, एक स्वागत केंद्र है, जहॉ उन लोगों का, जिन्होंने आत्महत्या (felo de se) की है, पुर्नवास किया जाता है, उन्हें परामर्श दिया जाता है, और दूसरे शरीर के साथ वापस भेज दिया जाता है। मैं तुम्हें, पहले पृथ्वी के, और अस्तित्व के इस तल में, जीवन के सम्बंध में ये बताने वाला हूँ।' उन्होंने अपनी सीट में अधिक आराम के साथ, स्वयं को व्यवस्थित किया और, अलगरनन ने तालाब के आसपास, हंसों को आराम से तैरते हुए देखा। उसने वहॉ ध्यान से देखा कि पेड़ों पर अनेक पक्षी थे, गिलहरियॉ भी थीं और उसने रुचि के देखा कि पीले परिधान वाले आदमी और औरतें, अपने अपने अभियोगों के सम्बंध में बातचीत कर रहे थे।

पृथ्वी सीखने का स्कूल है, जहॉ लोग, जब वे दया के माध्यम से नहीं सीख सकते, कठिनाईयों के माध्यम से सीखने के लिए जाते हैं। लोग पृथ्वी पर ऐसे जाते हैं, जैसेकि पृथ्वी के लोग स्कूल में जाते हैं और (उन) अस्तित्वों को, जो पृथ्वी पर शरीर धारण करने जा रहे हैं, पृथ्वी पर जाने से पहले, सर्वोत्तम प्रकार के शरीर के ऊपर और सर्वोत्तम परिस्थितियों में उसे सीखने के लिए, जिसे सीखने के लिए वे गये हैं, योग्य बनाने के लिए, उन्हें सलाह दी जाती है, या अधिक शुद्धता के साथ, उसे सीखने के लिए, जिसे वे वास्तव में, पृथ्वी पर सीखने के लिए जा रहे हैं, उन्हें जाने से पहले सलाह दी जाती है। तुम इसे स्वयं अनुभव करोगे, इसलिए मैं तुम्हें इस विशिष्ट तल के विषय में बता दूँ। यहॉ वह है, जिसे निचला सूक्ष्मलोक कहा जाता है। आने जाने वाली आबादी, विशेषरूप से आत्महत्या करने वालों की होती है, क्योंकि, जैसा मैंने कहा, आत्महत्या एक अपराध है और वे लोग, जो आत्महत्या करते हैं, मानसिक रूप से अस्थिर होते हैं। तुम्हारे खुद के मामले में, तुमने आत्महत्या इसलिए की क्योंकि, तुम पिता बनने योग्य नहीं थे, क्योंकि तुम्हारा अंगभंग कर दिया गया था, परंतु यह एक शर्त है, जिसके साथ तुम पृथ्वी पर झेलने और उस पर काबू पाना सीखने के लिए गये थे। मैं तुम्हें अत्यंत गम्भीरता से कहता हूँ कि तुम्हारे पृथ्वी पर जाने से पहले, तुमने ये व्यवस्था की थी कि तुम्हारा अंगभंग किया जायेगा, इसलिये इसका अर्थ है कि तुम अपनी परीक्षा मे अनुतीर्ण हो गये, इसका अर्थ है कि तुम्हें फिर से प्रारम्भ करना पड़ेगा और तुम्हें उस पूरी पीड़ा से एकबार या एक से अधिक बार भी, फिर गुजरना पड़ेगा, यदि तुम दूसरी बार भी अनुतीर्ण हुए।'

अलगरनन ने निश्चयात्मक रूप से उदासी महसूस की। उसने सोचा था कि वह अपने जीवन, जिसे उसने निरर्थक जीवन होने की कल्पना की थी, को समाप्त करने में कोई अच्छी बात कर रहा था, और अब उससे कहा गया था कि उसने एक अपराध किया है, और उसे इसके लिए प्रायश्चित करना पड़ेगा। परंतु उसका साथी कह रहा था—*ये, निचला सूक्ष्मतल, पृथ्वी के तल के अत्यधिक समीप है, ये लगभग उतना नीचा है कि, वास्तव में, कोई इसे, पृथ्वी पर लौटे बिना भी, पा सकता है। यहॉ हम तुम्हें, इलाज के लिये एक विश्रामगृह में रखेंगे। ये तुम्हारी मानसिक अवस्था को स्थिर बनाने का एक प्रयास होगा, ये, जितनी जल्दी परिस्थितियॉ उपयुक्त होती हैं, पृथ्वी पर तुम्हारी सुनिश्चित वापसी के लिए, शक्ति प्रदान करने का एक प्रयास होगा। परंतु यहॉ, इस सूक्ष्मतल पर, यदि तुम चाहो, तुम आसपास घूम सकते हो, और यदि तुम ऐसी इच्छा करो तो केवल सोचने मात्र से, तुम हवा में होकर उड़ सकते*

हो। इसीप्रकार, यदि तुम इस निष्कर्ष पर पहुचो, कि तुम्हारी कामना बेकार है, जोकि वास्तव में है, तब तुम केवल सोचने मात्र से, अपनी वर्दी को, जो तुम पहनना चाहोगे, से बदल सकते हो।'

अलगरनन ने एक बहुत सुन्दर सूट के सम्बंध में सोचा, जो उसने एक गर्म देश में देखा था। ये सफेद से कुछ हट कर (off white), हल्के वजन का और आधुनिक ढंग की कटाई वाला दिखता था। वहॉ एक आकस्मिक सरसराहट (rustle) हुई और उसने खतरे से नीचे देखा चूॅकि उसकी वर्दी, उसे नंगा छोड़ते हुए, उस पर से गायब हो गई थी। खतरे की चीख के साथ, वह अपने हाथों को बांधे हुए, एक योजित क्षेत्र के ऊपर, अपने पैरों पर उछल कर खड़ा हो गया, परंतु जैसे ही वह अपने पैरों पर हुआ, अपेक्षाकृत शीघ्र ही, उसने पाया कि दूसरे कपड़ों ने, उसकी कल्पना के कपड़ों ने, उसको सजा दिया। लज्जापूर्वक, अत्यधिक लाल होते हुए, वह फिर से नीचे बैठ गया।

'यहॉ तुम्हें पता चलेगा कि तुम्हें किसी खाने की आवश्यकता नहीं है, यद्यपि यदि तुम्हें (भूख के) लोभी आवेश हों, तो तुम्हें खाना खा सकते हो, कैसा भी खाना, जो तुम चाहो। तुम इसके बारे में केवल सोचो और यह वातावरण के पोषक तत्वों से, यथार्थ में बदल जायेगा। उदाहरण के लिए, अपने पसंदीदा खाने के लिये सोचो।'

अलगरनन ने एक या दो क्षण के लिए चिंतन किया, तब उसने, भुने हुए गौमांस (beef), भुने हुए आलू, योर्कशायर पुडिंग (Yorkshire pudding), गाजर, शलजम (turnip), बंदगोभी, सेब की मदिरा (cider) का एक बहुत बड़ा गिलास, और एक बड़ा सिगार, जिसके साथ भोज (repast) को समाप्त किया जाये, को सोचा। जैसे ही उसने इसके सम्बंध में सोचा, उसके सामने एक धुंधली सी आकृति प्रकट हुई, और एक जगमगाते हुए सफेद मेजपोश से ढंकी हुई मेज में घनीभूत (solidified) हो गई। तब हाथ और कलाइयॉ प्रकट हुई और उसके सामने व्यंजन परोसे गये, चॉदी के ढक्कनदार डोंगे, रवेदार शीशे (crystal glass) की सुराही, और एक एक करके डोंगों पर से ढक्कन हटाये गये और अलगरनन ने अपने सामने देखा–और सुगंध ली–अपनी पसंद का खाना–उसके साथी ने केवल अपने हाथ हिलाये और सारा खाना और मेज गायब हो गई।

'वहॉ वास्तव में, ऐसी नाटकीय चीजों की आवश्यकता नहीं है, वहॉ इस मोटे प्रकार के खाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि, इस सूक्ष्मतल पर, शरीर, वातावरण से खाना अवशोषित करता है। यहॉ, जैसा तुम देखते हो, आकाश में चमकता हुआ सूर्य नहीं है, परंतु पूरा आकाश चमक रहा है और हर व्यक्ति, आकाश से सभी आवश्यक पोषण प्राप्त कर लेता है। यहॉ बहुत पतले लोग नहीं हैं, और न बहुत अधिक मोटे, परंतु हर एक वैसा ही है, जैसे कि उसके शरीर की मॉग है।'

अलगरनन ने आसपास देखा कि वह मना न कर सकने योग्य रूप से, सही था। वहॉ कोई मोटे लोग नहीं थे, वहॉ कोई पतले लोग नहीं थे, वहॉ कोई बौने नहीं थे, वहॉ कोई दैत्य नहीं थे, हर कोई उल्लेखनीयरूप से सुगठित शरीर वाला दिखा। आसपास घूमते कुछ लोगों के माथे पर, तन्मयता (concevtration) की गहरी झुर्रियॉ थीं, भविष्य के सम्बंध में आश्चर्य करते हुए, भूत के सम्बंध में चिंता करते हुए, और वेबकूफी भरे कार्यों के लिए खेद प्रकट करते हुए, कोई संदेह नहीं।

साथी अपने पैरों पर खड़ा हुआ और उसने कहा, *'अब हमको विश्राम गृह में जाना चाहिए। चूंकि हमें लम्बी सैर पर साथसाथ जाना है, हम अपनी चर्चा जारी रखेंगे। तुम्हारा यहॉ आना, कुछ हद तक अनपेक्षित था, यद्यपि हम आत्महत्याओं के लिए हमेशा तैयार रहते हैं, तुमने इसके सम्बंध में इतने लंबे समय तक सोचा था कि तुमने– आह–हमको असावधानी तक ला दिया था, जब तुमने उस अंतिम निराशाजनक गहरे घाव (gash) को लगाया।'*

अलगरनन अपने पैरों पर उठ खड़ा हुआ और उसने अनिच्छापूर्वक अपने साथी का अनुगमन किया। वे तालाब के बगल से, रास्ते भर साथ साथ टहलते रहे, चर्चा में लीन, वे लोगों के छोटे छोटे समूहों के समीप से साथ साथ गुजरे। अक्सर एक जोड़ा अपने पैरों पर खड़ा होता और दूर चला जाता,

ठीक वैसे ही, जैसे कि अलगरनन और उसका साथी, अपने पैरों पर खड़े हुए थे और टहलते हुए दूर चले गये थे।

'यहॉ तुम्हारे पास सुविधाजनक हालात हैं, क्योंकि कार्यवाही के इस चरण में, तुम्हें, मानो, पृथ्वी की कठिनाइयों और पीड़ाओं की ओर वापसी के लिये, पुनः संगठित होना चाहिए, परंतु ध्यान रखो कि उसे, जिसे यथार्थ समय (real time) कहा जाता है, में, पृथ्वी का जीवन, पलक झपकने जितना छोटा है, और जब तुम पृथ्वी पर अपने जीवन को पूरा कर लोगे, सफलता के साथ पूरा करोगे, तुम देखोगे कि फिर तुम इस स्थान पर वापस नहीं आते परन्तु तुम इसे उपेक्षित (bypass) कर देते हो, और सूक्ष्मतलों के एक दूसरे चरण, पृथ्वी पर तुम्हारी प्रगति पर निर्भर करते हुए एक चरण, में जाते हो। पृथ्वी के स्कूल में जाने के ऊपर विचार करो; यदि तुम अपनी परीक्षाओं में केवल पास हो पाते हो, तुमको उसी कक्षा में रोका जा सकता है, परंतु यदि तुम, परीक्षाओं में, अधिक सफल श्रेणी प्राप्त करते हो, तो तुम्हें प्रोन्नत किया जा सकता है, और यदि तुम वह करते हो, जिसे 'ससम्मान (cum laude)' कहा जाता है, तब, वास्तव में, तुमको दो कक्षा ऊपर भी प्रोन्नत किया जा सकता है। वही सूक्ष्मतलों पर भी लागू होता है। तुमको, जिसे तुम 'मृत्यु' कहते हो के समय, पृथ्वी से हटाया जा सकता है, और तुमको एक निश्चित सूक्ष्मतल पर ले लिया जाता है, और यदि तुम अत्यधिक अच्छा करते हो, तो तुम्हें कॉफी ऊँचे तल पर भी लिया जा सकता है, और वास्तव में, तुम जितने ऊँचा उठते हो, परिस्थितियॉ उतनी ही अच्छी होती जाती हैं।'

बदलते हुए परिदृश्य के द्वारा, अलगरनन काफी हद तक विचलित हो गया था। उन्होंने तालाब के क्षेत्र को छोड़ दिया और एक बाड़ (hedge) के रिक्तस्थान में होकर गुजरे। उनके सामने, एक सुंदर रखरखाव वाला लॉन विस्तारित था और कुर्सी पर बैठे हुए लोगों के समूह, अपने सामने खड़े हुए, और स्पष्टरूप से व्याख्यान देते हुए किसी को सुन रहे थे। परंतु साथी ने कोई विराम नहीं लिया, वह सीधा आगे चलता रहा और शीघ्र ही वे मैदान में एक टीले की ओर आये, जिस वे चढ़े, और उनके सामने, सफेद नहीं परंतु हल्की सी हरी आभायुक्त, एक विश्राममय रंग, एक रंग जो शमन और मन की शांति को प्रेरित करता है, का एक सुंदर भवन था। वे एक दरवाजे पर पहुँचे, जो उनके सामने स्वतः खुल गया, और वे भलीभांति प्रकाशयुक्त हॉल में गये।

अलगरनन ने बड़ी दिलचस्पी के साथ अपने आसपास देखा। उसने ऐसा सुंदर स्थान कभी नहीं देखा था, और उसने, अंग्रेज समाज के उपरी पर्त वाले एक ने, सोचा कि वह भवनों की सुंदरता का कद्रदान (connoisseur) है। वहॉ ऊँचे स्तम्भ और मुख्य स्वागत दहलीज (reception vestibule) पर ले जाते हुए अनेक गलियारे दिखाई दिये। स्थान के मध्य में, वहॉ एक गोल मेज दिखाई दी, जिस पर काफी संख्या में लोग बैठे थे। साथी अलगरनन के साथ आगे गया और उसने कहा, *'ये हमारा मित्र, अलगरनन सेंट क्लेयर द बोंकर्स है। आप लोग इनके आने की आशा कर रहे थे और मेरा विश्वास है, आपने इन्हें एक कमरा दे दिया होगा।'*

वहॉ कागजों के फैंटने की एक तेज आवाज हुई और एक युवा औरत ने कहा, *'हॉ ये ठीक है श्रीमान्, मैं इसे, इसका कमरा दिखा दूँगी।'* तत्काल ही एक जवान आदमी खड़ा हुआ और उनकी ओर चला। *'मैं आपको आपके कमरे तक ले जाऊँगा, कृपया मेरे पीछे आयें।,'* उसने कहा। साथी ने अलगरनन की दिशा में थोड़ा सा नमन किया, मुड़ा और भवन के बाहर निकल गया। अलगरनन ने, एक नरम गलीचे बिछे हुए गलियारे से होकर, अपने नये मार्गदर्शक का अनुगमन किया और तब काफी बड़े कमरे की ओर मुड़ा, एक कमरा, जिसमें बिस्तर, एक मेज थी और उसके साथ संलग्न दो छोटे कमरे और थे।

'अब, श्रीमान्, क्या आप कृपा करके बिस्तर पर लेट जायेंगे और एक चिकित्सक दल आयेगा और आपकी परीक्षा करेगा। जबतक कि डॉक्टर आपको ऐसे अनुज्ञापत्र (परमिट) न दे दें, आपको इस

कमरे को छोड़ने की आज्ञा नहीं है।' वह मुस्कराया और उसने कमरे को छोड़ दिया। अलगरनन ने अपने आसपास देखा, और तब दूसरे दो कमरों में गया। एक सुविधाजनक गद्देदार पलंग (couch) और कुर्सियों के साथ, एक रहने वाला कमरा प्रतीत हुआ और दूसरा–ठीक है–कड़े फर्श और एक कड़ी कुर्सी के साथ, ये अत्यंत छोटा और खाली कमरा था, इसके अलावा कुछ नहीं। अलगरनन ने एकाएक सोचा, *'ओह, प्रकटरूप से, यहॉ कोई प्रसाधन सुविधायें (toilet) नहीं हैं।'* और तभी उसे एक विचार आया, यहॉ प्रसाधन सुविधायें क्यों होनी चाहिये– निश्चितरूप से, उसे ऐसी सुविधाओं का उपयोग करने की, कोई हाजत नहीं हुई थी और शायद, वे यहॉ, इस स्थान में ऐसी चीजों को नहीं करते थे!

अलगरनन बिस्तर के बगल से खड़ा हुआ और उसने आश्चर्य किया कि क्या किया जाये। क्या उसे इस स्थान से भाग जाने का प्रयास करना चाहिए? वह फ्रांसीसी खिड़कियों (French windows) पर गया और पाया कि उन्हें स्वतंत्रतापूर्वक खोला जा सकता था। परंतु जब उसने बाहर जाने का प्रयास किया–नहीं–वहॉ उसे रोकता हुआ, कुछ अदृश्य प्रकार का एक अवरोध था। उसमें से आरम्भिक हड़बड़ चली गई और वह पलंग की ओर वापस चला और उसने अपने कपड़े उतारना शुरू किया। तब उसने सोचा, *'मैं रात की पोशाक (night attire) के बिना क्या करूँगा?'* जैसे ही उसने सोचा कि उसने खड़खड़ाहट सुनी और फिर से वही सरसराहट अनुभव की, और नीचे देखते हुए उसने पाया कि, वह, पृथ्वी पर उसके अस्थाई निवास की अवधि के लिए उपयुक्त, एक लंबे, सफेद, रात्रि चोगे (nightgown) को पहने हुआ था। उसने पर्याप्त आश्चर्य में अपनी भौंहें चढ़ाईं, और तब धीमे से, विचारसहित बिस्तर पर गया। मिनटों बाद दरवाजे पर एक टूटी हुई थपकी हुई। अलगरनन ने कहा *'अंदर आओ,'* और तीन लोगों, दो आदमी और एक औरत ने ऐसा किया। उन्होंने अपने आप का परिचय, उन्हें निर्धारित पुर्नवास दल के सदस्य के रूप में दिया। वे बैठे, और अलगरनन के आश्चर्य के लिए, किसी स्टेथेस्कोप (stethoscope) या ध्वनि देने वाली छड़ियों (sounding sticks) का उपयोग नहीं किया गया, नब्ज नहीं देखी गई। बदले में, उन्होंने केवल उसको देखा, और बात करना प्रारंभ कर दिया :

'आप यहॉ इसलिए हैं क्योंकि आपने आत्महत्या जैसा गंभीर अपराध किया है, जिसके द्वारा पृथ्वी पर आपका पूरा जीवन व्यर्थ हो गया, इसलिए आपको पुनः प्रारंभ करना होगा और इस आशा में कि आप अगली बार आत्महत्या का अपराध किये बिना सफल होंगे, ताजा अनुभवों में होकर गुजरना होगा।' आदमी कहता चला गया कि इस आशा में कि उसका स्वास्थ्य तेजी से सुधर जाये, अलगरनन को, विशेष शमनकारी किरणों में होकर गुजारा जायेगा। उसे बताया गया कि जितना जल्दी संभव हो सके, उसका पृथ्वी पर लौटना आवश्यक था। जितना जल्दी वह पृथ्वी पर लौटता है, उसके लिए उतना ही आसान होगा।

'परंतु मैं पृथ्वी पर कैसे लौट सकता हूँ?' अलगरनन विस्मय से बोला। 'मैं मरा हुआ हूँ, या कम से कम मेरा भौतिक शरीर मरा हुआ है, इसलिए तुम कैसे सोचते हो कि तुम मुझे वापस उसमें डाल सकते हो।'

युवा औरत ने उत्तर दिया, *'हॉ, परंतु तुम्हें पृथ्वी पर पूरी तरह से गलत चीजें सिखाई जाने के कारण, तुम गंभीर गलत धारणा में हो। भौतिक शरीर, पृथ्वी पर मात्र एक परिधान है, जिसे आत्मा धारण करती है ताकि, विशेषरूप से छोटे कार्य किए जा सकें, ताकि कुछ निश्चित कठोर पाठ सीखे जा सकें, क्योंकि आत्मा स्वयं ऐसे निम्न कंपनों का अनुभव नहीं कर सकती, इसलिए, उसे एक परिधान लेना पड़ता है, जो उसे चीजों का अनुभव प्राप्त करने की अनुज्ञा प्रदान करता है। तुम पृथ्वी पर जाओगे और उन माता–पिताओं से पैदा होओगे, जो तुम्हारे लिए चुने जायेंगे। तुम उन परिस्थितियों में पैदा होगे, जो तुम्हें, अपने अनुभवों के द्वारा, सर्वाधिक लाभ प्राप्त करने के लिये सक्षम बनायेंगे, और, उसने* कहा, *'ध्यान रखो कि लाभप्रद होने से हमारा जो आशय है, उसका अर्थ, आवश्यकरूप से, धन नहीं होता, क्योंकि पृथ्वी पर अधिक आध्यात्मिक लोगों में से कुछ, गरीब होते हैं, जबकि धनवान लोग धूर्त*

होते हैं। ये इस पर निर्भर करता है कि, किसी को क्या करना है, और ये सोचा जाता है कि तुम्हारे मामले में, तुमको ऐसे धन और सुख के लिए पाला पोसा गया है, इसने तुम्हें ठेल दिया कि इसबार तुमको अपेक्षाकृत गरीबी की अवस्थाओं को लेना चाहिए।'

उन्होंने कुछ समय तक बातचीत की और, अलगरनन धीमे धीमे, उन भिन्न भिन्न परिस्थितियों, जिनसे वह विश्वास की ओर लाया गया था, को समझ सका। शीघ्र ही, वह महसूस कर सका कि ईसाइयत केवल एक नाम था, यहूदी केवल एक नाम था, जैसे कि बौद्ध और मुस्लिम थे, इस्लाम और दूसरी आस्थायें थीं, और वास्तव में, वहॉ केवल एक ही धर्म था, एक धर्म, जिसे वह अभीतक समझ नहीं सका था।

तीनों लोग चले गये, और कमरे में प्रकाश मन्द पड़ गया। ये ऐसा था मानो रात, अलगरनन पर घिर आई है। उसने सुखपूर्वक विश्राम किया, उसने चेतना खो दी और सो गया, और सोया और वह नहीं जानता था, कितने लंबे समय तक सोया, ये मिनट भी हो सकते हैं, ये घण्टे भी हो सकते हैं, ये दिन भी हो सकते हैं। परंतु अलगरनन सोया और जैसे ही उसने ऐसा किया, उसकी आत्मा पुनर्जीवित हो गई और उसमें, बाद में, स्वास्थ्य आ गया।

अध्याय–चार

अलगरनन, सुबह चमकीली धूप और पेड़ों की डालियों पर गीत गाती हुई चिड़ियों की आवाज में–चटकदार धूप में जगा? अलगरनन ने, प्रारंभ से याद किया कि ये धूप नहीं थी। यहाँ सूर्य नहीं था, हवा स्वयं जीवित थी। उसने चादर को एक तरफ धकेल दिया और अपने पैरों को फर्श पर बाहर की ओर झुलाया, और चलकर खिड़की तक गया। बाहर, हर चीज इतनी चटकदार और इतनी प्रसन्नचित्त थी, जैसे कि वह कल रही थी–क्या ये कल थी ? अलगरनन पूरी तरह से दिक्भ्रमित (disoriented) हो गया था, वह नहीं जानता था कि क्या वहाँ दिन या रातें होती हैं, वहाँ समय गुजरने का कोई लेखाजोखा नहीं दिखाई दिया। वह वापस अपने पलंग पर गया और जबतक कि उसने उस सब पर, जो हो चुका था, विचार किया, अपने हाथों को अपने सिर के पीछे रखे हुए, अपनी चादर पर लेटा।

तभी वहाँ दरवाजे पर, थपकी की फिर एक आवाज हुई, और उसके निमंत्रण पर, एक आदमी अंदर प्रविष्ट हुआ, एक बहुत गंभीर दिखने वाला आदमी, एक वह, जो अत्यधिक पूर्णता से अपने कर्तव्यों को जानने के लिए प्रकट हुआ था। *'मैं यहाँ आपसे बात करने आया हूँ'* उसने कहा, *'क्योंकि हमें डर है कि आप, उस सच्चाई के प्रति, जो आप अनुभव कर रहे हैं, गहरे संदेह में हैं।'*

अलगरनन ने अपने हाथ अपने बगल में रखे, और अपने सैनिक प्रशिक्षण के साथ, वह लगभग 'सावधान (attention)' की अवस्था में लेट गया, मानो कि वह एक सैनिक अस्पताल में हो। *'हर चीज, जो मैंने देखी, श्रीमान्,'* उसने कहा, 'ईसाई धर्मतंत्र की शिक्षाओं का विरोध करती हैं। मैं देवदूतों से मिलने की अपेक्षा करता था, मैं उनसे वीणाऐं (harps) बजाते हुए होने की उम्मीद करता था, मैं मोतियों के दरवाजों और देवदूतों को देखने की अपेक्षा करता था, परंतु बदले में, मैं पाता हूँ कि ये स्थान, भलीभांति भव्यतापूर्ण ग्रीन पार्क (Green Park), या हाइड पार्क (Hyde Park), या कोई दूसरा भलीभाँति देखभाल किया गया पार्क हो सकता है। उसने कहा, *'मैं विभ्रमों (hallucinations) में, रिचमोंड पार्क (Richmond Park) भी अनुभव करता रहा हूँ।'*

नया डॉक्टर हँसा और उसने कहा, *'ठीक है, आप विशिष्टरूप से, कट्टर ईसाई नहीं हैं। यदि आप एक रोमन कैथोलिक रहे होते, हमें कहने दें, और यदि आप अपने धर्म में, वास्तव में, विश्वास करते, तो जब आप यहाँ आये, आप उन देवदूतों को देख रहे होते और आपने, वे देवदूत तबतक देखे होते, जबतक कि, बदले में, उनके दिखने की असत्यता ने महसूस न करा दिया होता कि वे आपकी कल्पना के दैत्य नहीं थे। यहाँ हम यथार्थतापूर्वक व्यवहार करते हैं। क्योंकि आप संसार के अनुभवी व्यक्ति हैं, क्योंकि आप एक सैनिक रहे हैं और आपने जीवन और मृत्यु दोनों को देखा है, आप हमें, जैसे कि हम वास्तव में हैं, देख सकते थे।'*

अलगरनन ने अपनी पिछली *'मृत्यु'* के कुछ दृश्यों के बारे में सोचा, उसने कहा, *'मैं इस मामले में अत्यधिक कौतुहलमय (intrigued) हूँ, क्योंकि भूलोक में मृत्यु, भय की एक ऐसी ही चीज है, कि लोग मृत्यु से, निराशापूर्वक भयभीत हैं। और एक चीज, जिसने मुझे हमेशा ही इतनी महानता से आनंदित किया है कि कोई व्यक्ति, जो जितना अधिक धार्मिक होता है, वह मृत्यु के विचार पर भी, उतना ही अधिक भय महसूस करता है।'* वह मुस्कराया और उसने अपने हाथ जोड़े और (कहना) जारी रखा। *'मेरा एक अत्यंत सम्मानित मित्र है, एक सर्वाधिक कट्टर कैथोलिक, जो, जब कभी भी वह सुनता है कि कोई व्यक्ति बीमार है और मृत्यु के समीप है, वह हमेशा कहेगा कि, वह कितना प्रसन्न है कि बेचारे श्रीमान् अमुक–अमुक, अब ठीक हो रहे हैं और अब इतने अच्छे स्वास्थ्य में हैं! परंतु मुझे बतायें श्रीमान्,'* अलगरनन ने कहा, *'यदि मृत्यु के बाद जीवन है, तो ऐसा क्यों है, कि लोग मृत्यु से डरते हैं?'*

डॉक्टर, मानोकि, प्रश्नपूर्वक उस पर मुस्कुराया, और उसने कहा, *'ठीक है, मुझे सोच लेना चाहिए था, कि आपकी जैसी शिक्षा और अनुभव और समझने की शक्ति वाले व्यक्ति ने, उसका उत्तर महसूस कर लिया होगा। चूंकि स्पष्टरूप से आपने नहीं किया, मुझे व्याख्या करने दें; लोग, कुछ*

निश्चित चीजों को पाने के लिए, कुछ चीजों को सीखने के लिए, कुछ कठिनाईयों का अनुभव प्राप्त करने के लिए, जिससे आत्मा (spirit) या अह्म (ego) या अधिस्वयं (overself)–जो भी आप इसे कहना चाहें, कहें–की शुद्धि की जा सकती है और वहाँ इसे प्रबलित किया जा सकता है, पृथ्वी पर जाते हैं। इसलिए यदि कोई व्यक्ति आत्महत्या करता है, तो ये कार्यक्रम के प्रति, चीजों की योजना के प्रति, अपराध है। और यदि लोग देखते कि मृत्यु कितनी स्वाभाविक है, और कैसे ये केवल, उन्नति के किसी दूसरे चरण में जीवन है, तो वे सभी स्थानों पर, अपनी मृत्यु की अभिलाषा कर रहे होते और पृथ्वी और दूसरे विश्वों के सभी उद्देश्य खो जाते।'

निश्चितरूप से, ये अलगरनन के लिए एक नया विचार था, यद्यपि, वास्तव में, तर्कयुक्त। परंतु वह अभी भी संतुष्ट नहीं था; *'तब मुझे समझना है कि, क्या मृत्यु का भय, कृत्रिमरूप से प्रेरित, और पूरी तरह से तर्कहीन है?'* उसने पूछा।

'हाँ वास्तव में,' डॉक्टर ने कहा। *'ये प्रकृति का प्रावधान है कि हर एक मृत्यु से डरेगा, हरेक वह सब कुछ करेगा, जो जीवन को बचाने के लिए कर सकता है, ताकि, पृथ्वी के अनुभव संभाल कर रखे जा सकें और तर्कपूर्ण और पूर्वनिश्चित परिणाम में होकर ले जाये जा सकें। इसलिए यदि कोई व्यक्ति आत्महत्या करता है, तो वह हर चीज को अपने रास्ते से बाहर फेंक रहा है। ध्यान दो,'* उसने कहा, *'जब स्वाभाविक मृत्यु का समय आता है सामान्यतः कोई भय नहीं होता, सामान्यतः वहाँ कोई पीड़ा नहीं होती, क्योंकि सूक्ष्मलोक के दूसरे राज्य के लोग कह सकते हैं कि जब कोई व्यक्ति मरने वाला है, अथवा, जैसी हम प्राथमिकता देते हैं, परिवर्तन से होकर गुजरता है, और जैसे ही वह समय आता है, एक प्रकार का बेहोश करने वाला कारक (anaesthesia) उत्पन्न होता है, और मृत्यु की पीगों की बजाय, वहाँ आनंददायक विचार, मुक्ति के विचार, घर लौटने के विचार आते हैं।'*

अलगरनन कुछ रोष के साथ प्रारंभ हुआ, *'ओह, परंतु ये नहीं हो सकता।'* उसने कहा, *'क्योंकि लोग, जो मर रहे हैं, अक्सर ऐंठ जाते हैं और छटपटाते हैं और वास्तव में बहुत गहरी पीड़ा में होते हैं।'*

डॉक्टर ने दुखी होकर अपना सिर हिलाया; *'नहीं, नहीं,'* उसने कहा, *'तुम गलती पर हो। जब व्यक्ति मरता है, तो कोई पीड़ा नहीं होती, परंतु पीड़ा से मुक्ति होती है, शरीर ऐंठ सकता है, शरीर आह भर सकता है, परंतु ये कुछ निश्चित उत्तेजित नाड़ियों की एकमात्र स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। इसका ये अर्थ बिलकुल नहीं है कि व्यक्ति दुख झेल रहा है। देखने वाला, सामान्यतः, जो हो रहा है, उसका निर्णायक नहीं है। चेतन भाग, जो रूपांतरण में होकर गुजरने के समीप है, भौतिक भाग, जो प्रमुखतः पशु अस्तित्व है, से अलग हो जाता है। इसलिए–ठहरो!'* उसने कहा, *'जब तुमने आत्महत्या की, तुमने कोई पीड़ा अनुभव नहीं की थी, क्या की थी?'* अलगरनन ने, गहरे विचारों में, अपनी ठोड़ी को रगड़ा, तब उसने संकोचपूर्वक उत्तर दिया, *'ठीक है नहीं, मेरा ख्याल है, मैंने नहीं की। मैं, सिवाय एक अत्यधिक शीत के अनुभव के, किसी भी चीज का अनुभव याद नहीं कर सकता, और तब इससे अधिक कुछ नहीं। नहीं श्रीमान, शायद आप ठीक हैं, इस पर विचार करता हूँ, नहीं, मैंने कोई कष्ट अनुभव नहीं किया, मैंने आनंदित अनुभव किया, मैंने स्वयं को आश्चर्यचकित अनुभव किया।'*

डॉक्टर हँसा और ये कहते हुए उसने अपने हाथों को मला, *'आह अब तुम मेरे पास हो! तुम स्वीकार करते हो कि तुमने कोई कष्ट अनुभव नहीं किया, और फिर भी तुम, एक बंधे हुए सुअर की भांति चीख रहे थे। और वैसे ही, एक पकड़े हुए सुअर के साथ, कुल मिलाकर जो तुम पाते हो, वह है, फेफड़ों में से तेजी से बाहर निकाली जाती हुई, और स्वरतंतुओं (vocal chords) को उत्तेजित करती हुई हवा, ताकि कोई ऊँचे स्वर की चीख निकाल पाता है। तुम्हारे साथ, तुम्हारे खून से बुलबुलों के उठने के कारण से, हस्तक्षेप की गई उसी प्रकार की प्रतिक्रिया हुई थी, क्योंकि तुम्हारी गर्दन के विच्छेद से, एक लंबी ऊँचे स्वर की चीख, प्रचुरतापूर्वक निकली। ये ऊँचे स्वर की चीख (squeal) ही थी, जो सेवा करती हुई दुर्भाग्यशाली नौकरानी को, स्नानगृह में लाई।'*

हॉ, अब ये काफी तर्कयुक्त लगा। अलगरनन देखना प्रारंभ कर रहा था कि यह कोई दृष्टिभ्रम *(hallucination)* नहीं, बल्कि, तथ्य था, और तब उसने कहा, *'परंतु मैं समझता था कि जैसे ही कोई व्यक्ति मरा, उसे निर्णय के लिए, तत्काल ही, भगवान के सामने ले जाया जाता है। उसे तत्काल ही ईसा (Jesus) और शायद पवित्र मॉ (The Holy Mother) और शिष्यगण (disciples), दिखते हैं।'*

डॉक्टर ने दुखपूर्वक अपना सिर हिलाया और उत्तर दिया, *'परंतु आप कहते हैं कि आपने सोचा था कि आप ईसा (Jesus) को देखेंगे; मानते हुए कि आप एक यहूदी (Jew) रहे होते, मानते हुए कि आप एक मुस्लिम (Moslem) रहे होते, मानते हुए कि आप एक बौद्ध धर्मी (Buddhist) रहे होते, क्या आप, अभी भी, जीसस को देखने की आशा करते हैं या क्या आप सोचते हैं कि स्वर्ग में, जहॉ हर धर्म के लोग जाते हैं, स्थान अलग अलग देशों में बॅटा हुआ है? नहीं, पूरा विचार ही निरर्थक (absurd), बकवास (nonsense), आपराधिक मूढ़ता (criminal folly) है, और पृथ्वी के बेवकूफ शिक्षा देने वाले, वास्तव में, आबादी को अपनी भयानक सूक्तियों (horrendous legends) के द्वारा प्रदूषित करते हैं। लोग यहॉ आते हैं और सोचते हैं कि वे नरक में हैं। सिवाय पृथ्वी के, यहॉ कोई नरक नहीं है!'*

अलगरनन वास्तव में उछल पड़ा। उसने अपने शरीर में, फड़कन महसूस की, मानो आग पर हो। *'ओह, तब क्या मैं स्वर्ग में हूँ?'* उसने पूछा।

'नहीं, वास्तव में नहीं,' डॉक्टर ने जवाब दिया। *'ऐसा कोई स्थान नहीं है। स्वर्ग या नरक जैसा कुछ नहीं है, परंतु यहॉ एक सुधारगृह (purgatory) है। सुधारगृह एक स्थान है, जहॉ आप अपने पापों का परिमार्जन करते हैं, और ये वह है, जो आप यहॉ कर रहे हैं। यहॉ शीघ्र ही, आप एक समिति से मिलेंगे, जो आपको ये निर्णय करने में मदद करेगी कि जब आप पृथ्वी पर लौटते हैं, आप क्या करने जा रहे हैं। आपको, उस योजना को जीने के लिए, जो आपने स्वयं बनाई है, पृथ्वी पर लौटना है, और वास्तव में यही कारण है कि मैं देखने के लिये अभी यहॉ आया था, कि क्या आप समिति के सामने प्रस्तुत होने के लिए तैयार हैं?'*

अलगरनन ने भय का एक झटका अनुभव किया, उसने महसूस किया, मानो कि, बर्फ जैसी ठंडी उंगलियॉ उसकी रीढ़ पर ऊपर की ओर जा रहीं थीं। यह किसी भी सैनिक चिकित्सा बोर्ड की तुलना में बुरा लगा, जिसमें डॉक्टर जॉच करते थे, कोंचते थे और इस, या उस पर, किसी की प्रतिक्रियाओं के सम्बंध में, सर्वाधिक भौंचक्का करने वाले सवाल पूछते थे, और कैसे कोई, यौनजीवन की व्यवस्था करने जा रहा था और क्या वह विवाहित था, क्या उसकी कोई कन्यामित्र थी? नहीं, जो कुछ भी हो, अलगरनन –किसी बोर्ड? के सामने जाने के लिए, किसी उत्साह को नहीं बुला सका था।

'ठीक है,' उसने कहा, *'निश्चितरूप से, मुझे जीवन से यहॉ तक गुजरने के, अत्यधिक तीखे सदमे से कुछ हद तक उबरने के लिए, समय दिया जाने वाला है। मान लिया कि मैं यहॉ, अपने खुद के संकल्प (volition), जो अति घृणित अपराध दिखाई देता है, के माध्यम से आया था, परंतु मैं अभी भी, सोचता हूँ कि मुझे उबरने के लिए और देखने के लिए कि मैं क्या करना चाहता हूँ, कुछ समय दिया जाना चाहिए और जब मैं इस विषय पर हूँ, उसने कहा, 'आत्महत्या इतना घृणित अपराध कैसे हो सकता है, यदि वे नहीं जानते कि वे एक अपराध कर रहे हैं?' मैं हमेशा समझता हूँ कि यदि एक व्यक्ति बुरा करने के लिए सजग नहीं था, तो उसे ऐसा करने के लिए दंडित नहीं किया जा सकता।'*

'ओह बकवास!' डॉक्टर विस्मिय से बोला। *'तुम उसी प्रकार के, अपने ढंग के हो, जो सोचते हैं कि क्योंकि तुम एक उच्चवर्ग से आते हो, तुम एक विशिष्ट सुविधा पाने के अधिकारी हो। तुम हमेशा तर्कसंगत करने का प्रयास करते हो। ये तुम्हारे प्रकार का, एक दोष दिखाई देता है। तुम पूरी अच्छी तरह जानते थे कि, आत्महत्या करना गलत है, तुम्हारा खुद का धर्म विशेष भी, जो तुम्हारे मन में बैठा रहता है, जैसा वहॉ नीचे पढ़ाया जाता है, कि स्वयं का विनाश, व्यक्ति के विरुद्ध, राज्य के विरुद्ध, और धर्मतंत्र के विरुद्ध एक अपराध है।'*

अलगरनन ने भयपूर्वक, कटुता से देखा और कहा, *'तब आप जापानी लोगों का लेखाजोखा किस प्रकार करते हैं, जो, यदि चीजें उनके विरुद्ध जायें, तो आत्महत्या करते हैं? यदि एक जापानी आदमी सोचता है कि उसकी छवि खराब हो गई है, तो वह सार्वजनिकरूप से अपनी अंतडियॉ निकाल लेता है। वह आत्महत्या है, क्या वह नहीं है? वह, वह कर रहा है, जिसमें उसे विश्वास है, क्या वह ऐसा नहीं है?'*

डॉक्टर अत्यधिक परेशान दिखाई दिया और उसने उत्तर दिया, *'इससे चीजें थोड़ी सी भी बदल नहीं जातीं कि जापान में चेहरे को स्तब्ध होने से बचाने के बजाय, अपने आप को नष्ट कर लेना, सामाजिक रिवाज हो गया है। मुझे कहने दो; मुझे इसे अपने अवचेतन में ठूंस ठूंस कर भरने दो; आत्महत्या कभी भी ठीक नहीं है, आत्महत्या हमेशा ही एक अपराध है। आत्महत्या करने के लिए, हल्का बनाने वाली ऐसी परिस्थितियॉ, कभी भी, नहीं होतीं। इसका अर्थ ये है कि व्यक्ति का, उस संकल्प को, जो उसने स्वेच्छा से किया था, बनाये रखने के लिए, पर्याप्त उन्नयन नहीं हुआ है। परंतु अब हम और अधिक समय बर्बाद न करें,' उसने कहा, 'तुम यहॉ छुट्टी मनाने के लिए, नहीं हो, तुम यहॉ इसलिए हो कि हम, पृथ्वी पर तुम्हारे आगामी जीवन को बनाने में, तुम्हारी मदद कर सकें। आओ!'*

वह सहसा उठा और अलगरनन के ऊपर खड़ा हुआ, जिसने विषादपूर्वक (plaintively) शिकायत भरी आह भरी (bleated), *'ठीक है, क्या मैं नहाने का एक अवसर नहीं पा सकता? क्या मुझे दूर खींचा जाए, उससे पहले मैं नाश्ता नहीं कर सकता ?'*

बकवास (bosh)! *'डॉक्टर ने विस्मय के साथ चिड़चिड़ाहट में कहा।' यहॉ तुम्हें नहाने की आवश्यकता नहीं है, यहॉ तुम्हें खाने की आवश्यकता नहीं है। तुम स्वयं वातावरण के द्वारा, सफाई किये गये और खिलाये गये हो। तुम प्रश्न की भीख मॉग रहे हो, क्योंकि तुम एक आदमी, केवल वह, जो अपनी सभी जिम्मेदारियों से बचने का प्रयास करता है, से अधिक होते नहीं दिखते। मेरे साथ आओ।'*

डॉक्टर मुड़ा और दरवाजे की तरफ चला। वास्तव में, अलगरनन बहुत बहुत अनिच्छापूर्वक, अपने पैरों पर खड़ा हुआ और उसके पीछे चला। डॉक्टर ने बाहर का रास्ता बताया। वे दायीं ओर मुड़े और एक उद्यान में प्रविष्ट हुए, जिसे अलगरनन ने पहले नहीं देखा था। वातावरण आश्चर्यजनक था, वहॉ हवा में कोई चिड़िया नहीं थीं और अनेक पशु आसपास लेटे हुए थे, और तब जैसे ही डॉक्टर और अलगरनन एक कोने की ओर मुड़े, उन्हें एक दूसरी इमारत दिखाई दी। ऐसा लगता था कि यह कोई विहार (cathedral) था, वहॉ इस पर मीनारें (spires) थीं, और इस बार वहॉ ऊपर जाते हुए ढालू रास्ते (ramp) के बजाय, अनेक अनेक सीढ़ियॉ थीं। वे सीढ़ियों पर चढ़े और एक बड़ी इमारत की एक ठंडी खोह (recess) में गये। अनेक लोग प्रवेशद्वार को घेरे हुए थे, दीवारों के आसपास, आरामदायक बेंचों पर लोग बैठे हुए थे। फिर ड्योढ़ी (vestibule) के केन्द्र में, वहॉ पहले की तरह वृताकार, आगन्तुक स्वागत मेज (reception desk) जैसी दिखती थी, परंतु इस बार वहॉ काफी बूढ़े कर्मचारी लोग बैठे थे। डॉक्टर ने ऊपर की तरफ, अलगरनन की अगुवाई की और तब कहा, *'हम परिषद के सामने जाने के लिए आये हैं।'*

सहायकों में से एक, अपने पैरों पर खड़ा हुआ और उसने कहा, *'कृपया मेरे पीछे आयें।'* पथ पर नेतृत्व करते हुए सहायक के साथ, डॉक्टर और अलगरनन पीछे चले। एक गलियारे में नीचे की ओर थोड़ा चलने के बाद, वे वायीं ओर एक उपकक्ष (ante-room) में गये। सहायक ने कहा, 'कृपया, यहॉ इंतजार करें।' जबकि वह चलता रहा और उसने एक दरवाजे पर थपकी लगाई और जब ऐसा करने का आदेश मिला, तब वह वहॉ प्रविष्ट हुआ। उसके पीछे का दरवाजा बंद हो गया और वहॉ, ध्वनियों की, केवल एकदम हल्की फुसफुसाहट ही सुनी जा सकती थी।

कुछ क्षणों के बाद, सहायक फिर बाहर आया और उसने ये कहते हुए, दरवाजे को खुला रखा *'अब तुम प्रवेश कर सकते हो।'* डॉक्टर अपने पैरों पर उछला और उसने अलगरनन को एक बॉह से

पकड़ लिया और उसे अंदर ले चला।

अनिच्छापूर्वक, अलगरनन आश्चर्य के साथ रुका, जब उसने कमरे में प्रवेश किया। ये वास्तव में, बहुत बड़ा कमरा था और उसके केन्द्र में धीमे धीमे घूमता हुआ एक ग्लोब (globe) था, नीले और हरे रंगों के साथ, एक ग्लोब। अलगरनन, अंतर्ज्ञान से (instinctively) जानता था कि यह पृथ्वी का प्रतिरूप (simulacrum) था। वह ये देखकर कि पृथ्वी का गोला घूम रहा था, बिना किसी दिखते हुए सहारे के घूम रहा था, मोहित और आश्चर्यचकित दोनों ही हुआ। वह अंतरिक्ष में नीचे की ओर, पृथ्वी, जो किसी अनदेखे सूर्य के द्वारा प्रकाशित हो रहीं थी, की ओर घूरता हुआ दिखाई दिया।

वहाँ, बहुत अच्छी तरह पॉलिश की हुई, बहुत विस्तारपूर्वक (intricately) नक्काशीदार, एक लंबी मेज थी, और मेज के एक सिरे पर, सफेद बालों वाला सफेद दाढ़ी वाला, एक बहुत बूढ़ा आदमी बैठा हुआ था। वह कृपालु दिखता था, परन्तु फिर भी, उसी समय, उसने कठोरता की छाप डाली। उसने ऐसा प्रभाव डाला कि यदि अवसर की मांग हो, तो वह वास्तव में, बहुत कठोर व्यक्ति हो सकता था।

अलगरनन ने एक उड़ती हुई (fleeting) निगाह डाली, और वहाँ, आठ दूसरे लोग, मेज पर बैठे हुए दिखाई पड़े, चार आदमी थे और चार औरतें थीं। डॉक्टर उसे, मेज के पैरों में, बैठने के एक स्थान तक ले गया। मेज, अलगरनन ने देखा, इतनी व्यवस्थित थी, इतनी आकृतिमय, कि सभी दूसरे सदस्य उसे बिना अपनी कुर्सी घुमाये भी देख सकते थे और संक्षिप्तरूप से उसने दस्तकारी (craftmanship) के ऊपर आश्चर्य किया, जो ऐसी जटिल (intricate) ज्यामिति से बनाई जा सकती थी। डॉक्टर ने कहा, *'ये, अलगरनन सेंट क्लेयर द बोंकर्स है। हमने तय किया है कि वह पुर्नप्राप्ति (recovery) की अवस्था तक पहुँच चुका है, जो आपकी सलाह से उसे लाभ प्राप्त करने योग्य बनायेंगे। मैं आपके सामने, अलगरनन सेंट क्लेयर द बोंकर्स को प्रस्तुत करता हूँ।'*

मेज के प्रमुख स्थान वाले बूढ़े आदमी ने, संक्षेप से, उन्हें बैठ जाने के लिए हामी भरी, तब उसने कहा, *'अलगरनन सेंट क्लेयर द बोंकर्स, आप यहाँ इसलिए हैं क्योंकि, आपने आत्महत्या करने का अपराध किया है। उन योजनाओं के बाबजूद, जो आपने उच्चों के कानून को ललकारने के रूप में बनाईं थीं, आपने स्वयं की हत्या की। क्या आप, पहले अपने बचाव में कुछ कहना चाहते हैं?'*

अलगरनन ने अपने गले को साफ किया और कंपकंपाया। डॉक्टर सामने की ओर झुका और फुसफुसाया, *'खड़े हो जाओ!'* अनिच्छापूर्वक, अलगरनन अपने पैरों पर खड़ा हुआ और उसने विद्रोहपूर्वक (defiantly) कहा, *'यदि मैंने एक निश्चित काम को करने की व्यवस्था की थी, और यदि मेरे द्वारा नहीं चुनी गई परिस्थितियों ने मेरे द्वारा इसके किये जाने को असंभव बना दिया, तब, निश्चितरूप से, मेरा जीवन, मेरा खुद का होने के कारण, यदि मैं ऐसा चुनता हूँ, तो मुझे इसको समाप्त करने का पूरा अधिकार है। मैंने इस स्थान पर आने का निर्णय नहीं किया था। मैंने केवल अपने जीवन को समाप्त करना तय किया था।'* ऐसा कहते हुए वह अवज्ञापूर्वक, झटके के साथ बैठ गया।

डॉक्टर ने दुखी होकर उसकी ओर देखा। मेज के केन्द्र में बैठे हुए बूढ़े आदमी ने, उसे बहुत दुख के साथ देखा, और चार आदमी और चार औरतों ने उसको करुणा के साथ देखा, मानो कि, ये सब उन्होंने पहले सुन रखा था। तब बूढ़े आदमी ने कहा, 'तुमने अपनी योजनायें बनाईं, परंतु तुम्हारा जीवन तुम्हारा खुद का नहीं है। तुम्हारा जीवन तुम्हारे अधिस्वयं (overself)–वह, जिसे तुम अपनी आत्मा (soul) कहते हो–का है, और तुमने अपने अधिस्वयं को, अपने अक्खड़पन से, और अपने अधिस्वयं को, अपने बेवकूफी भरे तरीके से, अपनी कठपुतली से वंचित करते हुए, घायल कर दिया है। इसके कारण तुम्हें पृथ्वी पर वापस लौटना पड़ेगा, और फिर से पूरा जीवन जीना पड़ेगा और इस बार निश्चित करें कि तुम आत्महत्या नहीं करोगे। अब हमें तुम्हारी वापसी का सबसे अच्छा समय, और तुम्हारे लिए सबसे अच्छी प्रकार की परिस्थितियाँ तय करनी हैं, और तुम्हारे लिए उपयुक्त मातापिता तलाशने हैं।

वहाँ कागजों को पलटने की विचारणीय आवाज हुई, और एक सदस्य अपनी सीट पर खड़ा

हुआ और ग्लोब के समीप चला। कुछ क्षणों के लिए, वह गोले पर देखता हुआ, परंतु कुछ भी नहीं कहता हुआ, वहॉ खड़ा हुआ। तब शांत, स्थिर, वह मेज की एक बगल वाले अपने स्थान पर वापस चला और उसने अपने कागजों पर कुछ चिन्ह बनाये।

'अलगरनन,' बूढ़े आदमी ने कहा, *'तुम, नीचे पृथ्वी पर, महान सुख की परिस्थितियों में गये थे। तुम एक पुराने स्थापित परिवार में गये थे, जिसमें तुम्हारी प्राणियों सम्बंधी सभी सुविधाओं पर ध्यान दिया गया। तुम्हें हर संभव सुविधा दी गई थी। धन कोई चीज नहीं थी। तुम्हारी शिक्षा, तुम्हारे देश में उपलब्ध, सबसे अच्छी प्रकार की थी। परंतु क्या तुमने उस हानि की सोची, जो तुमने अपने जीवन में की है? क्या तुमने उस निर्दयता की सोची, क्या तुमने सोचा कि तुम नौकरों को कैसे पीटा करते थे? क्या तुमने नौजवान नौकरानियों की सोची, जिन्हें तुमने पथ भ्रष्ट करने के लिए फुसलाया था?'*

अलगरनन, घृणा के साथ क्रोध (indignation) में अपने पैरों पर उछल पड़ा। *'श्रीमान्!' वह गर्मी के साथ चीखा, 'मुझे हमेशा ये बताया गया था कि नौकरानियॉ, वहॉ एक अविवाहित बेटे की सुविधा के लिए, उसका खिलौना बनने के लिए, यौन के सम्बंध में सीखने के लिए हैं। कोई बात नहीं, मैंने कितनी ही नौकरानियों को फुसलाया!, कोई गलत काम नहीं किया है।'* वह अशिष्टता के साथ काफी उबलता हुआ, नीचे बैठ गया।

'अलगरनन, तुम अच्छी तरह जानते हो,' बूढ़े आदमी ने कहा, *'तुम स्वयं उस वर्ग को अच्छी तरह जानते हो, क्योंकि तुम उसमें विश्वास करते हो, कि ये मात्र एक कृत्रिम चीज है। तुम्हारे विश्व में, यदि किसी व्यक्ति के पास धन है, या एक पुराने परिवार से आता है, जिसकी तरफदारी की जाती है, तब उन्हें अनेक सुविधाएँ मिलतीं हैं। जबकि यदि एक व्यक्ति गरीब है, और उसे ऐसे दूसरे परिवारों में से किसी एक के लिये काम करना पडता है, तो उन्हें सुविधाओं से मना कर दिया जाता है, और उसके साथ हीन प्राणियों की भांति व्यवहार किया जाता है। तुम, दूसरे किसी की भांति, नियम को जानते हो, क्योंकि, तुम अनेक बार वहॉ जीवन जी चुके हो और ये पूरा ज्ञान तुम्हारी अवचेतना (subconsciousness) में है।'*

मेज पर बैठी हुई औरतों में से एक ने, अपने होंठ सिकोड़े (pursed), मानो, उसने अभी–अभी, एक अत्यंत खट्टे करोंदे (gooseberry) को चखा हो, और उसने औपचारिकरूप से कहा, *'मैं अपनी राय को अभिलेख (record) में लाना चाहूँगी कि इस नौजवान को, अपना जीवन, कम सुविधा प्राप्त (under-privileged), की तरह पुनः प्रारंभ करना चाहिए। इसने हर चीज को अपनी तरह से किया है। मेरा विचार है कि इसे अपना जीवन, छोटे व्यापारी, कम सुविधा प्राप्त जमींदार के बेटे, या एक चरवाहे के बेटे के भी, रूप में शुरू करना चाहिए। '*

अलगरनन, गुस्से से, अपने पैरों पर उछल पड़ा। *'ऐसी बातों को कहने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?' वह जोर से चीखा। 'क्या तुम जानते हो कि मेरी शिराओं (veins) में नीला खून दौड़ता है? क्या तुम जानते हो कि मेरे पूर्वज धर्मयुद्ध पर गये थे? मेरा परिवार अति सम्मानित परिवारों में से एक है।'* उसे अपने भाषण के बीच में टोका गया, मानो कि ये एक वयस्क अध्यक्ष की तरफ से था, जिसने कहा, *'अब, अब, हम यहॉ बहस न करें। ये तुम्हारा कुछ भी भला नहीं करेगा। ये केवल तुम्हारे भार, जो तुम्हें सहन करना है, को बढ़ा देगा। हम तुम्हारे कर्म में कुछ जोड़ने का नहीं, परंतु इसे घटाने में तुम्हारी मदद करते हुए, तुम्हारी मदद करने का प्रयास कर रहे हैं।'*

अलगरनन उग्ररूप से (truculently) टूट पड़ा, *'ठीक है, अपने पूर्वजों (forebears) के सम्बंध में, मुझे किसी से कुछ नहीं कहना है। मैं कल्पना करता हूँ तुम्हारी,'* अपनी क्रुद्ध उंगली को उस औरत की ओर इशारा करते हुए जिसने कहा था, *'वैश्याओं के भडुओं या वैश्यागृह के व्यवस्थापकों या वैसे ही कुछ, से आते हो।' थू!'*

डॉक्टर ने मजबूती से अलगरनन की बॉह पकड़ी, और उसे यह कहते हुए, खींच कर कुर्सी पर

बैठा दिया, *'शांत रहो, तुम गंवार, तुम चीजों को अपने लिए इतनी खराब बना रहे हो। तुम अभी तक इस स्थान के बारे में, पहली चीज को भी नहीं जानते, शांत रहो और जो कहा जाता है, उसको सुनो।'*

अलगरनन इस विचार के साथ झुक गया कि वास्तव में, जैसा कि उसे पहले बताया गया था, वह सुधारगृह में था, परंतु तब उसने अध्यक्ष को सुना, जिसने कहा, *'अलगरनन, तुम हमारे साथ ऐसा व्यवहार कर रहे हो, मानो हम तुम्हारे शत्रु हैं, ऐसा नहीं है। तुम जानते हो, तुम यहाँ सम्मानित अतिथि के रूप में नहीं हो। तुम यहाँ उस किसी के रूप में हो, जिसने अपराध किया है, और इससे पहले कि हम इस मामले में आगे जाऐं, एक चीज है जिसको मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ: यहाँ किसी की शिराओं में नीला खून होने जैसी कोई चीज नहीं है। यहाँ वर्ग या जाति या पद को विरासत में पाने जैसी चीज नहीं है। तुम्हारे मस्तिष्क की धुलाई कर दी गयी है, तुम लोकोक्तियों और परीकथाओं, जो तुम्हें बताई गई हैं, के द्वारा आनंदित हो।'* वह पानी का एक घूंट पीने के लिए, एक क्षण के लिए रुका, और तब उसने फिर जारी रखने से पहले, बोर्ड के दूसरे सदस्यों की ओर देखा।

'तुम्हें अपने मन में सुनिश्चित होना चाहिए, निश्चित विचार, कि अनेक अनेक विश्वों के अस्तित्व, अस्तित्व के अनेक अनेक तलों के अस्तित्व, जो दया के द्वारा सीखने में असमर्थ दिखाई देते हैं, कठिनाईयों के द्वारा सीखने के लिए, सभी विश्वों में निम्नतम, पृथ्वी को जाते हैं। और जब कोई पृथ्वी पर नीचे जाता है, वह उस शरीर को ग्रहण करता है, जो किसी काम को पूरा करने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। यदि तुम एक अभिनेता होते, तुम ये अनुभव करते कि तुम मात्र एक आदमी, एक पात्र, एक अभिनेता हो, और तुमको एक जीवनकाल में, अनेक अनेक नाटकों में भाग लेने के लिए बुलाया जा सकता है। इसलिए एक अभिनेता के रूप में, एक जीवनकाल में तुमको एक राजकुमार, या एक राजा, या एक भिखारी, के रूप में परिधान धारण करना पड़ सकता है। एक राजा के रूप में तुम्हें नाटक करना पड़ सकता है कि तुम राजवंशी खून के हो, परंतु ये केवल दिखावा है। नाटक मंडली का हर एक आदमी इसे जानता है। कुछ अभिनेता–जैसे कि तुम हो–इतने आगे तक बढ़ जाते हैं कि वे वास्तव में, विश्वास करते हैं कि वे राजकुमार या राजा हैं, परंतु वे कभी भिखारी नहीं होना चाहते। अब कोई बात नहीं, तुम कौन हो, कोई बात नहीं, तुम्हारे उन्नयन की श्रेणी कितनी ऊँची है, जब तुम यहाँ आये हो, ऐसा इस कारण से है, कि तुमने एक अपराध किया है, और ये वास्तव में, आत्महत्या का अपराध है। तुम यहाँ आये हो ताकि तुम अपने अपराध का प्रायश्चित कर सको। तुम यहाँ आये हो ताकि हम, ऊँचे तलों के संपर्क में रहने वाले, और स्वयं पृथ्वी के संपर्क में भी रहने वाले, ये सुझा सकें कि उस नुकसान की भरपाई, किस प्रकार की जा सकती है।

अलगरनन बिलकुल भी खुश नहीं दिखाई दिया। *'ठीक है, मैं कैसे जानता कि आत्महत्या करना गलत था और तुम जापानियों के बारे में क्या कहने जा रहे हो, जो सम्मान के लिए आत्महत्या करते हैं?* उसने, अभी भी काफी उग्रता के साथ पूछा। अध्यक्ष ने कहा, *'आत्महत्या, कभी भी, करने के लिए उचित चीज नहीं है। ये बौद्ध पुजारियों* (Buddhist priests), *शिंटों पुजारियों* (Shinto priests)[10], *जो अपने आप को आग में जला लेते हैं या खुद की अंतड़ियाँ निकाल लेते हैं या अपने आप को ऊँची पहाड़ियों से फेंक देते हैं, तक के लिए भी अच्छी चीज नहीं है। मनुष्य द्वारा निर्मित नियम, कभी भी, ब्रह्मांड के नियमों से आगे नहीं हो सकते। परन्तु मेरी बात सुनो।'*

अध्यक्ष ने अपने कागजों पर देखा और कहा, *'तुम, जबतक कि एक निश्चित आयु के न हो जाओ, जीवित रहने वाले थे और तुमने पृथ्वी पर अपने जीवन को, उस आयु से तीस वर्ष पहले ही,*

---

10 अनुवादक की टिप्पिणी : शिंटों (Shinto) धर्म, जापान का प्राचीन धर्म है और कईबार इसे बौद्ध धर्म का ही सम्प्रदाय माना जाता है। शिंटों धर्म जापान देश का एक प्रमुख और मूल धर्म है इसमें कई देवी देवता हैं, जिनको कामी (Kami) कहा जाता है। हर कामी किसी न किसी प्राकृतिक शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। ये बौद्ध धर्म से काफी कुछ मिलता जुलता है और इसमें कई सिद्धान्त जुड़ गये है। किसी समय, शिंटों धर्म, जापान का राजधर्म हुआ करता था। इस धर्म में, जापान के राजा को प्रधान गुरु माना जाता था, परंतु दूसरे विश्वयुद्ध के बाद से, ये स्थिति समाप्त हो गई है। समुराई (Samurui) इसी धर्म को मानते हैं।

समाप्त कर दिया, और इस प्रकार तुम्हें पृथ्वी पर तीस वर्ष जीवित रहने और तब पृथ्वी पर मरने के लिए वापस लौटना पड़ रहा है, और दोनों जीवन, एक वह, जो तुमने समाप्त कर दिया, और दूसरा वह, जिसमें तुम अभी जा रहे हो, केवल एक ही गिने जायेंगे–मैं इसे क्या कहूँ? हम इसे कक्षा का सत्र कह सकते हैं।'

दूसरी औरत ने, अध्यक्ष का ध्यान आकर्षित करने के लिए, हवा में तेजी से अपना हाथ हिलाया; *'हॉ श्रीमती जी,'* उसने प्रश्न किया, 'क्या आपको कुछ टिप्पणी करनी है?'

'हॉ मुझे करनी है, श्रीमान्,' उसने कहा, *'मैं सोचती हूँ कि ये नौजवान अपनी स्थिति (position) को बिलकुल भी महसूस नहीं करता। उसका ख्याल है कि वह किसी भी दूसरे से, भयानकरूप से (terribly) अच्छा है। मैं सोचती हूँ, शायद, उसे उन मृत्युओं के बारे में बता दिया जाये, जो उसके कारण हुई हैं। मैं सोचती हूँ कि उसे उसके भूतकाल के बारे में और अधिक बताया जाये।'*

'हॉ, हॉ, परंतु जैसे कि आप अच्छी तरह जानती हैं कि वह स्मृतियों के हॉल (Hall of Memories) में अपने भूतकाल को देखने के लिये जा रहा है,' कुछ हद तक चिड़चिड़े होते हुए अध्यक्ष ने कहा।

'परन्तु श्रीमान् अध्यक्ष,' औरत ने कहा, *'स्मृतियों के हॉल के अंतराल बाद में आते हैं, और हम चाहते हैं, कि यह नौजवान, अब ध्यान से हमारी बात सुने–यदि ऐसी चीज, ऐसे एक युवा में संभव है,'* अलगरनन पर एक गहरी नजर डालते हुए उसने कहा, *'मेरा ख्याल है कि अब उसे अपनी स्थिति के बारे में अधिक बताया जाये।'*

अध्यक्ष ने आह भरी, अपने कंधे उचकाये और कहा, *'बहुत अच्छा, चूँकि ये तुम्हारी इच्छा है, हम अपने दस्तूर (routine) को बदल देंगे और मैं सुझाव देता हूँ कि अब हम नौजवान को स्मृतियों के हॉल में ले जाएं, ताकि वह देख सके कि वह क्या है, जो हमें उसकी स्वयं की शैली की उपलब्धियों की आसक्ति से कमतर बनाता है।'*

वहॉ कुर्सियों के हटाये जाने की आवाज हुई, जैसे ही उन्हें पीछे की तरफ धकेला गया और बोर्ड के सभी सदस्य अपने पैरों पर उठ खड़े हुए। डॉक्टर भी कुछ हताशा में उठा और उसने अलगरनन से कहा, *'आओ, तुमने इसके लिए कहा है।' अलगरनन ने पूरे क्षोभ के साथ (indignantly), एक से लेकर दूसरे तक देखा और चिढ़ाता हुआ बोला, 'मैंने इस स्थान पर आने के लिए नहीं कहा था, मैं नहीं जानता कि आप सब ऐसी हलचल किसलिए कर रहे हैं। यदि मुझे पृथ्वी पर वापस जाना ही है, तो वापस जाने दें और इसके साथ आगे बढ़ने दें।'*

अध्यक्ष ने कहा, *'अब हम तुम्हारे साथ स्मृतियों के हॉल तक जायेंगे। वहॉ तुम निर्णय करने के योग्य होगे कि क्या हम, जैसा कि तुम सोचते हुए लगते हो, अपने अधिकारों से बाहर जा रहे हैं, या, क्या हम उदार हो रहे हैं। आओ!'* ऐसा कहते हुए वह मुड़ा और बड़े प्रकोष्ठ में से बाहर की ओर, और फिर से, खुले में बाहर ले जाने लगा। बाहर खुले में, यह इतना तरोताजा करने वाला था, जीवन्त वातावरण, पक्षी और मित्रवत् मधुमक्खियॉ, जो आसपास भिनभिनाती थीं। यहॉ काटने या कष्ट देने के लिए सूक्ष्मकीट नहीं थे, परंतु केवल वे सूक्ष्मकीट, जो उसमें सम्मिलित करते हैं, जिन्हें कोई परिचित वातावरण संगीत कह सकता है।

अध्यक्ष और बोर्ड के दूसरे सदस्यों ने, लगभग स्कूल के भोज की तरह से, रास्ता दिया, अलगरनन ने सोचा, सिवाय इसके कि ये मेरे लिए कोई भोज नहीं है। और तब उसने बगल से डॉक्टर पर निगाह डाली और कहा, *'ऐसा लगता है, आप मेरे जेलर हैं, एह?'* डॉक्टर ने कोई जवाब नहीं दिया, इसके बजाय उसने अलगरनन की बॉह को अधिक सख्ती से पकड़ लिया और वे साथ साथ चलते गये।

शीघ्र ही, वे एक दूसरी इमारत तक आये। अलगरनन ने पहली नजर में विस्मय व्यक्त किया,

'ओह, अलबर्ट हॉल (The Albert Hall), हम लंदन में फिर कैसे वापस आ गये?' डॉक्टर हँसा, वह वास्तव में आनंदित था– *'ये अलबर्ट हॉल नहीं है,'* उसने कहा, *'वास्तुकला (architecture) में अंतर को देखो। ये स्थान सुंदर है!'* वे साथसाथ हॉल के अंदर प्रविष्ट हुए, और ये, जैसा डॉक्टर कह चुका था, *'सुंदर'* था। अध्यक्ष ने किसी अंदरूनी खोहों की ओर रास्ता दिखाया। अलगरनन ने अनुमान किया समय से कि वे उस रास्ते पर चल रहे थे, जिससे कि वे इमारत के ठीक दिल में पहुँच जायें। तब एक दरवाजा खुला और अलगरनन हॉफा और इतनी जल्दी से अपने को पीछे खींच लिया कि वह डॉक्टर से टकराया, जो हँसा और उसने कहा, *'ओह नहीं, ये ब्रह्मांड का किनारा नहीं है, तुम गिर नहीं सकते, ये पूरी तरह सामान्य है। अपने आपको शांत करो, यहॉं कुछ खतरनाक होने वाला नहीं है।'*

अध्यक्ष अलगरनन की ओर मुड़ा और उसने कहा, *'आगे बढ़ो, नौजवान, आगे बढ़ो, तुम जान जाओगे कि कब रुकना है और पूरा ध्यान दो।'*

एक क्षण के लिए, अलगरनन, वास्तव में डरा हुआ कि वह ब्रह्मांड के किनारे के ऊपर से गिरने वाला था और सभी तारे लुढ़क कर उसके पैरों में आने वाले थे, एकदम शांत खड़ा रहा। तब एक पक्के धक्के ने उसकी पीठ के छोटे हिस्से पर आगे की ओर धकेल दिया और शुरू होने पर, उसने पाया कि वह रुक नहीं सकता था।

अलगरनन, उसकी जानकारी के परे, किसी बल के द्वारा धकेला जाता हुआ, आगे की तरफ चला। वह चला और इस प्रकार छायायें, आकृति और रंग भी उसके साथ फिसलते गये, छायायें अधिक घनी होती हुईं, जब तक कि अंत में एक निश्चित रुकावट वहॉं नहीं आ गई। वह, अपने किसी संकल्प के बिना, एकदम रुक गया। उसने कुछ भ्रम में अपने आसपास देखा, और एक स्वर ने कहा, *'प्रवेश करो।'* और फिर, अपनी ओर से बिना किसी चेतन प्रयास के, अलगरनन, उसके आरपार, जो एक अगम्य दीवार दिखती थी, आगे चलता रहा। वहॉं गिरने का, चोट सम्बंधी (traumatic feeling) एक भयानक अहसास हुआ। तब अलगरनन टूटा हुआ सा (disembodied) दिखाई दिया, वह नीचे के एक दृश्य को देख रहा था। एक नर्स, एक बच्चे को पकड़े हुए थी, जिसे उसकी मॉं ने ठीक अभी प्रसव किया था। एक तीखा सा दिखने वाला सभ्य पुरुष, नीचे की ओर, बच्चे को देख रहा था, और तब उसने अचानक ही अपनी मूछों को मरोड़ा (twirled) और नर्स से कहा, *'हम्म, भयानक तुच्छ प्राणी, क्या ऐसा नहीं है? जिससे मैं एक आदमी होने की आशा करता हूँ, उसकी तुलना में, एक मरे हुए चूहे जैसा अधिक दिखता है। ठीक है, नर्स इसे दूर ले जाओ।'* दृश्य घूम गया और तब अलगरनन ने स्वयं को कक्षा में शिक्षक द्वारा पढ़ाये जाते हुए देखा। उसने खुद को शिक्षक पर नीच प्रकार की चालें लगाते हुए, खेलते हुए देखा, जो इस सम्बंध में अधिक कुछ नहीं कह सका, क्योंकि अलगरनन के पिता एक निरंकुश सामंत थे, जो शिक्षकों और अध्यापिकाओं और नौकरी वाले सभी लोगों को निंदित से भी अधिक नीचा समझते थे। अलगरनन ने, भय के साथ, उन सब चीजों में से कुछ को देखा, जो उसने की थीं, चीजें जो अब उसे लजा रहीं थीं। तब दृश्य फिर बदल गया। अब वह अधिक बड़ा, शायद चौदह साल का था, उसने अपने आपको चौदह और पंद्रह के बीच होना अनुमानित किया–और उसने अपने आपको एक दरवाजे में होकर, जिसमें परिवार की जमींदारी का कॉफी निर्जन भाग था, कुछ हद तक चोरी से देखते हुए देखा। एक अत्यंत सुंदर युवा नौकरानी साथ आई और अलगरनन पीछे झुका, और जैसे ही वह दरवाजे में होकर गुजरी उस पर छलांग लगाई और उसको कमरे में खींचते हुए, उसे गले के आसपास पकड़ लिया। शीघ्रता से उसने दरवाजे का ताला बंद लगाया और अभी भी, उसको चीखने से रोकने के लिए, नौकरानी को उसकी गर्दन से पकड़े हुए, उसने उसके कपड़े उतारे। अलगरनन ने, जो उसने किया था, उसके विचार के ऊपर गर्म हुआ। तब फिर से दृश्य बदल गया। वह अपने पिता

के अध्ययनकक्ष में खड़ा हुआ था, रोती हुई नौकरानी वहाँ भी वैसे ही खड़ी थी। अलगरनन के पिता अपनी मूछों को मरोड़ रहे थे और लड़की को जो कहना था, उसको सुन रहे थे और तब वह रूखेपन से हॅसे और उन्होंने कहा, *'मेरे भगवान, औरत, क्या तुम नहीं समझतीं कि नौजवान को यौन के सम्बंध में कुछ पता करना है, तुम सोचती हो तुम यहाँ क्यों हो? यदि तुम इस प्रकार की एक छोटी चीज को स्वीकार नहीं कर सकतीं, तो मेरे घर से निकल जाओ!'* गर्व सहित (imperiously) उसने अपना हाथ उठाया और लड़की के चेहरे पर चॉटा जड़ दिया। वह लौटी और कमरे से रोती हुई दौड़ी। पिता अलगरनन की ओर मुड़े और कहा, *'हम्म, अतः तुम्हारे अंदर खून दौड़ने लगा है, नौजवान, अब तुम और अधिक कुंवारे नहीं हो, ऐ? ठीक है, अच्छे काम को जारी रखो, उसे अपने अभ्यास में लाओ। इससे पहले कि मैं इस दुनियाँ से जाऊँ, मैं इस घर में अनेक शक्तिशाली बेटों को पैदा होते देखना चाहता हूँ।'* ऐसा कहते हुए पिता ने अलगरनन को एक इशारे से बर्खास्त कर दिया।

चित्र बदला, और फिर बदला। इटॉन, नदी पर चप्पू चलाते हुए। ऑक्सफोर्ड, फौज, खोदने वाले आदमी, और तब समुद्रों के आरपार। बॉयरों के खिलाफ युद्ध। अलगरनन ने, भय के साथ, चित्रों को देखा, उसने अपने आपको, अपने आदमियों को, एक डरे हुए असुरक्षित परिवार, जिसने कुछ नहीं किया था, परंतु अंग्रेजी में दिये गये आदेश को समझ नहीं पाया था, क्योंकि वे केवल अफ्रीकी भाषा बोलते थे, की सामूहिक हत्या करने का आदेश देते हुए देखा। उसने लाशों को सड़क के बगल की खाइयों में छितराते हुए देखा, और जैसे ही एक नौजवान लड़की में पेट में नोंक से भाला भौंका गया और एक बगल से उछाल दिया गया, उसने अपने आपको संवेदनाहीन ढंग से (collously) हॅसते हुए देखा।

चित्र जारी रहे, अलगरनन ठंडे पसीने से नहा गया। उसने बीमार महसूस किया। उसने उल्टी करने की अत्यंत आवश्यक इच्छा अनुभव की, परंतु कर नही संका। उसने देखा कि मृत्युओं की संख्या बढ़ रही है, सत्तर, चौहत्तर, अठहत्तर मृत्यु। अठहत्तर मौतें और तब जैसे ही वह उन्यासीवे दूसरे आदमी को मारने जा रहा था, एक बन्दूकधारी (sniper) उठ खड़ा हुआ और उसने अलगरनन में गोली मार दी। इस प्रकार अब वह आदमी नहीं था।

चित्र चलते गये जबतक कि अलगरनन के लिए उनका कोई अर्थ नहीं दिखाई दिया। वह चक्कर खाकर गिर पड़ा और एक दीवार के विरुद्ध झुक गया और तब बिना ये जाने हुए कि कैसे, बिना अपने खुद के इरादे में परिवर्तन करते हुए, उसने फिर, अपने आपको डॉक्टर और बोर्ड के दूसरे सदस्यों के साथ पाया। उन्होंने उसे पहेली की दृष्टि से देखा और एक क्षण के लिए, अध्यक्ष के चेहरे पर करुणा की एक दमक आई। परंतु उसने केवल यही कहा, *'ठीक है, अब हम अपनी चर्चा के ऊपर वापस चलें।'* वह मुड़ा और स्मृति के हॉल से बाहर की ओर चला और बोर्ड के कक्ष की ओर वापस गया।

फिर, कमरे में अध्यक्ष ने कहा, *'तुमने अपने जीवन की घटनाओं को देख लिया है। तुमने उस, नीले खून या लाल खून को देख लिया है, तुमने आत्महत्या के अपराध में समाप्त होने तक, अनेक अपराध किये हैं। अब हमें निर्णय करना है, या फिर भी निर्णय लेने में, हमें तुम्हारी सहायता करनी है, जो तुम्हारे लिए सर्वोत्तम वृत्ति (vocation) होगी, जिसके द्वारा तुम उस हानि की क्षतिपूर्ति कर सकोगे, जो तुमने युद्ध की क्रूरता (viciousness) के नाम पर की है, और अपराध, जो तुमने आत्महत्या में किया है। क्या तुम्हारे कोई विचार हैं, तुम क्या होना चाहोगे?'*

अलगरनन बहुत अनुशासित हो गया (chastened) था। उसने बहुत कंपता हुआ महसूस किया, उसने, उस तुलना में, जितना कि पहले कभी महसूस करता याद कर सकता था, सबसे खराब महसूस किया। उसने अपने सिर को अपने हाथों में पकड़ा और अपनी कोहनियों को मेज पर रखता हुआ झुका।

कमरा शांत था, पूरी तरह शांत। उस सब पर, जो उसने देखा था, सोचता हुआ, अलगरनन वहाँ अनिश्चित समय के लिए बैठा, और सबसे खराब, उस सब कार्यों पर, जो उसने देखे थे, उन सब चीजों पर सोचते हुए, उसने चिंतन किया कि उसे क्या होना चाहिए? उसके दिमाग में एक विचार कौंधा कि शायद उसे एक पुजारी पादरी, शायद उसे एक बड़ा पादरी होना चाहिए और थोड़े से प्रभाव के साथ, वह मुख्य धर्माध्यक्ष तक भी जा सकता है। परंतु तभी, कहीं से, उसमें ऐसी प्रभावशाली निषेधात्मक भावना आई कि, तेजी के साथ, उसने अपने चिंतन की दिशा को बदल दिया।

एक पशु चिकित्सक (veterinarian), उसने सोचा। परंतु नहीं, वह जानवरों को उतना अधिक पसंद नहीं करता था और एक पशु चिकित्सक होने में कोई बड़ा मान (status) नहीं था, क्या था? वह एक ऐसी अवनति होगी, उसने सोचा, अपनी जाति के एकमात्र पशु चिकित्सक के लिये।

उसने, कहीं से, शांत हँसी का प्रभाव पाया, हँसी जिसने उसकी नकल उतारी, हँसी जिसने उसे बताया कि वह अभी भी गलत रास्ते पर था। और तब उसने सोचा कि वह एक डॉक्टर बन जायेगा, एक नये ढंग का डॉक्टर, वह भद्र लोगों के बीच कार्य करेगा, और शायद वह अपने भविष्य में सत्तर या अस्सी लोगों के जीवन को बचा सकेगा और शायद इसके अंत में, अगला जीवन प्रारंभ करने के लिए, वह अपनी चादर को साफ कर देगा।

आदमियों में से एक, पहली बार बोला, *'वास्तव में, हम तुम्हारे विचारों को इस गोले में देखते रहे हैं,' और उसने मेज में अंदर रखे एक गोले की ओर संकेत किया, जिसको अलगरनन ने इससे पहले नहीं देखा था, क्योंकि ये ढका हुआ था, परंतु अब वह चमक रहा था और अलगरनन के विचारों को प्रदर्शित कर रहा था। जैसे ही अलगरनन इस अनुभूति पर, कि सबकुछ, जो उसने सोचा था, प्रगट हो चुका है, गहराई के साथ शर्मिंदा हुआ, वैसे ही गोले के अन्दर की छवियाँ भी गहराई के साथ शर्मिंदा हुईं।* अध्यक्ष ने कहा, *'हाँ, मैं पूरी तरह से सिफारिश करता हूँ कि तुम डॉक्टर बनो, परंतु मैं बिलकुल सिफारिश नहीं करता कि तुम एक सामाजिक डॉक्टर बनो। यह योजना है, जिसे मैं तुम्हारे मामले में सिफारिश करूँगा।'*

अध्यक्ष रुका और उसने कुछ कागजों को ताश की तरह फैंटा और तब कहा, *'तुमने जीवन लिया है, तुमने दूसरों को घायल किया है, और दूसरों के अंगभंग किये हैं।'* अलगरनन अपने पैरों पर खड़ा हुआ। *'नहीं! मैंने घायल नहीं किये और मैंने अंगभंग नहीं किये'*–अध्यक्ष ने बीच में हस्तक्षेप किया, *'हाँ, तुम्हारे आदेशों के द्वारा दूसरे मारे गये थे, दूसरे लोग घायल किये गये थे और अंगभंग किये गये थे, और तुम पर भी ये दोष ठीक वैसे ही लागू होता है, जैसे कि उन व्यक्तियों पर, जिन्होंने वास्तव में ये कार्य किए। परंतु तुम मुझे सुन रहे हो, और तुमने भली भाँति, सावधानीपूर्वक सुना है, क्योंकि जो मैं कह रहा हूँ, उसे दोहराऊँगा नहीं। तुमको एक डॉक्टर होना चाहिए, परंतु गरीब जिले में एक डॉक्टर, जहाँ तुम गरीबों के बीच में काम कर सकते हो, और तुम अपना जीवन गरीबी की अवस्थाओं में प्रारंभ करोगे। बहुत देर बाद नहीं, कुलीन तंत्र के एक सदस्य, परंतु एक वह, जिसे अपना रास्ता खुद बनाना पड़ेगा। और उस जीवन के तीसवें वर्ष में, तुम्हारा जीवन समाप्त हो जायेगा और यदि तुम अपनी आत्महत्या को दोहराते हो, तो तुम यहाँ लौटोगे, या, यदि नहीं दोहराते हो, तो तुम सूक्ष्मलोक के उच्चतर सूक्ष्मतल को जाओगे, जहाँ तुमको, जितनी अच्छी तरह से अपने जीवन में किया, उसके अनुसार तैयार किया जायेगा, जिसमें होकर तुम गुजरने वाले हो।'*

कुछ समय के लिए वहाँ कुछ विचारणीय चर्चा हुई, और तब अध्यक्ष ने अपनी भूमिका की थपकी दी और कहा, *'हम उन मातापिता की योजना बनाने के लिए, जो तुम्हारे होंगे, उस क्षेत्र की योजना*

बनाने के लिए, जिसमें तुम जन्म लोगे और तारीखों की व्यवस्था करने के लिए, फिर मिलेंगे। उस समय तक, तुम विश्रामगृह में लौट सकते हो। सभा स्थगित की जाती है।'

अलगरनन और डॉक्टर, गंभीरतापूर्वक (sombrely) कोई भी एक शब्द नहीं बोलते हुए, उद्यान के रास्तों पर चले, और तब डॉक्टर, अलगरनन को अपने विश्रामगृह में ले गया और उसे यह कहते हुए, एक उपयुक्त कमरा दिखाया, *'मैं बाद में, जब मुझे ऐसा करने के लिए निर्देश दिये जायेंगे, तुम्हारे पास वापस आऊँगा।'* संक्षिप्त से सिर हिलाने के बाद, वह मुड़ा और चला गया और अलगरनन, अपने सिर को अपने हाथों में पकड़े हुए, एक कुर्सी पर बैठा, दीनता का चित्र, जो कुछ उसने देखा, उस पर विचार करते हुए, जो कुछ उसने किया था, उस पर विचार करते हुए और सोचते हुए कि *'ठीक है, यदि यह सुधारगृह है, तो भगवान को धन्यवाद कि, कोई नरक नहीं है।'*

अध्याय–पॉच

अलगरनन ने, अपनी भींची हुई उंगलियों के बीच, अपने बालों को फेंटा। उसने निश्चितरूप से, दुखी अनुभव किया। हॉ – ठीक है, उसने आत्महत्या की थी। बहुत अच्छा, उसने ऐसा किया था, अब वह इसके लिए भुगतान कर रहा था और वह इसके लिए कुछ अधिक ही भुगतान कर रहा था। वह आश्चर्य करता हुआ वहॉ बैठा कि यह कैसे खत्म होने वाला था। उसने अपने मन में उन सारी घटनाओं की समीक्षा की, जो तब से, जब वह इस सुधारगृह के तल पर आया, घटी थीं।

'इसलिए एक सामन्त होना गलत है, एह? नीले खून वाला होना गलत है, एह ?' वह अपने आप में, फर्श पर नीचे की ओर ऑखें तरेर कर देखते हुए, जोर से बड़बड़ाया। तब, वह दरवाजे के खुलाव पर चक्कर खाते हुए घूमा। दृष्टि में, जो प्रविष्ट हुई, एक अत्यंत आकर्षक नर्स–अपना चेहरा एक प्रातःकालीन सूर्य की तरह चमकते हुए, वह अपने पैरों पर खड़ा हुआ। *'आह!'* वह बहुत प्रसन्न हुआ, *'एक देवदूत मझे यहॉ से, इस अंधियारे स्थान से, निकालने के लिए आया!'* उसने, बिना छिपी हुई उत्सुकता के साथ, नर्स पर यह कहते हुए नजर मारी, *'इस जैसे स्थान में क्या खूब सुंदरता। क्या–'*

'रुको!' नर्स ने कहा, *मैं तुम्हारे प्रलोभनों (blendishments) से पूरी तरह से मुक्त हूॅ। तुम सभी आदमी, एक जैसे होते हो, जब तुम इस तल पर आते हो, तो केवल एक ही चीज सोचते हो, और मैं तुम्हें कह सकती हूॅ कि हम औरतें, इस प्रकार के सभी व्यवहारों से, जिनको तुम उपयोग में लाते हो, थक चुकी हैं।'*

'बैठो,' उसने कहा, *'मुझे तुमसे बात करनी है और तुम्हें दूसरे स्थान पर ले जाना है। परंतु सबसे पहले, मैं उसे सुनने में मदद नहीं कर सकी, जो तुमने, जब मैं अंदर आयी, दबी जुबान से कहा था।'*

'तुम्हारे पीछे, कुमारी जी,' अलगरनन ने अत्यंत शिष्टाचार (gallantry) के साथ कहा। नर्स बैठ गई और अलगरनन ने उसके बगल से अपना स्थान पाने की जल्दी की। उसे अत्यधिक अनादरित (piqued) होना पड़ा, जब उसने जल्दी से अपने बैठने के स्थान को दूर कर लिया, ताकि वह उसके सामने हो गई।

'अब, 53,' उसने कहा। अलगरनन ने अपना हाथ रोका। *'आप गलती पर हैं, कुमारी जी, मैं तिरेपन नहीं हूॅ; मैं अलगरनन सेंट क्लेयर द बॉकर्स हूॅ,'* उसने कहा। नर्स ने आवाज के साथ नाक चढ़ाकर सूंघा और अपने सिर को उछाला, *'बेवकूफ मत बनो,'* उसने जवाब दिया, *'तुम अब किसी नाटक में नहीं हो, तुम यहॉ इस तल पर भूमिकाओं के बीच हो, जैसा कोई इसको शब्दों में कह सकता है।'* उसने अपना हाथ उसे बोलने से रोकने के लिए उठाया, और तब कहा, *'यहॉ, विशेषरूप से, दो चीजें हैं, जिनके बारे में, मैं तुमसे पहले बात करना चाहती हूॅ। पहली यह है कि यहॉ तुम अलगरनन नहीं हो, जो कुछ भी हो, परंतु तुम तिरेपन नंबर हो। तुम यहॉ लगभग पर्याप्तरूप से अपराधी हो, तुम्हें यहॉ आत्महत्या के अपराध के लिए सजा दी गई है, और यहॉ तुम्हें, तुम्हारी मूल आवृति के अंतिम दो अंकों से संदर्भित किया जाता है, तुम्हारे मामले में ये तिरेपन है।'*

बेचारे अलगरनन ने अपने मन को संदेहयुक्त महसूस किया। *'मूल आवृति?'* उसने कहा, *'मुझे डर है कि तुम, पूरी तरह से मेरी समझ के बाहर, बात कर रही हो। मुझे थोड़ा सा भी अनुमान नहीं है कि तुम किस सम्बंध में बात कर रही हो। मेरा नाम अलगरनन है, तिरेपन नहीं।'*

'तुम्हें सीखने को बहुत कुछ है नौजवान,' नर्स ने कुछ रूखेपन के साथ कड़ा उत्तर दिया। *'तुम उल्लेखनीयरूप से, उस व्यक्ति जैसे, जो अपने आपको शाही रक्त का निकट सम्बंधी बताता हैं, अज्ञानी दिख रहे हो, परंतु पहले हम उस पहले पर ही बात करें। तुम ऐसे सोचते हुए दिखते हो कि पृथ्वी पर एक विशेष कार्य ने तुम्हारे लिए एक पदवीधारी व्यक्ति के रूप में होना आवश्यक बना दिया, जिसे तुम यहॉ तक लिए चले आये। क्या तुम नहीं लाये!'*

'ओह!' अलगरनन फूट पड़ा, *'तुम कोई साम्यवादी या वैसे ही कुछ होनी चाहिए। यदि तुम सोचती हो कि कोई भी आदमी इन पदों का पात्र नहीं है–कि सभी व्यक्ति एक समान हैं!, तुम एक साम्यवादी आधार को ग्रहण कर रही हो।'*

नर्स ने खीज (exasperation) के साथ, विरत होकर आह भरी, और तब उसने थकते हुए कहा, *'तुम वास्तव में, भोले हो, मैं तुम्हें यहॉ और अब, ये बताने जा रहीं हूँ कि साम्यवाद, कम से कम आत्महत्या के समान, एक अपराध है, क्योंकि एक व्यक्ति जो आत्महत्या करता है, जहॉ अपने खुद के प्रति अपराध करता है, तथापि, वहीं साम्यवाद, पूरी जाति के प्रति, मानवता के प्रति एक अपराध है। साम्यवाद, वास्तव में, विश्व के शरीर में एक कैंसर की भांति है। हम साम्यवाद के पक्ष में नहीं है, और समय पर–काफी समय के बाद–साम्यवाद, अंतिम रूप से उखाड़ फेंक दिया जायेगा क्योंकि ये असत्य नियमों पर आधारित है। परंतु यह वह नहीं है, जिस पर हम चर्चा कर रहे हैं।'*

उसने अपने हाथ के कुछ कागजों की ओर संदर्भ दिया, अपना सिर उठाया और सीधे अलगरनन की ओर ये कहते हुए देखा, *'हमको तुम्हें इस भयानक विचार से दूर हटाना है, जिसेकि तुम रखे हुए हो, क्योंकि तुम एकबार, एक पदवीधारी व्यक्ति थे, और तुम हमेशा पदवीधारी व्यक्ति ही बने रहना चाहते हो। अब हम पृथ्वी के पदों में ही, चीजों पर विचार करें। एक लेखक को सोचें, जो कुछ समय पहले, नीचे उस पृथ्वी पर था; उसका नाम शेक्सपीयर (Shakespeare) था। उसने नाटक लिखे, जिनसे तुम अच्छी तरह परिचित हो, और लोग उन भूमिकाओं का अभिनय करते हैं, जो उसने लिखीं थीं। कईबार, नाटक में एक खलनायक होगा, कईबार एक राजा चित्रित किया गया होगा, परंतु मैं तुम्हें पूरी तरह मुँहफट की तरह, ये बताने जा रहीं हूँ कि कोई अभिनेता, जो हेमलेट (Hamlet) में राजा की भूमिका निभाने के बाद, ये सोचते हुए कि वह अभी भी यथार्थ में एक राजा था, अपने शेष पूरे जीवन के लिए वैसा ही बन गया था। लोग, उस विशेष भूमिका को, जो उन्हें उन कामों को सीखने के योग्य बनाऐगी, अपने जीवन के नाटक में निभाने के लिए, पृथ्वी पर जाते हैं, और लौटकर सूक्ष्मतलों में वापस आते हैं, तब वास्तव में, वे इस काल्पनिक पहचान को त्याग देते हैं, और अपनी स्वाभाविक पहचान में वापस आते हैं, जो उनके स्वयं के, उत्कृष्ट अधिस्वयं के द्वारा निर्धारित की जाती है।'*

अलगरनन–या अब से आगे उर्फ तिरेपन–ने कंधे उचकाये और उत्तर दिया, *'ओह प्रिय, 'ओह प्रिय! मैं वास्तव में, नीले मौजे (stockings) नापसंद करता हूँ। जब किसी के पास एक सुंदर युवा लड़की है, जो उपदेश देना और पढ़ाना प्रारंभ करती है, तब वास्तव में, मेरी भावनाएँ पूरी तरह बुझ जाती हैं।'*

'ओह, कितना प्रसन्न!' नर्स ने कहा, 'क्योंकि मैंने तुम्हारे विचारों को अत्यंत दुखद पाया है, और मैं वास्तव में, प्रसन्न हूँ कि मैंने तुम्हारी एकदम स्पष्ट वासना (lust) को अवमंदित कर दिया।'

उसने फिर, अपनी टिप्पिणियों (notes) की ओर, एक कागज को दूसरे कागज के विरुद्ध जांचते हुए संदर्भित किया, और तब उसने कहा, *'आपको गलत विश्रामगृह में भेज दिया गया है। मुझे आपको दूसरे में ले जाना पड़ेगा, जो अधिक अस्थाई प्रवृति का है क्योंकि, आपको जितना जल्दी संभव हो, उसी क्षण पृथ्वी पर वापस भेजा जाना है, आप यहॉ, वास्तव में, एक क्षणिक मात्र हैं, और थोड़ा सा ही है, जो हम आपके लिए कर सकते हैं, सिवाय इसके कि जितना जल्दी हो सके, आपको वहॉ भेज दें। कृपया मेरे पीछे आयें।'* इसके साथ ही वह अपने पैरों पर खड़ी हुई और दरवाजे का रास्ता दिखाया। तिरेपन–पूर्व अलगरनन! उसके आगे झपटा और थोड़ा झुकने की नकल करते हुए, दरवाजे को खुला रखा; *'आपके पीछे, मैडम, आपके पीछे,'* उसने कहा।

नर्स अपनी उच्च अदा में अकड़ती हुई, दरवाजे में होकर चली और डॉक्टर, जो ठीक अभी प्रवेश करने वाला था, से टकराई। *'ओह, मुझे खेद है, डॉक्टर, मैंने आपको नहीं देखा,'* नर्स विस्मयपूर्वक बोली।

'ओह, इस सम्बंध में कुछ मत सोचो, नर्स, इसके सम्बंध में कुछ मत सोचो। मैं नंबर तिरेपन को लेने आ रहा था, क्योंकि मंडल (board) उससे दोबारा मिलना चाहता है। क्या तुम्हारे पास उसे कहने को पहले कुछ है?'

नर्स डॉक्टर पर मुस्कराई और उसने उत्तर दिया, *'नहीं, मैं उससे छुटकारा पाकर अधिक प्रसन्न होऊँगी। अपनी स्थिति में, एक मनुष्य के लिए, वह तरोताजा दिखाई देता है। मैं उसे सिखाने का प्रयत्न करती रही हूँ कि उदास मनोदशा का यहॉ कोई मूल्य नहीं है परंतु, साम्यवादी खून के साथ, ये कम से कम, उसकी तुलना में थोड़ा सा ऊँचा है। परंतु डॉक्टर,'* नर्स ने जल्दी से कहा, *'मंडल को उसके साथ समाप्त कर देने के बाद, उसे अस्थाईयों के घर जाना है, जहॉ क्रमों का मिश्रण था और मैं विश्वास करती हूँ कि यही वह कारण है कि तुम उसे यहॉ लाए। क्या तुम यह देखोगे कि वह अस्थाई लोगों के घर जाता है?'* डॉक्टर ने अपना सिर हिलाया और कहा, *'हॉ, नर्स, मैं इस पर ध्यान दूंगा।'* तब उसने तिरेपन के प्रति गर्दन हिलाई और कहा, *'मेरे साथ आओ, हमें पहले से ही देर हो चुकी है।'* इसके साथ ही वह मुड़ा, और अलगरनन के साथ, वह दूसरे गलियारे की तरफ नीचे चला? नहीं, तिरेपन ने पहले नहीं देखा है। वह बेचारा गरीब, निश्चितरूप से, उदास दिखाई दिया और बड़बड़ाया, *'सुधार गृह? ठीक है, ये सुधार गृह है, मुझे विश्वास है कि जब मैं यहॉ से बाहर निकलूंगा, मैं कुछ इंच छोटा हो जाऊँगा। शायद, मैं स्वयं अपने घुटनों के बल चलकर आया हूँ!'* डॉक्टर, जिसने उसकी बड़बड़ाहट को पकड़ लिया था, प्रसन्नतापूर्वक हॅसा और उसने उत्तर दिया, *'हॉ, वास्तव में, जब तुम इस स्थान को छोड़ोगे, तुम काफी छोटे हो जाओगे, क्योंकि तब तुम एक शिशु होगे, अपनी मॉ के अंदर!'*

डॉक्टर और तिरेपन नंबर एक लंबे गलियारे में मुड़े। दो प्रहरी प्रवेश द्वार के अगल बगल बैठे थे। एक ने संक्षिप्त रूप से डॉक्टर को सिर हिलाया और कहा, *'क्या ये तिरेपन है?'*

'हॉ ये है,' डॉक्टर ने कहा। 'क्या तुम वही हो, जो हमारे साथ चलने वाले हो?'

दायीं ओर का प्रहरी अपने पैरों पर खड़ा हुआ और उसने जबाव दिया, *'मैं वहीं हूँ, जो आपके साथ जाता है, इसलिए हम और अधिक समय बरबाद न करें, क्या हम चलें?'* मुड़ते हुए, लम्बे कदमों से, वह गलियारे में काफी तेज चाल के साथ चुस्ती में चला। उसके साथ बने रहने के लिए, तिरेपन और डॉक्टर को तेजी से (briskly) कदम बढ़ाने पड़े। वे काफी दूर तक लंबे चले, तिरेपन यह देखकर भयग्रस्त हो गया कि वे चाहे जितना आगे चलें, गलियारा अंनन्तरूप से, अनन्तरूप से, उतना ही विस्तारित होता दिखता था। परंतु तभी एक मोड़ आया; गलियारे की दो शाखायें हो गईं। प्रहरी या पथ प्रदर्शक, तिरेपन विश्वस्त नहीं था, वह जो भी था, ने बायॉ मोड़ लिया और थोड़ा आगे गया और तब एक दरवाजे को चुस्ती के साथ थपथपाया और वापस खड़ा हुआ। *'अंदर आओ,'* एक स्वर ने कहा, और तब रक्षक ने तेजी से दरवाजे को खोल दिया, ताकि, पहले डॉक्टर, तब तिरेपन और अंत में रक्षक प्रविष्ट हुआ, बाद वाले ने अपने पीछे के दरवाजे को मजबूती के साथ बंद किया। *'कृपया आयें और यहॉ बैठें,'* एक स्वर ने कहा। तिरेपन आगे बढ़ा और संकेत किये हुए स्थान पर बैठा।

'अब हमें तुम्हारे भविष्य पर चर्चा करनी है। हम चाहते हैं कि तुम, एक महिला की जैविक क्रियाओं का अनुशीलन करते हुए, अत्यधिक संभव जल्दी के साथ, पृथ्वी पर लौटो।' तिरेपन ने अपने आसपास देखा–वह वास्तव में, इमारत में प्रकाश की मात्रा के द्वारा चौंधिया गया था। वास्तव में, यह बहुत हल्की इमारत दिखाई दी और वहॉ सभी स्थानों में अनेक चमकती हुई रोशनियॉ थीं। एक दीवार, उसने कुछ आश्चर्य के साथ देखा, कुछ धुंधले कॉच (frosted glass) की प्रतीत हुई, जिसपर कुछ अंतरालों में लहराती हुई रंगीन रोशनियॉ, तेजी से गुजरीं और गायब हो गईं। उसने देखा कि वह एक कमरे में था, जिसके जैसे की, उसने पहले कभी कल्पना भी नहीं की थी। उसे यह एक निदानीय आत्मसंयम (clinical austerity) जैसा दिखा, सफेद नहीं, परंतु हरे की एक अत्यंत शांतिदायक धाप (shade)। उसके आसपास वहॉ पॉच या छः–वह उन्हें ठीक से गिन नहीं सका–पूरी तरह से हरे से

ऊपरी कपड़ों (overalls) को पहने हुए लोग थे। लोगों की सही संख्या के विषय में, वह पूरी तरह से अनिश्चित था, क्योंकि कुछ लोग, अंतरालों पर, कमरे में आते और दूसरे कमरे से गायब होते दिखाई दिये, परंतु यह तुच्छ बातों पर ध्यान देने का समय नहीं था क्योंकि, पहला आदमी फिर बोल रहा था।

'मैंने अत्यंत सावधानीपूर्वक परीक्षा की है, और सभी सूचनाओं, जो मेरे सामने रखी गईं, पर विचार किया है। मैंने पूरी तरह से, आपके भूतकाल में देखा है, जब आप पृथ्वी पर गये, उससे पहले का भूतकाल, और मैं पाता हूँ कि, आपके प्रकाशों के अनुसार, यद्यपि आपने पृथ्वी पर काफी अच्छा किया है, फिर भी, वास्तविक जीवन के रस्मों–रिवाज और कुल देवताओं (mores and penates) के अनुसार, आप एक असफल व्यक्ति थे, और आत्महत्या के अपराध को करते हुए, आपने उसे अपनी असफलता के साथ संजोजित कर लिया। अब हम आपको मदद करना चाहते हैं।' तिरेपन ने भयपूर्ण कड़वाहट के साथ देखा और फूटने से रोक नहीं सका, *'मेरी मदद? मेरी मदद! जब से मैं यहॉ हूँ, मेरी आलोचना की जा रही है, मुझे लगभग हर चीज के लिए फटकारा जा रहा है, मुझे उच्चवर्ग में से एक, होने के लिए फटकारा जा रहा है, और मुझे ये कहने के लिए फटकारा जा रहा है कि शायद मुझे एक साम्यवादी होना चाहिये। मुझे क्या विश्वास करना चाहिए? यदि मैं यहॉ दण्ड पाने के लिए हूँ, तो मुझे क्यों नहीं दिया जा रहा है?'*

तिरेपन के सामने बैठा हुआ, वयोवृद्ध छरहरे बदन वाला, भूरे बालों वाला आदमी, वास्तव में, परेशान और उल्लेखनीयरूप से दयनीय दिखाई दिया। *'मैं, वास्तव में, इतना दुखी हूँ कि तुम ऐसा अनुभव करते हो।'* उसने कहा, *'ये तुम्हारा रवैया ही है, जो हमारे लिए हर चीज को इतनी मुश्किल बना रहा है। क्योंकि हम इस अलंघनीय (inescapable) निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि चूँकि तुम उच्चता की स्थिति में, पृथ्वी पर खिलाड़ी की भांति गये थे, जिसने तुम्हारी मनोदशा को प्रभावित किया है, इसलिए यह आवश्यक बना देता है कि जब तुम्हें वापस भेजा जाये, तुमको गरीब परिस्थितियों में भेजना पड़ेगा अन्यथा तुम पूरी तरह असहनीय हो जाओगे और तुम अपने अधिस्वयं को एकदम गलत प्रभाव भेज रहे होगे। क्या मैं अपने आप को स्पष्ट कर पा रहा हूँ?'* उसने पूछा।

तिरेपन ने ऑखें तरेरीं (glowered), और मुंहतोड़ जबाव दिया (retorted), *'नहीं, निश्चितरूप से नहीं, जब तुम अधिस्वयं और वैसे ही किसी के सम्बंध में बात करते हो, मैं यह भी नहीं जानता कि तुम किस सम्बंध में बात कर रहे हो। अब तक जो कुछ मुझे बताया गया है, मात्र कूड़ा–करकट है, और जो मैंने किया उसके लिए, मुझमें दोषी भावना की अनुभूति नहीं है। इसलिए, अंग्रेजी कानून के अनुसार, मैंने कुछ गलत नहीं किया है।'*

वयोवृद्ध आदमी ने उसके निश्चय को कड़ा होता हुआ महसूस किया। उसे ऐसा लगा कि यह आदमी–ये नंबर तिरेपन–केवल कठोर होने भर के लिए, कठोर होता जा रहा था। *'अंग्रेजी कानून का संदर्भ देते हुए, तुम पूरी तरह से गलत हो,'* पूछताछ करने वाले ने कहा, *'क्योंकि यदि तुम अंग्रेजी कानून के बारे में कुछ भी जानते होते, तो तुम इसप्रकार के प्रभाव के कथन को जानते कि कानून के प्रति अनभिज्ञता, कोई बहाना नहीं है, इसलिए यदि तुम इंग्लैंड का कानून तोड़ते और तब ये दावा करते कि मैं नहीं जानता कि इस प्रकार का कोई कानून था, तो फिर भी, तुम्हें दोषी माना जाता, क्योंकि तुमको ऐसे कानून के अस्तित्व की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए थी, और कृपा करके मेरे प्रति हमलावर होने का प्रयत्न मत करना, क्योंकि मैं उन लोगों में से एक हूँ, जो तुम्हारे भाग्य को अपने हाथों में रखते हैं, और यदि तुम अत्यधिक दुश्मनी मोल लेते हो, तब हम तुम्हारी परिस्थितियों को, वास्तव में, और अधिक कठोर बना सकते हैं। केवल ध्यान दो और उग्रता को काबू में रखो।'*

तिरेपन ने, आवाज के सुर के ऊपर कंधे उचकाये और जब उसने पहचान लिया कि वह हार गया है, उसने कहा, *'श्रीमान, जब ऐसे शब्द उपयोग में लाये जाते हैं, जिनका मेरे लिए कोई अर्थ नहीं है, मैं क्या कर सकता हूँ? उदाहरण के लिये है, अधिस्वयं क्या है?'*

'बाद में,' पूछताछ करने वाले ने कहा, *'तुमको इस सम्बंध में सब कुछ पढ़ाया जायेगा। इस समय के लिए इतना ही काफी होगा यदि मैं कहूँ कि तुम्हारा अधिस्वयं वह है, जो तुम्हें, शाश्वत् (eternal), अमृत्य आत्मा (immortal soul), संदर्भित करता है, और अब तुम एक कठपुतली या अधिस्वयं का एक विस्तार या, लगभग, जैसा कोई कह सकता है, –भौतिक पदार्थ के रूप में घनीभूत हुआ एक छद्म पैर, तुम्हारे अधिस्वयं का एक विस्तार, हो ताकि, तुम वास्तविक कठिन भौतिक अनुभवों से उसे सीख सको, जो सूक्ष्म अधिस्वयं के लिए अप्राप्य हैं।'*

बेचारे तिरेपन ने, अपने सिर को घूमता हुआ महसूस किया। वह वास्तव में, इसमें से कुछ भी नहीं समझा परंतु उसने सोचा कि जैसा कि उसे बताया गया है, उसे बाद में निर्देश दिये जायेंगे, उसने चीजों को संक्षिप्त करना अच्छा समझा, और अब उसे केवल सुनना चाहिये। इसलिए उसने पूछताछ करने वाले की चढ़ी हुई भौंओं के उत्तर में, मौन रूप से गर्दन हिलाई।

पूछताछ करने वाले या शायद अच्छा शब्द उपयोग करने के लिए, एक परामर्शदाता ने, अपने कागजों की ओर नीचे देखा और तब कहा, *'तुम्हें एक गरीब माँ–बाप के बच्चे के रूप में वापस लौटना है, वे लोग बिना किसी सामाजिक महत्व वाले हैं, क्योंकि वे कार्य, जो तुमको अपने पिछले जीवन में कर लेने चाहिए थे, तुम्हारी समझदारी और तुम्हारी दृष्टियों को गंभीररूप से विकृत (warp) करते हुए दिखते हैं, और तुमने अपने आप को, एक वर्ग में, जिसके लिए तुम पात्र नहीं हो, रख लिया है। हम ये सुझाव देने वाले हैं–और तुम्हें इसे अस्वीकार करने का अधिकार है, कि तुम लंदन के एक क्षेत्र, जिसे टॉवर हेमलेट (Tower Hamlet) के नाम से जाना जाता है, में किन्हीं मातापिता के यहाँ पैदा होने वाले हो। वहाँ वैपिंग हाई स्ट्रीट (Wapping High Street) के पास, कुछ अच्छे उपयुक्त संभावित, माँ–बाप हैं। तुमको लंदन के टॉवर (Tower of London) और टकसाल (mint) और गोदी (dock) के काफी नजदीक क्षेत्रों में, जहाँ सदमा पहुँचाने वाली गरीबी और पीड़ा है, पैदा होने का लाभ मिलेगा। यहाँ, यदि तुम सहमत हो, और यदि तुम्हारे अंदर, एक डॉक्टर या शल्य चिकित्सक होने के लिए और जो तुम्हारे आसपास हैं, उनके जीवन को बचाने के लिए, नैतिक और मानसिक रेशे (fibre) हैं, तो तुम अपने तरीके से काम कर सकते हो, और तुम, उन जीवनों का, जो तुमने लिये और तुम जिन्हें लेने का कारण बने, प्रायश्चित (atone) कर सकते हो। परंतु तुमको शीघ्र ही निर्णय करना पड़ेगा, क्योंकि ये औरतें, जिनको हमने तुम्हारी माताओं के रूप में चुना है, पहले से ही गर्भवती है, और इसका अर्थ ये है कि हमारे पास गंवाने के लिए वक्त नहीं है। मैं तुम्हें दिखाने जा रहा हूँ,'* उसने कहा, *'वह क्षेत्र, जो तुम्हारा स्थान होगा।'*

वह मुड़ा और उसने दीवार, जिसे तिरेपन ने कॉच की, धुधंले कॉच की, होना समझा था, की तरफ अपना हाथ हिलाया। जैसे ही उसने ऐसा किया, वह सजीव हो उठी, रंगीन जीवन, और तिरेपन लंदन के उस क्षेत्र को देख सका, जिसको वह केवल अन्यमनस्क रूप से (indifferently) जानता था। टेम्स नदी (River thames), हाँ; साउथबार्क पुल (Southwark Bridge), लंदन पुल (London Bridge), और तब टॉवर पुल के झूले (Bascules of Tower Bridge), परदे पर उसके सामने चले, और लंदन की मीनार (Tower of London) के बगल से खुद ही देखे जा सके। वह पूरी तरह सम्मोहित हुआ, एकदम साफ चित्रों को देखता हुआ, सड़कों पर आवागमन को देखता हुआ, वहाँ बैठा रहा। वह बिना घोड़े वाली गाड़ियों, और वास्तव में, बहुत, बहुत कम घोड़ों के द्वारा खींचे जाने वाले वाहनों को देखने के लिए, अत्यंत कौतूहलमय था। वह इस सब मामले पर विस्मित हुआ और परामर्शदाता बोला, *'हाँ, घोड़ागाड़ी के वाहन लगभग समाप्त हो चुके हैं, जबसे तुम यहाँ हो, तबसे चीजें विचारणीयरूप से बदल गई हैं, और तुम जानते हो, तुम्हें यहाँ रहते हुए काफी समय गुजर गया। तुम लगभग तीन साल तक बेहोश थे। अब हर चीज मोटरचालित हो गई, मोटरचालित बसें, मोटरवाहन, और मोटरकारें। चीजें बदली हुई मानी जाती हैं, परंतु व्यक्तिगत रूप से, मैं, घोड़ों के सड़कों पर से हट जाने से दुखी हूँ।'*

तिरेपन ने अपना ध्यान फिर से चित्र पर मोड़ा। मिंट स्ट्रीट (Mint Street), केबल स्ट्रीट (Cable Street), शैडवैल (Shadwell), ईस्ट स्मिथफील्ड (East Smithfield), द हाईवे (the Highway), थॉमस मोर स्ट्रीट (Thomas More Street), सैंट कैथराइन्स (St. Catherines), वैपिंग हाई स्ट्रीट (Wapping High Street), और वैपिंग वॉल (Walling Wall)।

परामर्शदाता ने कहा, 'ठीक है, हमारे पास पॉच औरतें हैं, जो गर्भवती हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम उस दिखाये गये क्षेत्र में से, प्राथमिकता से चुनो। पॉच औरतों में से एक, सराय के रखवाले (inn keeper), या मैं समझता हूँ तुम उसे शराबखाने का मालिक (publican) कह सकते हो, की पत्नी है। दूसरी, सब्जी बेचने वाले (green grocer) की पत्नी है। तीसरी, लोहे के विक्रेता (ironmonger) की पत्नी है। चौथी, एक मोटर बस के ड्राइवर की पत्नी है, और पॉचवीं, फिर, एक सराय की रखवालिन (lodging house keeper) है। मैं फिर से कहता हूँ, चूंकि पहली, सराय की देखभाल करने वाली है। अब, तुम्हें चुनाव करने का अधिकार है, और तुम्हें कोई भी प्रभावित नहीं करेगा। मैं तुम्हें उनकी एक सूची दे सकता हूँ और तुम्हें इस मामले में ध्यान करने के लिए चौबीस घंटे मिलेंगे, और यदि तुम कोई सलाह चाहो तो तुम्हें केवल पूछना पड़ेगा।

तिरेपन पीछे बैठा और उसने, लोगों को आसपास चलते फिरते, अजीब परिधानों को देखते हुए, जो अब औरतें पहने हुए थीं, बिना घोड़े की चलती हुई गाड़ियों पर आश्चर्य करते हुए, इमारतों की संख्या के ऊपर भी आश्चर्य करते हुए, दीवार के सजीव चित्रों के ऊपर नजरें गढ़ाकर देखा। तब वह परामर्शदाता की ओर घूमा, *'श्रीमान्, मैं आपसे विशेषरूप से कहना चाहूँगा कि मुझे दस लोगों को, पॉच पिता और पॉच माताओं को, जिनमें से मुझ से किसी मातापिताओं को चुनने की आशा की जाती है, देखने की इजाजत दी जाए। मैं उन्हें देखना चाहूँगा, मैं उनकी घरेलू परिस्थितियों को भी देखना चाहूँगा।'*

परामर्शदाता या पूछताछ करने वाले ने, वास्तविक खेद के साथ, धीमे से अपना सिर हिलायाः 'आह, मेरे दोस्त,' उसने दुख व्यक्त किया, *'ये एक ऐसी प्रार्थना है, जिसे स्वीकृत करना मेरी क्षमता के परे है, क्योंकि हम ऐसी चीज, कभी नहीं, कभी नहीं करते। हम तुमको केवल विस्तार से जानकारी दे सकते हैं और तुम अपना चुनाव करो। तुमको अपने मातापिता को देखने की आज्ञा नहीं है, क्योंकि ये उनकी निजता (privacy) का हनन होगा। अब मैं तुम्हें सुझाव देता हूँ कि तुम अपने अस्थाई होटल (Transit Hotel) को लौट जाओ और पूरे मामले को देखो।'* ऐसा कहते हुए, वह थोड़ा सा डॉक्टर, और उसने तिरेपन की ओर झुका। उसने अपने कागजात उठाये और कमरे के बाहर निकल गया। डॉक्टर ने कहा, *'आओ, चलें,'* और वह अपने पैरों पर खड़ा हो गया। अनिच्छापूर्वक, तिरेपन उठा और कमरे से उसके पीछे चला। रक्षक के साथ होते हुए, उन्होंने अपने कदम साथ–साथ बढ़ाये। वे उस गलियारे में, जो इतना अनंत दिखता था, और अब और भी अधिक लंबा दिख रहा था, साथ–साथ गये।

अंत में, वे फिर से एक खुले स्थान में आये और तिरेपन ने, ऊर्जा और जीवन को भीतर खींचते हुए, एक लंबी सांस ली।

रक्षक ने, उनको अपने स्थान पर वापस आने के लिए छोड़ दिया और डॉक्टर तथा तिरेपन, एक अच्छी धुंधली स्लेटी इमारत की ओर चलते रहे, जिसको तिरेपन ने हल्के से ध्यान दिया था, परंतु बिना किसी रुचि के गुजर जाने दिया था। वे सामने के दरवाजे से घुसे, और मेज पर बैठे हुए एक आदमी ने कहा, *'बायीं ओर तीसरा,'* और उनमें अधिक रुचि नहीं ली। वे *'बायीं ओर तीसरे' में गये* और एक खाली कमरे में प्रविष्ट हुए, वहाँ एक पलंग और एक कुर्सी, और एक छोटी मेज थी, जिसपर तिरेपन, तिरेपन नंबर की मोहर लगे हुए, एक बड़े फोल्डर को देखने में रुचि रखता था।'

'ठीक है, ये वहाँ है,' डॉक्टर ने कहा। *'तुम्हारे पास, अपने निर्णय पर विचार करने के लिए, चौबीस घंटे हैं, और उस समय के बाद, मैं तुम्हारे पास आऊँगा, और तब हमें जाना पड़ेगा और जो*

देखा जा सकता है, उसे देखना पड़ेगा और तुम्हें वापस पृथ्वी पर जाने के लिए तैयार होना पड़ेगा। अलविदा!' डॉक्टर मुड़ा और अपने पीछे का दरवाजा बंद करते हुए, उस दरवाजे को बंद करते हुए, जिसपर तिरेपन, भय के साथ पेजों के बीच उंगलियॉ चलाते हुए, 53 नंबर अंकित फोल्डर के अंदर रखे हुए, निराशापूर्वक कमरे के मध्य खड़ा था, उसने कमरे के बाहर का रास्ता लिया।

तिरेपन ने बंद करने वाले दरवाजे को ऑखें तरेर कर देखा और उसने अपने हाथ उसकी पीठ पर रखे। सिर को छाती के ऊपर झुकाते हुए, धीमे से कमरे में चला, कुछ कदम चला और कुछ कदम चला। घंटों, घंटों तक, वह कमरे के आसपास टहलता रहा, और तब परिश्रम से पूरी तरह थक जाने पर, उसने स्वयं को कुर्सी पर निढाल होकर गिरा दिया, और अन्यमनस्क होकर खिड़की में से घूरा। *'तिरेपन, एह!* वह स्वयं ही बुदबुदाया। *'एक दोषसिद्ध अपराधी की भांति, और वह सब कुछ करने के लिए, जिसे मैं ठीक समझता था। ऐसे जीवन जीने का क्या अर्थ, जो न तो आदमी और औरत की भांति है?'* उसने अपनी ठोड़ी को अपने हाथों में टिकाया और टांगों को एक दूसरे पर (crossed) रखा, और दीनता का एक विशिष्ट चित्र देखा। तब उसने सोचा, या क्या मैंने सोचा कि मैं ठीक काम कर रहा था? कुल मिलाकर, उनके पास कुछ हो सकता है, जिसे वे कह सकते हैं। मैं सोचता हूँ कि ये बहुत कुछ सम्भव है कि मैं, स्वयं–दया को रास्ता प्रदान कर रहा था, परंतु अब यहॉ मुझे, डार्टम्यूर (Dartmoor)[11] के कैदी की तरह से एक संख्या दी गई है, और ये बताने का भार मुझ पर लाद दिया गया है कि मैं आगे क्या करने वाला हूँ। मैं नहीं जानता कि मैं क्या होने वाला हूँ। मैं नहीं जानता कि कुल मिलाकर, किसी प्रकार, इसका कोई अर्थ है, मैं शायद, दोबारा इसी स्थान में समाप्त होऊॅगा।

वह दुबारा अपने पैरों पर कूदकर खड़ा हुआ और खिड़की तक गया, और उसने सोचा कि वह एक बाग के चारों तरफ टहलेगा। सावधानी से उसने खिड़की को धक्का दिया और खिड़की, उसके स्पर्श से, आसानी से खुलकर झूल गई। वह कदम बढ़ाकर बाहर गया और वह रबड़ की अदृश्य पतली चादर की भॉति कदम बढ़ा रहा था। उसको रगड़ खाने से रोकने के लिए, यह काफी खिंच गया, और तब उसके आश्चर्य के लिए, ये ठीक संकुचित हो गया और वह धीमे से, और बिना प्रयास के, बाहर अपने कमरे में, वापस धकेल दिया गया। *'कुल मिलाकर अपराधी, एह।'* उसने स्वयं से कहा। और तब वह फिर से कुर्सी पर बैठ गया।

घंटों के बाद घंटों तक, पूरे अनिर्णय की अवस्था में, सोचते हुए, आश्चर्य करते हुए, वह वहीं बैठ गया। *'मेरा ख्याल था कि मृत्यु के बाद, मैं स्वर्ग को जाऊॅगा।'* उसने स्वयं से, और तत्काल ही इसके पीछे कहा, *'ठीक, नहीं, मैं मानता हूँ कि मैंने इस पर बिलकुल विचार नहीं किया। मैं नहीं जानता था कि क्या सोचना है। मैंने काफी लोगों को मरते हुए देखा है, और कहीं भी, आत्मा के शरीर छोड़ने का चिन्ह नहीं रहा, इसलिए मैं इस निष्कर्ष पर पहुॅचा कि मृत्यु के बाद जीवन इत्यादि, सारी चीजें, जिनके सम्बंध में व्यक्ति विलाप करते (yammer) हैं, बेमतलब की बात थी।'* वह फिर से अपने पैरों पर कूदा और पूरे समय सोचते हुए, और अचेतन मन से खुद से बातें करते हुए, कभी न समाप्त होने वाला, कमरे के ऊपर नीचे चलना, प्रारंभ किया, *'मुझे याद है, भोजनालय (mess) में एक शाम, हम इस पर चर्चा कर रहे थे, और कैप्टन ब्रॉडब्रीचेस (captain Broadbreeches) ने, अत्यधिक निश्चित विचार व्यक्त किया था कि जब आप मरते हैं, तो आप मरते ही हैं, और यही सब कुछ था। उसने आदमियों, औरतों, बच्चों, और घोड़ों को मरा हुआ देखा, परंतु उसने हमें कभी नहीं बताया कि उसने किसी आत्मा को मरे हुए,*

---

11 अनुवादक की टिप्पिणी : डार्टम्यूर (Dartmoor), दक्षिणी डेवन, इंग्लैंड में एक क्षेत्र है इसे डार्टम्यूर राष्ट्रीय उद्यान (Dartmoor National Park) का दर्जा देकर संरक्षित किया गया है। इसका क्षेत्रफल 954 वर्गकिलोमीटर है। म्यूरलैंड में ग्रेनाइट की अनेक पहाड़ियॉ हैं, जिन्हें टोर्स (Tors) कहा जाता है, इनमे डार्टम्यूर का वन्यजीवन (wild life) निवास करता है। डार्टम्यूर का प्रबन्धन, डार्टम्यूर उद्यान अधिकरण के द्वारा किया जाता है। डार्टम्यूर के कई भाग, 200 साल से अधिक समय से, बंदूक की निशानेबाजी की परास (shooting range) के रूप में उपयोग किये जा रहे हैं। ये एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। यहॉ डार्ट नदी (Dart river) बहती है जो पूर्वी डार्ट और पश्चिमी डार्ट दो शाखाओं से आती हुई, डार्टमीट (Dartmeet) संगम पर मिल जाती है, और डार्ट माउथ (Dart mouth) नामक स्थान पर समुद्र में गिर जाती है।

शरीर से बाहर निकलते हुए देखा हो। उसने हमें बताया क्या उसने किसी आत्मा को, लाश में से उठकर बाहर निकलते और स्वर्ग की तरफ उड़ते हुए देखा है।'

अपने मन की ऑखों में उसने फिर देखा, जैसा कि इंग्लैंड में था, वह स्कूल जाने वाला बच्चा था और तब, जब पहले वह सेना का विद्यार्थी (cadet) था। उसने अपने आप को, सगर्व, नवनियुक्त कमीशन प्राप्त अधिकारी के रूप में, और डच लोगों के साथ लड़ने के लिये जाने वाले एक जहाज की ओर जाते हुए देखा। वह बोयर लोगों को, डच लोगों की भांति सोचा करता था, क्योंकि, उनका मूल धर्मसमूह (ethnic group) था–डच। परंतु जैसे ही उसने पीछे देखा, वह देख सका कि बोयर लोग, इंग्लैंड के निरंकुश (unfattered) वर्चस्व से मुक्त, अपने खुद के जीवन को, अपने तरीके से जीने के चुनाव के लिए, जिसे वे अपना अधिकार समझते थे, लड़ते हुए किसानों का एक समूह मात्र था।

दरवाजा खुला और एक आदमी अंदर आयाः *'नंबर तिरेपन, मैं आपको सुझाव देता हूँ कि आप थोड़ा विश्राम पाने का प्रयास करें। आसपास की इस अनंत चहलकदमी के द्वारा, आप केवल अपने आप को थका रहे हैं। कुछ घंटों में, आपको एक बड़े चोटिल (traumatic) अनुभव से गुजरना पड़ेगा। आप अब, जितना ज्यादा विश्राम पायेंगे, आपके लिये बाद में ये उतना ही अधिक आसान होगा।'* तिरेपन मुँह फुलाये हुए, उसकी तरफ घूमा और अपने सर्वोत्तम सैनिक अंदाज में उसने कहा, *'निकल जाओ!'* आदमी ने अपने कंधे उचकाये, घूमा और कमरे को छोड़ दिया और तिरेपन, चहलकदमी करते हुए अपने चिन्तन के साथ चलता रहा।

'स्वर्ग के राज्य के सम्बंध में, ये क्या था?' उसने स्वयं से कहा। *'प्रोटेस्टेंट पादरी (parson), महलों, अस्तित्व के दूसरे तलों, जीवन के दूसरे प्रकारों के सम्बन्ध में, हमेशा इस चर्चा को रखते हैं। मुझे याद है अपने पादरी (Padre) की, ये कहते हुए कि जबतक ईसाइयत पृथ्वी पर नहीं आयी थी, हर एक की, उसके नरकवास (damnation), शाश्वत पीड़ा (eternal suffering), शाश्वत यातनाओं (eternal torments) के लिए, निंदा की जाती थी, और यह कि केवल रोमन कैथोलिक लोग ही स्वर्ग को जायेंगे। अब, मैं आश्चर्य करता हूँ कि कितने लंबे समय से ये संसार अस्तित्व में रहा है और वे सभी लोग ईसाइयत के सामने निंदित क्यों किये जाने चाहिए जबकि, वे जानते भी नहीं थे कि उन्हें बचाया जाना था?'* आगे बढ़ो–आगे बढ़ो–आगे बढ़ो। वह कमरे के आरपार गया, फिर वापस, फिर कमरे के आरपार गया और फिर अंतहीन तरीके से वापस लौटा। उसने सोचा, यदि वह किसी पॉवचक्की (treadmill) पर रहा होता, उसने काफी बड़ी संख्या में, कदम चलते हुए, मीलों तय कर लिए होते, कम से कम वह, आगे और पीछे की तरफ, कमरे में आरपार जाने की तुलना में, एक कठिन कार्य हुआ होता।

अंत में, क्रोधित और अवसादित (frustrate) होते हुए, उसने स्वयं को बिस्तर पर फेंक दिया और भद्देपन से हाथ पैर फैलाते हुए (sprawling) पड़ गया। इसबार कोई अंधेरा नहीं घिरा, वह पूरी तरह घृणा (hatred) से भरा हुआ, पूरी तरह कटु क्षोभ (bitter resentment) से भरा हुआ, मात्र वहाँ लेटा रहा, और उसकी ऑखों में से, गर्म नमकीन ऑसू, उछलते हुए आये। क्रोधित होते हुए (furiously), उसने अपने हाथों के पिछले हिस्से से, उन्हें पोंछने का प्रयास किया और तब अंत में, उसने अपना चेहरा घुमाया और सिसकने की लहर (spam) को तकिये में छिपा दिया।

जो, अनेक शाश्वततायें (eternities) प्रतीत हुईं, उनके बाद, वहाँ दरवाजे पर थपथपाहट हुई, जिसे उसने अनदेखा कर दिया। थपथपाहट फिर हुई, और उसने इसे फिर अनदेखा कर दिया। कुछ शालीन अंतराल के बाद दरवाजा धीमे से खोला गया और वहाँ (दरवाजे पर) डॉक्टर था। उसने एक क्षण के लिए एक नजर अन्दर डाली, और तब कहा, *'आह क्या तुम तैयार हो? चौबीस घंटे अब समाप्त*

हो चुके हैं।

तिरेपन ने अपनी एक टांग को, बिस्तर के ऊपर, बगल से रखा, तब आलस के साथ (lithargically), दूसरी को इसके ऊपर रखा। धीमे से वह उठ बैठा, *'क्या तुमने निर्णय ले लिया है कि तुम किस परिवार में जा रहे हो,'* डॉक्टर ने पूछा। *'नहीं, विल्कुल नहीं, नहीं, मैंने इसके ऊपर तनिक भी विचार नहीं किया।'*

'आह!' डॉक्टर ने कहा, 'इसलिए तुम इस तरीके से, एक एक इंच लड़ाई लड़ रहे हो, एह? ठीक है, हम में से किसी पर, इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता, तुम जानते हो, यद्यपि तुम इसे विश्वास करना मुश्किल पाओगे। हम वास्तव में, तुम्हारी सहायता करने का प्रयास कर रहे हैं, और यदि तुम, अपनी टालमटोल (procrastination) के द्वारा इस मौके को चूक जाते हो, तुम्हें पता लगेगा कि अवसर कम से कमतर होते जाते हैं, और परिवार कम, और कम, होते जाते हैं।'

डॉक्टर मेज की तरफ गया और उसने तिरेपन नंबर से चिन्हित बस्ता (folder) उठाया, और अत्यंत आलस के साथ उसे फड़फड़ाया। *'अभी तुम्हारे पास, यहाँ पाँच परिवारों में से चुनाव है,'* उसने कहा *'और कुछ लोगों को तो बिलकुल ही पसंद नहीं मिलती, कुछ लोगों को केवल निर्देश दिये जाते हैं। मुझे तुम्हें कुछ चीज बतानी है।'* उसने अपने आपको, कुर्सी में आराम से बैठाया, पीछे झुका और तिरेपन के सामने कठोरतापूर्वक टकटकी लगाते हुए, अपनी टांगों को एक दूसरे के ऊपर रखा। तब उसने कहा, *'तुम अपरिपक्व रोष (immature rage) को बढ़ावा देते हुए एक बिगड़ैल बच्चे की तरह हो। तुमने एक अपराध किया, तुमने अपने जीवन का घपला कर दिया, अब तुम्हें इसका भुगतान करना पड़ेगा, और हम ये व्यवस्था करने का प्रयास कर रहे हैं कि तुम अत्यधिक सुखद शर्तों के साथ इसका भुगतान करो, परंतु यदि तुम हमें सहयोग नहीं करोगे, और यदि तुम केवल एक बिगड़ैल बच्चे की तरह व्यवहार करते हुए, जोर देते रहोगे, तब अंततः तुम, उस बिंदु पर आ जाओगे, जहाँ तुम्हारे पास कोई चुनाव नहीं होगा कि, तुम जहाँ जाना चाहते हो, वहाँ जा सकते हो। तुम स्वयं को, मुम्बासा (Mombassa)[12] में, कम विशेषाधिकार प्राप्त (low priviledgeed), एक अश्वेत परिवार के बच्चे के रूप में पा सकते हो, या किसी कन्या शिशु के रूप में कलकत्ता जा सकते हो, कलकत्ता में कन्याओं की कीमत अधिक नहीं है, लोग लड़कों को, जो उन्हें मदद कर सकते हैं, अधिक चाहते हैं,—और एक कन्या शिशु के रूप में, तुम अपने आपको वेश्यावृति में बेचा हुआ पा सकते हो, या उन परिस्थितियों में, जहाँ तुम एक अप्रत्यक्ष गुलाम हो (virtual slave), पा सकते हो।"*

बेचारा तिरेपन पलंग के किनारे पर, बड़ी कड़ाई के साथ, अपने हाथों से गद्दों के किनारे को पकड़ते हुए, एकदम सीधा बैठा। उसका मुँह पूरी तरह खुला हुआ, उसकी ऑखें एकदम चौड़ी टकटकी लगाते हुए थीं। वह एक जंगली जानवर, जिसको अभी–अभी पकड़ा गया हो और पहली बार कठघरे में रखा गया हो, की तरह अधिक दिखाई देता था। डॉक्टर ने उसकी ओर देखा, परंतु वहाँ पहचाने जाने का कोई चिन्ह नहीं था, कोई चिन्ह नहीं कि तिरेपन ने उन सब टिप्पणियों को सुना था।

'यदि तुम अपने मूर्खतापूर्ण और हठी रवैये में बने रहोगे और हमारे लिए इतनी अधिक परेशानियाँ पैदा करोगे, तब अंतिम हथियार के रूप में, हम तुम्हें एक द्वीप में, जहाँ केवल कुष्ठ रोगी (lepers) रहते हैं, भेज सकते हैं। तुम्हें वहाँ तीस वर्ष तक, जो तुमने पहले छोड़ दिये थे, रहना पड़ेगा। इस सम्बंध में दो रास्ते नहीं हैं, इससे बच निकलने का कोई रास्ता नहीं है, ये प्रकृति का नियम है। इसलिए तुम्हारे लिए अच्छा होगा कि तुम होश में आ जाओ।'

तिरेपन, लगभग एक मनोरोगी (catatonic) की अवस्था में वहाँ बैठा। इसलिए डॉक्टर उठ बैठा, उसके पास गया और उसके चेहरे पर, पहले एक गाल पर, फिर दूसरे पर, तमाचा मारा। तिरेपन, गुस्से

12 अनुवादक की टिप्पिणी : मोम्बासा (Mombassa), केन्या के समुद्र तट पर, एक शहर है ये राजधानी नैरोबी के बाद, देश का दूसरा सबसे बड़ा शहर है। इसकी आबादी लगभग बारह लाख है। मोम्बासा, मोम्बासा काउंटी की राजधानी है। इसमें एक काफी बड़ा बंदरगाह और एक अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है और ये महत्वपूर्ण केंद्रीय पर्यटन केन्द्र है।

में, अपने पैरों पर उछल पड़ा तब वह अकस्मात् गिर पड़ा। *'ठीक है, मैं क्या कर सकता हूँ?'* उसने *कहा, मुझे एक बुरी तरह से निम्न प्रकार के (deplorably low) जीवन के सदस्य के रूप में, वापस पृथ्वी पर भेजा जा रहा है। मैं ऐसे निम्न पद के प्राणी होने का अभ्यस्त नहीं हूँ।'*

डॉक्टर वास्तविक रूप में दुखी दिखाई पड़ा, और तब तिरेपन के बगल से, बिस्तर पर यह कहता हुआ बैठा, *'देखो, मेरे बच्चे, तुम जानते हो, तुम बहुत बड़ी गलती करने जा रहे हो। ये मानते हुए कि तुम अभी पृथ्वी पर हो, और अभिनय समाज (theatrical community) के सदस्य के रूप में हो। मान लो कि यदि तुम्हें सम्राट लियर (King Lear), या हेमलेट (Hamlet) या उसी तरह की कोई दूसरी भूमिका प्रस्तावित की जाये; ठीक है, ऐसे किसी अवसर पर शायद तुम उछल पड़ोगे। परंतु तब, नाटक के समाप्त होने के बाद, सभी दर्शकों के चले जाने के बाद, और निर्माताओं के एक नवीन उत्पादन का निर्णय लेने के बाद, क्या तुम जिद करोगे कि तुम सम्राट लियर, या ओथेलो (Othello), या हेमलेट थे? यदि तुम्हें, उदाहरण के लिए, नोट्रे डेम का हंचबैक (Hunchback of Notre Dame) या फालस्टाफ (Falstaff) या तुम्हारे पद से कुछ नीचे की चीज, होने के अवसर का प्रस्ताव दिया जाये, क्या तुम तब भी कहोगे कि ये एक व्यक्ति, जो सम्राट लियर, या हेमलेट, या औथेलो, रह चुका है, के हिसाब से उसके लायक नहीं है?'* डॉक्टर ने बोलना बंद कर दिया। तिरेपन, फर्श को खुरचते हुए–एक पैर के साथ गलीचे को खुरचते हुए, निढाल होकर बैठ गया, और तब उसने कहा, *'परंतु ये नाटक का अभिनय नहीं है, मैं पृथ्वी पर रह रहा था, मैं उच्चवर्ग का एक सदस्य था, और अब आप मुझे, वह होना–शराब के ठेकेदार (publican) का लड़का होना, बस ड्राइवर का बेटा होना!, या जो कुछ भी हो, चाहते हैं, ये सब क्या है?'*

डॉक्टर ने आह भरी और तब उसने कहा, *'तुम्हें पृथ्वी पर एक भूमिका, जो तुमने पृथ्वी पर जाने से पहले चुनी थी, जिसको तुमने, एक सफल अभिनेता बनाने के लिए, तुम्हारे लिए सबसे अच्छी परिस्थितियाँ होना सोचा था, जीनी थी। ठीक है, तुम असफल रहे। अभिनय एकदम खराब था, इसलिए भिन्न अवस्था में, तुमको वापस जाना होगा। तुम्हारे पास अभी चुनाव है; वास्तव में, तुम्हारे पास पॉच चुनाव हैं। किन्ही के पास कोई चुनाव नहीं होते।'*

वह यह कहते हुए, अपने पैरों पर उछल पड़ा, *'आओ, हमने पहले ही, काफी दूर तक इधर–उधर विचरण कर लिया और अब परामर्श अधैर्यपूर्ण होता जायेगा। मेरे पीछे आओ।'* वह दरवाजे की ओर चला और तब एक आवेग के साथ, मेज की ओर वापस मुड़ा और तब तिरेपन नंबर चिन्हित फाइल उठा ली। अपनी बायीं भुजा की बगल में रखते हुए, वह अपने सीधे हाथ की तरफ पहुँचा, और उसे जोर से हिलाते हुए, तिरेपन को बांह से पकड़ लिया। *'आओ!'* उसने कहा, *'मानव बनो। तुम पूरे समय, हमेशा यही सोचते रहे हो, कि एक अधिकारी के रूप में तुम कितने महत्वपूर्ण थे। निश्चितरूप से, एक अधिकारी और एक सज्जन, इसप्रकार कायरतापूर्ण व्यवहार नहीं करता, एक लापरवाह व्यक्ति, जो तुम हो चुके हो?'*

फूले हुए मुँह से, तिरेपन अपने पैरों पर खड़ा हुआ और वे साथ–साथ दरवाजे तक गये। बाहर, एक आदमी गलियारे में से नीचे आता ही जा रहा था। *'ओह!'* उसने कहा, *'मैं ये देखने के लिए आ रहा था कि क्या हुआ। मैं सोच रहा था कि शायद हमारा मित्र, दुख में इतना डूब चुका है कि वह अपने बिस्तर से उठ नहीं सका।'*

'धीरज, मित्र धीरज,' डॉक्टर ने गम्भीरतापूर्ण (admonished) सलाह दी, *'हमें ऐसे मामले में सहनशीलता (tolerance) दिखानी चाहिए।*

तीनों आदमी, फिर से उसी लम्बी सुरंग में होकर,, निगरानी करने वाले सुरक्षागार्डो, जिन्होंने इस बार केवल उनका निरीक्षण किया, को गुजारते हुए, साथ–साथ वापस गलियारे में चले और तब वे दरवाजे पर चले गये।

'अंदर आओ,' आवाज ने कहा, और तब तीनों आदमी कमरे में प्रविष्ट हुए। इसबार एक बड़ी उम्र का, भूरे बालों वाला आदमी, मेज की प्रमुख कुर्सी पर बैठा था, और उसके अगल बगल में, अपने लंबे हरे कोटों को पहने हुए, दूसरे दो लोग, एक आदमी और एक औरत थे। ज्यों ही वह प्रविष्ट हुआ, तीनों ने मुड़कर तिरेपन की तरफ देखा। प्रमुख की कुर्सी पर बैठे हुए आदमी ने अपनी भौहें चढ़ाईं और कहा, *'ठीक है? क्या तुमने तय कर लिया कि तुम क्या होना चाहोगे?'*

डॉक्टर ने कुहनी से तिरेपन, जो वहाँ बड़ी हुई खामोशी में खड़ा हुआ था, को इशारा किया (nudged), 'बोलो,' वह फुसफुसाया। *'क्या तुम नहीं देख सकते कि वे तुम्हारे साथ धीरज खो रहे हैं?'* तिरेपन ने आगे कदम बढ़ाये, और बिना ऐसा करने के लिए आमंत्रित किये जाते हुए, (उसने) अपने आपको कुर्सी में बंद कर लिया (slammed)।

'नहीं,' उसने कहा। *'मैं कैसे तय कर सकता हूँ? मेरे पास इन लोगों के संक्षिप्ततम (briefest) विवरण हैं। मुझे कोई अनुमान नहीं है कि मैं किन परिस्थितियों का सामना करूँगा। मैं जानता हूँ कि मैं शराबखाने के ठेकेदार को पूरी तरह बेस्वाद पाता हूँ, परंतु संभवतः एक लोहे को जोड़ने वाला (ironmonger), शायद और अधिक बेस्वाद होगा। मैं ऐसे लोगों से पूरी तरह अंजान हूँ, अपने जीवन में सामाजिक आधार पर सामना न होने के कारण, मैं कभी ऐसे लोगों से मिला नहीं। शायद आप, श्रीमान्, अपने संदेहरहित अनुभवों के साथ मुझे सलाह देने के लिए तैयार होगें।'* तिरेपन ने, मेज पर प्रमुख उस आदमी को अक्खड़पन से (insolently) देखा, परंतु वह इसे सहन करते हुए, केवल थोड़ा मुस्कराया और उसने कहा, *'तुम वर्ग के प्रति, असीम रूप से सतर्क हो, और मैं तुमसे सहमत हूँ कि सराय के रक्षक का सम्मानित कार्य, या सार्वजनिक गृह प्रबंधक (public house manager), या लुहार (ironmonger), तुम्हारे अवचेतन के लिए अत्यधिक होंगे। यद्यपि मैं, वास्तव में, अत्यधिक प्रबलता के साथ सिफारिश कर सकता था, केवल स्ट्रीट में उस प्रसिद्ध सार्वजनिक गृह की, परंतु इतने दंभ के साथ, तुम्हारे जैसे विशेष प्रकार के किसी के लिए, मैं, बदले में, सब्जी बेचने वाले, दूसरे परिवार का सुझाव दूँगा। पिता, मार्टिन बोंड (Martin Bond) है, और उसकी पत्नी, मेरी बोंड (Mary Bond) है। मेरी बोंड का गर्भकाल लगभग पूरा हो चुका है, और यदि तुम अभी भी अजन्मे बच्चे के रूप में, उसके शरीर में प्रविष्ट हो सको, तुमको कुछ भी समय नहीं गंवाना चाहिए, तुमको अपने होश में आना चाहिए और निर्णय लेना चाहिए, क्योंकि केवल तुम ही निर्णय ले सकते हो।'*

'सब्जीवाला (Greengrocer)!' तिरेपन ने सोचा। *'सड़े आलू (rotten potatoes), बदबूदार प्याज (stinking onions), ज्यादा पके टमाटर (overripe tomatoes)। धत्तेरे की! तथापि मैं ऐसे घपले में पड़ा?'* उसने अपनी उँगलियाँ फिराईं (twiddled), अपने सिर को खुजाया और कुर्सी पर दीनतापूर्वक कसमसाया (squirmed)। कमरे में दूसरे शांत रहे, वे ऐसा निर्णय लेने में, निराशाजनक स्थिति, जिसमें होकर कोई गुजरता है, को जानते थे। अंततः तिरेपन ने अपना सिर उठाया और विद्रोहपूर्वक (difiantly) कहा, *'ठीक है, मैं उस परिवार में जाऊँगा। वे पा सकते हैं कि, उनके परिवार में, पहले कभी की तुलना में, उन्हें एक अच्छा आदमी मिला है!'*

मेज के बगल में बैठी हुई महिला ने कहा, *'श्रीमान् अध्यक्ष, मेरा ख्याल है, हमें फिर से, उसके ऊपर, अंकुशों की श्रृंखला को चलाना चाहिए, क्योंकि हमें यह देखना है कि क्या यह अभी भी माँ के साथ निभा सकता है। उस औरत के लिए, यदि कुल मिलाकर पैदा होते ही मर जाने वाले (stillborn) बच्चे को जन्म दे, ये भयानक चीज होगी।'*

मेज के दूसरी तरफ बैठा हुआ आदमी बोला, *'हाँ,'* और वह तिरेपन को देखने के लिए घूमा। *'यदि बच्चा मरा हुआ जन्म लेता है, तब वह भी तुमको सहायक नहीं है, क्योंकि तुम यहाँ इस आधार पर लौटा दिये जाओगे कि तुम्हारे सहयोग की कमी, तथा तुम्हारा हठ, उस महिला का बच्चा नष्ट होने का कारण रहे होंगे। मैं तुम्हारे खुद के भले के लिए सुझाव देता हूँ–इसका हमारे ऊपर, वास्तव में, कोई*

प्रभाव नहीं पड़ता–कि तुम अधिक सहयोग करो, कि तुम अधिक सौम्य स्वभाव (equable temperament) बनाने का प्रयास करो, अथवा तुम पा सकते हो कि हमें, कूड़ा बाहर फेंक देने के समान, तुम्हें कहीं भी भेजना पड़ेगा।'

औरत अपने पैरों पर खड़ी हुई, एक क्षण के लिए ठिठकी, तब तिरेपन की ओर मुड़ी और उसने कहा,*'मेरे साथ आओ।' अध्यक्ष ने सिर हिलाकर हामी भरी और वह भी अपने पैरों पर खड़ा हुआ।* डॉक्टर ने तिरेपन की बॉह छुई और उसने कहा, *'साथ आओ, ये इधर है।'*

अनिच्छापूर्वक, फॉसी के फन्दे की तरफ जाते हुए आदमी की तरह, तिरेपन धीमे–धीमे अपने पैरों पर ऊपर चढ़ा और बगल के कमरे में महिला का अनुगमन किया। यहॉ चीजें एकदम अलग थीं। पूरी दीवारें, धुंधले कॉच के पीछे से रोशनियॉ टिमटिमाती हुईं दिखीं। वहॉ उल्लेखनीय संख्या में मूठें (knobes), बटन (switches) और हत्थे (handles) दिखाई दिये। तिरेपन ने एक क्षण के लिए सोचा कि वह एक बिजलीघर में आ गया, परंतु तब ठीक उसके सामने एक विशेष आकृति की, वास्तव में, एक अति विशिष्ट आकृति की मेज, एक मेज थी। ये एक मानवीय आकृति के खाके (outline) की तरह दिखी, भुजायें, टॉगें, सिर और हर चीज। औरत ने कहा, *'उस मेज पर लेट जाओ।'* एक क्षण के लिए, तिरेपन हिचकिचाया, तब अपने कंधों को झटकाता हुआ, वह, डॉक्टर, जिसने उसे मदद करने का प्रयास किया, के कृपापूर्ण हाथों से रगड़ खाता हुआ, मेज पर चढ़ा। जैसे ही वह मेज पर लेटा, उसने पाया कि एक अति विशिष्ट प्रकार के संज्ञान ने उसे घेर लिया; मेज अपने आपको, उसके अनुरूप ढालती हुई प्रतीत हुई। उसने अपने आपको अपने जीवन में आराम से अनुभव नहीं किया था। मेज गर्म थी। ऊपर की तरफ देखते हुए उसने पाया कि, उसकी दृष्टि अब इतनी अच्छी नहीं थी, जैसी कि पहले रही थी, ये धुंधली थी। बेहोशी के साथ अस्पष्टता से, वह अपने सामने की दीवार पर, निरर्थक और अनजान रुचिहीन आकृतियॉ बना सका। उसने दीवार पर टकटकी लगाई और सोचा कि वह एक मानव आकृति को पहचान सकता है। वह मादा आकृति दिखाई दी। एक मोटे अनुमान से तिरेपन ने सोचा, वह बिस्तर पर थी, तब जैसे ही उसने निश्तेज ऑखों से देखा, उस पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि कोई बिस्तर के कपड़ों को वापस खींच रहा था।

तब एक विकृत आवाज उस तक आई, *'ये सब ठीक प्रतीत होता है। मेरा कहना है, वह अनुशीलन योग्य (compatible) है।'* ये बहुत अजीब था, वास्तव में एकदम अजीब। तिरेपन पर ऐसी छाप पड़ी कि वह एक *'संत के अंदर'* जा रहा था। वहॉ कोई संघर्ष, कोई डर नहीं था, वहॉ कोई स्पष्ट विचार भी नहीं था। वास्तव में, वह उस आकृति के अनुरूप मेज पर लेटा रहा और न समझने योग्य तरीके से लोगों को, जिन्हें वह पूर्व से ही भलीभांति जानता था, ताकता रहा। डॉक्टर, अध्यक्ष, औरत।

निरर्थकरूप से (vaguely), वह सजग था कि वे कुछ चीजें कह रहे थे : *'अनुशीलन योग्य मूल आवृति (Compatible basic frequency)।' 'ताप उत्क्रमण (Temperature inversion)।' 'तुल्यकालन और स्थिरीकरण की एक अवधि (A period of synchronisation and stablisation)।'* और तब वह उनींदेपन में मुस्कराया और सुधारगृह का जगत, उससे दूर खिसक गया और वह उस जगत को और अधिक नहीं जान पाया।

वहॉ एक लंबी प्रतीत होने वाली खामोशी थी, एक खामोशी, जो खामोशी नहीं थी, एक खामोशी, जब वह कंपनों को अनुभव कर सकता था परंतु सुन नहीं सकता था। और तब अचानक ही ऐसा था, मानो कि उसे स्वर्णिम भोर (golden dawn) में धकेला गया हो। उसने अपने सामने एक भव्यता देखी, जिसे वह पहले कभी देखा हुए की भांति, कभी याद नहीं कर पाया। और वह संभ्रमित होकर, एक भव्य, भव्य, देहात में आधी चेतना के साथ खड़ा हुआ होता दिखाई दिया। दूरी पर, वहॉ कुछ ऊॅची मीनारें और लपेटें (spires) थीं, और उनके आसपास अनेक लोग थे।

उसपर ये छाप पड़ी कि एक अत्यंत सुंदर आकृति आई और उसके बगल से ये कहती हुई

खड़ी हुई, *'अच्छे दिलवाले बनो, मेरे बेटे, क्योंकि, फिर से, तुम दुख के संसार में जा रहे हो। अच्छे दिलवाले बनो क्योंकि हम तुम्हारे साथ संपर्क में बने रहेंगे। ध्यान रखो कि तुम कभी अकेले नहीं हो, कभी भुलाये हुए नहीं, और यदि तुम वैसा करोगे, जैसे तुम्हारी अंतर्आत्मा कहती है, तुम्हारे ऊपर कभी आपत्ति नहीं आयेगी परंतु केवल वह, जिसकी तुमको आज्ञा दी गई है और दुख के संसार में अपने समय की सफलतापूर्वक समाप्ति के बाद, तुम हमारे पास विजयी होकर यहॉ लौटोगे। विश्राम करो, शांत हो जाओ, शांति में बने रहो।'* आकृति घूमी और तिरेपन ने, अपने बिस्तर या मेज या जहॉ कहीं भी वह था, पर करवट ली, और उसने झपकी ली और वह शांति में था। और अपनी चेतना में, जो कुछ हुआ था, उसके सम्बंध में अधिक नहीं जानता था।

अध्याय–छैः

अलगरनन ने नींद में जोर से कंधे हिलाये। अलगरनन? तिरेपन? अब वह जो कुछ भी था, उसने नींद में जोर से कंधे हिलाये। नहीं, ये नींद नहीं थी, ये सर्वाधिक भयानक दुःस्वप्न था, जिसका उसने कभी जीवन में अनुभव किया। उसने एक भूकम्प को सोचा, जो मेसीना (Messina)[13] के आसपास हुआ था, सालोनिका (Salonika)[14], जहाँ इमारतें भरभरा कर गिर पड़ी थीं और जहाँ पृथ्वी ने अंगड़ाई ली थी, और लोग, पृथ्वी की तरह, अंगड़ाई लेते हुए, सीधे कुचल जाने के लिए सपाट गिरे थे, फिर से बंद।

ये भयानक था–भयानक। ये सबसे खराब चीज थी, जिसे वह कभी अनुभव कर सका था, सबसे खराब चीज, जिसकी उसने कभी कल्पना की थी। उसने महसूस किया कि वह कुचला और मसला जा रहा है। अपने भ्रमित दुःस्वप्न की अवस्था में, थोड़े समय के लिए, उसने कल्पना की कि, उसे कांगो (Cango) के क्षेत्र में, कुंडली मार कर शिकार करने वाले (constrictor) एक अजगर (boa) द्वारा पकड़ लिया गया है और सांप के गले में जबरदस्ती नीचे की ओर धकेला जा रहा था।

सारा संसार औंधा दिखाई दिया। हर चीज हिलती हुई प्रतीत हुई। वहाँ दर्द, मरोड़ था, उसने चूरन बना हुआ, डरा हुआ अनुभव किया।

वहाँ, थोड़ी दूर से, एक दबी हुई चीख की आवाज आई, एक चीख, जो पानी में होकर, सुनी गई हो, और मोटी लपेटन (swaddling) हुई। अपने दुखों में मुश्किल से सजग होते हुए, उसने समझा, *'मार्टिन, मार्टिन, जल्दी से एक टैक्सी लाओ, ये शुरू हो चुका है।'*

वह नाम के ऊपर उलझ गया। *'मार्टिन? मार्टिन?'* उसे एक धुंधली, परंतु केवल एक अत्यंत धुंधली याद, कि किसी समय, कहीं, किसी जीवन में, उसने ये नाम पहले सुना था, परंतु नहीं, प्रयत्न जैसा वह कर पाया, वह अपनी स्मृति में याददाश्त को वापस नहीं ला सका कि इस नाम का क्या अर्थ था, या ये किस पर लागू होता था।

हालात केवल भयानक थे। मरोड़ चलता गया। वहाँ तरल पदार्थों की भयानक गुड़गुड़ाहट हुई। एक क्षण के लिए उसने सोचा कि, वह सीवर में गिर गया है। ताप बढ़ा और ये, वास्तव में, हिला देने वाला अनुभव था।

सहसा, तेजी से वह अधूरा था और वह अपनी गर्दन के पिछले भाग में, भयानक दर्द के प्रति सजग था। वहाँ एक विशेष प्रकार की गति की सनसनी हुई, ऐसा कुछ नहीं, जो उसने इससे पहले कभी अनुभव किया हो। उसने गला घुटता हुआ, दबाया हुआ, अनुभव किया, उसने अनुभव किया मानो

---

13 अनुवादक की टिप्पिणी : मैसीना (Messina), उत्तर–पूर्व सिसली (Sicily), इटली में है। ये सिसली द्वीप का तीसरा, और इटली का 13 वॉ सबसे बड़ा शहर है। इसकी आबादी साढ़े छः लाख है। शहर का प्रमुख संसाधन, समुद्र तट है, जो व्यापारिक और सैनिक बंदरगाह है। शहर में, 1548 में स्थापित किया गया मैसीना विश्वविद्यालय है। ये ग्रीकभषी अल्पसंख्यक समुदाय का गृह है, जिसे ईसापूर्व आठवीं शताब्दी में स्थापित किया गया था।

14 अनुवादक की टिप्पिणी : सालोनिका (Salonika) ग्रीस में है। ईसापूर्व 395 में रोमन साम्राज्य के बिखरने जाने के बाद, सालोनिका, कोंस्टेनटिनोपोल (constantinopole) के बाद, दूसरा महत्वपूर्ण शहर बन गया। वाईजेनटाइन साम्राज्य (Byzantine Empire) में, वाईजेनटाइन सम्राट, अपनी जनता को ईसाई बनाने के प्रयास में, यहूदी समाजों, उनके क्षेत्रों और विशेषरूप से सालोनिका के यहूदियों से मुकर गये थे। कोंस्टाइन महान (Constine the great) (306–37) और थियोडोसियस द्वितीय (Theodosius II) (40–50) ने, यहूदी विरोधी नियमों को जबरन लागू किया। फलतः अधिकांश यहूदी वहाँ से पलायन कर गये और जब 1169 में, टूडेला के बेंजामिन (Tudela of Benjamine) ने सालोनिका की यात्रा की और उसने पाया कि वहाँ शहर में, लगभग 500 यहूदी थे। लैटिन साम्राज्य, जो क्रूसेडर्स (Crusaders 1204-61) ने स्थापित किया था, में भी, यहूदियों के ऊपर अत्याचार जारी रहे। यहूदी 14वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सालोनिका में वापस आये, जिनमें पहले आने वालों में हंगरी के यहूदी थे। यहूदी, बाद में अनेक स्थानों से आकर, वहाँ बसे। सालोनिका को थेससालोनिका (Thessalolica) भी कहा जाता है। ये ग्रीस (Greece) का दूसरा सबसे बड़ा शहर है और ग्रीक मेसेडोनिया (Macedonia) की राजधानी है। शहर में मुख्य विश्वविद्यालय, अरिस्टोटल यूनिवर्सिटी (Aristotle University) है, जो ग्रीस का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय है। सालोनिका, ग्रीस का एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है ।

कि, उसे तरल (fluid) में डुबो दिया गया हो। *'परंतु ये नहीं हो सकता, क्या ये हो सकता है? '* उसने सोचा, *'मनुष्य तरल में जिंदा नहीं रह सकता, नहीं चूंकि हम, कैसे भी, समुद्र से उभरे हैं।'*

थोड़े समय के लिए, धीमे धीमे दौड़ना (joggling) और झटके खाना (jolting), जारी रहा, और तब, अंत में, एक झटका आया और एक बुदबुदेदार, गांठदार, बड़ी मंदी सी आवाज हुई, *'सावधान मनुष्य! सावधान! क्या तुम उसे, यहाँ टैक्सी में ही पाना चाहते हो?'* जबाव में, वहाँ किसीप्रकार की बड़बड़ाहट हुई, परंतु ये बुरी तरह से दबी हुई थी। अलगरनन, भ्रम के साथ, लगभग, अपने विचार से बाहर था, इस सब का, उसके लिए कोई अर्थ नहीं था, वह यह भी नहीं जानता था कि वह कहाँ था। ये भी नहीं जानता था कि क्या हो रहा था। चीजें, काफी देर तक, कल्पनातीतरूप से भयानक रहीं थीं और अब एक तर्कयुक्त प्राणी की तरह व्यवहार करना संभव नहीं था। उसकी चेतना में, धुंधली स्मृतियाँ तैर गईं। कहीं किसी एक चाकू के सम्बंध में, या क्या ये एक रेजर था। ये एक भयानक स्वप्न रहा था! उसने स्वप्न देखा था कि उसके सिर को बेरहमी से आधा काटा गया था, और तब, जबकि वह अपना सिर नीचे की तरफ किये हुए, छत के नीचे की ओर आधी दूरी पर लटक रहा था, और तब उसने, अपने आप को, फर्श पर मृत लेटे हुए देखा था। वास्तव में, हास्यापद, पूरी तरह बकबास, परंतु–और उसका दूसरा दुःस्वप्न क्या था? अब वह क्या था? वह किसी प्रकार का अपराधी, किसी प्रकार के अपराध का दोषी दिखाई दिया। वह नहीं जानता था कि ये सब क्या था। अब भ्रम के साथ, परेशानी के साथ, बेचारा गरीब, आसन्न भाग्य (impending doom) से डरा हुआ, भयानक भय के साथ, अपने मन से लगभग बाहर था।

परंतु धीमे धीमे दौड़ना जारी रहा। *'अब सावधान, मैं कहता हूँ, सावधान, आसानी से चलो, सहन करने के लिये, पीछे एक हाथ है।'* ये (आवाज) इतनी दबी हुई, इतनी अवास्तविक थी, और स्वर इतना मोटा था। इसने उसे एक फेरी वाले (customermonger) की याद दिलाई, जिसको उसने कभी लंदन में, बरमोंडसे[15] की पिछली गली (back street of Bermondsey) में, सुना था। परंतु वरमोंडसे को, अब उससे क्या लेना देना था? वह कहाँ था? उसने अपने सिर को रगड़ने का, अपनी आँखों को रगड़ने का, प्रयास किया, परंतु अपने भय के लिए, उसने पाया कि वहाँ केबल (cable) जैसा कुछ, उसे घेरे हुए था। एकबार फिर, उसने सोचा कि वह एक निम्न सूक्ष्मलोक में होना चाहिए क्योंकि, उसकी गतिविधियाँ अवरोधित थीं–समझने के लिए, ये अत्यधिक भयानक था। वह पानी के एक तालाब में होता हुआ लगा। इससे पहले, जब वह निम्न सूक्ष्मलोक में रहा था, ये एक चिपचिपा, चिपकने वाला, दलिया जैसा प्रतीत हो चुका था–और क्या वह निम्न सूक्ष्मलोक में रहा था? हैरानी के साथ, उसने अपने अनिच्छुक दुखते हुए मन से, स्मृति की राहों में ढूंढने के लिए, जबरदस्ती करने का प्रयास किया। परंतु नहीं, कोई चीज ठीक नहीं थी, कोई भी चीज स्पष्टता के साथ फोकस नहीं हो रही थी।

'ओह भगवान!' उसने चिंतित होते हुआ सोचा, *'मैं पागल हो गया होऊँगा और उस हालत के लिये, एक पागलखाने में हूँ। मुझे सजीव दुःस्वप्न आते होंगे। कुल मिलाकर, संभवतः ये किसी आदमी के लिए नहीं हो सकता। एक ऐसे पुराने और सम्मानित परिवार का सदस्य होते हुए, मैं, इतना नीचे कैसे आ गया? हम अपने शांतचित्त और अपने मानसिक स्वास्थ्य के लिए हमेशा ही सम्मानित होते रहे हैं। ओह ईश्वर! मेरे साथ क्या हुआ है?'*

अचानक एक झटका लगा, एक अत्यधिक अकथनीय (inexplicable) घटना, एक अचानक झटका और तब दोबारा से दर्द हुए। वह किसी के चीखने के प्रति, हल्का सा सजग हुआ। सामान्यतः उसने सोचा, ये ऊँची आवाज की चीख होगी, परंतु अब हर चीज दबी हुई थी, हर चीज इतनी अविश्वसनीयरूप से अजीब थी, किसी चीज का अब और अधिक अर्थ नहीं था। वह जहाँ कहीं भी था, वापस वहीं लेट गया और पाया कि इसबार वह मुँह के बल था, और तब *'किसी चीज'* के अचानक सूज

15 अनुवादक की टिप्पिणी : बरमोंडसे (Bermondsey) दक्षिण–पूर्वी लन्दन, इंगलेंड का एक जिला है।

जाने ने, उसे चारों तरफ घुमा दिया, और तब, अपने अस्तित्व के पूरे तंतु के फिर हिलने के साथ, भय में कांपता हुआ, वह अपनी पीठ के बल था।

'मैं भय में कांपता हूँ?' उसने भयभीत होकर अपने आप से पूछा। *'मैं भय के साथ, अपने मन के लगभग बाहर हूँ, मैं एक अधिकारी और एक सज्जन हूँ? यह खराब चीज क्या है, जो मेरे ऊपर आ पड़ी है? हकीकत में, मैं किसी गंभीर मानसिक कष्ट से पीड़ित होना चाहिए। मैं अपने भविष्य के लिए डरता हूँ!'*

उसने अपने मन को साफ करने का प्रयास किया, उसने अपने आदेश पर, अपनी पूरी मानसिक शक्ति के साथ, ये सोचने का प्रयास किया कि क्या हो चुका था, क्या हो रहा था। जो कुछ उसे मिला, वह भ्रमित और असम्भाव्य (improbable) अनुभव थे, एक बोर्ड के सामने जाने जैसी कुछ चीज, योजना, जो वह करने जा रहा था, के सम्बंध में कुछ चीज। और तब वह एक मेज पर विश्राम करता रहा था–नहीं, ये व्यर्थ था, उसका मन विचार पर ठिठक गया, और एक क्षण के लिए खाली हो गया।

फिर वहाँ एक हिंसक हलचल हुई। फिर वह सहमत था कि, वह कुंडली मारकर शिकार करने वाले एक अजगर, जो उसे कुचलने और हजम करने के लिए तैयार था, की कुंडली में था। परंतु वहाँ ऐसा कुछ नहीं था, जो वह कर पाता, वह एकदम भय की स्थिति में था। कोई चीज ठीकठाक चलती नहीं लग रही थी। पहले तो, वह कुंडली मारकर शिकार करने वाले अजगर की जकड़ में कैसे आया, और वह स्थान में कैसे पहुँचा, जहाँ ऐसे प्राणी थे? ये सब उसके परे था।

उसके आसपास की, एक बुरी तरह दबी हुई, भयानक चीख की आवाज ने उसको अंदर तक हिला दिया। तब वहाँ एक हिंसक, अत्यंत कष्टदायक और फाड़ देने वाली आवाज आई और उसने सोचा कि उसके सिर को उसके शरीर से अलग किया जा रहा है। *'ओह मेरे भगवान!* उसने सोचा, *'तब ये सत्य है, मैंने अपना गला काटा था, और मेरा सिर मुझसे दूर, अलग गिर रहा है।'*

'ओह मेरे भगवान' मैं क्या करूँगा?' सदमे और भयानक सहसापन के साथ, वहाँ पानी के फूट पड़ने की आवाज (gushing) हुई और उसने अपने आपको किसी मुड़ती हुई चीज के ऊपर जमा किया हुआ पाया। उसने अपने आपको उखड़ी सांस लेते हुए और संघर्ष करते हुए पाया। उसने अपने चेहरे के ऊपर, एक गीला गर्म कंबल रखा जाते हुए अनुभव किया, तब अपने भय के लिए, उसने नाड़ी के धड़कने की आवाजें पाई, धड़कन, धड़कन, धड़कन, प्रबल इच्छाऐं, किसी अत्यंत तंग खुशामदी, चिपचिपे द्वार में होकर मजबूर कर रहीं थीं या बीच में, कुछ चीज–एक डोरी ने, जो उसके चारों और लिपटी हुईं प्रतीत होती थी–उसको वापस पकड़ने का प्रयास किया, उसने डोरी को एक पैर में लिपटते हुए अनुभव किया। उसने, उससे छूटने का प्रयास करते हुए, जोर से झटका दिया क्योंकि यहाँ, नम अंधकार में, उसका दम घुट रहा था। उसने फिर से झटका मारा, और एक तेजी की चीख, अब अधिक तेज, उसके ऊपर और पीछे से कहीं से फूट पड़ी। वहाँ कुछ और भयानक उभार, मरोड़ हुए और वह अंधकार में से, एक इतनी चौंधियाने वाली रोशनी में, कि उसने सोचा कि वह तत्काल ही अंधा हो जायेगा, गोली की तरह छूटकर बाहर आया। सिवाय इसके कि, वह एक बहुत गर्म वातावरण में है, वह कुछ नहीं देख सका, वह अब तेजी से, किसी खुरदरी और ठंडी चीज पर नीचे गिर पड़ा था, उसकी हड्डियों में ठंड घुसती हुई प्रतीत हुई और वह कांप उठा। अपने आनंद के लिए उसने पाया कि, वह बहुत गीला था, और तब किसी चीज ने, उसको टखनों से पकड़ लिया और उसे हवा में उल्टा करके, फुर्ती से हटा दिया।

उसके नितंबों (buttocks) पर, तेजी से *'चटाक (slap), चटाक!'* की आवाज हुई और उसने इस अभद्रता, और एक अधिकारी और सज्जन के असहाय शरीर के ऊपर अत्याचार किए जाने पर, विरोध प्रकट करने के लिए, अपना मुँह खोला। और एक नये दिन की शुरूआत पर, रोष की पहली चीख के साथ ही, उसमें भूतकाल की सभी स्मृतियाँ मंद पड़ गईं और बच्चा पैदा हुआ।

वास्तव में, हर बच्चा इस तरह का अनुभव नहीं पाता क्योंकि, एक औसत बच्चा, जबतक कि यह जन्म नहीं ले लेता, मांस का एक अचेतन लोथड़ा (unconscious mass of protoplasm) मात्र होता है और केवल तब, जब ये जन्म ले लेता है, तब इसमें चेतना आती है। परंतु अलगरनन या तिरेपन, या आप इसे जो कुछ भी कहना चाहें, के मामले में, मामला दूसरी तरह का था, क्योंकि ये आत्महत्या थी, क्योंकि, वास्तव में, ये बहुत कठिन प्रकरण था और वहॉ एक अतिरिक्त कारक (factor) भी था; इस व्यक्ति–इस अस्तित्व को, मन में एक विशेष उद्देश्य के साथ लौटना पड़ा, उसे एक विशेष व्यवसाय लेना पड़ा और इसलिए उसे, सूक्ष्मस्तरीय विश्व से जन्म लेते हुए शिशु प्राणी के माध्यम से, और नवजात शिशु को सीधे ही मानसिक आधार (mental metrix) देते हुए, इस व्यवसाय से संबंधित ज्ञान दिया गया।

कुछ समय के लिए, बच्चा लेटा रहा, या उसे थोड़ा आसपास हटाया गया। बच्चे के लिए कुछ काम किये गये, इसके शरीर से जुड़ी हुई किसी चीज को काट दिया गया परंतु बच्चा इस सब कि प्रति बेसुध (oblivious) था। अलगरनन जा चुका था। अब वहॉ एक अनाम बच्चा था। परंतु कुछ दिन बाद, अस्पताल में खराब सी आकृतियॉ आईं और शिशु की धुंधली दृष्टि के सामने चलीं। *'कू (Coo),'* किसी प्रकार की कर्कश आवाज ने कहा, *'नाटा छोटा शैतान (runty little devil), क्या वह नहीं है? तुम उसे किस नाम से पुकारने वाली हो, मैरी?'*

मॉ ने, पैदा हुए अपने पहले बच्चे को, शौक से नीचे टकटकी लगाकर देखते हुए, दूर देखा और आगंतुक पर मुस्कराई, *'ठीक है, मेरा ख्याल है, हम इसे 'अलन (Alan)' कहने वाले हैं। हमने तय किया था कि यदि ये लड़की होती, तो हम इसे एलिस (Alice) पुकारते, और यदि ये लड़का होता, तो हम इसे एलन पुकारते, इसलिए अब ये एलन होने वाला है।'*

कुछ और दिनों के बाद, मार्टिन अपनी पत्नी से मिलने आया और उन्होंने छोटे बंडल के साथ, जो पृथ्वी पर अपने नये जीवन, एक जीवन, जिसको उस समय, उनमें से कोई नहीं जानता था, जो कि पूर्व निर्धारित (destined), तीस साल बाद समाप्त होने वाला था, को प्रारंभ करने जा रहा था, ले जाते हुए वह अस्पताल छोड़ा। शिशु को घर का, जो वेपिंग (wapping) का सुंदर व आकर्षक हिस्सा था, उसमें ले जाया गया, टेम्स नदी पर, जहॉ लंदन के तालाब में, बड़े जहाज आते थे, और लंदन के बंदरगाह पर वापस आने पर उनका जोरदार स्वागत किया जाता था, या शायद, जब वे विश्व की दूसरी यात्रा पर, लंदन के बंदरगाह से दोबारा बाहर जाते, तो उनको भोपूओं की चीख से विदाई दी जाती और उस छोटे से घर में, वैंपिग सीढ़ियों से बहुत अधिक दूर नहीं, दुकान के ऊपर, जहॉ बाद में वह आलुओं को धोने वाला, खराब फलों को उछालकर फेंकने वाला और बंदगोभी में से सड़े हुए पत्त ों को फेंकने वाला था, एक शिशु एक कमरे में सोया रहता। परंतु अभी शिशु लड़के को आराम करना था, थोड़ा बड़ा होना था और भिन्न जीवनशैली सीखनी थी।

समय गुजरता गया, जैसे समय गुजरता है–जैसे यह कभी रुकने के लिये नहीं जाना जाता! –अब छोटा बच्चा, चार साल की आयु का था। इस गर्म रविवार की शाम को, जब बाबा अचानक ही उसकी तरफ झुके, वह अपने बाबा, बोंड (Bond) के घुटनों पर बैठा था, और उन्होंने कहा, *'ठीक है, जब तुम बड़े हो जाओगे, तुम क्या बनने वाले हो, बच्चे?'*

बच्चा स्वयं में बुदबुदाया और उसने सावधानीपूर्वक अपनी उंगलियों की जांच की, और तब उसने बचकाने कुदकने के साथ कहा, डॉक्टुह, डॉक्टुह, ऐसा कहते हुए वह अपने बाबा के घुटनों पर से फिसल गया और शरमा कर दूर दौड़ गया।

'ठीक है बाबा,' मेरी बोंड ने कहा, *'तुम जानते हो, ये तो एक मजाक की चीज है, और मैं इसे बिलकुल नहीं समझता, परंतु ऐसा लगता है कि वह किसी ऐसी चीज के प्रति अत्यधिक जिज्ञासु है, जिसको दवाओं से कुछ लेना देना है और अभी वह मात्र चार साल की आयु का है। जब डॉक्टर आता है, वह उसे जाने नहीं देता–तुम जानते हो, वह चीज, जो उसके गले के आसपास होती है, वह नली*

जैसी चीज।'

'स्टेथोस्कोप (Stethoscope),' बाबा ने कहा।

'ठीक है, हाँ' ये वही है, जो मैंने कहा स्टेथोस्कोप,' मेरी बोंड ने कहा। *'नहीं समझ सकते, ये क्या है। वह इसके सम्बंध में, एक वास्तविक सनक रखता हुआ दिखाई देता है और वह, हमारे साथ, हमारी परिस्थितियों में, एक डॉक्टर बनाने की कैसे सोच सकता है?'*

समय फिर भी चलता गया। एलन बोंड, अब दस साल का था और दस साल के बच्चे की आयु के हिसाब से वह अभी भी, स्कूल में कड़ी मेहनत के साथ पढ़ रहा था। जब एक शिक्षक ने कहा, *'मैं एलन के सम्बंध में नहीं समझता, श्रीमती बोंड, वह वास्तव में पढ़ता है और ये पूरी तरह से असामान्य है, एक बच्चे के लिए इस तरह अध्ययन करना, स्वाभाविक नहीं है। वह हर समय डॉक्टरी और उससे संबंधित चीजों के बारे में बात करना चाहता है। ये, वास्तव में, एक त्रासदी (tragedy) है, क्योंकि–हमला करने का आशय नहीं है, श्रीमती बोंड–परंतु वह कैसे डॉक्टर बनने की आशा कर सकता है?'*

मेरी बोंड हर समय इसके सम्बंध में सोचती रहती। वह रात में, लंबी शांति में, जब केवल यातायात की घुर्राहट होती, जिसके प्रति वह पूरी तरह बेअसर (immune) थी–इस सम्बंध में सोचती, और टेम्स नदी के ऊपर हवाई जहाज की चीख ने–जिसके लिए वह अभ्यस्त थी–रात की शांति को तोड़ा। उसने काफी देर तक गहराई से सोचा और तब, अंत में, एक पड़ौसी के साथ बातचीत में, उसके अंदर एक विचार आया। पड़ौसिन ने कहा, *'ठीक है, तुम जानती हो मैरी, आजकल एक योजना चली हुई है कि यदि तुम उन्हें पर्याप्त युवा बना दो, तुम अपने बच्चे का बीमा करा सकती हो। तुम इतने पैंस* (pence) *प्रति सप्ताह दो, तुम्हें प्रति सप्ताह, निश्चितरूप से, भुगतान करना है और तब एक निश्चित आयु पर, जिसे तुम अपने बीमा वाले आदमी के साथ तय करो, तब उस निश्चित आयु पर, बच्चा एक बड़ी धनराशि पा सकता है, जो उन्हें चिकित्सीय स्कूल में डाल देगा। मुझे मालूम है, ऐसी कोई योजना है, मैं एक बच्चे को जानती हूँ, जिसने पहले ही ऐसा किया था और वह एक वकील है। मैं बॉब मिलर (Bob Miller) के साथ आऊँगी, और तुमसे मिलूंगी, वह तुमसे इस सम्बंध में बात करेगा, वह, इन बीमा योजनाओं के बारे में, जो जानना है, सबकुछ जानता है।'* पड़ौसिन भले इरादों के साथ, दूसरे व्यक्ति के भविष्य को बनाने के लिए योजना बनाते हुए, दौड़ती चली गई।

वर्ष गुजरते गये, और अंत में एलन बोंड एक व्याकरण स्कूल (grammar school) में दाखिल हुआ। पहले दिन, प्रधान अध्यापक ने, स्कूल में उसका साक्षात्कार लिया, *'ठीक है मेरे बच्चे, और जब तुम स्कूल छोड़ोगे, तुम अपने जीवन में क्या होना प्रस्तावित* (propose) *करते हो?'*

'मैं एक डॉक्टर बनने जा रहा हूँ, श्रीमान्' एलन बोंड ने आत्मविश्वास के साथ, सीधे प्रधानाध्यापक के ऊपर देखते हुए कहा।

'ओह ठीक है, मेरे बच्चे, इतनी ऊँची अपेक्षाओं को रखने में कोई हानि नहीं है, परंतु एक डॉक्टर बनने के लिए तुम्हें कड़ी मेहनत से पढ़ाई करनी होगी और तुमको अनेक छात्रवृतियाँ प्राप्त करनी पड़ेंगीं, क्योंकि तुम्हारे मातापिता, निश्चितरूप से, तुम्हारे चिकित्सीय स्कूल के माध्यम से होने वाले भुगतानों को वहन नहीं कर सकते और उन सभी अतिरक्त खर्चों को, जो चिकित्सीय स्कूल में होते हैं, नहीं दे सकेंगे। मेरा सुझाव है, मेरे बच्चे, कि तुम दूसरी शाखा के रूप में, कोई दूसरी चीज, जैसी कि, तुम्हारी महत्वाकांक्षाओं के लिए ये थी, रखने का प्रयास करो।'

'धत्तेरे की,' मार्टिन बोंड ने कहा, *'क्या तुम उस बेकार पुस्तक को एक मिनट के लिए रख नहीं सकते? क्या मैंने तुम्हें उन आलुओं को रगड़ने के लिए नहीं कहा? श्रीमती पॉटर (Mrs.Potter), यदि हम काफी मिट्टी लगा हुआ आलू उन्हें देंगे, अपना व्यवहार कहीं और बना लेंगी। अपनी किताब को नीचे रखो, मैं कहता हूँ, इसे नीचे रखो, और खुरपी लेकर आलू खोदने में जुट जाओ। मैं उन्हें बेदाग देखना*

चाहता हूँ, और जब वे बेदाग हो जायें, तुम जाओ और उन्हें ऊपर श्रीमती पॉटर को दे आओ।' पिता झुंझलाते हुए, अपने आप बड़बड़ाते हुए, दूर हट गये, *'सब बकवास, आजकल बच्चे, अपने पड़ाव से एकदम परे, ये विचार क्यों पा जाते हैं? यही सबकुछ है, जो वह सोचता है, डॉक्टर होने को छोड़कर अन्य किसी चीज के बारे में नहीं सोचता। वह कैसा शैतान है, मैं सोचता हूँ कि मैं उसे डॉक्टर बनाने के लिये कहॉ से पैसा भरूंगा?'* फिर भी, यद्यपि उसने खुद सोचा, *'वह वास्तव में, स्कूल में प्रवीण है, वे कहते हैं, और जब ये दिमाग का मामला था, वह लाइन में सबसे आगे था, जब वे इसे निकलने में मदद कर रहे थे। हॉ, वह स्कूल की पढ़ाई में कड़ी मेहनत कर रहा है, वास्तव में, छात्रवृति प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है। अनुमान करो, मैं उसके प्रति थोड़ा सा कठोर रहा हूँ। वह ठीक से पढ़ नहीं सकता, जब वह एक किताब अपने सामने टिकाता है, और मैं उसे आलू रगड़ने के लिए कहता हूँ। मैं जाऊँगा और उसकी मदद करूँगा।'*

पिता बोंड, जहॉ उनका बेटा, स्नानगृह के सामने, तीन टांग वाले स्टूल पर बैठा था, वापस गये। लड़के के बायें हाथ में एक किताब थी और वह दायें हाथ से, बेतरतीब रूप से, एक आलू को टटोलने का प्रयास कर रहा था और तब वह उसे पानी के भरे बर्तन में डालता, थोड़ा सा आसपास हिलाता, और तब उसे किन्हीं मुड़े हुए अखबार के कागजों के ऊपर पटक देता।

'मैं तुम्हें थोड़ी सी सहायता दूंगा, बच्चे, तब हम इन चीजों को पूरी कर लेंगे और तुम छुट्टी पा सकते हो और फिर से अपना अध्ययन कर सकते हो। मुझे तुम्हारे ऊपर कठोर होने की कोई इच्छा नहीं है, परंतु मुझे जीने के लिए कमाना है। तुम्हारी देखभाल करनी है, तुम्हारी मां की देखभाल करनी है, और साथसाथ अपनी भी। और हमें किराया भी देना है, और हमें अपने कर भी देने हैं, हमें सभी प्रकार की चीजों का भुगतान करना है, और सरकार हमारे बारे में थोड़ा भी नहीं सोचती। आओ, हम इनकी सफाई करें।'

अब ये उसके स्कूल सत्र की समाप्ति थी। प्रधानाध्यापक और शिक्षक एक मंच पर खड़े हुए। स्कूल संचालक मंडल के सदस्य भी वहॉ थे और उस बड़े हॉल में, अपने सबसे अच्छे रविवासरीय परिधानों में बच्चे बैठे, ठसाठस, थोड़े तंग और स्तब्ध। उनके मां बाप और रिश्तेदार, अनअभ्यस्त परिस्थितियों में, उनके बगल से कुलबुलाते हुए बैठे। यहॉ, वहॉ, चोरी छिपे ऑखों से, खिड़की के बाहर एक समीपवर्ती शराबखाने की इच्छा करते हुए कुछ प्यासे लोग बैठे, परंतु ये पुरुस्कार वितरण, भाषण और शेष सब चीजों का दिन था, और उन्हें यहॉ रुके रहना था। एक आदमी ने अपने आप में सोचा, *'ठीक है, मुझे साल में केवल एकबार यहॉ आना होता है, बिगड़ैल बच्चे (brats), उनको यहॉ रोजाना आना होता है!'*

प्रधानाध्यपक अपने पैरों पर खड़े हुए, और उन्होंने सावधानी पूर्वक चश्मे को अपनी नाक के पुल (bridge of the nose) के ऊपर बैठाया। उन्होंने अपने गले को खकार कर साफ किया और अंधेपन से, अपने सामने जुड़ी हुई भीड़ के पर नजरें टिकाईं। *'मुझे अत्यंत प्रसन्नता है'*, उन्होंने सर्वाधिक ज्ञानवान के स्वर में कहा, *'आपको ये बताने में कि, स्कूल के अपने पिछले वर्ष में, एलन बोंड ने एक बहुत बड़ी असाधारण (phenomenal) प्रगति की है। वह हमारी शैक्षणिक विधियों में, पूर्ण श्रेय प्राप्त करने के योग्य सिद्ध हुआ है, और ये घोषणा करते हुए कि उसे सेंट मेगट्स के पूर्व चिकित्सीय स्कूल (pre medical school of St. Maggots) के लिए, छात्रवृति प्रदान की गई है, मुझे अत्यधिक आनंद हो रहा है।'* तालियों की गड़गड़ाहट को समाप्त होने की प्रतीक्षा करते हुए, वे रुके, और तब शांति के लिए अपना हाथ उठाते हुए, उन्होंने फिर कहा, *'उसे ये छात्रवृति, जो इस इलाके के किसी बच्चे को दी जाने वाली पहली छात्रवृति है, दी गई है। मुझे विश्वास है कि हममें से सभी, भविष्य में उसकी अत्यधिक सफलता की कामना करते हैं क्योंकि पिछले चार सालों से, वह इस स्कूल में रहा है, उसने निरंतर और बारबार (consistently and persistently) जोर डाला है कि वह चिकित्सीय डॉक्टर होने वाला था, अब ये*

उसके लिए एक अवसर है।'

उन्होंने व्याख्यान मंच पर अपने सामने कागजों को टटोला और कागजों का पूरा का पूरा गुच्छा गिर पड़ा और पन्ने हवा में गिर गये और मंच के ऊपर फड़फड़ाते रहे और शिक्षक जल्दी से नीचे झुके और गिरते हुए पन्नों को उन्हें सावधानीपूर्वक छांटते हुए और वापस व्याख्यान पीठ (lectern) पर रखते हुए, इकठ्ठा किया।

प्रधानाध्यापक ने कुछ कागजों को उल्टा पलटा, और एक को उठाया। *'एलन बोंड,'* उन्होंने कहा, *'क्या तुम इस डिप्लोमा और छात्रवृति, जिसकी अभी–अभी पुष्टि की गई है, का पुरुस्कार पाने के लिए मेरे पास आओगे।'*

जब वे घर गये और एलन उन्हें सिफारिशों को दिखा रहा था, *'ये, आह क्या तुम जानते हो!'* पिता बोंड ने कहा, *'मुझे ऐसा लगता है, एलन मेरे बेटे कि तुम अपने जीवन के पड़ाव से काफी ऊँचे विचार पाल रहे हो। हम मात्र सब्जी बेचने वाले हैं, हमारे परिवार में न कोई डॉक्टर और न ही कोई वकील है, क्या तुम जानते हो कि तुम ऐसे विचारों को क्यों पाल लेते हो।'*

'परंतु पिता जी,' निराश होता हुआ एलन चीखा, *'जब से मैं बोल सकता था, मैं डॉक्टर होने के सम्बंध में बात करता रहा हूँ, और अब मैंने अपने पूरे स्कूल जीवन में मेहनत की है, मैंने अध्ययन करने, और छात्रवृतियॉ प्राप्त करने के लिए, अपने सभी आनंदों को छोड़ दिया और उन्हें गुलाम बनाया और अब मुझे छात्रवृति मिल चुकी है और अब आप फिर से आपत्ति यॉ उठा रहे हैं।'*

मैरी बोंड, एलन की मां, शांत बैठी रहीं। उन परेशानियों, जो उसे थीं, को झुठलाते हुए, केवल उस तरीके से, उसके हाथ, अभी भी, शांत नहीं रह सके। पिता और माता ने एक दूसरे को देखा और तब पिता ने कहा, *'देखो, एलन, हम तुम्हें पीछे खींचने का प्रयास नहीं कर रहे हैं, बच्चे, हम तुम्हारे अवसरों को हानि पहुँचाने का प्रयास नहीं कर रहे हैं, परंतु तुम्हें थोड़े कागज मिले हैं, ठीक है, इस कागज का क्या अर्थ है? इसका केवल यही मतलब है कि तुम किसी निश्चित स्कूल में जा सकते हो, और तुम्हारा पढ़ाई का खर्चा माफ होगा, परंतु और दूसरी चीजों का क्या, सभी पुस्तकों, सभी उपकरणों, और बाकी सबकुछ के सबंध में क्या?'* उसने असहाय होकर अपने बच्चे की ओर देखा और कहता चला गया, *'ओह पक्का, तुम अभी भी हमारे साथ रह सकते हो, बच्चे, तुम्हें अपने रहने खाने का खर्चा नहीं देना पड़ेगा, जब तुम स्कूल से वापस आओ, थोड़ा सा काम कर सकते हो और उस तरह से चीजों को लो। परंतु अभी हमारे पास तमाम दूसरी खर्चीली चीजों के भुगतान के लिए पैसा नहीं है। हम अभी भुखमरी की कगार पर, मुश्किल ही इसे संभालते हुए, जी रहे हैं, इसलिये इस पर विचार करो, बच्चे, विचार करो। मैं सोचता हूँ और तुम्हारी मां सोचती है कि ये गजब की चीज होगी, यदि तुम डॉक्टर हो सकते, परंतु ये एक गरीब डॉक्टर के लिए आनंददायक चीज होगी, परंतु तुम्हारे पास, चलते जाने के लिए, पर्याप्त पैसा नहीं है।'*

मेरी बोंड ने कहा, *'एलन तुम जानते हो कि असफल डॉक्टरों के साथ क्या होता है, क्या तुम नहीं जानते? तुम जानते हो कि उन डॉक्टरों के साथ क्या होता है, जिनके नाम काट दिये जाते हैं, क्या तुम नहीं जानते?'*

एलन ने कड़वाहट से उसकी ओर देखा और कहा, *'मैं केवल कुछ अफवाहों, जो मुझे निरुत्साहित करने का प्रयास करने के लिए, मुझे बताई गई हैं, को जानता हूँ। मुझे बताया गया है कि यदि कोई चिकित्सीय विद्यार्थी फेल हो जाता है, या किसी डाक्टर का नाम काट दिया जाता है, वह किसी दवाई बनाने वाले प्रतिष्ठान के लिए, केवल एक बिना लक्ष्य का यात्री हो जाता है। ठीक है, इसका क्या?* उसने पूछा, *'मैं अभीतक फेल नहीं हुआ हूँ, और मैंने अभी प्रारंभ भी नहीं किया है, और यदि मैं फेल हो भी जाता हूँ, तो फिर भी मुझे अजीविका कमानी होगी और यदि मैं अपना जीवनयापन दवा के एक सेल्समैन के रूप में कर सकता हूँ, तो यह गंदी चीज भी, मेरे रहने के लिए, आलू को उस*

फटे हुए एक बोरे में भरकर और उन्हें तौलते हुए, या अन्ननासों (pineapples) को गिनते हुए, या उसी तरह के काम करते हुए, जीने की तुलना में, अच्छी आजीविका होगी!'

'रुको, एलन रुको,' उसकी मां ने कहा, *'तुम अपने पिता के व्यापार का मजाक उड़ा रहे हो, और ये तुम्हारे पिता ही हैं, जो अभी तुम्हें पाल रहे हैं, और अब याद रखो, तुम बिलकुल आदर मत दिखाओ, तुम अपनी सीमा से बाहर जा रहे हो। जमीन पर क्यों नही आते?'* तब एक लंबी धारित की हुई चुप्पी तोड़ने के बाद उसने कहा, *'एलन, एलन, तुम वह नौकरी क्यों नही कर लेते, जो तुमको अंकल बर्ट (Bert) ने, बीमे के दफ्तर में काम करने के लिये प्रस्तावित की थी। ये वास्तविकरूप में, स्थाई नौकरी है, और यदि तुम कड़ी मेहनत करो, तो तुम दावा निपटाने वाले पद तक भी काम करते हुए आगे जा सकते हो। इसके बारे में सोचो, एलन, क्या तुम सोचोगे?'*

बच्चा चिड़चिड़ेपन के साथ कमरे से निकल गया। उसके मातापिता ने शांति के साथ एक दूसरे को देखा और तब उसके नीचे जाते हुए कदमों की आवाज, दुकान के बगल वाली, लकड़ी की सीढ़ियों पर हुई। गली के दरवाजे को धड़ाम से बंद करने, और बाहर की पगडंडी पर उसके पैरों के चलने की आवाज आई। *'क्या तुम नहीं जानते कि उस लड़के को कैसे संभाला जाये,'* मार्टिन बोंड ने कहा। *'मैं नहीं जानता कि हमने ऐसे बच्चे को कैसे पैदा किया। तब से लगातार, वह अकेले ही, अनंतरूप से, एक डॉक्टर बनने के सम्बंध में बात करता रहा है। उस नालायक को दूसरे बच्चों की तरह, और कुछ अच्छा काम करने के लिए क्यों नहीं स्थापित किया जा सकता? ये वह जिसे मैं जानना चाहता हूँ, वह नालायक इसे क्यों नहीं कर सकता, एह?'*

उसकी पत्नी शांति के साथ, पहले से ही बहुत अधिक रफू किये हुए मौजों को रफू करने का, अपना काम करने लगी और जब अंत में, उसने ऊपर की ओर देखा, तब उसकी ऑखों में आंसू थे और उसने कहा, *'ओह, मैं नहीं जानती मार्टिन, मैं कई बार सोचती हूँ कि हम उसके प्रति अत्यधिक कठोर हैं। कुल मिलाकर, एक महत्वकांक्षा रखना, ये ठीक है, और डॉक्टर बनने के सम्बंध में ऐसा कुछ भयानक भी नहीं है, क्या ऐसा है?'* मार्टिन ने छींका और घृणा के साथ जबाव दिया, *'ठीक है, मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानता, अच्छी जमीन और उसकी अच्छी फसल, मेरे लिए काफी है। इन बच्चों पर पकड़ बना कर मत रखो। मुझे ठीक नहीं लगता। मैं नीचे दुकान पर जा रहा हूँ।'* इसके साथ ही वह गुस्से से अपने पैरों पर उछला और धमकते हुए कदमों से, पिछली वाली सीढ़ियों से नीचे उतर गया।

मेरी बोंड ने अपना रफू करने का काम नीचे फैंका और खिड़की से बाहर टकटकी लगाती हुई नजरों के साथ, स्थिर होकर बैठ गई। तब अंत में, वह उठी और वह शयनकक्ष में गई और मार्गदर्शन और शक्ति की प्रार्थना करते हुए, पलंग के बगल से, अपने घुटनों पर बैठ गई। कई मिनटों के बाद, वह फिर सूं–सूं करती हुई, और अपने आप से यह कहती हुई, अपने पैरों खड़ी हुई, *'मजेदार चीज, जब कोई कष्ट में हो, सभी लोग प्रार्थना के सम्बंध में कहते हैं और मैं भी वैसा ही करती हूँ परंतु मुझे अपने जीवन में, प्रार्थना का कभी उत्तर नहीं मिला। अनुमान है कि ये सभी अंधविश्वास है, मैं ऐसा ही सोचती हूँ।'* सिसकियॉ लेते हुए (sniffling) उसने अपना कमरा छोड़ दिया और तब अपनी आंखों को अपने एप्रन (apron) से पोंछते हुए, उसने रात्रि का खाना (supper) बनाने की तैयारी की।

एलन, दुखी होकर पटरी के साथ साथ चलता रहा। निरर्थक ही, उसने एक कट्टी को, जो उसके रास्ते में थी। संयोगवश या क्या ये एक संयोग था? उसने थोड़े जोर की ठोकर मारी, और कट्टी एक कोण पर हवा में उड़ी और जैसे ही यह एक धातु की प्लेट से टकराई, एक हल्की सी झनकार पैदा हुई। एलन ने दोषी के रूप में आसपास देखा और उसके पीछे भागने के लिए तैयार हुआ और तब उसने धातु की प्लेट को देखा। *'आर. थॉम्पसन, एम. डी. (R. Thompson, M. D.)'* उसने पढ़ा। वह धातु की प्लेट तक गया, मोम से भरे हुए काले अक्षरों से खुदी हुई पीतल की प्लेट, और दुलार के साथ, उसे अपने हाथों से रगड़ा। कुछ समय के लिए, वह वहॉ केवल प्लेट के सम्बंध में

विचार करता हुआ, झुका हुआ खड़ा रहा, *'क्या मामला है, बुजुर्गवार?'* एक कृपापूर्ण आवाज ने पूछा, और उसके कंधे पर, हल्के से, एक गर्म हाथ आ पड़ा। एलन, भय के कारण जमीन से उछल पड़ा और एक बड़े डॉक्टर के, उस मुस्कराते हुए चेहरे को देखते हुए, आसपास घूम गया।

'ओह, मुझे बहुत दुख है, डॉक्टर थॉम्पसन, मेरा आशय कुछ गलत करने का नहीं था,' कुछ भ्रम के साथ बच्चे ने कहा। डॉक्टर उसके ऊपर हँसा और उसने कहा, *'ठीक है, ठीक है, कैसा दीन चेहरा। क्या तुमने पूरी दुनियॉ की चिंताऐं ले रखीं हैं?'*

'करीब करीब (just about), मेरा अनुमान है,' एलन ने गहरी निराशा के स्वर में जवाब दिया।

डॉक्टर ने जल्दी से अपनी घड़ी में देखा और तब अपनी बॉह लड़के के कंधे पर रखी। *'आओ, लड़के, अंदर आओ, हम इस सम्बंध में बात करें, तुमने क्या किया है? किसी लड़की की वजह से दुखी हो या कुछ और? क्या उसका पिता तुम्हारे पीछे पड़ा है? अंदर आओ, हम देखें कि इस सम्बंध में हम क्या कर सकते हैं।'* डॉक्टर ने, धीमे से, उस सकुचाते हुए लड़के का, दरवाजे में होकर, छोटे रास्ते पर, अपने शल्यक्रिया (surgery) कक्ष की ओर नेतृत्व किया। *'श्रीमती सीमोंड्स, (Mrs. Simmons)'* उसने दरवाजे की तरफ जाते हुए पुकारा, *'हमारे दैनिक काम के सम्बंध में क्या हुआ, और क्या तुम्हारे पास उन मीठे बिस्कुटों में से कुछ हैं, या तुम्हारे उस आलसी पति ने, तुम्हारी जमकर हंसी उड़ाई है?'* घर की किसी गहराई में से, कहीं से, एक दबी हुई आवाज ने उत्त र दिया। डॉक्टर वापस अपने शल्यकक्ष *(surgery)* में गया और उसने कहा, *'ठीक है, बच्चे, अपने आप को शांत करो, हम साथ साथ एक कप चाय लेंगे और तब देखेंगे कि क्या करना है।'*

श्रीमती सीमोंड्स, शीघ्र ही, एक तश्तरी के साथ, जिस पर दो प्याले, दूध का एक जग, चीनी का एक पात्र, और चांदी का सबसे बढ़िया, चाय का एक बर्तन, साथ ही, वास्तव में, गर्म, गर्म पानी का अपरिहार्य चांदी का जग था, प्रस्तुत हुईं। उसने इस प्रश्न पर लंबा विचार किया था कि क्या उसे, चांदी का अच्छा वाला, चाय का बर्तन या एक साधारण चीनी मिट्टी का चाय का बर्तन (teapot) लेना चाहिए था, परंतु तब उसने सोचा–ठीक है, डॉक्टर को वहॉ, स्पष्टरूप से, कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण मिला है, या उसने उसे इस तरह नीचे नहीं बुलाया होता, ये शल्यक्रिया या वैसी ही किसी चीज का समय नहीं था, अभीतक नहीं, वह ये भी नहीं जानती थी कि इस समय डॉक्टर अपने घर पर क्या कर रहा था। इसलिए सबसे अच्छा चीनी का बर्तन और सबसे अच्छा चाय का बर्तन और अपने चेहरे पर सबसे अच्छी मुस्कान लिए हुए, वह कमरे में प्रविष्ट हुई। परंतु तब उसका चेहरा लटक गया, उसने सोचा कि उस समय वहॉ कम से कम कोई लॉर्ड (Lord) होगा, या शायद कोई एक महिला (Lady), या शायद लंदन के ताल (Pool of London) वाला कोई व्यापारी, परंतु जो उसने देखा, वह था, उल्लेखनीयरूप से मायूस दिखने वाला, कुपोषित, स्कूल का बच्चा। ठीक है, उसने सोचा, इस तथ्य के वाबजूद, कि वह बड़े स्कूल का बच्चा होने जा रहा था, वह स्कूल का बच्चा था, परंतु उसने निश्चयपूर्वक सोचा कि ये उसका कार्य नहीं था, इसलिए सावधानीपूर्वक, उसने ट्रे को डॉक्टर के सामने रख दिया, भ्रमित होती हुई थोड़ी झुकी और अपने पीछे के दरवाजे को बंद करती हुई बाहर निकल गई।

डॉक्टर ने ये कहते हुए कुछ चाय उड़ेली, *'तुम कैसी पसंद करते हो लड़के, पहले दूध? क्या तुम उसे मेरे जैसी, कैसी भी जहॉ तक कि ये गीली और गर्म और काफी मीठी हो, पसंद करते हो?'*

एलन ने मौनरूप से सिर हिलाया। वह नहीं जानता था कि क्या करना है, वह नहीं जानता था कि क्या कहना है? वह दीनता से इतना घिरा हुआ था, वह, इस विचार से, कि यदि वह फिर फेल? हो गया तो, इतना हारा हुआ था। तब उसने अपने आपको फिर पकड़ा–फिर?–अब इससे उसका क्या आशय था? वह नहीं जानता था। कुछ चीज थी, जो उसके दिमाग पर, पीछे की ओर दबाव डाल रही थी, कुछ चीज, जिसका जानना उसको अपेक्षित था, या वह कोई ऐसी चीज थी, जिसका जानना उससे अपेक्षित नहीं था? आनंदित होते हुए, उसने अपना सिर अपने हाथों के बीच में रगड़ा?

'लड़के ये क्या है? तुम ऐसी हालत में हो, क्या तुम नहीं हो? अभी, इस चाय को पीओ और इन मीठे बिस्कुटों में से कुछ को कुतर कुतर कर (धीमे धीमे) खाओ और मुझे बताओ कि सारा माजरा क्या है। समय बहुत है, मुझसे आधा दिन छुट्टी पर रहने की आशा की जाती है, इसलिए, ये देखना है कि तुम्हारे साथ क्या गलत है और हम तुम्हारे लिए क्या कर सकते हैं, हम इसे एक परियोजना (project) बना लें।'

बेचारा एलन, किसी कृपा के लिए, और किसी प्रकार के सम्मान के लिए, अधिक अभ्यस्त नहीं था। वह हमेशा ही अपने परिवार में बेतुका सा, जिले में भी, इस रूप में *'एक सब्जी बेचने वाले का नौजवान लड़का, जिसके पास इतने भव्य विचार हैं,'* बेतुका सा, संदर्भित किया गया, समझा जाता रहा है। अब दयालु डॉक्टर के शब्द उसके अंदर *'गुजरे'* और वह कड़वे आंसुओं में फूट पड़ा। सिसकियों ने उसके चेहरे को चटका दिया। डॉक्टर ने उसे गहरी चिंता के साथ देखा और तब कहा, 'ठीक है बच्चे, ठीक है अपने आंसुओं को निकाल दो, इसमें कुछ भी गलत नहीं है। इसको अपने तंत्र में से बाहर निकालो, चलते जाओ, चलते आओ, जितना चाहो उतना रोओ, इसमें कुछ गलत नहीं है। क्या तुम जानते हो, बूढ़ा विन्नी चर्चिल *(Winny Churchill)*[16] भी आंसू बहाता है, और जब वह कर सकता है, तो तुम भी कर सकते हो, एह?'

शर्मिंदगी भरे चेहरे के साथ, एलन ने अपने चेहरे को अपने रुमाल से पोंछा। डॉक्टर ये देखकर प्रभावित हुआ कि उसका रुमाल कितना साफ था और लड़के ने अपनी ऑखों पर किस तरह से रखा। डॉक्टर थॉम्पसन ने ये भी देखा कि उसके हाथ साफ थे, उसके नाखून कटे हुए थे और उसके नाखूनों में कोई मैल नहीं था। डॉक्टर के अनुमान में लड़के के अनेक बिंदु गुजरे। *'यहाँ, लड़के इसे पिओ,'* डॉक्टर ने, जब उसने चाय का कप एलन के सामने रखा, कहा। *'इसे अच्छी तरह घोलो, इसमें चीनी का एक बड़ा डेला (dollop) है। तुम जानते हो, चीनी तुमको ऊर्जा देगी। आओ इसे ले लो।'*

एलन ने चाय पी और अवसाद के साथ, एक मीठा बिस्कुट कुतरा। तब डॉक्टर ने चाय के प्याले दोबारा भर दिये और ये कहते हुए लड़के के बगल में आया, *'यदि तुम ठीक समझो लड़के, तुम अपने मन से भार उतार दो, ये कुछ भयानक चीज होनी चाहिए, और बांटा हुआ दुख, आधा भार होता है, तुम जानते हो।'*

एलन ने छींका और फिर से फैले हुए आंसुओं को पोंछा और तब उसमें से हर चीज बाहर उलट गई। अब जैसे ही पहली चीज, जो उसने जानी थी, वह थी कि उसको प्रबल से भी प्रबल छाप मिली कि वह एक डॉक्टर बनने चला था, कैसे लगभग पहले शब्दों में, जब वह शब्दों को एक वाक्य में जोड़ने के लिए सक्षम हुआ, *'मैं डॉक्टर बनना'* निकली थी। उसने डॉक्टर थॉम्पसन को बताया कि कैसे उसने पूरे समय के लिए बचकानी चीजों को एक तरफ उठा कर रख दिया था, वह पढ़ता गया और पढ़ता गया। कैसे साहस की कहानियॉ और विज्ञान की गप्प (science fiction) और सभी वह कुछ पढ़ने के बदले में, महिला लाइब्रेरियन से, जो सोचती थी कि एक युवा बच्चे के लिए, शरीर रचना (anatomy) के सम्बंध में, इतना अधिक जानने की इच्छा रखना, सबसे अधिक अस्वस्थ था, के आश्चर्य के साथ, तकनीकी पुस्तकें, उसे पुस्तकालय से मिलीं।

'परंतु मैं इसकी सहायता नहीं कर सका, डॉक्टर, मैं वास्तव में नहीं कर सका।' एलन ने निराशा में कहा। *'ये मेरे परे कुछ चीज थी, मुझे चलाती हुई कुछ चीज, मैं नहीं जानता कि ये क्या है। मैं ये जानता हूँ कि हर समय प्रेरणा पाता हूँ, एक असंभव प्रेरणा कि मुझे एक डॉक्टर बनना है, कोई बात नहीं, कुछ भी हो, और आज रात को, मेरे माता पिता, मुझे ये बताते हुए कि मैं अपने से कुछ ऊपर*

---

16 अनुवादक की टिप्पिणी : विस्टन चर्चिल (Winston Churchill), (30 नवम्बर 1874– 24 जनवरी 1965), एक अंग्रेज राजनेता थे, जो द्वितीय विश्वयुद्ध (1940–1945) की अवधि में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री रहे। विस्टन चर्चिल (Winston Churchill), को लोग प्यार में विन्नी चर्चिल (Winnie Churchill) कहते थे। यह एकमात्र प्रधानमंत्री थे, जिनको 1953 में साहित्य के लिये नोबेल पुरुष्कार से सम्मानित किया गया था। वह विश्वशान्ति के लिये सदैव प्रयत्नशील रहे।

था, और मैं अच्छा नहीं था, मुझ पर सवार थे।' वह फिर से खामोशी में चला गया, और डाक्टर ने लड़के के कन्धे पर एक हाथ रखा और उसने नरमी से कहा, 'और आज रात को विस्फोट (outburst) कैसे प्रारंभ हुआ, लड़के?'

एलन अपने स्थान पर बैठा कसमसाता रहा (squirmed) और उसने कहा, *'डॉक्टर, आप कभी विश्वास नहीं करेंगे परंतु मैं अपनी कक्षा का शीर्ष (top) लड़का हूँ, व्याकरण स्कूल का शीर्ष (top) लड़का। सत्र समाप्त हुआ है और प्रधानाध्यापक, श्रीमान् हेल (Mr. Hale), ने मुझे बताया है कि सेंट मेगट्स पूर्व–चिकित्सा स्कूल (St. Maggots pre-med school) में, मेरे लिए एक विशिष्ट छात्रवृति की सिफारिश की गई है। और मेरे मां बाप–ठीक है,'* तब वह लगभग फिर से टूट गया और उसने अपनी उंगलियों के बीच गांठें बनाते हुए, अपने रुमाल को मरोड़ा।

'एह लड़के, ये हमेशा ऐसा ही था,' डॉक्टर ने कहा। *'मां–बाप हमेशा सोचते है कि जिन्हें वे, कई बार, एक दुर्घटना के परिणाम के रूप में भी, पैदा करते हैं, उनके भाग्य को भी नियंत्रित कर सकते हैं, परंतु बुरा मत मानो बच्चे, हम देखते हैं कि हम क्या पता लगा सकते हैं–तुमने बताया कि तुम व्याकरण स्कूल में थे? तुमने बताया कि प्रधानाध्यपक श्रीमान् हेल–ठीक है, मैं श्रीमान् हेल को अच्छी तरह जानता हूँ, वे मेरे मरीजों में से एक हैं। ठीक है, हम देखेंगे कि वह हमें क्या बता सकते हैं।'*

डॉक्टर ने अपनी सूची को देखा और शीघ्र ही प्रधानाध्यपक का नाम और टेलीफोन नंबर पा लिया और तब उसने शीघ्रता से फोन लगाया। *'शुभ संध्या हेल* (Good evening Hale),' डॉक्टर थॉम्पसन ने कहा। *'मैं थॉम्पसन बोल रहा हूँ, मेरे सामने एक लड़का बैठा है, वह बहुत प्रखर बुद्धि का नौजवान दिखता है, उसने मुझे बताया है कि आपने एक विशिष्ट छात्रवृति के लिए, उसकी अनुशंसा की है–भगवान आपका भला करे!'* डॉक्टर ने कुछ आश्चर्य में कहा, *'हेल, मैं लड़के का नाम पूछना भूल गया!'* टेलीफोन के दूसरे सिरे पर प्रधानाध्यपक मंद मंद मुस्कराया और उसने कहा, *'ओह, हॉ मैं उसे जानता हूँ, एलन बोंड, वह तो वास्तव में, एक प्रखर लड़का है, अपवादरूप से प्रखर। उसने एक गुलाम की तरह से, पूरे चार साल मेहनत की है और जब वह पहली कक्षा में स्कूल में आया था, मैंने सोचा था कि वह फेल होने वाला है, परंतु मैं कभी अधिक गलत नहीं था। हॉ, यह एकदम सही है, वह स्कूल में शीर्षस्थ* (top) *लड़का है, सर्वोच्च अंक, जो हमने कभी देखे, और सर्वोच्च प्रगति, जो इस स्कूल ने देखी है परंतु –'* और प्रधानाध्यपक की आवाज एक क्षण के लिए मंद पड़ गई और तब उन्होने कहना जारी रखा, *'मुझे उस लड़के के सम्बंध में खेद है, उसके मातापिता, तुम जानते हो उसके मातापिता, कष्टकारी हैं। गली में नीचे की तरफ, उनकी सब्जी की एक छोटी दुकान है, वे उसे चलाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं और पैसे के पीछे घात लगाते हैं और मैं नहीं देख सकता कि वह लड़का कैसे व्यवस्था करने वाला है। मेरी इच्छा है कि मैं उसके लिए कुछ कर पाता। मैंने छात्रवृति पाने में उसकी मदद की है, परन्तु उसे उससे अधिक की आवश्यकता है।'*

'ठीक है, बहुत बहुत धन्यवाद, हेल, मैं आपकी टिप्पणियों की प्रशंसा करता हूँ,' डॉक्टर थॉम्पसन ने फोन को रखते हुए और एलन की तरफ घूमते हुए कहा।

'लड़के,' उसने कहा, *'मुझे भी इसी प्रकार की परेशानी हुई थी, जो तुम्हें हुई है, मुझे कदम कदम पर लड़ना पड़ा, इसे करने के लिए, दातों और नाखूनों से खुरचना पड़ा (scratch with tooth and nail), (एड़ी चोटी का जोर लगााना पड़ा)। ठीक है, तुम्हें बताता हूँ, हम क्या करेंगे, अब हम साथ साथ चलें और तुम्हारे मां बाप से मिलें। मैंने तुम्हें बताया कि मेरी आज आधे दिन की छुट्टी है, और इस बचे आधे दिन को खर्च करने का तरीका, किसी गरीब बेचारे की, जिसका बुरा समय चल रहा है, मदद करने की अपेक्षा, इससे अच्छा क्या हो सकता है। आओ बच्चे, अपनी खूंटियों (stumps) को हिला डालो।'* डॉक्टर अपने पैरों पर खड़ा हुआ और वैसे ही, एलन खड़ा हुआ। दरवाजे पर डॉक्टर थॉम्पसन ने दो बार घंटी बजाई और तब कहा, *'ओह, श्रीमती सीमोंड्स, मैं कुछ समय के लिए बाहर जाऊँगा,*

कोई संदेश हों तो आप ले लेना, क्या आप लेंगी?

वे लम्बे डग भरते हुए, सड़क के नीचे की तरफ चले, लंबा, बड़ा, डॉक्टर और कुपोषित बच्चा, जो अपने पुरुषत्व (manhood) को पाने के लिए विलंबित पहुँच बना रहा था। वे सड़क पर नीचे चलते गये और जैसे ही वे दुकान पर पहुँचे और उन्होंने देखा कि बिजली जल रही थी। खिड़की में से होकर वे देख सके कि, पिता बोंड उपज के थैलों को तौल रहा था। लम्बे डग भरते हुए, डॉक्टर दरवाजे की ओर बढ़ा, उसे जोर से थपथपाया और अपने हाथों को अपने चेहरे के बगल से रखा, ताकि वह परावर्तनों से मुक्त हो कर झांक सके।

मार्टिन बोंड ने तीखेपन से ऊपर की ओर देखा और तब असहमति में सिर हिलाया। उसने मुँह से शब्द निकाला *'बंद हो गई (closed)'* परंतु तब वहाँ उसने अपने बेटे को देखा और उसने खुद में विचार किया, *'ओह मेरे भगवान, लड़के ने अब क्या कर दिया? अब वह हमारे लिए क्या मुसीबत लाया है?'* और तब वह जल्दी से दरवाजे की ओर बढ़ा और उसने चटकनी को खोला। डॉक्टर और एलन अंदर चले, और मार्टिन बोंड ने चटकनी लगाकर, फिर से दरवाजा बंद करने की जल्दी की।

'शुभ संध्या, आप ही मार्टिन बोंड हैं, एह?' डॉक्टर थॉम्पसन ने कहा। *'ठीक है, मैं डॉक्टर थॉम्पसन हूँ और मैं सड़क पर नीचे की तरफ रहता हूँ, आप जानते है कि मैं वहाँ डॉक्टरी करता हूँ। मैं आपके बच्चे से बात करता रहा हूँ और वह एक प्रखर युवा लड़का भी है। मेरा ख्याल है, वह एक अवसर पाने का पात्र है।'*

'आपके बात करने के लिए ठीक है, डॉक्टर साहब,' मार्टिन बोंड ने उग्रता से (truculently) कहा। *'आप को, इस जैसे स्थान में, पैसे के लिए जुगाड़ लगाने की जरूरत नही हैं, मेरा अनुमान है कि आप भली अच्छी तरह व्यवस्थित हैं। आप अपनी फीस से और मित्रवत् समाजों से, अपने जीवन को विलासितापूर्वक* (living high off the hogs) *उच्चस्तरीय बनाये रखने के लिए काफी पा जाते हैं, मुझे रोज कुंआ खोदना पड़ता है। परंतु कैसे भी? अब लडके ने क्या किया है?'* उसने पूछा।

डॉक्टर, एलन की तरफ मुड़ा और उसने कहा, *'तुमने मुझे बताया था कि तुम्हें ये विशेष प्रमाणपत्र मिला है, तुमने बताया था कि तुम्हें श्रीमान् हेल, प्रधानाध्यापक, की तरफ से, एक विशेष पत्र मिला है, क्या तुम सीढ़ियों से ऊपर खिसकोगे और उन्हें मेरे लिए नीचे लाओगे?*

एलन ऊपर चला गया और लकड़ी की सीढ़ियों पर दौड़ता हुआ सुना जा सकता था। डॉक्टर थॉम्पसन पिता की ओर मुड़े और उन्होंने कहा, *'बोंड, तुम्हें एक प्रबुद्ध (bright) बच्चा मिला है, वह प्रतिभासम्पन्न (genius) भी हो सकता है। मैंने उसके प्रधानाध्यपक से बात की है।'* मार्टिन बोंड गुस्से में, उसकी तरफ मुड़ा, *'और आपको इससे क्या लेना देना है? आप इस बीच में कहाँ आते हैं? आप बच्चे को तकलीफ की तरफ बढ़ा रहे हैं, या वैसा ही कुछ?'* उसने कहा। एक क्षण के लिए, डॉक्टर का चेहरा खीज से धुंधला गया, और तब एक प्रयास के साथ अपने आपको नियंत्रित करते हुए उसने कहा, *'अक्सर, बोंड, कोई शायद, इस पृथ्वी पर, अपने पिछले जीवन के बकाया को लिए हुए आता है, मैं नहीं जानता कि ये क्या है, परंतु लोगों को शक्तिशाली आवेग होते हैं, बड़े प्रबल प्रभाव–ठीक है, वे इसे बेमतलब नहीं पाते। तुम्हारा बेटा, उन में से एक दिखाई देता है। उसका प्रधानाध्यापक अत्यंत जोर देकर कह रहा था कि लड़का प्रखर था और वह डॉक्टर बनने के लिए ही पैदा हुआ था। यदि तुम्हारा ख्याल है, मैं उसे बरबादी की तरफ ले जा रहा हूँ, ठीक है, तुम दोबारा सोचो। मैं उसे मदद करने का प्रयास कर रहा हूँ।'*

एलन ने, दौड़ते हुए, दौड़ने की गति से, लगभग हांफते हुए, फिर से, दुकान में प्रवेश किया। कोमलता से (meekly), उसने प्रमाणपत्र और प्रधानाध्यापक के पत्र की प्रति, साथ में सेंट मेगट्स के पूर्वचिकित्सा स्कूल के अधिष्ठाता द्वारा, प्रधानाध्यापक की अनुशंसा का स्वीकृति पत्र भी, डॉक्टर को पकड़ा दिया। एक भी शब्द के बिना, डॉक्टर ने कागजात लिए और उन्हें शुरू से आखिर तक पढ़

डाला। जैसे ही उसने एक पन्ने को पलटा और पढ़े हुए पन्ने को तली में पहुँचा दिया, वहाँ कागजों को पलटने की आवाज के अतिरिक्त कोई दूसरी आवाज नहीं थी। तब समाप्त होने पर उसने कहा, *'ठीक है, ये मुझे सहमत कराता है, मेरा ख्याल है कि तुम्हें अपना अवसर लेना चाहिए, एलन। हम देखेंगे कि हम क्या कर सकते हैं।'*

आश्चर्य बरते हुए, वह कुछ क्षणों के लिए खड़ा रहा कि लेने के लिये सर्वोत्त म ढंग क्या हो सकता है, और तब वह पिता की ओर मुड़ा और उसने कहा, *'तुम क्यों नहीं कर सकते, तुम्हारी पत्नी और मुझे, इस सम्बंध में बात करनी है? लड़का तेज है, निश्चितरूप से, लड़के के सामने ये एक लक्ष्य है। क्या मैं आपसे कहीं बात कर सकता हूँ?'*

मार्टिन तीखेपन से एलन की ओर घूमा और उसने कहा, *'ठीक है, तुमने ये सब शुरूआत की है, तुम सारी मुसीबत को यहाँ लाये हो, जाओ, उस तौल के साथ लगो, और मैं और तुम्हारी मां, डॉक्टर से बात करेंगे,'* ऐसा कहते हुए, उसने सीढ़ियों पर ऊपर की ओर, दुकान के बाहर का रास्ता दिखाया, अपने पीछे की सीढ़ियों के दरवाजे को, बड़ी सावधानीपूर्वक बंद करते हुए और पुकारते हुए, *'मां! मैं डॉक्टर थॉम्पसन को ऊपर ला रहा हूँ, वह हमसे, एलन के सम्बंध में बात करना चाहते हैं।*

ऊपर की मंजिल पर, मेरी बोंड ने, अपने आप से बड़बड़ाते हुए, सीढ़ियों के शीर्ष की ओर जल्दी की। *'ओह, हे परमेश्वर, ओ मेरे भगवान, अब लड़के ने क्या कर दिया।?'*

अध्याय–सात

मेरी बोंड ने पूरी घबराहट को अंदर ही अंदर अनुभव किया, मानो कि, तितलियों का एक पूरा झुंड, कैसे भी, उसके अंदर घुस चुका था। उसने डॉक्टर की ओर, अपने पति और तब एलन, जो सीढ़ियों पर उसके पीछे चढ़ चुका था, के प्रति, भय के साथ देखा। असहाय होकर, उसने डॉक्टर को अपनी बैठक दिखायी, जहॉ केवल उनके पसंदीदा आगंतुक (favoured visitors) ही, कभी गये थे। पिता बोंड ने कहा, *'ठीक है एलन, अपने कमरे में जाओ।'*

डॉक्टर ने तुरंत ही, ऐसा कहते हुए हस्तक्षेप किया, *'ओह, परंतु बोंड साहब, इस व्यवस्था में एलन सबसे अधिक हित रखने वाला व्यक्ति है। मेरा निश्चयपूर्वक सोचना है कि उसे यहॉ, इस वार्तालाप में रहना चाहिए। कुल मिलाकर, वह अब एक बच्चा नहीं है, वह उस उम्र तक पहुॅच रहा है, जहॉ अनेक कॉलेज स्तर तक पहुॅच जाते हैं, और हम आशा करते हैं कि वह भी जा रहा है!'* अनिच्छापूर्वक, मार्टिन बोंड ने, हॉ के लिए, अपना सिर सहमति में हिलाया, और मां गम्भीरतापूर्वक, अपनी गोदी में अपने हाथों को जोड़े हुए, चारों एक साथ बैठे।

'डॉक्टर थॉम्पसन, हमारे बच्चे के बारे में ऐसा सोचते हुए दिखते हैं कि उसकी खोपड़ी (attic) में काफी माल है, मार्टिन बोंड ने कहा, *'वह उसके सम्बंध में, हमसे बात करना चाहते हैं, क्योंकि उनका ख्याल है कि एलन को एक दिन डॉक्टर बनना चाहिए। मैं नहीं जानता, इस सम्बंध में क्या कहा जाये।'*

मां शांत बैठी रही और उसने कुछ नहीं कहा, और तब डॉक्टर थॉम्पसन बोले, *'तुम जानती हो, श्रीमती बोंड,'* उसने कहा, *'जिंदगी में कईबार, बड़ी अजीबोगरीब चीजें होती हैं, और लोग ऐसी छवियॉ पाते हैं कि उन्हें बिना जाने हुए, किसी चीज को करना पड़ता है। उदाहरण के लिए, यहॉ एलन,'* उसने लड़के की तरफ इशारा किया, *'के पास एक बड़ी छाप है कि उसे चिकित्सा के स्कूल में प्रवेश लेना है, ये छाप इतनी प्रबल है कि ये लगभग एक सनक है, और जब हम उस अवस्था में किसी लड़के (या लड़की) को पाते हैं, जो लगभग पहले शब्दों से, जब वे उच्चारित कर सकते हैं, एक विशेष व्यवसाय के ऊपर जोर डालता है, तो हमें सहमत हो जाना चाहिए कि भगवान, हमारा मालिक, हमें एक प्रत्यक्ष संदेश दे रहा है, या किसी चमत्कार या वैसी ही किसी चीज को दिखाने का प्रयास कर रहा है। मैं इसे समझने का दावा नहीं करता, कुल मिलाकर, मैं जो जानता हूॅ, वह यह है,'* उसने उनकी ओर ये देखने के लिए, कि वे उसकी बात समझ रहे थे, आसपास देखा। *'मैं एक अनाथ बच्चा था, मुझे एक अनाथालय में पाला पोसा गया और इसे सबसे हल्के रूप में रखने के लिए, मुझे अनाथालय में एक बड़ा कठोर जीवन मिला, क्योंकि वहॉ के लोगों ने सोचा कि मैं कुछ मामलों में उनसे अलग हूॅ, क्योंकि मैं भी, एक भिन्न व्यवसाय वाला था और वह ये था कि मैं चिकित्सा के क्षेत्र में प्रवेश करूॅ। ठीक है, मैंने चिकित्सा में प्रवेश लिया और मैं अब यहॉ पर कॉफी अच्छा कर रहा हूॅ।'*

मां बाप शांत बैठे रहे, ज्यों ही उन्होंने अपने विचारों को, अपनी खोपड़ियों के अंदर, आसपास उछाला, उनके दिमागों ने, लगभग स्पष्टरूप से, धमकी दी। अंत में मार्टिन बोंड ने कहा, *'डॉक्टर, हॉ, मैं उस हर चीज से, जिसे आप कहते हैं, सहमत हूॅ, लड़के को जीवन में एक मौका मिलना ही चाहिए, मुझे कभी नहीं मिला और मुझे अपने बिलों का भुगतान करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। परंतु डॉक्टर मुझे बताओ,'* उसने डॉक्टर थॉम्पसन पर, वास्तव में तीखी निगाह डाली और कहना जारी रखा, *'हम गरीब लोग हैं, हमें अपने खर्चें चलाने के लिए, हर महीने कड़ी मेहनत करनी पड़ती है, और यदि हम अपने बिलों का हर महीने भुगतान नहीं करें, तब अपनी आपूर्तियॉ नहीं पाते, और यदि हम अपनी आपूर्तियॉ नहीं पाते तब, भगवान की कसम (by Golly), हम व्यापार से बाहर हो जाते हैं। इसलिए हमें बताओ, कि हम एलन के लिए कैसे व्यवस्था करें? हम इसे झेल नहीं सकते, और इसके लिए यही सबकुछ है।'* मार्टिन बोंड ने, इसपर जोर देने के लिए कि ये *'अंत था', 'समाप्ति',* अपने घुटने पर जोर से चपत मारी, और अब पूरी तरह विश्राम। एलन, मुंह लटका कर, उदास, और अधिक उदास, दिखता

हुआ वहाँ बैठा।

'यदि मैं अमेरिका में होता, 'उसने सोचा, मैं एक अंशकालीन कार्य और अंशकालीन अध्ययन भी कर सकता था, और उस तरह से पार पा जाता, परंतु ये देश, ठीक है, यहाँ मेरे जैसे गरीब लड़कों के लिए, अधिक आशा नहीं दिखती।'

डॉक्टर रेगीनाल्ड थॉम्पसन सोच रहा था। उसने अपने हाथ पेंट की जेबों में डाले और अपनी टांगों को फैला लिया और तब उसने कहा, *'ठीक है; जैसा मैंने तुम्हें बताया कि मेरा जीवन भी कठोर रहा था, और मैंने वह कर लिया, जिसे मैं करना ठीक समझता था। अब ऐसा हो सकता है कि मुझे एलन की मदद करनी है, इसलिए मैं तुम्हें ये प्रस्ताव दूँगा।'* उसने ये देखने के लिए कि वे इस पर ध्यान दे रहे थे, आसपास देखा और वास्तव में, वे ध्यान दे रहे थे; एलन सीधे ही उनको देख रहा था, पिता बोंड, कम कठोर दिख रहे थे, और माता बोंड ने अपनी उंगलियों को नचाना बंद कर दिया था। जो कुछ उसने देखा उससे संतुष्ट होते हुए डॉक्टर ने कहना जारी रखा, *'आप जानते हैं, अध्ययन, शोध, और शेष दूसरी चीजों में अत्यधिक रुचि होने के कारण, मुझे औरतों लिए के लिए कभी समय नहीं मिला, इसलिए मैं अविवाहित बना रहा और ऐसा करते हुए, मैंने काफी धन बचाया। मैं उसमें से कुछ धन, एलन में निवेश करने के लिए तैयार हूँ, यदि वह मुझे सहमत करा सके कि, वह वास्तव में, एक अच्छा डॉक्टर बनेगा।'*

मेरी बोंड ने कहा, *'डॉक्टर साहब, ये बहुत आश्चर्यजनक चीज होगी। हमने एक बीमा पॉलिसी लेने का प्रयास किया था, जो एलन के खर्चों का भुगतान करने में मदद कर सकती, परंतु हमारे जैसे साधनों वाले, अथवा साधनों में पिछड़े लोगों के लिए, ऐसी कोई पॉलिसी नहीं थी।'* डॉक्टर ने शांति से सिर हिलाया और कहा, *'ठीक है, वह शैक्षणिक दिशा में एकदम ठीक है, क्योंकि उसके स्कूल के प्रधानाध्यापक ने उसके सम्बंध में, वास्तव में, बहुत ऊँचा बोला है, और उसे सेंट मेगट्स पूर्व–चिकित्सा स्कूल में प्रवेश के लिए निःशुल्क छात्रवृति मिल गई है–ठीक वैसे ही, जैसे कि मुझे मिली थी, परंतु ये उसके जीवनव्यय (living expenses) का भुगतान नहीं करती और उसके लिए महाविद्यालय में रहना अधिक अच्छा होगा, और ये दूसरे विभिन्न खर्चों के लिए भुगतान नहीं करती। इसलिए यह वह है, जो मैं करूँगा।'*

वह अपने गालों को चूसता हुआ और उन्हें बाहर की ओर फुलाता हुआ वहाँ बैठा, तब वह एलन की तरफ मुड़ा और उसने कहा, *'ये वह है, जो मैं करूँगा, एलन। मैं तुम्हें रॉयल कॉलेज ऑफ सर्जन (Royal College of Surgeons) में, ऊपर, हंटेरियन म्यूजियम (Hunterian Museum) ले जाऊँगा, और हम म्यूजियम को देखने में एक दिन लगाऐंगे और यदि तुम वहाँ बिना बेहोश हुए या किसी प्रकार के, डटे रहे, तब हम निश्चिंत हो सकते हैं कि तुम डॉक्टर के रूप में सफलता प्राप्त कर सकोगे।'* वह कुछ क्षणों के लिए शांत रहा, और उसने फिर से कहना जारी रखा, *'मैं उससे एक कदम आगे भी जा सकता हूँ, मैं तुम्हें चीरफाड़ वाले कमरे (dissecting room) में भी ले जा सकता हूँ, जहाँ उनके पास पूरे स्थान पर लाशें, और लाशों के टुकड़े होते हैं। यदि तुम वहाँ जाओ और उनको पूरी तरह देखकर बीमार हो जाओ, तो तुम डॉक्टरी पंक्ति के बाहर होगे। यदि तुम मुझे राजी कर सको, ठीक है, हम दोनों साझेदारी करेंगे–तुम्हें छात्रवृति मिल चुकी है, मैं सभी खर्चों का भुगतान करूँगा और जब तुम पूरी तरह सुयोग्य डॉक्टर और भुगतान वापस करने में समर्थ हो जाओ, तो तुम किसी दूसरी अभागी आत्मा, जो बीच में फंसी हुई है, के लिए वैसा ही करना, जिसे वह जानता है कि उसे करना है, और धन की कमी के माध्यम से, उसमें इसे पाने की क्षमता नहीं है।'*

एलन प्रसन्नता और आराम के साथ, लगभग बेहोश हो गया, परंतु तब पिता बोंड ने धीमे से कहा, *'अब ठीक है, डॉक्टर, आप जानते हैं, हम, अपने वितरणों (deliveries) को करने के लिये बच्चे पर विश्वास करते हैं, हमने उसे इस पूरे समय में रखा है, केवल ये ठीक है कि उसे हमारे लिए कुछ*

करना चाहिये और यदि, जैसा आप कहते हैं, वह विलासिता में रहते हुए, कहीं किसी कॉलेज में, अटकने वाला है, तब उसके गरीब मां बाप का क्या होगा? क्या आप सोचते हैं कि, मैं घंटों तक, वितरण के लिए जाता रहूंगा?'

श्रीमती बोंड सदमे में दिखाई दीं और उन्होंने कहा, *'परंतु मार्टिन! मार्टिन! तुमको निश्चितरूप से, याद है कि एलन के इस दृश्य में आने से पहले, हमने व्यवस्था की थी?'*

हॉ, वास्तव में, मैं जानता हूँ,' मार्टिन ने गुस्से से कहा, *'मुझसे भूलने की संभावना नहीं है, परंतु मैं ये भी याद कर रहा हूँ कि इन सब सालों में, हमारे लिए बच्चा ही सबकुछ रहा है। हमें सबकुछ उसे देना पड़ा और अब जबकि उसने सबकुछ, जो वह हमसे वह पा सकता था, हमसे पा लिया है, वह दौड़ जाने वाला है, और यदि आप कृपा करें, एक डॉक्टर बनने वाला है, और मेरा ख्याल है कि ये वह अंतिम होगा, कि हम उसे कभी देखेंगे। वाह!'*

मार्टिन बोंड के हाथ, साथ साथ काम कर रहे थे मानो, वह किसी का दमन करने की इच्छा रखता था और तब वह फूट पड़ा, *'और डॉक्टर रेगिनाल्ड थॉम्पसन, आपको इस सब से क्या मिलने वाला है? आपने अचानक ही लड़के में ऐसी दिलचस्पी क्यों ली? यही है वह, जिसे मैं जानना चाहता हूँ। आप जानते हैं, लोग दूसरों के लिए, वैसे ही काम नहीं करते, जबतक कि उसके पीछे कुछ उद्देश्य नहीं हो, आपको इससे क्या मिलने वाला है?'*

डॉक्टर थॉम्पसन जोर से हॅसे और तब उन्होंने कहा, *'मेरे भगवान मुझे, श्रीमान् बोंड, आपने मुझे समझा दिया है कि आपका बेटा एकदम अपवादस्वरूप है। वह सबकुछ, जो आप सोचते हैं, वह यह है कि आपको उन सब चीजों से क्या मिल सकता है, और इस सम्बंध में उसका कुल सोचना यह है कि वह डॉक्टर बनकर दूसरों की मदद कैसे कर सकेगा। तुम जानना चाहते हो कि मुझे इससे क्या मिलेगा, श्रीमान् बोंड? ठीक है, मैं आपको बताऊँगा; जैसी छापें (impressions) तुम्हारे बेटे को मिली हैं, वैसी ही छापें मुझे भी मिली हैं। मेरे पास प्रबलतम छाप ये है कि मुझे उसकी मदद करनी है। मुझे मत पूछो क्यों, मैं नहीं जानता क्यों, और यदि आप सोचते हैं कि मैं यौन की दृष्टि से, उसके पीछे हूँ, ठीक है, तब श्रीमान् बोंड, उसकी तुलना में, जो मैंने सोचा था, आप बड़े मूर्ख हैं। यदि मैं उन्हें चाहूँ, मुझे अत्यधिक संख्या में लड़के, और लड़कियॉ भी, मिल सकती हैं, परंतु इसबार मैं एलन की मदद करना चाहता हूँ, किसी चीज के लिये, अपने मन के पीछे कुछ चीज, जिसे मैं जानता हूँ, और मैं पहल नहीं करूँगा। परंतु यदि आप उसकी मदद नहीं कराना चाहते, श्रीमान् बोंड, तब हम तबतक प्रतीक्षा करेंगे, जबतक कि वह इक्कीस का नहीं हो जाता और, यद्यपि यह थोड़ा सा विलंब होगा, ठीक है, हम उसे वहॉ से ले लेंगे। अब, मुझे आप से बहस नहीं करनी है। यदि आप ऐसे नहीं चलना चाहते, वैसा बतायें और मैं बाहर निकल जाऊँगा।'* डॉक्टर थॉम्पसन वास्तव में, एक उग्र व्यक्ति दिखते हुए, अपने पैरों पर खड़े हुए। उनका चेहरा लाल था और ऐसा लगा, मानो कि वह, मार्टिन बोंड को उसकी अपनी ही सामने वाली खिड़की से बाहर फेंक देंगे। मार्टिन बोंड ने अपने हाथों को बांधा और अपनी जैकेट के सिरे से खिलवाड़ करने लगा, और तब उसने कहा, *'ठीक है, हो सकता है, जो कुछ मैंने कहा, (उसे कहने में) मैं थोड़ा जल्दी में होऊँ, परंतु मैं, रात में आलुओं को कैसे खोदा जायेगा और वैसे ही चीजों पर, आश्चर्य कर रहा हूँ कि, हम कैसे व्यवस्था कर सकते हैं। आप जानते हैं, हमें, साथ ही साथ लड़के को भी, जिन्दा रहना है।'*

मेरी बोंड बहुत जल्दी फूट पड़ीः *'चुप, मार्टिन चुप, हम एकदम ठीक से, उसकी व्यवस्था कर सकते हैं। हम शीघ्र ही, स्कूल के किसी बच्चे को, जो हमारे लिए काम करे, साथ आने के लिये पा सकते हैं। एलन को यहॉ रखने की तुलना में, इसकी लागत अधिक नहीं होगी।'* मार्टिन बोंड ने धीरे से अपना सिर हिलाया, *'ठीक है, ठीक है,'* उसने कुछ अनिच्छा के साथ कहा। *'तुम जा सकते हो। तुम अभीतक इक्कीस के नहीं हो, और अभीतक तुम्हारे ऊपर मेरा नियंत्रण है, और डॉक्टरी करने के उस*

कार्य को, जो तुम करने वाले हो या जिसके सम्बंध में तुम मुझसे सुनोगे, सफल बनाओ।' इसके साथ ही पिता अचानक मुड़ा और खटखट करते हुए, नीचे की ओर दुकान की सीढ़ियों पर चलने लगा। मेरी बोंड, खेद व्यक्त करते हुए, डॉक्टर थॉम्पसन की तरफ घूमी और उसने कहा, *'मैं इसके के लिए दुखी हूँ, डॉक्टर, मेरा पति कईबार जल्दबाजी करता है। वह मेष (Aries) राशि का है, तुम जानते हो?'*

इस प्रकार, यह व्यवस्थित हो गया। डॉक्टर थॉम्पसन, अगले हफ्ते, अपनी छुट्टी के दिन, एलन को हंटेरियन संग्रहालय ले जायेंगे। इसकी व्यवस्था होने के साथ ही, डॉक्टर घर गया और एलन अपने अध्ययनकक्ष में लौटा।

'हैलो, वहाँ, एलन *(Alan there)*,' डॉक्टर थॉम्पसन ने कहा, एक सप्ताह बाद, जैसे ही एलन ने अपने आपको, शल्यकक्ष पर प्रस्तुत किया। *'अंदर आओ, हम एक कप चाय पियेंगे और तब हम कार में बैठेंगे और हम लिंकन सराय वाले क्षेत्रों (Lincoln' Inn Fields) में जायेंगे।'* उन्होंने अपनी चाय पी और कुछ बिस्कुट (खाये) और तब डॉक्टर ने कहा, *'अच्छा हो तुम वहाँ अन्दर जाओ, लड़के, पूरी उत्तेजना तुमको ऊपर तक हिला सकती है, और मैं अपनी अच्छी भली साफ कार में, तुम्हें पेशाब नहीं कराना चाहता!* एलन शरमा गया और सबसे छोटे कमरे में गया कि जहाँ हमें बताया गया है कि, वहाँ राजा को भी पैदल ही जाना चाहिये!

डॉक्टर थॉम्पसन ने, घर के पिछवाड़े के साथ जाते हुए, बाहर की ओर के रास्ते पर अगुवाई की। वहाँ उसने अपनी, एक बढ़िया, पुरानी, मोरिस ऑक्सफोर्ड (Morris Oxford) कार को रखा था। दरवाजों का ताला खोलते हुए उसने कहा, *'अंदर आओ'* और एलन, धन्यवाद सहित, सवारी की सीट पर बैठ गया। एलन, निजी कारों का बहुत अभ्यस्त नहीं था, उसकी पूरी यात्रायें खड़खड़ाती ट्रामों (trams) या गड़गड़ाती बसों में की गईं थीं। जैसे ही डॉक्टर ने इंजन को चालू किया, उसने उत्सुकता के साथ ध्यान दिया, कुछ क्षणों तक उसके गर्म होने की प्रतीक्षा की और तब चार्ज की दर और तेल के दबाव को देखा और कार को चलाकर बाहर निकाला। *'क्या तुम (वहाँ) जाने का सबसे अच्छा रास्ता जानते हो,'* डॉक्टर ने पहेली बूझते हुए पूछा।

'ठीक है, श्रीमान्' एलन ने उत्तर दिया, *'मैंने इसे नक्शे पर देखा है और वह सब, जो मैं कह सकता हूँ, वह है, आपको ईस्ट इंडिया डॉक रोड (East India Dock Road) पर जाने के लिए और तब लंदन ब्रिज (London Bridge) के ऊपर से, और मेरा ख्याल है।'* उसने इसे मानो बेहतरीन ढंग से कहा, *'हमें वाटरलू ब्रिज (Waterloo Bridge) के ऊपर भी जाना पड़ेगा।'*

'नहीं,' डॉक्टर ने कहा, *'इसबार मैं तुम्हारी बात समझ गया, हम किन्हीं पुलों के पार नहीं जा रहे हैं, तुम रास्ते को सावधानी से समझो, क्योंकि यदि मेरी योजनायें सही होती हैं, तुम इस यात्रा को कई बार करोगे।'*

एलन, अपने खुद के मोहल्ले, टॉवर हेमलेट (Tower Hemlet), के सभी बाहरी स्थानों को देखकर, पूरी तरह सम्मोहित (enthralled) था। वह अधिक घूमने फिरने में सक्षम नहीं हो सका था, और अभी भी, उसमें एक बहुत असहज भावना हुई कि, इन जिलों में से अधिकांश, जिनमें होकर वे कार चला रहे थे, किसी समय, उसे बहुत अच्छी तरह याद थे। अंत वे दायीं ओर मुड़े और हॉलवार्न में, किंग्सवे (Kingsway in Holborn) में, किंग्सवे में काफी दूरी तक ऊपर की ओर गये, और वे सार्डिनिया स्ट्रीट (Sardinia Street) में मुड़े, जो लिंकन इनफील्ड्स (Lincoln's inn fields) तक जाती थी। अचानक ही, डॉ. थॉम्पसन, किन्हीं लोहे के दरवाजों में होकर कार चलाते हुए दायीं तरफ गये और अपनी कार को, चुस्ती के साथ, वहाँ टिका दिया। इंजन को बंद करते हुए और चाबी को बाहर निकालते हुए उन्होंने कहा, *'हम यहाँ आ गये हैं, लड़के तुम बाहर निकलो'।*

वे साथ साथ, रॉयल कॉलेज ऑफ सर्जन्स (Royal College of Surgeons) की इमारत के प्रवेशद्वार में गये और डॉ. थॉम्पसन ने, अंदर खड़े हुए बर्दीधारी एक व्यक्ति से, सहज परिचय के साथ,

अपना सिर हिलाया। *'ठीक है, बॉव?'* उन्होंने, उनमें से एक से पूछा, और तब प्रसन्नता के साथ सिर हिलाते हुए, एक अंधेरी प्रवेश लॉबी में गये। *'आओ, हम यहाँ बायीं तरफ मुड़ें– ओह, एक मिनट प्रतीक्षा करो, मैं भूल गया, मुझे तुम्हें ये दिखाना है,'* वह रुक गये और उन्होंने, ये कहते हुए एलन की भुजा पकड़ी, *'अब, यहाँ कुछ चीज है, जो तुम्हारे दांतों में दर्द पैदा कर देगी। यहाँ पूर्व काल के कुछ दंत उपकरण हैं। क्या तुम उन्हें उस कॉच के डिब्बे में देख रहे हो ? अब तुम कैसे अपनी दाढ़ों को वैसी चीजों के साथ झटककर बाहर निकालोगे?'* उन्होंने खेलखेल में, एलन की पीठ पर थपकी मारी और कहा, *'आओ, हम यहाँ अंदर चलें।'*

'यहाँ' अलमारियों (cabinets) और पेटिकाओं (closets) से भरा हुआ, एक बड़ा, बहुत बड़ा स्थान था, और वास्तव में, कॉच की बोतलों से भरे टांड़ ही टांड़ (shelf after shelf) थे। एलन ने आश्चर्य के साथ, बोतलों में रखे शिशुओं को, तैरते हुए भ्रूणों, और अत्यधिक विशेष प्रकार के सभी अंगों को, जिनको शल्यचिकित्सकों ने, परीक्षा और विद्यार्थियों के शिक्षण के उद्देश्य से सुरक्षित रखना, परामर्श योग्य समझा, आसपास देखा।

वे एक कमरे में नीचे गये, और भलीभाँति पॉलिश की गयी अखरोट (walnut) (की लकड़ी) की पेटी के सामने रुके। डॉ. थॉम्पसन ने एक दराज को खींचा, और एलन देख सकता था कि ये एक दूसरे के साथ मिलाकर रखी हुईं कॉच की दो चादरें थीं और दोनों चादरों के बीच में, कुछ खराब सी लगने वाली चीज थी। डॉ. थॉम्पसन हँसे और उन्होंने कहा, *'ये अलमारी एक मस्तिष्क को दिखाती है, एक मस्तिष्क, जिसको काटकर उसकी चकतियाँ बनाई गयी (sliced up) हैं, ताकि तुम एक खाने को खोलकर इसे देख सको और तुम मस्तिष्क के किसी विशेष भाग को देख सकते हो– 'वह दूसरे दराज तक पहुँचे और हत्थे को खींचा और कॉच की एक दूसरी सेंडविच बाहर आई, डॉक्टर ने इसकी ओर इशारा किया, 'ये वहाँ माना जाता है, जहाँ तुम मनोप्रभावों (psychic impressions) को पाते हो, मुझे आश्चर्य है कि तुम्हारे (मस्तिष्क) में क्या चल रहा है?' तब उसने जोड़ा, मुझे आश्चर्य है, मेरे (दिमाग) में भी क्या चल रहा है।'*

डॉ. और एलन ने हंटरेरियन संग्रहालय में पूरी सुबह बिताई और तब डॉ. थॉम्पसन ने कहा, *'ठीक है, मेरा अनुमान है, ये समय है कि हम कुछ खा लें, क्या तुम नहीं खाओगे?'* एलन गुड़गुड़ाहट (rumbling) का कष्ट अनुभव कर रहा था और उसने सिर हिलाया मानो वह पूरी तरह सहमत था। इसलिए उन्होंने संग्रहालय को छोड़ दिया और कार में बैठे और कार को क्लब, जहाँ डॉ. थॉम्पसन स्पष्टतः भलीभाँति परिचित थे, की तरफ चलाकर ले गये। शीघ्र ही, वे मध्यान्ह भोजन करते हुए, मेज पर बैठे हुए थे। *'इसके बाद हम साथसाथ अस्पताल जायेंगे और मैं तुम्हें विच्छेदन कक्ष में ले जाऊँगा और हम देखेंगे कि हम वहाँ क्या देख सकते हैं।'*

'ओह, क्या कोई, विच्छेदन कक्ष में मात्र उस तरह चल सकता है,' एलन ने कुछ आश्चर्य में पूछा।

डॉ. थॉम्पसन हँसे और उन्होंने कहा, *'ओ मेरे प्रिय, नहीं, वास्तव में नहीं, परंतु मैं एक विशेषज्ञ के रूप में जाना जाता हूँ और किसी समय हॉर्ले स्ट्रीट में मेरा स्थान था परंतु मैं वहाँ बहुत अधिक और झूठी विनम्रता का व्यवहार नहीं झेल पाया, और मैं बहुत सी नर्सों की बूढ़ी प्रभारियों (metrons) के सामने नहीं खड़ा हो पाया, जिनका सोचना था कि यदि वे पर्याप्त धन दें, उनका तत्काल ही इलाज किया जा सकता था। और कैसे भी, वे डॉक्टरों को, जीवन का निम्नतम रूप समझती थीं।'* जैसे ही उसने अपना खाना समाप्त किया, उसने कहा।

शीघ्र ही कार को चलाकर, अस्पताल के प्रवेशद्वार पर लाया गया और वहाँ उस स्थान पर खड़ा किया गया, जो केवल डॉक्टरों के लिए आरक्षित था। डॉ. थॉम्पसन और एलन, बाहर निकले और मुख्य प्रवेशद्वार में होकर, स्वागतकर्ता की मेज पर चले। डॉ. थॉम्पसन आगे बढ़े और वहाँ उपस्थित कर्मचारियों

में से एक से कहा, *'मैं प्रोफेसर ड्रॉमडेरी डम्बकॉफ (Dromdary-Dumbkoff) से बात करना चाहता हूँ,'* उसने कहा। सेवक मुड़कर आगे चला और टेलीफोन को डॉ. थॉम्पसन को लौटाते हुए और ये कहते हुए, टेलीफोन से बात की, *'जी, श्रीमान्, प्रोफेसर ने मुझे, आपको और आपके आगंतुक को, उनके पास लाने के लिए कहा है। क्या आप इस तरफ से आयेंगे, कृपया?'* वे अस्पताल के गलियारे में, जो एलन को असीम मीलों का प्रतीत हुआ, साथसाथ चले। अंत में वे, बाहर प्रोफेसर का नाम लिखे हुए, एक कार्यालय में पहुँचे। सेवक ने दरवाजे पर थपकी दी, और धक्का देकर दरवाजे को खोला। डॉ. थॉम्पसन और एलन प्रविष्ट हुए। पहली चीज, जो उन्होंने देखी, एक मेज पर आधा आदमी था और सफेद कोट पहने हुए दो लोग, व्यस्तता के साथ उसे काट रहे थे। एक क्षण के लिए, एलन को अपने अंदर अजीब चीजें घटित होती हुई लगीं, परंतु तब उसने जल्दी से सोचा कि, यदि उसे डॉ. होना है, तो ऐसे सारे दृश्यों के प्रति अभ्यस्त होना होगा। इसलिए इसे जल्दी से निगल लिया, दो या तीन बार, अपनी ऑखें बंद कीं और खोलीं और तब हर चीज एकदम ठीक हुई।

'ये लड़का है, जिसके बारे में मैंने आपको बताया था, प्रोफेसर ये अच्छी चीज है, आप जानते हैं,' डॉ. थॅाम्पसन ने एलन का परिचय कराते हुए कहा। प्रोफेसर ने, कठोरता से घूर कर उसे देखा और कहा, छी, ये ठीक है कि तुम पहले से ही हो सकते हो, हम देखेंगे, जो हम देखेंगे, एह?' और तब वह लड़कियों जैसी मंद मुस्कान में मुस्कराया कि बेचारा एलन, एकदम स्तब्ध रह गया।

थोड़े समय के लिए, वे केवल बातें करते हुए खड़े रहे, जबकि, प्रोफेसर ने काम पर लगे दोनों विद्यार्थियों की निगरानी की और तब एलन को नीचे चीरफाड़ वाले कक्ष, एक बड़े कमरे, उल्लेखनीयरूप से ठंडे और भयानक गंध वाले कक्ष में ले जाया गया। एक क्षण के लिए, बेचारे एलन ने सोचा कि वह, बेहोश होकर या फर्श पर उल्टी करके, अपने आपको अपमानित करने जा रहा है, परंतु फिर उसने याद किया कि उसे कुछ काम करना है, और पेट की मिचली शीघ्रता से गुजर गई। प्रोफेसर एक से दूसरी लाशों पर गया–ये व्याख्यान का समय नहीं था, इसलिए वहॉ विद्यार्थी नहीं थे–और अनेक दिलचस्प चीजों को दिखाते हुए, डॉ. थॅाम्पसन, एलन की प्रतिक्रियाओं का समीप से निरीक्षण कर रहे थे।

'छी, कमजोर दिमाग वाला बेवकूफ!' प्रोफेसर गुस्से से चिल्लाया, जैसे ही वह नीचे झुका और उसने एक कटी हुई बांह, जो मेज से नीचे गिर गई थी और मेज के लुढ़क गई थी, को उठाया। *'आजकल के विद्यार्थी, वे वैसे नहीं हैं, जैसे कि वे जर्मनी में थे, वे इतने लापरवाह हैं। वे बांह का गिरना कैसे पसंद कर सकते हैं?'* अपने आप में बड़बड़ाते और शिकायत में कुड़कुड़ाते हुए, वह दूसरी लाश की तरफ बढ़ा और एक हाथ तक पहुँचते हुए, एलन की बॉह पकडते हुए, उसने कहा, *'उस छुरी (scalpel) को उठाओ, और यहॉ, ये यहॉ तक चीरा लगाओ, तुमको पता होना चाहिए कि मांस का काटा जाना कैसा लगता है।'* एलन ने, सुन्न होते हुए, प्रस्तुत की गई छुरी को देखा, और तब अंदर की तरफ थरथराहट के साथ, जिसकी उसने आशा की कि वह अत्यधिक प्रकट नहीं थी, उसने चाकू की नोंक को मुर्दा मांस के ऊपर दबाया और नीचे की ओर खींचा। *'तुम्हें स्पर्श का अनुभव हुआ, तुम्हें स्पर्श का अनुभव हुआ,'* प्रोफेसर ने उत्तेजित होते हुए कहा। *'हॉ, तुम, चिकित्सा के विद्यार्थी के रूप में, एकदम ठीक रहोगे।'*

बाद में डॉ. थॉम्पसन और एलन ने चाय ली और डॉक्टर ने कहा, *'अब ठीक है, तो जो कुछ तुमने देखा है उसके बाबजूद भी तुम खा सकते हो। मैं तुमसे, चेहरे पर भय के प्रभाव या वैसे ही किसी चीज के प्रभाव में, मेज के नीचे लुढ़कते हुए, देखने की उम्मीद करता था। तुम क्या करने वाले हो, जब तुम्हें अगली बार, टोस्ट के ऊपर किडनी रखी हुई मिल जाये? इसे फेंक दोगे?'* एलन हॅसा। वह अब और अधिक सहज था, और उसने कहा, *'नहीं श्रीमान्, मैं पूरी तरह आराम से हूँ।'*

डॉ. थॅाम्पसन, पूरे समय बात करते हुए, जो वह करना चाहते थे, वह कैसे बूढ़े होते जा रहे थे, और वह थक गये थे, और यह कहते हुए कि वह अपने खुद के बैंक के खाते में से देते हुए, एलन की

देखभाल कैसे करेंगे, ताकि वह अपने मातापिता से स्वतंत्र हो सके, उसे बताते हुए, धीमे से, वे शाम की भीड़ों में होते हुए कार चला कर, वैपिंग (Wapping)[17] वापस गये। उसने कहा, *'मैं अपने मां–बाप को कभी नहीं जानता था, मैं एक अनाथ था, परंतु यदि मेरे मां–बाप ने, तुम्हारे मां–बाप की तरह से किया होता–ठीक है, मेरा विश्वास करो, मेरा ख्याल है, मैं इसके लिए दौड़ जाता!'*

उस शाम को बोंड के घर में बड़ी बात हुई। पिता बोंड, अपनी रुचि को प्रदर्शित नहीं करने का प्रयास कर रहा था, परंतु उसी समय, वह कही जाने वाली हर बात को, उत्सुकता से सुन रहा था, और तब अंत में, उसने रूखेपन से कहा, *'ठीक है, तुम जब चाहो, जा सकते हो लड़के, हमें एक लड़का मिल गया है, जो, जब तुम हमें छोड़ते हो, तुम्हारा स्थान ले लेगा।'*

और इस प्रकार, तेजी से ये सब व्यवस्थित हुआ। एलन को सेंट मोगट्स अस्पताल के पूर्व–चिकित्सा विद्यालय में जाना था और उसके बाद यदि वह सफल हुआ तो वह सेंट मोगट्स में चिकित्सा का विद्यार्थी हो जायेगा। और एलन पूर्व–चिकित्सा स्कूल में सफल रहा, उसने अच्छा किया, वह प्रथम तीन में था, और अपने शिक्षकों के प्रिय विद्यार्थियों में से एक हो गया। और तब, उसके पूर्व–चिकित्सा स्कूल को छोड़ने और एक सही चिकित्सा विद्यार्थी के रूप में अस्पताल में प्रवेश लेने का समय आया। उसने वास्तव में, वहॉं तक आगे नहीं देखा, जो अगले दिन होने वाला था, क्योंकि परिवर्तन हमेशा भयानक होते हैं, और एलन के जीवन में इसके अनेक अनेक परिवर्तन थे।

सैंट मेगट्स, मुख्यतः यू (U) की आकृति में बना हुआ, एक पुराना अस्पताल था। यू की एक भुजा, चिकित्सीय मामलों के लिए थी, और जो यू की तली होती, वह मानसिक रोगियों, बच्चों और वैसे ही समान (रोगियों) के लिए थी, जबकि यू की दूसरी भुजा, शल्यक्रिया के मामलों के लिए थी। वास्तव में, एलन अपने पूर्व–चिकित्सा अध्ययन की अवधि में, अनेक अवसरों पर, अस्पताल में रहा था, परंतु ये घबराहट थी, तयशुदा भावना थी, कि वह वहॉं पहले सोमवार की सुबह गया। वह मुख्य प्रवेशद्वार पर गया और बताया कि वह कौन था, और सेवक ने तीखेपन से टिप्पणी की, *'ओह, उनमें से एक, एह?'* तब वह एक बहीखाते (ledger) की ओर मुड़ा और पन्नों में से, अपने नाम को, अपने अंगूठे को चिपकाते हुए, और निकोटीन के तयशुदा धब्बों को पेज पर छोड़ते हुए, टटोलकर निकाला। तब अंत में, वह सीधा खड़ा हुआ और उसने कहा, *'आह हॉं, मैं तुम्हारे बारे में सबकुछ जानता हूँ, सीधे उन सीढ़ियों पर ऊपर जाओ, दायें मुड़ो, बायें मुड़ो और ये दायीं ओर का दूसरा दरवाजा है। डॉ. एरिक टिटले (Dr. Eric Tetley), जिनसे तुम्हें मिलना है, और तुम अच्छा हो, सावधान रहो, इस समय उनका दिमाग बिगड़ा हुआ है।'* अपने कंधों को हिलाने के साथ ही, वह सेवक मुड़कर चला गया। एलन, कुछ आश्चर्य में, एक क्षण के लिए ठिठका, उसने सोचा कि एक आदमी के लिए, जो अस्पताल में तीन या चार सालों तक चिकित्सा के विद्यार्थी के रूप में सेवा करने वाला है, थोड़ी इज्जत तो होनी चाहिए। परंतु उसने भी, अपने कंधे उचकाये, अपने डिब्बों को उठाया और सीढ़ियों पर ऊपर चला गया।

वहॉं सीढ़ियों के शिखर पर, छोटी सी पौड़ी (vestibule) में, दहलीज के आसपास, दायीं ओर, एक मेज थी और वहॉं एक आदमी बैठा था। 'आप कौन हैं?' उसने पूछा। एलन ने अपनी खुद की पहचान बताई और सेवक ने एक किताब से उसकी जॉंच की, और तब एक कार्ड के ऊपर, ऐसा कहते हुए कुछ लिखा, *'आप अपने डिब्बों को यहॉं छोड़ सकते हैं, इसे डॉ. एरिक टिटले के कार्यालय में साथ ही ले जायें और एकबार थपकी दें–और जोर से नहीं, ध्यान रखना! और तब प्रवेश करना। आगे क्या होता है तुम जानो।'* एलन ने सोचा, नये प्रवेशार्थियों के साथ व्यवहार करने की, ये एक अतिविशिष्ट

17 अनुवादक की टिप्पिणी : वैपिंग (Wapping) लन्दन के डॉकलैंड का जिला है। टॉवर हेलमेट के बरोस में। ये टेम्स नदी के उत्तरी किनारे और हाइवे के बीच स्थित है। नदी के किनारे किनारे यहां सार्वजनिक घर और सीढ़ियां बनी हुई है। लंदन डॉक के बनाते समय अनेक पुरानी मूल इमारतें गिरा दी गई थी और ब्लिज की अवधि में वैंपिंग को गंभीर नुकसान पहुंचाया जैसे ही द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद लंदन डॉकलैंड की अवनति के साथ ये क्षेत्र बर्बाद हो गया। परंतु 1980 के दशक में ये फिर से आबाद हुआ अब पुराने गोदाम लक्जरी फ्लेट बनना शुरू हो गये।

प्रणाली थी, परंतु उसने आदमी से कार्ड लिया और जैसे बताया गया था वैसे ही कार्यालय में गया। उसने एक या दो सेकंड के लिए थपकी दी, और तब शांति से प्रविष्ट हुआ। वहाँ कागजों, शल्य चिकित्सा के उपकरणों और औरतों के फोटोग्राफों से लदी हुई एक मेज थी। काले रंग की नाम पट्टिका पर, सफेद रंग के अक्षरों में, *'डॉ. एरिक टिटले,'* लिखा हुआ था, मेज के कोने पर खड़ा हुआ और डॉक्टर स्वयं, कार्यालय की घूमनेवाली (shwivel) कुर्सी पर सीधा बैठा हुआ था, उसकी भुजायें बाहर फैली थीं, बड़े मोटे हाथ, मेज के किनारे पर फैले थे।

डॉ. टिटले के अचलरूप से घूरने से कुछ हद तक हतोत्साहित होते हुए, एलन मेज पर आगे की तरफ चला, तब उसने कहा, *'श्रीमान्, मैं सेंट मेगट्स में प्रवेश लेने के लिए आया हूँ। मुझे आपको ये कार्ड देना है।'* डॉ. ने उसको लेने के लिए कोई हरकत नहीं की, इसलिए एलन ने उसे उनके सामने मेज पर रख दिया और एकदम हतोत्साहित करने वाली, घूरती हुई उस निगाह के अंतर्गत पीछे खड़ा हो गया।

'हम्फ!' डॉक्टर भुनभुनाया। *'हॉ', बूढ़ा थॉम्पसन ठीक था, मेरा ख्याल है, तुम्हारे अंदर एक भले आदमी का बनना प्रारंभ हो गया है, परंतु तुम्हें उसे थोड़ा सीधा करने की आवश्यकता है, एह?'* तब उसने अपनी आवाज उठाई, गीत में नहीं, परंतु पेट में, *'पॉल! बोंड यहाँ है, अंदर आओ क्या तुम अंदर आओगे?'* केवल तभी एलन ने देखा कि डॉक्टर ने अपनी उंगली से एक बटन पर दबा दिया था और ऑफिस की इंटरकॉम प्रणाली का उपयोग कर रहा था। शीघ्र ही, एक घनघनाहट हुई और एक छोटा गंदा सा दिखने वाला, सभी स्थानों पर बालों वाला एक डॉक्टर उछलकर कमरे में आ गया। उसके पास एक सफेद कोट था, जो उसके घुटनों तक पहुँचता था और उसकी आस्तीनें इतनी लंबी थीं कि उन्हें लपेटना और फिर लपेटना (roll and roll again) पड़ता था। वह डॉक्टर का एक चिथड़े रखने का एक बैग, जैसा दिखाई देता था। *'ओह,' अच्छा ये बोंड है, एह? मुझसे उसके साथ क्या किये जाने की उम्मीद की जाती है–उसका चुम्बन लूँ?'* डॉ. एरिक टिटले ने नाक से सुर निकाला और कहा, *'तुम पहले उसके साथ जाओ, तुम्हें उसमें से एक अच्छा आदमी बनाना है।'*

डॉ. पॉल ने, जब एलन के कागजातों को देखा, वह भुनभुनाया और उसने कहा, *'ओह, अब सेंट मोगट्स यहाँ तक नीचे आ गया है, एह? हमें सब्जी बेचने वाले का लड़का मिला है, जो विशेषज्ञ शल्य चिकित्सक या इलाज करने वाला डॉक्टर या कुछ वैसा ही कुछ बनने जा रहा है। उसे आप कैसे बनायेंगे? पुराने स्कूल के कोई सम्बंध नहीं, आलू बेचने वाला, वाह!'*

एलन को धक्का लगा। उसे, वास्तव में, अपने अस्तित्व की गहराई तक, ये सोचने के लिये धक्का लगा कि ये मैला कुचेला, लापरवाह सा दिखने वाला, कमबख्त, ऐसी निर्मम चीजों को कह सकता था, परंतु वह वहाँ सीखने के लिए था, उसने सोचा, इसलिए उसने कुछ नहीं कहा। परंतु तब वह, डॉ. पॉल को देखने के लिए घूमा और उसने उनकी भूरी ऑखों में चमक देखी। डॉक्टर ने कहा, *'परंतु ये वहाँ है, लड़के, वे कहते हैं कि जीसस (Jesus) एक बढ़ई का लड़का था, क्या वे नहीं कहते? मैं खुद उनमें अधिक विश्वास नहीं रखता, मैं मोसेस (Moses) का एक अच्छा अनुयायी हूँ।'* उसके साथ ही वह हँसा और उसने अपना हाथ फैलाया।

थोड़ी देर बाद, एलन को इमारत की केन्द्रीय मीनार के ठीक ऊपर, मुख्यद्वार के ठीक ऊपर, एक कमरा दिखाया गया। उसे उसको, दो दूसरे विद्यार्थी डॉक्टरों के साथ साझा करना था, और परिस्थितियाँ अपनी पराकाष्ठा में फंस गईं थीं। जिस पर उन्हें सोना था, वह थे, कैनवास के शिविर वाले पलंग।

सेवक, जिसने उसे कमरा दिखाया था और अपने बक्सों को बिस्तर पर नीचे रखने दिया था, ने कहा, *'ठीक है डॉक्टर साहब, अब मुझे आपको मेरिस्तो वार्ड (Maristow Ward) में, चिकित्सीय इकाई में ऊपर के वार्ड में ले जाना है, बहरहाल, वह एक संलग्न निजी कमरे में, दो बिस्तरों सहित, पैंतीस*

बिस्तरों वाला वार्ड है।'

'सिस्टर स्वेन (Sister Swain) वहाँ प्रभारी हैं, और लड़के, ओह लड़के, क्या वह हमेशा ही कुतिया है। अपनी जवान को संभालो (mind your p's and q's there)! मेरिस्तो वार्ड की प्रभारी, सिस्टर स्वेन, वास्तव में, एक भयानक ड्रेगन *(dragon)* दिखाई देती हैं, लगभग छः फुट लंबी, वजन में लगभग दो सौ पौंड भारी, वह हर चीज पर, और हर आदमी पर, नाक भौं चढ़ाती थीं। उसकी त्वचा इतनी गहरी (काली) थी कि वह एक वर्णसंकर *(half cast)* जैसी दिखाई देती थीं, परंतु वह वास्तव में, बड़े पुराने अंग्रेजी परिवार से आईं थीं, और जब उसने अपना मुँह खोला और बोली और उसके बोल और उसकी आवाज, सर्वाधिक सुसंस्कृत लोगों, जिनसे वह मिला था, में से एक की थी, ये एलन के लिए चौंका देने वाला था। परंतु सिस्टर स्वेन से परिचय ने, शीघ्र ही प्रदर्शित किया कि वह कोई ड्रेगन नहीं थी, और जब उसने देखा कि एक विद्यार्थी कठिन परिश्रम कर रहा था, तब वास्तव में, वह उस विद्यार्थी को मदद करने के लिए, लीक से हटकर *(out of the way)* गईं। कामचोरों के लिए उसके पास, कैसे भी, कोई समय नहीं था, और वास्तव में, ये सूचना देने के लिए कि एक विद्यार्थी काम पर आ चुका था, उसने मेट्रन कार्यालय में जाने की जल्दी की।

एक अस्पताल में, चिकित्सा के एक विद्यार्थी का जीवन, सदैव ही अधिकता की अधिकता होती है, वैसी ही अधिकता। एलन ने कड़ा परिश्रम किया, वह काम से प्यार करता था, और उसने एक अच्छे समर्थन की छाप छोड़ी थी। अपने तीसरे वर्ष के अंत में, उसे डॉ. टिटले द्वारा बुलाया गया। *'तुम अच्छा कर रहे हो, मेरे लड़के, उससे अच्छा, जितना कि मैं तुम्हारे लिए सोचता था। मैंने पहले सोचा था, बूढ़े थॉम्पसन ने जो भी कहा, कोई बात नहीं, तुम वापस रगड़कर आलू साफ करने वाले बन जाओगे। तुम्हारा अभिलेख, पूरे समय में, पूरी तरह से अच्छा रहा है, और अब मैं तुम्हें, आगामी वर्ष में, अपना निजी सहायक बनाना चाहता हूँ। इसे स्वीकार करो?'* उन्होंने एलन की तरफ ऊपर देखा और उत्तर की प्रतीक्षा करते हुए उन्होंने कहा, *'ठीक है, आधे दिन की छुट्टी लो और, जाओ और मेरी ओर से बूढ़े थॉम्पसन को बताओ, कि वह ठीक थे, मैं उन्हें –––––एक प्रकरण,'* उन्होंने कहा।

एलन दरवाजे की तरफ चला, और तब वापस बुला लिया गया। *'हे–तुम एक मिनट प्रतीक्षा करो!'* एलन आश्चर्य करते हुए वापस मुड़ा कि अब क्या हो रहा था, और तब डॉ. टिटले ने कहा, *'कार है?'*

'नहीं श्रीमान्,' एलन ने कहा। *'मैं' मात्र एक भूतपूर्व आलू बेचने वाला हूँ, जो चिकित्सा का विद्यार्थी बन गया। मैं कार को रखना बर्दाश्त नहीं कर सकता।'*

हरम्फ! डॉ. एरिक टिटले भुनभुनाये। *'ठीक है, मैं समझता था कि तुम चला सकते होगे?'*

'ओह हाँ, डॉक्टर थॉम्पसन ने मुझे सिखाया था, और मेरे पास मेरा लाइसेंस है'।

'तब ठीक है,' डॉ. टिटले ने कहा, अपनी मेज की दायें हाथ की दराज में उलटपुलट करते हुए, बड़बड़ाते हुए, और धक्का पहुँचाने वाले शब्द कहते हुए, जैसे ही उन्होंने सब प्रकार के कागजों, उपकरणों इत्यादि को निकाला, अंत में, आनंद के साथ छल्ले पर झपटते हुए उसे निकाला, जिसमें दो चाबियाँ पड़ीं थीं। *'ये यहाँ है, मेरी कार की चाबी। मैं चाहता हूँ कि तुम एक पार्सल को, एक महिला को दे आओ–ये उसका पता है, क्या तुम लिखावट को पढ़ सकते हो?– ठीक है, ठीक है ये उसको देकर आओ और रुकना नहीं और उसके साथ कोई गपशप नहीं करना, ध्यान रखना, और तब सीधे बूढ़े थॉम्पसन के पास जाना। निश्चित करो कि तुम यहाँ रात के नौ बजे तक वापस आ जाओगे। मेरी कार बे 23 (bay 23) में है, जो मैट्रन के कार्यालय के ठीक नीचे है। ओह!"* उसने कहा, *'अच्छा है, मैं तुम्हें एक पर्ची दे दूँगा ये कहते हुए कि तुम कार को ले जा सकते हो, अन्यथा कोई अशिष्ट टॉबिया (छुटभईया) तुम्हारे साथ आयेगा और उसे चुराने या वैसा ही कुछ करने के लिये, तुम्हें परेशान करेगा, ये पहले मेरे साथ हो चुका है। उसने कागज के एक टुकड़े के ऊपर घसीट में कुछ लिखा, उस पर अपने*

कार्यालय की मोहर लगाई और तब एलन की ओर कहते हुए लहराया, 'अब इसे पूरा करो, जबतक कि रात के नौ नहीं बजें, यहॉ आसपास मत आना।'

वर्ष गुजरते गये, एलन बोंड की महान सफलता के वर्ष, परंतु साथ ही उसके कष्ट के वर्ष भी। उसके पिता मर गये; उन पर एक दिन, गुस्से का आक्रमण हुआ और मर कर दुकान में ही गिर गये क्योंकि एक ग्राहक शतावरी (asparagus) की कीमत के सम्बंध शिकायत कर रहा था। इसलिए एलन को अपनी मां की व्यवस्था करनी पड़ी क्योंकि दुकान में बेचने लायक कुछ भी नहीं बचा था, और, वास्तव में, संपत्ति किराये की थी। इसलिए एलन ने अपनी मां को एक जोड़े कमरों में रखा और ये सुनिश्चित किया कि उसकी पर्याप्त देखभाल होती रहे। दुर्भाग्यवश, उसकी मां ने, एलन के प्रति ये कहते हुए कि उसने, उनको कंगाल करते हुए और खुद की स्थिति से ऊपर रहने का प्रयास करते हुए, अपने पिता को मार डाला है, हिंसक नापसंदगी जाहिर की। इसलिए उसको खर्चा देने के अलावा, एलन कभी उसको मिलने नहीं गया।

शीघ्र ही, युद्ध की बातें उठीं। भयंकर जर्मन, जैसे कि, तलवार खनखनाते हुए, फिर और ढींग हांकते हुए कि जर्मन भयंकर नहीं होते, अपनी सभी अहंकारी धमकियों के साथ, जो वे बाकी पूरी दुनियॉ को करने जा रहे थे। तब कभी इस देश पर, और कभी उस देश पर, अतिक्रमण हुआ और अपने नाम के बाद एम. डी. की उपाधि के साथ, अब पूरी तरह प्रशिक्षित डॉक्टर एलन ने, सेना में शामिल होने का प्रयास किया, परंतु अपने अच्छे काम, जो वह अपने आसपास पड़ौस के लिए और लंदन के तालाव के आसपास वाली जहाजरानी कंपनियों के लिए कर रहा था, के कारण उसे विलंबित कर दिया गया।

एक दिन डॉ. रेगीनाल्ड थॉम्पसन ने, एलन को अस्पताल में फोन किया, जहॉ अब वह अस्पताल के कर्मचारियों में था और कहा, *'एलन, आओ और जब तुम्हारे पास कुछ क्षण हों, मुझे मिलो, क्या तुम आओगे? मैं तुम्हें तत्काल ही मिलना चाहता हूँ।'*

एलन, वास्तव में, डॉ. थॉम्पसन को वास्तविक प्यार से देखता था, इसलिए उसने शेष दिन के लिए छुट्टी लेते हुए, शीघ्र ही, बुढ़ाते हुए डॉ. टिटले को मिलने की व्यवस्था की। अब उसके पास खुद की कार थी, और शीघ्र ही, वह अपनी कार को डॉ. थॉम्पसन के ड्राइववे (driveway) में पार्क कर रहा था।

'एलन,' डॉ. थॉम्पसन ने कहा, *'मैं बूढ़ा होता जा रहा हूँ, लड़के, अब मैं और अधिक नहीं जिऊँगा, मेरी जॉच करो, क्या तुम करोगे?'*

एलन वहॉ स्तब्धता (stupefaction) में खड़ा रहा और तब डॉ. थॉम्पसन ने फिर कहा, *'तुम्हारे साथ क्या परेशानी है, लड़के, क्या तुम भूल गये कि तुम डाक्टर. या वैसे ही कुछ हो? इसके साथ रहो? क्या तुम रहोगे।'* और उसने अपने कपड़े उतारना शुरू कर दिया। एलन ने शीघ्र ही, डॉ. थॉम्पसन के उपकरणों को पकड़ा, ऑख के रेटिना की जॉच करने वाला उपकरण (ophthalmoscope), रक्तचाप उपकरण (blood pressure apparatus) और शेष सभी, और वास्तव में, वह हमेशा अपना स्टेथेस्कोप साथ ले जाता था। डॉ. थॉम्पसन की जॉच से उच्च रक्तचाप तथा दिल के वाल्व में थोड़ी रुकावट (mitral stenosis) का पता चला।

'अच्छा हो, आप अपनी देखभाल खुद करें,' एलन ने कहा, आप उतनी अच्छी अवस्था में नहीं हैं, जैसा मैं सोचता था। आप सेंट मोगट्स में क्यों नहीं आ जाते और हम देखेंगे कि आपके लिए क्या किया जा सकता है?'

'नहीं, मैं उस पिस्सुओं से भरे कूड़ेदान (flea-ridden dump) में नहीं आ रहा हूँ' डॉ. रेगीनाल्ड थॉम्पसन ने कहा। *'मैं जो करना चाहता हूँ, वह है; मेरी यहॉ बहुत सफल प्रैक्टिस है, इसमें कॉफी धन आता है, इसलिए टिटले ने मुझे बताया है कि तुमने उसके लिए बहुत अच्छा काम किया है, और पॉच वर्षो तक काम किया है और मैं कहता हूँ कि अब ये तुम्हारा समय है, मेरी प्रैक्टिस को ले लेने का,*

जबकि मैं यहॉ तुम्हें मदद करने और तुम्हें रास्ता दिखाने के लिए के लिए हूँ। तुम सेंट मोगट्स से इतने लंबे समय तक अटके रहे हो कि, तुम्हारे कंधे गोल हो गये हैं और तुम्हारी नजर लगभग निकटदृष्टि दोषयुक्त (myopic) हो गई है। इसे छोड़कर आओ और मेरे साथ रहो।' तब उन्होंने कहा, *'ओह, वास्तव में, मैं ये प्रैक्टिस तुम्हारे लिए छोड़ दूँगा और जबतक मैं मर न जाऊँ, मैं और तुम, बराबर के भागीदार के रूप में कार्य कर सकते हैं। ठीक है ? हाथ मिलाओ?'*

एलन ने काफी परेशान महसूस किया। निश्चितरूप से, वह कुछ समय के लिए लीक (rut) पर पड़ गया था, जिसने उसमें एक सनक पैदा की, सनक कि उसे जीवन बचाना था, हर कीमत पर जीवन बचाना है, कोई बात नहीं कितना भी बीमार क्यों न हो, कोई बात नहीं कि मरीज लाइलाज ही क्यों न हो। एलन शल्य चिकित्सक के रूप में अधिक अच्छा नहीं था, उसे उसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी, परंतु साधारण दवाइयॉ, जो उसकी विशेषज्ञता थी और वह अपनी प्रसिद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ रहा था। और अब उसके मित्र और शुभचिंतक, डॉ. रेगीनाल्ड थॉम्पसन, उसे निजी प्रैक्टिस में प्रवेश कराना चाहते थे। डॉ. ने उसके विचारों को ये कहते हुए तोड़ा, *'वापस सेंट मेगट्स में जाओ, डॉ. टिटले से इस सम्बंध में बातचीत करो और अपने मित्र डॉ. बार्डले (Wardley) से पूछो कि वह इसके सम्बंध में क्या सोचता है। तुम आश्वस्त हो सकते हो कि वह जोड़ा तुम्हें ईमानदारी सलाह देगा। अब, जबतक कि तुम अपना मन नहीं बना लेते, मेरी नजर से दूर हटो, तुम वहॉ समुद्र से लगभग मोहग्रस्त दिखाई देते हो।'*

ठीक तभी, श्रीमती सिमोंड्स (Mrs. Simmonds), अब काफी बुजुर्ग, लकड़ी की ट्रॉली पर चाय के साथ ये कहते हुए अंदर आई, *'आह, डॉ. थॉम्पसन, मैंने देखा कि डॉ. बोंड यहॉ थे, इसलिए मैंने सोचा कि मैं आपको चाय लाने की आवाज लगाने के कष्ट से बचा लूँ, ये है,'* और वह डॉ. एलन पर खुलकर मुस्कराई, जो अब अच्छे कामों के लिए अपने जीवन को बना रहा था, बहुत कुछ हद तक उनका पसंदीदा था।

सेंट मेगट्स की तरफ वापस जाकर, एलन, चीजों पर डॉ. टिटले और डॉ. बार्डले के साथ चर्चा कर सका। डॉ. बार्डले ने कहा, *'ठीक है, मुझे तुम्हें ये नहीं बताना चाहिए, डॉ. एलन, परन्तु डॉ. रेगीनाल्ड थॉम्पसन, वर्षों तक मेरे मरीज रहे हैं, उनके कार्डियोग्रामों की पूरी श्रृंखला है, और वह प्रकाश की तरह बाहर जा सकते हैं। तुम्हारी हर चीज, उनके कारण है, तुम जानते हो, और तुम गंभीरतापूर्वक अच्छा सोचोगे, यदि तुम उनके पास नहीं जाओ।'*

डॉ. टिटले ने सहमति में अपना सिर हिलाया और कहा, *'हॉ, एलन, तुमने यहॉ सेंट मेगट्स में अच्छा काम किया है, परंतु तुम अत्यधिक सीमित हो, तुम अत्यधिक संस्थागत (institutionalised) होते जा रहे हो। हमारे ऊपर युद्ध छिड़ने वाला है, और किसी को यहॉ से बाहर, गलियों में निकलने की जरूरत है, आपातकालीन स्थिति में, हम तुम्हें हमेशा यहॉ बुला सकते हैं। मैं तुम्हें तुम्हारी संविदा (contract) से मुक्त कर दूंगा।'*

'इसलिए ये पारित किया गया कि एक महीने बाद, डॉ. एलन बोंड, डॉ. रेगीनाल्ड थॉम्पसन के साथ बराबर के भागीदार बन गये, और उन्होंने अच्छी सफल प्रैक्टिस की। परंतु समाचार पत्रों में, और रेडियो पर, वहॉ पूरे समय युद्ध की ही बात होती थी, बमबारी की बात, घृणित हुंस (Huns)[18], जो विशेष प्रकार की बॉश (Boche) क्रूरता के साथ, यूरोप का सफाया कर रहे थे, के हमलों का प्रतिरोध करने में, एक के बाद एक, देशों की असफलता की सूचनाओं की बात होती थी। अंत में, नेविली चैम्बरलेन

---

18 अनुवादक की टिप्पिणी : हुंस (Huns) और बाश (Basch) दोनों ही जर्मन लोगों के प्रति अपमानजनक शब्द हैं।

(Neville Chamberlain)[19], 'हमारे समय में शांति (peace in our time)' के सम्बंध में, तमाम निरर्थक (inept), मूर्खतापूर्ण (inane) वार्तालाप के साथ, जर्मनी से वापस लौटे, और जर्मनी से, वास्तव में, मरियल (lanky) अंग्रेज आदमी, जो अपने तह किये हुये छाते के साथ, यह सोचते हुए कि वह विश्वशांति की स्थापना कर सकता था, वहाँ आया था, के जोरदार उग्र (raucous) उपहास की रिपोर्टें आईं। तत्काल बाद ही, नाजुक शब्दाडंबरों से पूरा भरा हुआ, दहाड़ता हुआ हिटलर (ranting Hitler), रेडियो पर गया और एक या दो दिन बाद ही इंग्लैंड ने युद्ध की घोषणा कर दी।

महीने गुजरते गये और युद्ध कहीं नहीं पहुँच रहा था, ये टेलीफोन के युद्ध का काल था। एकदिन एक पुलिसमैन एलन के पास आया और उसने सावधानीपूर्वक सुनिश्चित किया कि वह डॉ. एलन बोंड ही था, तब उसने कहा कि उसकी माँ, मेरी बोंड ने आत्महत्या कर ली है और उसकी लाश, अब पेडिंगटन लाशघर (Paddington Mortuary) में थी।

एलन को उसके मन में लगभग बड़ा झटका लगा, वह नहीं जानता कि क्यों, परंतु ये सर्वाधिक भयानक चीज थी, जो उसने कभी सुनी। आत्महत्या! वर्षों तक वह आत्महत्या के विरोध में उपदेश देता रहा है, और अब उसकी खुद की मां ने, पागलपन का ऐसा काम किया।

शीघ्र ही, लंदन में बमबारी के साथ, युद्ध में तेजी आई। वहाँ हर समय, जर्मनी की सफलता की खबरें होती थीं, जर्मन हर जगह जीत रहे थे, और सूदूरपूर्व में जापानी, सबकुछ अपने सामने समेट रहे थे। उन्होंने शंघाई ले लिया, उन्होंने सिंगापुर ले लिया। एलन ने, फौज की नौकरी में शामिल होने का, फिर एक प्रयास किया और फिर एलन को, ये कहते हुए कि वह जहाँ था, वहीं अधिक उपयोगी था, अस्वीकार कर दिया गया।

आक्रमण बदतर होते गये। हर रात के बाद रात को, जर्मनी के बमबर्षक विमान, लंदन पर हमला करने के लिये, उसके समुद्री तटों पर आते। रात के बाद रात, बंदरगाह के क्षेत्र पर बमबारी हुई और लंदन के पूर्वी सिरे में आग लगा दी गई। एलन ने ए. आर. पी. (Arial Raid Protection)—हवाई आक्रमण की सावधानियाँ रखने वाले लोगों—के साथ काफी निकटता के साथ काम किया, और वास्तव में, एलन के घर के तलघर में ही, ए. आर. पी. की एक चौकी थी। रात के बाद रात, आक्रमण जारी रहे। अग्नि बम, नीचे वर्षा करते थे, उष्मक बम (thermite bombs) छतों से ऊपर उछलते थे, और कई बार, पूरे घर को आग लगा देते थे।

वास्तव में, हवाई हमले की एक बहुत खराब रात आई। पूरा क्षेत्र, आग में घिरा हुआ दिखाई दिया, भोंपूओं की दर्दनाक विलाप की आवाज, लगातार चलती गई। आग बुझाने वाले उपकरणों के हौज (पाइप), सड़क पर, सांपों की तरह लोटने लगे और इसने डॉक्टरों के लिए, अपनी कारों का उपयोग करना, असंभव बना दिया।

रात चांदनी भरी थी, परंतु चंद्रमा, लपटों से ऊपर जाने वाले, लाल बादलों के द्वारा ढका हुआ था, हर कहीं, आसपास उड़ती हुई चिंगारियों के झरने, और पूरे समय, गिरते हुए बमों की नारकीय चीखें, उनमें से कुछ में, उनकी पूंछ के गलफड़ों पर, शोरगुल और आतंक को बढ़ाने के लिए सायरन लगे थे। एलन, लाशों को, टूटे हुए शरणगाहों से बाहर खींचने में मदद करते हुए, जो तलघर में मजबूर

---

19 अनुवादक की टिप्पिणी : आर्थर नेविले चेम्बरलेन (Arthur Neville Chamcerlain), (18 मार्च 1869—9 नवम्बर 1940) एक रूढ़िवादी (consedvative) ब्रिटिश राजनेता थे, जो मई 1937 से मई 1940 तक इंग्लैंड के प्रधानमंत्री रहे। चेम्बरलेन को उनकी तुष्टिकरण की विदेशनीति, और प्रमुखतः 1938 के म्यूनिख समझौते (Munich Agreement) के लिये जाना जाता है। जब हिटलर ने पोलैंड पर अतिक्रमण किया, तब 3 सितम्बर 1939 को ब्रिटेन ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी, और चेम्बरलेन ने द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रथम आठ माह में युद्ध का नेतृत्व किया।

किये गये थे, उनको छेदों में से रेंगते हुए, कष्टों से, अंदर की कटी फटी लाशों को कष्ट से आराम दिलाने के लिए, हर जगह दिखाई देता था। इस विशेष रात में, एलन अपनी सांस को प्राप्त करता हुआ और आकस्मिक कैंटीनों में से एक में से, चाय का एक कप लेता हुआ, खड़ा रहा। *'व्यूह (Whew)!'* ए. आर. पी. के वार्डन ने, उसके साथसाथ ऊपर देखा और कहा, *'वह एक बंद था।'* एलन ने दूर नजर मारी, और पूरे क्षितिज को आग की लपटों में घिरा देखा, लहराता हुआ धुंआ हर जगह था। इस सब के ऊपर, जर्मन हवाई जहाजों के, समय के साथ तुक न बैठाते हुए (unsynchronised) इंजनों की 'थ्रम–थ्रम–थ्रम (thrum-thrum-thrum)' की विषम आवाज आई। कई बार वहाँ, अतिक्रमणकारियों पर अपनी मशीनी तोपों का निशाना साधते हुए, उनके नीचे की आग द्वारा खाका खींचते हुए ब्रिटेन के रात्रि लड़ाकों (night fighters) की, चट–चट–चट की आवाज आई।

वहाँ एक सहसा 'बूम्फ (Woomph)' हुआ और पूरी दुनियाँ ऐंठती हुई नजर आई। एक पूरा घर, हवा में उड़ गया, बिखर गया और टुकड़ों में टूटकर नीचे आ गया। एलन ने महसूस किया कि चीखती हुई पीड़ा ने उसे लपेट लिया है। हवाई हमले के वार्डन ने, जो अनछुआ था, आसपास देखा और चीखा, *'ओह मेरे भगवान, डॉक्टर गया!'* पागलपन में, हमलाविरोधी सुरक्षा और बचाव दल के आदमियों ने, एलन की टांगों और पेट के निचले भाग से, चिनाई के खण्डों को खींचने का प्रयास किया। एलन आग के समुद्र में होता हुआ प्रतीत हुआ, दौड़ती हुई आग द्वारा, प्रकटरूप से, उसका पूरा अस्तित्व उपभोग किया जा रहा था। तब उसने अपनी ऑखें खोलीं और धीमे से कहा, *'मेरी चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है, आदमियो, मैं समाप्त हो चुका हूँ, केवल मुझे होने दो, और चलते जाओ, और किसी दूसरे को देखो, जो इतनी बुरी तरह घायल न हुआ हो।'* इसके साथ ही, उसने अपनी ऑखें बंद कीं और थोड़े समय के लिए लेटा। वह मूर्छा की एक विशेष परिस्थिति में दिखाई दिया। उसको दर्द नहीं है, उसने खुद के लिये सोचा, और तब उसमें ऐसा लगा कि वह विभ्रम में हो (hallucinating), क्योंकि, वह औंधा होकर, अपने खुद के ऊपर तैर रहा था, और वह नीली सी सफेद, एक तंतु को, हवा में (लटके) अपने शरीर को, जमीन पर पड़ी अपनी लाश के साथ जोड़ते हुए देख सका, उसने देखा कि वह नाभि के नीचे की तरफ, पूरी तरह कुचल गया था, वह ठीक वैसे ही फटा हुआ था, जैसे कि, रसभरी का जैम जमीन पर फैलाया हुआ हो, और तब उसके मन में कौंधा कि आज उसका तीसवॉ जन्मदिन था। इसके साथ ही, रजत तंतु निश्तेज और म्लान होता हुआ दिखा और एलन ने अपने आपको, ठीक वैसे ही तैरते हुआ पाया, जैसे कि वह लंदन के ऊपर तैरते हुए, गोलाबारी करते हुए गुब्बारों में से एक था। वह ऊपर की ओर तैरा, वह तहस–नहस लंदन को, अपनी निगाहों से दूर जाता हुआ देख सकता था, वह औंधा था। अचानक ही वह एक अंधेरे बादल में उछलता हुआ प्रतीत हुआ और कुछ समय के लिए वह और अधिक, कुछ भी नहीं जानता था।

'तिरेपन! तिरेपन!' एक ध्वनि उसके सिर में खाना खाती हुई प्रतीत हुई। उसने अपनी ऑखें खोलीं और आसपास देखा, परंतु हर चीज काली थी। वह काले कोहरे में होता हुआ प्रतीत हुआ। तब उसने स्वयं के लिए सोचा, *'मैं इस सम्बंध में नहीं जानता, कुछ हद तक परिचित दिखाई देता है, आश्चर्य है, मैं कहाँ हूँ? हो सकता है कोई निश्चेतक (anaesthetic) या वैसा ही कुछ, लिया हो।'* और जैसे ही उसने ऐसा सोचा, काला बादल भूरा हो गया और वह आकृतियों को, चलती हुई आकृतियों को, देख सका, और तब ये सब, उस तक वापस आया। वह सूक्ष्म अवस्था में था, इसलिए वह मुस्कराया, और जैसे ही वह मुस्कराया, बादल, धुंध और कोहरा, सब गायब हो गये और उसने वास्तविक सूक्ष्मतल की भव्यता देखी। उसके आसपास, उसके दोस्त थे, क्योंकि, ऐसे किसी तल पर केवल दोस्त ही हो सकते थे। एक क्षण के लिए, उसने सदमे के साथ, अपने आप पर, नीचे की तरफ देखा और तब जल्दी से, पहले परिधान के सम्बंध में, जो वह सोच सकता था, सोचा–उसने सेंट मेगट्स में सफेद कोट का

उपयोग किया था। तत्काल ही वह एक सफेद कोट पहने था, परंतु वह एक क्षण के लिए, हॅसी के तूफानों पर जिन्होंने उसका अभिनंदन किया, सदमे में था, तब उसने नीचे देखा और याद किया कि उसका अंतिम सफेद कोट, कमर तक की लंबाई का था, क्योंकि, अस्पताल में वह एक विशेषज्ञ रहा था।

वास्तविक सूक्ष्मशरीर, बहुत, बहुत सुखदायक था। एलन को, प्रसन्नचित्त मित्रों के द्वारा, विश्राम गृह में ले जाया गया। यहॉ उसका एक कमरा था, जो वास्तव में, अत्यधिक आरामदायक कमरा था, वह बाहर की ओर, ऐसे पेड़ों के साथ, जो उसने इससे पहले कभी नहीं देखे थे, उद्यान की भूमि को देख सकता था। वहॉ पक्षी और पालतू जानवर आसपास घूम रहे थे, और किसी ने भी किसी दूसरे प्राणी को नुकसान नहीं पहुॅचाया।

एलन शीघ्र ही, पृथ्वी पर मृत्यु और सूक्ष्मशरीर में पुर्नजन्म के मानसिक आघात से उबर गया, और तब, एक सप्ताह बाद, जो हमेशा ऐसा ही मामला था, उसे स्मृतियों के हॉल (Hall of Memories) की ओर जाना था, जहॉ वह अकेला ही बैठा और उसने हर चीज को, जो उसके पिछले जीवन में घटी थी, सावधानी से देखा। समय की उस अवधि की समाप्ति पर, जिसको नापा नहीं जा सकता था, *'कहीं से'* एक कोमल स्वर ने कहा, *'तुमने अच्छा किया है, तुमने बहुत अच्छा किया है, तुमने प्रायश्चित कर लिया है। आगे क्या करना है, इसकी योजना बनाने से पहले, अब तुम यहॉ कुछ शताब्दियों के लिए आराम कर सकते हो। यहॉ तुम शोधकार्य या कोई भी चीज, जो तुम चाहो, कर सकते हो। तुमने बहुत अच्छा किया है।'*

एलन, टहलता हुआ, फिर से अपने मित्रों से अभिनंदन पाता हुआ, स्मृतियों के हॉल से बाहर आया और वे साथसाथ गये, ताकि, एलन एक घर खोज सके, जहॉ वह स्वयं आनंद कर सके, और सोच सके कि करने के लिए सर्वोत्तम क्या होगा।

मेरा विश्वास है कि सभी लोगों को, कोई बात नहीं वे कोई भी हों, को सिखाया जाना चाहिए कि मृत्यु कुछ नहीं, केवल संक्रमण (transition) है और जब संक्रमण का समय आता है, शुभेच्छु प्रकृति, उन लोगों के लिए, जो विश्वास करते हैं, रास्ते को सुगम बना देती है, कष्ट को आसान करती है, और परिस्थितियों को शांत बना देती है।

अध्याय–आठ

पुराना घर शांत था, इतना शांत, जितना कि एक पुराना घर कभी हो सकता है। यदाकदा, रात के अंधेरे में, फर्श बनाने वाले सामान की, जैसे ही वह अपने पड़ौसी के साथ रगड़ा, और उसकी निजता में अतिक्रमण करने के लिये एक फुसफुसाहट आई। एक कठिन दिन के पश्चात्, पुराना घर विराम में था। अपने जीवन की एक गर्म दोपहरी में सोना, उसके लिए अब और अधिक संभव नहीं था। पुराना घर, कराधान (taxation), मांगों (demands), खर्चीले पुर्नस्थापनों के व्ययों (expenses for expensive restoration) (के कारण) खराब समय में गिर गया था। पुराना घर, मूर्ख आगंतुकों की भीड़, जो कमरों में इकट्ठी होकर, उन्मुक्त भेड़ों के समूह की भॉंति, गलियारों में होकर उमड़ती हुई आई, पर दुखी था। पुराने घर ने, अपने फर्श बनाने वाले सामान को, शोक मनाता हुआ महसूस किया और उसका लकड़ी का सामान, अनेक शांति की वर्षों के बाद, अनभ्यस्त (unaccustomed) भार में, हल्का सा डूब गया। परंतु परिवार को चलते हुए, और कैसे भी, धन अर्जित करते हुए रहना पड़ा, इसलिए काफी आत्मंथन (self searching) और काफी आंतरिक खटपट (strife) के बाद, दलों को ऐतिहासिक भवनों के पर्यटन पर ले जाना पड़ा।

सैकड़ों वर्ष पहले, उच्चवर्ग के एक आदमी, एक (ऐसा) आदमी, जिसने अपने राजा की भद्र और भले तरीके से सेवा की थी, और अपने समर्पण के कारण, अमीरों के पद पर प्रमोन्नत किया गया था, के लिए घर को गढ़ी की तरह बनाया गया। घर को, हट्टेकट्टे कारीगरों के द्वारा, जो जौ की शराब (ale), पनीर (cheese) और रोटी के टुकड़ों (hunks of bread) पर रहते थे, और जिन्होंने ठीक काम को करने के गर्व के लिए, हर चीज को ठीक ढंग से किया, प्रेमपूर्ण और अच्छे ढंग से बनाया गया था। इसलिए घर बचा रहा, गर्मियों की तपाने वाली गर्मी और सर्दी के जमाने वाले सूखे से, जब हर लकड़ी बर्फीले विस्फोटों, जो इसके आसपास होते थे, के कारण सिकुड़ना चाहती है, बचा रहा। अब, उद्यानों की अभीतक, अच्छी तरह से देखभाल की जाती थी, घर का मुख्य तानाबाना अभी भी सुरक्षित था, परंतु बोर्डों में से कुछ चटखने लगे थे, महराबदार पथों में से कुछों में, पुराने समय की डूब थी, और अब लापरवाह बच्चों के द्वारा, चिपकने कागजों के कुचले जाने और कचरा बनाकर फेंके जाने के एक दिन के बाद, पुराना घर फिर से शांति में वापस आ गया था। पुराना घर शांत था, उतना शांत, जितना कि कोई पुराना घर, कभी हो सकता था। अन्दरूनी दीवार की निचली पट्टिका (wainscot) के पीछे, छोटी चुहियॉं, अपने खेल में किकियायीं (squeaked) और तेजी से दौड़ीं (scampered)। ऊँचाई पर, कहीं एक उल्लू ने, चांदनी में आवाज लगाई। बाहर, छज्जों के बीच, अत्यधिक ठंडी रात की हवायें खड़खड़ायीं और कभी कभार, पेड की एक लंबी शाखा ने खिड़कियों के विरुद्ध खटखटाया। परंतु उस पार्श्वक्ष (wing) में कोई नहीं रहता था, *'परिवार'* अब एक छोटे घर में आधारों पर रहता था, एक घर, जो अधिक सम्पन्नता के दिनों में, प्रमुख खानसामा और उसकी पत्नी का प्रभाव क्षेत्र (domain) था।

अत्यधिक पॉलिश किया हुआ फर्श, पैनल वाली दीवारों के विरुद्ध क्षीण परावर्तन उत्पन्न करते हुए, दृष्टिहीन ऑखों में, चूंकि वे शताब्दियों तक नीचे की ओर घूरती रहीं थीं, चांदनी में चमका।

भव्य हॉल के दूर वाले किराने पर, बाबा आदम की राजशाही घड़ी ने, पौने बारह बजाये। बगल के बोर्ड पर कहीं, कटे हुए कॉच (cut glasses), मंदमंद खनखनाए, मानो कि वे एक दूसरे के घंटानाद की प्रतिध्वनि पर फुसफुसाये। दूसरे कमरे से उतना दूर नहीं, नातिन घड़ी (grand daughter clock) की, घंटे का एक चौथाई भाग दोहराते हुए, उच्चस्वर की एक आवाज आई।

पल भर के लिए सबकुछ शांत था और तब बाबा घड़ी (grand father clock)[20] ने कहा, *'नातिन*

---

20 अनुवादक की टिप्पिणी : अंग्रेजी में, दीवार घड़ी (clock) को पुल्लिंग (masculine) माना जाता है, इसलिये यहॉं बाबा घड़ी (grandfather clock) पद का उपयोग किया गया है। हिन्दी में घड़ी को स्त्रीलिंग (feminine) माना जाता है। इसलिये व्याकरण के अनुसार यहॉं ठीक नहीं बैठ रहा है, यदि इसे दादी घड़ी (grandmother clock), कहा जाय, तो अधिक न्यायसंगत होगा, परन्तु कथन की मौलिकता

घड़ी, क्या तुम वहॉ हो, क्या तुम मुझे सुन सकती हो?'

जैसे ही एक कांटा खिसका, चटाक (click) की एक आवाज और एक घरघराहट हुई, और तब नातिन घड़ी की ऊँची आवाज आई: *'हॉ, बाबा, वास्तव में, मैं आपको सुन सकती हूँ। क्या आपको इस रात में मुझे कुछ कहना है?'*

बाबा घड़ी, अपनी खामोश आवाज में चलती रही, *'टिक, टिक, टिक, टिक, टिक, टिक,'* और तब अपनी आवाज को उठाते हुए वह बोला, 'नातिन, मैं सत्रहवीं शताब्दी के अंत में पैदा हुआ था, मेरा लंबा डिब्बा, पहली बार 1675 में पॉलिश किया गया था, और जब मेरा पेण्डुलम, पहली बार झुलाने के लिए व्यवस्थित किया गया था, तभी से, मैंने जीवन के रहस्य के ऊपर चिंतन किया है, जितना लंबा जीवन मैंने जिया है, उतना ही लंबा मैंने चिंतन किया हैं। हमारे आसपास के मानवों का जीवनकाल बहुत छोटा रहा है, उनके पास, वास्तव में, उस सब को, जो यहॉ जीवन के सम्बंध में जानने को है, सोचने के लिए समय नहीं है। क्या तुम्हारी दिलचस्पी (इसमें) है, नातिन?'

महिलाओं के निवृति कक्ष (retiring room) की अवस्था में बैठे हुए, नातिन घड़ी ने, गुजरने वाले रेल के भारी भरकम इंजन और भाड़े की कारों की उसकी सेवक श्रंखला की धमक के प्रति, अपना सिर हल्के से हिलाया। और तब उसने नम्रता से कहा, *'वास्तव में, दादा घड़ी, वास्तव में, मैं वह सुनने में दिलचस्पी रखती हूँ, जिसको आपने पूरी शताब्दियों में होकर, इतने लंबे समय तक सोचा है। मुझे बतायें और मैं सुनूंगी, और मैं तबतक टोका टोकी नहीं करूंगी, जबतक कि मेरा उद्देश्य, घंटा बजाने की पुकार के लिये, इसे मेरे लिए आवश्यक न बना दे। बाबा, ये जानते हुए कि मैं सुन रहीं हूँ, कहें।'*

बाबा घड़ी ने अपने गले में बड़बड़ाया, उसका लंबा डिब्बा भव्य था, सात फुट से अधिक लंबा, वह आधे अंधियारे में, ऊंचे पॉलिश किये हुए फर्श के ऊपर बनाया गया था। उंगली के किसी चिन्ह ने, उसके डिब्बे को खराब नहीं किया, क्योंकि, ऐसी आश्चर्यजनक पुरानी चीजों को अच्छी हालत में साफ और तेज आवाज में रखने का ये कार्य, एक विशेष सेवक का था। बाबा घड़ी का चेहरा चांदनी की तरफ था। अपने बगल की खिड़की से बाहर देखते हुए, वह बूढ़े पेड़ों को, परेड में पंक्तिबद्ध किये गये सैनिकों की भांति, विस्तृत उद्यान क्षेत्रों में देख सकता था। पेड़ों के आसपास, अच्छी तरह बोये गये लॉन, और यहॉ–वहॉ, सदाबहार (rhododendrons), और दूर देशों से, दूर से लाई गयीं, अनेक झाड़ियॉ थीं।

झाड़ियों के परे, यद्यपि बाबा घड़ी ने अभीतक कभी नहीं देखे थे, वहॉ घास के बड़ेबड़े आनंददायक मैदान थे, जहॉ जागीर की गायें और घोड़े मधुर घास को चरते थे और, पुराने घर की तरह, अपने जीवन का स्वप्न देखते थे।

समीप ही, बाबा घड़ी की नजर के ठीक बाहर, उसे बताया गया था, कि वहॉ एक बहुत बहुत आनंददायक तालाब था, वह लगभग तीस फुट आरपार था, ऐसा एक यात्री घड़ी ने उसे बताया था। सतह पर, कमलिनी के अनेक चौड़े पेड़ थे, जिस पर वर्ष के सही समय पर, मोटे मेंढक बैठते और टर्राते। बाबा घड़ी ने, वास्तव में, उनकी टर्राहट सुनी थी और सोचा था, शायद, उनकी यांत्रिकी को तेल डालने की आवश्यकता थी, परंतु यात्री घड़ी ने ये सब उसे पूरा समझाया था और तालाब की मछलियों के सम्बंध में भी समझाया था कि तालाब के दूसरे सिरे से लगी हुई, लगभग तीस फुट लंबी और लगभग दस फुट ऊँची, एक बड़ी पक्षीशाला (aviary) थी, जिसमें बहुरंगी पक्षी अपना जीवन जी रहे थे।

बाबा घड़ी, इस सब के ऊपर आनंदित हुई। उसने पीछे शताब्दियों तक, स्वामियों (lords) और स्वामिनों (ladies) को, फीके मोटे कपड़ों (drab denims), जिसके साथ, अपने पतनोन्मुखी (decadent) दिनों में, सभी मनुष्य एक जैसे पहने हुए दिखाई देते हैं, से काफी अलग, अपने राजशाही परिधानों में

बनाये रखने के लिये, यहॉ बाबा घड़ी पद का ही उपयोग किया जा रहा है। बाबा घड़ी से लेखक का आशय, दो पीढ़ी पहले की घड़ी से है। असुविधा के लिये पाठकों से क्षमा याचना है।

अपनी तरफ आते हुए देखा था। बाबा घड़ी ने तबतक चिंतन किया, जबतक कि वह अपनी यवनिका (reverie) से नहीं उबरी, *'बाबा घड़ी, बाबा घड़ी, क्या आप ठीक हैं? मैं आपसे सुनने की प्रतीक्षा कर रहीं हूँ, बाबा घड़ी, आप मुझे भूतकाल की, वर्तमान और भविष्य की, अनेक चीजों को, और जीवन को और उसके अर्थ को बताने जा रहीं थीं।'*

बाबा घड़ी ने अपना गला साफ किया और उसका पेण्डुलम, *'टिक टॉक (tick tock), टिक टॉक (tick tock), टिक टॉक (tick tock),'* चलता गया, और तब वह बोली : *'बाबा घड़ी,'* उसने कहा, *'मनुष्य ये नहीं अनुभव करते कि झूलता हुआ पेण्डूलम, ब्रह्मांड की पहेली का उत्तर है। मैं एक पुरानी घड़ी हूँ और मैं यहॉ इतने वर्षो से खड़ी हूँ कि मेरे डिब्बे का आधार खराब हो गया है, और मौसम में परिवर्तन के साथ, मेरे जोड़ चटकते हैं, परंतु मैं तुमसे ये कहना चाहती हूँ: हम, प्राचीन इंग्लैंड की घड़ियॉ, ब्रह्मांड की पहेली को, जीवन के रहस्य को और उसके परे के रहस्यों को जानती हैं।'*

कहानी, जो उसने नातिन घड़ी को बताई, एक नई कहानी थी, जो शताब्दियों तक अपने बनने में थी, एक कहानी, जो दूर, जीवित स्मृति के काफी परे शुरू हुई। उसने कहा कि उसे आधुनिक तकनीक को पुराने विज्ञान के साथ मिलाना पड़ा, क्योंकि, आधुनिक तकनीक, अभी भी, पुराना विज्ञान ही है। *'पेड़ों ने मुझे बताया,'* उसने कहा, *'कि अनेक, अनेक हजारों वर्ष पहले, एक दूसरा विज्ञान था, एक दूसरी सभ्यता, और वह सबकुछ, जो अब आधुनिक माना जाता है, और आधुनिक आविष्कार और विकास, तब भी पुराने थे।'*

एक पल के लिए वह रुकी और तब उसने कहा, *'ओह मुझे घंटा बजाना चाहिए। समय हो चुका है।'* इसलिए वह भव्य हॉल में, जमकर, और लंबी खड़ी हुई और उसके लंबे डिब्बे में से, एक प्राथमिक चटाक की और शब्द करते हुए घूमने की आवाज और घंटों का सुरीला स्वर हुआ, और तब उसने मध्यरात्रि के घंटे बजाये, बारह का घंटा, जब एक दिन मर जाता है, और एक दिन पैदा होता है, जब अंततोगत्वा, एक दूसरा चक्र प्रारंभ होता है। और जैसे ही उसने बारह के आखिरी घंटे को समाप्त किया और उसकी हथौड़ियॉ रुकीं और हिलीं, उसने नातिन घड़ी के द्वारा, उन सभी को, जो रात की खामोशी में सुन रहे थे, अपना संदेश दोहराये जाने की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की। नातिन घड़ी, लंबी और पतली थी, लगभग सौ वर्ष से अधिक आयु की नहीं। उसकी आवाज बहुत सुखद और घंटा ध्वनि स्पष्ट, उल्लेखनीयरूप से अधूरे कंपनों से स्वतंत्र, किटकिटाहट और चटाखों से मुक्त थी। परंतु, वास्तव में, यह वह है, जिसे कोई, एक नौजवान व्यक्ति से, जिसने सौ साल से अधिक तक नहीं झेला है, अपेक्षा करेगा। अब वह, बाहर हिलती हुई टहनियों में होकर, लंबी खिड़की में से अपना रास्ता बनाते हुए, आंशिकरूप से छनकर आती हुई चांदनी की किरणों के साथ, और अपने डिब्बे पर, प्रकाश की हिलती हुई उंगलियों को, उसकी पराकाष्ठाओं पर गहनों को सुशोभित करते हुए, और कईबार, सुईयों को, जो नवोदित दिन में सहायता प्राप्त करने की प्रार्थना करते हुए, एक व्यक्ति के प्रार्थना में जुडे हाथों की तरह से, सीधे ऊपर की ओर खड़ी थीं। उसे थोड़ी खांसी हुई और तब उसके पहियों ने घूमना प्रारंभ किया, हथौड़े उठे और छड़ों पर पड़े। उसने अपने गाने के सुर निकालना शुरू किया। वह पूरा हो गया, घंटों की आवाजें आई, एक, दो, तीन, और तब पूरे बारह। अंतिम बारहवें के प्रहार के समय, पूरे प्रयास, जो उसने व्यय किया था, के साथ वह थोड़ी सी कांपी, उसकी हथौड़ियॉ कंपी, और जैसे ही उन्होंने डिब्बे में अपनी ताजा स्थिति बनानी चाही, उसकी जंजीरों के अंत का भार थोड़ा सा कुलबुलाया। उसने मृदुलता से कहा, *'मुझे दुख है बाबा, मुझे दुख है कि मैंने आपसे प्रतीक्षा कराई, मुझे मालूम है, कि मैं एक मिनट की देरी से हूँ, परंतु शीघ्र ही उसे ठीक कर दिया जायेगा। क्या आप जारी रहेंगे?'*

बाबा घड़ी स्वयं पर मुस्कराई, *'ये ठीक था;'* उसने सोचा, *'कि युवा लोगों को सम्मान देना चाहिए और जो इतने अधिक वृद्ध हैं, उनके प्रति अंतर प्रदर्शित करना चाहिए।'* वह मुस्कराई और उसने कहा, *'हॉ, नातिन घड़ी, मैं जारी रखूँगी।'*

'युगों तक,' बाबा घड़ी ने कहा, *'मानवों ने, अपने अस्वाभाविक जीवन में, कठिनाइयों को सांत्वना देने के लिए, धर्म को चाहा है। उन्होंने हमेशा, अपनी देखभाल करने वाले, अपनी निगरानी करने वाले, निजी पिता के रूप में केवल उनको देखने वाले, और दूसरे सभी मानवों के ऊपर उन्हें प्राथमिकता का व्यवहार देने वाले, एक ईश्वर को चाहा है। हमेशा एक ईश्वर होना ही है,'* उसने कहा, *'एक कोई, जो सर्वशक्तिशाली (omnipotent) है, एक कोई, जिससे प्रार्थना की जा सकती है, जिससे अथवा जिसको की गई, प्रार्थना का कोई अनुकूल उत्तर पाने की आशा रखता है।'*

बाबा घड़ी ने सहमति में सिर हिलाया, दूर गुजरते हुए भारी परिवहन की सहानुभूति में सिर हिलाया और कहीं एक बेढंगा चूहा, एक गहने पर कूदा और उसे जल्दी से मेज पर चलता कर दिया। भय की चीख के साथ, चूहा मेज से उछला, और नीचे डूबते हुए, व्यग्रतापूर्वक पूंछ को हवा में हिलाते हुए, निकटतम बिल की ओर दौड़ा।

बाबा घड़ी ने अपनी कहानी पुनः प्रारंभ कीः *'हमको ये भी ध्यान में लाना चाहिए,' उसने कहा, 'आधुनिक तकनीकी, जो पुरानी तकनीक की पुनरावर्तन (recrudescence) मात्र है। हर चीज, जो अस्तित्व में है, हर चीज, जो (अस्तित्व में) है, कंपनों की एक श्रृंखला मात्र है। कंपन, एक तरंग है, जो पूरे शाश्वत काल में, पहले ऊपर जाती है, तब नीचे जाती है, और फिर से ऊपर जाती है और फिर नीचे जाती है, ठीक वैसे ही, जैसे कि हमारा लोलक झूलता रहता है, पहले एक तरफ, जहाँ ये एक सेकंड के अंश के भी अंश के लिए, रुकता है, और तब दूसरी तरफ को झूलता है।'* बाबा घड़ी एक पल के लिए खामोश हुई, तब वह अपने आप में मंदमंद मुस्कराई, जैसे ही जंजीर, अंदर वाले पीतल के पहिये के ऊपर, एक दांते से नीचे की ओर चली, और तली के भार ने, एक दांत और नीचे, जमीन की ओर जाने पर, आनंद की एक हल्की सी ठनठनाहट दी।

'मैं जानता हूँ,' उसने कहा, *'कि सभी चीजें, जो अस्तित्व में हैं, अपनी धनात्मक और ऋणात्मक कलाओं को धारण करती हैं, पहले एक तरफ और तब दूसरी तरफ। मैं जानता हूँ,'* उसने बढ़ती हुई गम्भीरता के साथ कहा, *'कि समय की एक अवधि में, जबकि जीवन का लोलक, अपने दोलन में एक तरफ है, प्रभारी भगवान, अच्छाइयों का भगवान होता है। परंतु ऐसी स्थिति में अच्छाइयों का भगवान, आत्मसंतोष में शांत हो जाता है, और वह उस पर पर्याप्त ध्यान नहीं देता, जो उसके आसपास चल रहा है, और जीवन का गोलक, जो अपने दोलन के परिवर्तन के लिए रुका था, फिर से प्रारंभ होता है और नीचे की ओर झूलता है। ऐसे किसी संज्ञान में, अच्छाई का भगवान, इस मामले में धीमा पड़ता है, कि सबकुछ ठीक है, परंतु गोलक नीचे जाता है और अपने दोलन के दूसरी तरफ, ऊपर की ओर चलना प्रारंभ कर देता है, और तब बुराइयों का देवता, जिसे मनुष्य शैतान कहते हैं, उत्सुकता के साथ, शक्ति के झोंके की, जो अब उसकी बारी है, प्रतीक्षा कर रहा है। 'बुराई इतना शक्तिशाली बल है,'* बाबा घड़ी ने कहा, *'ये इतना जबरदस्त, बड़ा जबरदस्त बल है। अच्छाई बुराई का विश्वास नहीं करती, जोकि बुराई है, इसलिए अच्छाई पर्याप्त श्रम के साथ लड़ाई नहीं करती, पर्याप्त संघर्ष नहीं करती, इसलिए हमें खराब बल मिलते हैं, जिनको हम, शैतान द्वारा, अपने सर्वाधिक अवसरों को बनाना कहते हैं। जीवन का लोलक ऊपर उठता है, और अपने झोंके के अंत में, जैसा कि सभी लोलकों के सभी दोलनों के अंत में होता है, ये फिर से नीचे की ओर चलना प्रारंभ करने से पहले, एक सेकंड के अंश के भी अंश के लिए रुकता है और बुराईयों का देवता, ऐसे समय की अवधि में, अपनी सबसे बड़ी बुराईयों को करता है। और तब, जबकि लोलक, फिर से, नीचे की ओर चलना प्रारंभ करता है, धीमे धीमे वह शक्ति खोता जाता है, और जैसे ही लोलक फिर से ऊपर की ओर चलना प्रारंभ करता है, तब फिर से, अच्छाई एकबार सिंहासन ले लेती है।'*

'आह, बाबा घड़ी,' छायाओं में से एक छोटी सी आवाज ने कहा, और एक दुबली पतली, काली–सफेद बिल्ली, स्वयं एक छाया की भांति, अंधेरे में से बाहर निकली और चांदनी की किरण में,

पुरानी, बहुत पुरानी घड़ी के ऊपर घूरती हुई, आराम में बैठी। आगे की तरफ बढ़ते हुए, बिल्ली ऊपर पहुंची, और उसने नरम पंजों के साथ, डिब्बे की तली को खरोंचा। *'बाबा घड़ी,'* बिल्ली ने कहा, *'मैं आपकी पेटी के ऊपर चढ़ सकती थी, और आपके सिर पर बैठ सकती थी, परंतु मैं आपको इतना अधिक पसंद करती हूँ कि आपके प्रति असम्मानजनक नहीं होऊंगी। हमें कुछ और बताइये।'* बिल्ली, चंद्रमा की किरण की तरफ वापस चली और घड़ी की तरफ मुंह करके बैठ गई, परंतु कोई समय न गंवाते हुए, उसने अपना चेहरा और अपने कानों को साफ करने का निश्चय किया। समय समय पर, वह बूढ़ी घड़ी को देख लेती थी, जिसने शौक से नीचे की तरफ बिल्ली पर घूरते हुए कहा, *'रुको नन्ही बिल्ली, मैं एक घड़ी हूँ, और मेरा समय प्रतिबंधित है। अभी मुझे प्रतीक्षा करनी है और एक चौथाई घंटे को बजाना है, ताकि सभी मानव, जो चेतनाशील हैं, जान जायें कि पंद्रह मिनट से हम, नये उगे हुए दिन में हैं। नन्हीं बिल्ली, मेरी सुनो, और तब एक मिनट बाद, मेरी नातिन की सुनना। हम समय बतायेंगी, तब हम फिर से बात करेंगी।'*

रात की शांत हवा में, एक घंटे के बाद, पंद्रह मिनट गुजरने की आवाजें गूंजी। खिड़की के बाहर, चोरी से आने वाला एक शिकारी, जो मुर्गी के समीपवर्ती बसेरे में से अंडे चुराने का प्रयास करते हुए, खामोशी के साथ चल रहा था, एक क्षण के लिए अपने रास्ते पर जम गया, जैसे ही वह खिड़की की तरफ, जहॉ नातिन घड़ी तैयार थी, आगे बढ़ा, और तब, आत्मसंतुष्टि के साथ मुस्कराया। जैसे ही शिकारी की छाया ने उसकी खिड़की को पार किया, अपनी अधिक ऊँची आवाज के साथ, उसने मिनटों की सूचना दी। एकबार फिर, शिकारी रुका और तब, बगल की रोशनी से अपने हाथों से मुंह छिपाते हुए, उसने कमरे में घुसने का प्रयास किया, *'खिलती हुई घड़ियॉ,'* उसने कहा, *'दिन के सजीव प्रकाशों को, किसी अच्छे चोर से डराकर भगाने के लिए, पर्याप्त हैं!'* ऐसा कहते हुए, वह खिड़की से, छायाओं में गुजर गया और कुछ मिनटों बाद, वहॉ सोती हुई सी एक फुसफुसाहट हुई और परेशान मुर्गियों के विरोध हुए।

घर में, उतनी शांति, जितनी कि ऐसे किसी पुराने घर में हो सकती थी, शांति थी। तख्ते चटक गये, सीढ़ियों ने, एक ही स्थिति में लम्बे समय तक बने रहने के कारण, फुसफुसाते हुए अपनी शिकायत की। और, पूरे घर में, नन्हें पैरों की अनिश्चित सी भागदौड़, या वास्तव में, हमेशा उपस्थित बनी रहने वाली टिक टी, टिक टी, टिक टी, और टुक, टुक, टुक या बाबा घड़ी की, बड़ी टिक टुक, टिक टुक, थी। ये सभी जीवित घर की सामान्य ध्वनियॉ थीं।

रात गुजरती गई। बाहर, गहरी छायाओं को घर के आसपास छोड़ते हुए, चंद्रमा अपने रास्ते पर चलता रहा। रात के प्राणी बाहर आये और अपने विधिसम्मत अवसरों की ओर गये। छोटी लोमड़ियों ने, अपने अड्डों में से बाहर निकलने का साहस किया और पृथ्वी पर रात्रि के जीवन का प्रारंभिक जायजा लिया।

निशाचर (nocturnal) प्राणियों की रात्रि सभ्यता के साथ, उन्हें आवंटित पथ के आसपास जाते हुए, रात गुजरती गई। चोरी चोरी, दबे पॉव बिल्लियों ने, अपने शिकार का पीछा किया और अक्सर वहॉ, एक अचानक कूद और जैसे ही दुर्भाग्यशाली बिल्ली चूक जाती, एक बड़बड़ाहटयुक्त धूर्तता भरा अभिशाप भी, होता था।

अंत में, पूर्वी आकाश ने, छायाओं की चमक दिखाई, और तब, जॉच करने वाली सूर्य की उंगलियों की तरह, आगे का रास्ता महसूस करते हुए, दूरियों पर पहाड़ियों की चोटियों को प्रकाशित करते हुए, और नीचे घाटियों में अंधेरे को बढ़ाते हुए भी, लाल रंग की मंद धारियॉ प्रकट हुईं। तब समीप में, एक मुर्गा (rooster), पहले चिन्ह पर कि, अब वहॉ अगला दिन होगा, कर्कशता के साथ (raucously) बोला। एक सदमे भरे पल के लिए, पूरी प्रकृति निश्चल हो गई, और तब वहॉ अचानक एक खड़खड़ाहट हुई, और जैसे ही रात के प्राणियों ने अपनी चेतावनी को स्वीकार किया कि

भोर बस होने ही वाली है, तेजी से दौड़ लगी, स्वीकार किया और झाड़ झंखार के विभिन्न भागों में, अपने अपने घरों को जाने की जल्दी की। रात्रि के पक्षियों ने अपने बसेरे, अंधेरे कोनों में ढूंढ लिए, चमगादड़ अपनी मीनारों (steeples) को लौटे, और दिन के प्राणियों ने, अपनी असहज कुलबुलाहट प्रारंभ की, जो पूरी तरह जगने की ओर आगे बढ़ी।

बड़े हॉल में, बाबा घड़ी ने 'टिक टोक, टिक टोक, टिक टोक' की। अब वह बात नहीं कर रहीं थीं, दिन का समय, बात करने के लिए, गलत समय था, आसपास मनुष्य हो सकते हैं और घड़ियों ने अपने गुप्त विचारों को असावधान, अविश्वासी मानवों को नहीं बताया।

भूतकाल में बाबा घड़ी ने मानवीय कहावत के ऊपर टिप्पणी की थी, *'ओह मनुष्य हमेशा हर चीज का प्रमाण चाहते हैं, वे इस बात का भी प्रमाण चाहते हैं कि वे मानव हैं, परंतु आप किसी चीज को कैसे सिद्ध कर सकते हैं?' बाबा घड़ी ने पूछा। और तब उसने कहना जारी रखा। 'यदि कोई चीज सत्य है, तो इसे प्रमाण की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह स्वयं प्रत्यक्ष है कि वह चीज वहॉ है, परंतु यदि कोई चीज सत्य नहीं है, और ये वहॉ है नहीं, तब किसी भी प्रकार का 'प्रमाण' सिद्ध कर देगा कि ये वहॉ है, इसलिए किसी भी चीज का प्रमाण पाने का प्रयास करना कोई अर्थ नहीं रखता।'*

रोशनी चमकदार हो गई, दिन बृद्ध हो गया, शीघ्र ही, वहॉ घरों के आसपास काफी गतिविधि हो गई, सफाई करने वाली महिलायें आई और यांत्रिक उपकरणों के साथ पुराने महलनुमा शांत घर में उपद्रव लाईं। वहॉ प्लेटों की टकराहट हुई, और मुख्यद्वार के नीचे, नौकरों के क्वार्टरों से गूंजने की आवाजें आई, तब हॉल के साथसाथ सुपरिचित कदम आये, एक पैदल यात्रीः *'सुप्रभात, बाबा घड़ी,' उसने कहा, 'मैं आपको, आपके चेहरे का, रोजाना का रगड़ना और पोंछना, देकर जा रहा हूॅ।'* पैदल यात्री पुरानी घड़ी की तरफ गया और उसने सावधानीपूर्वक कॉच को साफ किया और समय को मिलाया। तब उसने लंबे डिब्बे के दरवाजे को खोला और धीमे से, एक–एक करके वजन बढ़ाते हुए, जंजीरों को नीचे खींचा ताकि, प्राचीन दांते पर अनुचित दवाब न डालते हुए, घड़ी में चाबी भरी जा सके। घड़ी का डिब्बा बंद करते हुए, उसने इसे प्यार से थपथपाया और तब पहले से ही अच्छी पॉलिश की हुई सतह पर, पॉलिश करने के काम पर लगा।

'ठीक है, बाबा,' उसने कहा, *'खुले हुए बुद्धुओं के लिए, जो आयेंगे, तुम्हारा सबकुछ ठीक से नवीनीकृत, सुन्दर और पर्याप्त तैयार हो गया है। मैं तुम्हारे सामने केवल एक अवरोध रख दूंगा और तब हमारा काम पूरा होगा।'* उसने अपनी पॉलिश और अपना पोंछने का कपड़ा उठाया और वापस चला गया, और तब उसने काफी सावधानी के साथ, लाल रस्से की एक ऑख को, दीवार के एक हुक में डाला और दूसरी ऑख को संगत हुक में डालने के लिए दूसरे सिरे तक, आरपार गया, ताकि, कोई भी बाबा घड़ी के पास, बिना चढ़े या लाल रस्से के अवरोध के नीचे से होकर न आ सके।

जैसे कि दिन सामान्यतः जाते हैं, दिन चलता चला गया, और शीघ्र ही, वहॉ मोटरों की दहाड़ और बुरे स्वभाव वाली माताओं की चीखपुकार के साथ साथ, अनुशासनहीन बच्चों को व्यवस्थित बनाये रखने के प्रयास में चपतें तथा बच्चों की चीखपुकार आई।

मुख्यद्वार खोल दिये गये, पैदल लोग पीछे खड़े हुए और कामोन्मद काल (must) की अवधि में, जो वास्तव में, हाथियों का समागम काल होता है, और जब वे एकदम जंगली हो जाते हैं, गंधयुक्त मानवता की याद दिलाने वाला, हाथियों का एक झुंड, मानवता का ज्वार, उभरकर भव्य हॉल में गया।

'मम्मा, मम्मा मैं जाना चाहता हूॅ, मैं जाना चाहता हूॅ!' एक छोटा बच्चा चिल्लाया।

'स्श्श्श!!' मां ने सावधान किया। तब वहॉ सहसा ही, बच्चे की अधिक जोर की आवाज हुई *'मम्मा मम्मा, मैं चला, मैं चला!'* तभी मम्मा नीचे पहुॅची और अपने मुलायम हाथों से बच्चे को एक मधुर चपत लगाई। एक क्षण के लिए, वहॉ शांति हुई और तब वहॉ टपकने की एक अजीब आवाज आई। नन्हें बच्चे ने संकोचपूर्वक कहा, 'मम्मा मैं कर चुका हूॅ!' और वह टपकते हुए पायजामे के साथ, और

अपने आसपास पेशाब बिखरते हुए, वहाँ खड़ा हुआ। बगल से, राहगीरों में से एक, एक निराशाजनक आह के साथ, एक पोंछे और बाल्टी के साथ आगे आया, मानो कि ऐसी चीजें, रोजमर्रा की घटनायें हों।

अधिक गहराई तक भरे हुए सोफे के नीचे के अंधेरे में से, दो हरी ऑखों ने, दिलचस्पी के साथ बाहर की ओर घूरा। वहाँ उस सोफे के नीचे, काली और सफेद बिल्ली का अपना पसंदीदा पड़ाव था, और लगभग हर दिन, वह अन–अनुशासित बच्चों और फूहड़ आयाओं (sluttish matrons) की, जो इसके ऊपर टिप्पणी करते हुए, उसके सम्बंध में अफवाह उड़ाते हुए, और हर समय चॉकलेट के कागजों, गत्ते के कपों को–कुछ भी चीज–फर्नीचर पर और फर्श पर, कहीं भी छोड़ते हुए, उस काम को, जो यह दूसरों के लिए पैदा करता था, बिना विचारे, इस पुराने घर में भीड़ लगाते थे, मोहित दिलचस्पी के साथ निगरानी करती।

बाबा घड़ी ने भावशून्य (inpassive) चेहरे के साथ, बड़े हॉल के सिरे पर देखा। वह कुछ हद तक अनमनी (disconcerted) थी, यद्यपि, जब दूसरा छोटा बच्चा हॉल की तरफ दौड़ा और उसे केवल लाल बॅटे हुए (braided) रस्से के द्वारा, जो उसकी चौड़ाई में बंधा था, रोका गया। एक नौकर जल्दी से आगे आया और उसने, जैसे ही वह आघात से बचने के लिये रस्से के नीचे झुकने वाला था, उसे कॉलर से पकड़ लिया। *'उसमें से बाहर निकलो, क्या तुम बाहर नहीं निकल सकते!,'* बच्चे को पीछे मोड़ते हुए और उसे हटाने के लिए, हल्का सा धकेलते हुए, वह आदमी गुर्राया।

भीड़ घनी, और मानसिकरूप से भी घनी होती गई। उन्होंने दीवार के चित्रों को, पूरे खुले हुए मुंह से, जीभ की छत के ऊपर से जीभ तक, उन पदार्थों के ढेर सारे थूक और खकार को चबाते हुए, घूरकर देखा। ये उनके लिए अजीब था, वे मुश्किल ही विश्वास कर सके कि उन्हें भूतकाल की झलकियों को पाने का, एक बड़ा विशेषाधिकार (privilege) प्राप्त था। सबकुछ, जो वे चाहते थे, वह था, अगले सप्ताह मिलने वाले वेतन के चैक की झलकी पाना।

सभी चीजों का, बुरी चीजों का भी, अंत होना चाहिए, यद्यपि बुरी चीजें, अच्छी चीजों की तुलना में काफी लंबे समय में समाप्त होती दिखाई देती हैं। किसी के पास अच्छा अनुभव होता है और ये, कोई इसे प्रारंभ हुआ जान सके, उससे भी लगभग पहले ही, समाप्त होता हुआ लगता है, परंतु एक बुरा अनुभव–आह! ये कुछ अलग ही चीज है। ये लंबा खिंचता हुआ दिखाई देता है, ये अनंत समय तक खींचा जाता हुआ दिखाई देता है। परंतु, वास्तव में, आखिर तो, इसका भी अंत आता है। इस दिन ऐसा ही था। जैसे ही गहरी होती हुई छायायें खिड़कियों पर गिरीं, (वैसे ही) भीड हल्की हुई, और वहाँ अनेक मोटरों का शोर हुआ, क्योंकि किराये की बड़ी बड़ी बसें खींच कर दूर कर दीं गईं थीं। तब, लोगों का जमावड़ा हल्का हुआ, जबकि, अभी भी, वहाँ दो या तीन, और तब एक या दो, और तब बाद में कोई नहीं थी। कृतज्ञतापूर्वक, सफाई करने वाले कर्मचारी, कागजों, डिब्बों, आइसकैंडी की तीलियों (popsicle sticks), तथा विविध प्रकार के कचरे को, जिसे अकुशल मानव, किसी भी उपलब्ध स्थान पर, जमा करना चाहते हैं, उठाते हुए, पूरी इमारत में, टिड्डियों (locusts) के झुंड की तरह चले।

मैदान के बाहर, काफी टूटे हुए कॉच उठाने पड़े, मृदु शीतल पेय (soft drink) की बोतलें, डिब्बे और कुछ निश्चित पसंदीदा झाड़ियों के नीचे से, महिलाओं के आंतरिक परिधान उठाये जा सके। पशु, जिन्होंने देखा, उन्होंने अक्सर आश्चर्य किया कि लोग कैसे अपने कुछ निश्चित परिधानों को उतार देते हैं, और तब उन्हें दोबारा न पहनने के लिए इतने लापरवाह होते हैं। परंतु तब, वास्तव में, पशुओं ने यह भी आश्चर्य किया कि लोग, पहले मामले में ही, इन परिधानों को धारण करते ही क्यों हैं, वे इनके बिना ही पैदा हुए थे, क्या वे नहीं हुए थे? फिर भी, जैसे ही जानवरों ने, स्वयं से, इतना प्रायः (so frequently) कहा, यहाँ मनुष्य के दुर्व्यवहार की विचित्रता (oddity) का, पूर्णरूप से, कोई लेखाजोखा नहीं है।

काफी देर बाद, रात घिर चुकी थी, और रोशनियाँ जलाई जा रहीं थीं, जबकि 'परिवार,' दिनभर

की प्राप्तियों और दिनभर के लाभ का, दिनभर में किये गये नुकसान, (पेड़ उखाड़े गये और खिड़कियां टूटीं), हानियों के विरुद्ध, लेखाजोखा बनाने के लिए, आसपास इकठ्ठा हुआ, क्योंकि, वास्तव में, ये विरला ही दिन था, जब किसी गंदी नाक वाले (snotty nosed), छोटे उजड्ड (little lout) व्यक्ति ने, हरित गृह (greenhouse) की खिड़कियों से कोई ईंट नहीं उछाली हो। अंत में, सारा काम कर लिया गया, सारा लेखाजोखा समाप्त हुआ। रात्रि के प्रहरी, पहले से निश्चित समयों पर, अपनी तेज रोशनी और अपनी घड़ियों के विभिन्न बिन्दुओं को देखते हुए, इमारत में चारों ओर गये। रोशनियॉं बुझा दीं गईं और रात्रि का प्रहरी–अनेक में से एक–सामूहिक सुरक्षा कार्यालय की ओर, नीचे चला।

काली और सफेद बिल्ली, आंशिकरूप से खुली एक खिड़की में होकर, बड़े हॉल में रेंगी, और संयत ढंग से बाबा घड़ी की ओर चली। *'मैंने अभी अभी, अपना रात का उम्दा खाना (supper) खाया है, बाबा,'* उसने अपने होठों को चाटते हुए कहा। *'मैं नहीं जानती कि तुम, यदाकदा अपनी जंजीरों के खिंचाव को छोड़कर, बिना खाना खाये कैसे चलती चली जाती हो। अब तुमको भूख लगनी चाहिए! तुम मेरे साथ बाहर क्यों नहीं आतीं, और हम एक या दो चिड़ियों का पीछा करेंगे और मैं तुम्हारे लिए एक चूहा पकडूगीं।'*

बाबा घड़ी, गहराई से, अपने गले में मुस्कराई, और (उसने) कुछ नहीं कहा। अभी समय नहीं था, क्योंकि हर आदमी जानता है कि, कोई भी बाबा घड़ी, अर्द्धरात्रि के चतुर्थांश पहले से (पौने बारह बजे से) नहीं बोलती क्योंकि ये जादुई समय की ओर नेतृत्व करती रही है, जब सबकुछ जादू है, जब पूरा विश्व भिन्न दिखाई देता है, और जब वे, जो सामान्यतः स्वर रहित होते हैं, अनेक साधन (wherewithal) पा जाते हैं, जिनसे वे अपने विचारों को स्वर देते हैं। थोड़े समय के लिए, बाबा घड़ी केवल सोच और कह सकी–जैसी उसकी इच्छा थी, *'टिक टॉक, टिक टॉक, टिक टॉक।'*

दूर, जहॉं अत्यंत महत्वपूर्ण महिलाओं का एक विश्रामकक्ष (retiring room) हुआ करता था, बाबा घड़ी, दिन भर की कुछ घटनाओं के ऊपर, आनंदित हुई। उसने सोचा, वह अत्यंत भाग्यशाली थी कि, जब दो लड़ते हुए उपद्रवी (hooligans), रस्से के अवरोध के ऊपर गिर पड़े थे, और उसके पैरों के ऊपर गिर गये थे, उसको अपने आधार से नीचे नहीं धकेला गया। सौभाग्यवश, दो चौकस सेवकों ने आदमियों को पकड़ लिया और उन्हें दरवाजे के बाहर, अनौपचारिकरूप से (unceremoniously) गठरी बना दिया, जहॉं उनको बाह्य सुरक्षा के लोगों द्वारा पकड़ा गया और उछालकर मैदानों के बाहर फैंक दिया गया। नातिन घड़ी ने, आतंक से कांपते हुए, इसके ऊपर सोचा, जिसने उसके गले में धात्विक आवाज (clatter) पैदा की। उसने यह भी सोचा कि भोर कितनी अच्छी रही थी, जब नौजवान पैदल उसके पास आया था, उसकी अटारी पर हाजिरी दी थी, और उसके भारों को ऊपर उठाते हुए, उसे पोषण दिया था और तब उसने अत्यंत सावधानी के साथ, समय को समायोजित किया था, ताकि, अब वह, बाबा घड़ी के साथ, एकदम सही समय में (in exact synchronisation) टुनटुनाई और चोट की।

हर चीज शांत थी, उतनी शांत जितनी कि किसी पुरातन घर में चीजें शांत हो सकती हैं। घड़ियॉं, अपनी नीरस (monotonous) टिकटुक के साथ चलती गईं, यात्रा कर रहीं घड़ियों ने कहा, टिकेती, टिकेती, टिकेती और मध्यरात्रि के पौने बारह बजने की अभिलाषा की, ताकि वह अपने कुछ साहसिक अभियानों को बता सके। और काली और सफेद बिल्ली ने, बाबा घड़ी की सुइयों को देखा और उदासीन भाव से, ये सोचते हुए कि अभी समय नहीं है, आहें भरीं, जबतक कि अर्द्धरात्रि के पौने बारह न बज जायें, हम पुरानी घड़ी को कभी भी बात करता हुआ नहीं पायेंगे। सफेद और काली बिल्ली, हॉल के आरपार चली और एक पुराने खजाने पर लचीले ढंग से उछली। उसने, उस पर टंगे हुए परदे पर झपट्टा मारा और सोने चली गई, परंतु लंबे समय के लिए नहीं। खिड़की के बाहर की घटनाओं ने उसे जगता हुआ रखा और जैसे ही मूर्ख चिड़ियायें हवा में उड़ती हुई खिड़की के पास आईं, उसे दबे

पॉव चलना पड़ा और म्याऊं की आवाजें निकालनी पड़ीं। *'ओह! यदि मैं केवल इस खिड़की को खोल पाती,'* उत्तेजित बिल्ली ने विस्मय से कहा, *'परेशान करने वाली चिड़ियाओ, मैं तुम्हें एक या दो पाठ पढ़ा दूंगी, वह नहीं कि तुम इससे लाभ उठाती हुई जिओगी।'* चिड़िया ने कमरे के अंदर श्वेतश्याम छाया देखी और तब खतरे की कर्कश चीखें (squeaks) निकालते हुए उड़ गईं।

अंत में, बाबा घड़ी ठुनकी और फिर ठुनकी, और रात के साढ़े ग्यारह बजे का आधा घंटा बजाया। नातिन घड़ी भी, वैसे ही ठुनकी और साथ ही घंटा भी ठोका। यात्रा करती हुई घड़ी, अपनी टिकटी, टिकटी, टिकटी के साथ, तेज चलती दिखाई दी, और श्वेत–श्याम बिल्ली ने, एक ऑख खोली–इस बार दायीं ओर की–और घड़ी के चेहरे पर ऊपर की ओर, ये देखने के लिए देखा कि उसकी सुईयॉं, वास्तव में, साढ़े ग्यारह की स्थिति में थीं।

टिक टॉक, टिक टॉक, टिक टॉक, घड़ियॉं सामंजस्य में चलती गयीं, और तब अंत में, बाबा घड़ी के लंबे डिब्बे में धातुओं की टकराहट हुई, धातु की टकराहट और तब जैसे ही भार नीचे गिरा, जंजीर ने चलना और कुलबुलाना प्रारंभ किया। अर्द्धरात्रि में चतुर्थांश बाकी था। बाबा घड़ी ने खुशी में गाना गाया। अर्द्धरात्रि को एक चतुर्थांश (quarter) बाकी, लगभग वह समय है, जबकि एक दिन मरता है और एक दिन पैदा होता है, लगभग वह समय, जब एक चक्र घूमता है और उल्टा चक्र बन जाता है। *'और अभी समय है,'* बाबा घड़ी ने सोचा, *'बात करने के लिए!'*

'बाबा घड़ी! बाबा घड़ी! मैं पहले बात करना चाहती हूँ,' श्याम–श्वेत बिल्ली, जो अपने पैरों पर उछल चुकी थी, ने कहा। वह जमीन पर कूदी, और भलीभांति पॉलिश किये गये लम्बे डिब्बे के सामने, एक स्थिति की ओर दौड़ लगाई।

बाहर की ओर, चंद्रमा, जो पिछली रात थी, उसकी तुलना में, थोड़ा सा चमकीला होकर चमक रहा था क्योंकि यह पूर्णिमा की ओर पहुॅंच रहा था और ये अपेक्षाकृत शांत रात्रि थी। आकाश के आरपार कोई तूफानी बादल, तेजी से नहीं बह रहे थे, बाहर के पेड़ों की शाखाओं को लड़ाने की ध्वनि पैदा करने के लिये, कोई हवा नहीं थी, सबकुछ शांत था, सबकुछ स्थिर था, और चंद्रमा प्रखरता से, अंदर की ओर चमक रहा था।

'अब ठीक है, नौजवान बिल्ली,' बाबा घड़ी ने कहा, *'इसलिए तुम पहले बात करने का दावा करती हो, एह? ठीक है, मुझे ऐसा लगता है, जो कुछ तुमने कहा, उस पर तुम पहले से ही पहले बात कर चुकी हो। परंतु तुम किस सम्बंध में बात करना चाहती हो, नौजवान बिल्ली?'*

काली और सफेद बिल्ली ने अपने शौच को रोका और उठकर सीधी बैठ गई और उसने कहा, *'बाबा घड़ी, मैं उसके बारे में, जो तुमने बीती रात हमें बताया था, बहुत अधिक सोचती रही हूॅं। और जो तुमने लोलक के सम्बंध में कहा था, उसके बारे में सोचती रही हूॅं। अब, बाबा घड़ी, यदि लोलक के हर झोंके के साथ, अच्छे और बुरे, एकांतर क्रम से आते हैं, तब उनके पास अच्छा और बुरा करने के अधिक अवसर नहीं होते, क्योंकि हर कंपन में, उन्हें मात्र लगभग एक सेकंड का समय मिलता है या मैं ऐसा समझती हूॅं। तुम उसको कैसे समझा सकती हो, बाबा घड़ी?'*

काली और सफेद बिल्ली अपनी पूॅंछ सीधी फैलाते हुए, वापस अपने कूल्हों पर बैठी। वह दृढ़ता के साथ बैठी थी, मानो उसे बाबा घड़ी से, अपना संतुलन खराब करते हुए, विस्फोट के साथ की टूटने की अपेक्षा थी। परंतु नहीं, बाबा घड़ी के पास पुराने जमाने की बुद्धि और पुराने जमाने की सहनशीलता भी थी। उसने धात्विक आवाज के साथ, केवल अपने गले को फिर से साफ किया और कहा, *'परंतु मेरी प्यारी नन्हीं बिल्ली, तुम मत सोचो कि ब्रह्मांड का पेंडुलम एक सेकंड के अंतरालों के साथ धड़कता है,*

क्या तुम सोचती हो? यह हजारों, हजारों साल की अवधि में धड़कता है। समय, तुम जानती हो, नन्हीं बिल्ली, पूरी तरह से सापेक्ष है। अभी हम यहाँ हैं, और इंग्लैंड में बारह बजने में चौदह मिनट शेष हैं, परंतु यही दूसरे देशों में अलग समय है, और फिर भी, तुम तत्काल ही ग्लासगो (Glasgow)[21] *जाओ, तत्काल ही तुम पाओगी कि ये बारह बजने में चौदह मिनट बाकी नहीं थे, परंतु ये पंद्रह मिनट बाकी हो सकते हैं। वास्तव में, ये सब बड़ा रहस्यमय है, और मेरी खुद की समझ, मेरे खुद के विशेष लोलक की चोटों तक सीमित है,'* बाबा घड़ी ने, जबकि उसने जंजीर की अगली कड़ी के रूप में दांते के ऊपर और दांते के डिब्बे (gear box) में अंदर चलते हुए, थोड़ी सांस ली, एक क्षण के लिए बोलना बंद किया। तब, जबकि भार अपने गिरने को रोक चुका था, और वह दोबारा बोली।

'नन्हीं बिल्ली, तुमको ध्यान रखना चाहिए कि हमारी इकाई–अर्थात्–हम घड़ियों की इकाई, चौबीस घंटे है। अब हर घंटे में साठ मिनट होते हैं और हर मिनट में साठ सेकंड, इसलिए इसका अर्थ ये है कि हर एक घंटे में तीन हजार छः सौ सेकंड होते हैं। इसलिए चौबीस घंटे में सेकंड पेंडुलम की धड़कन, छियासी हजार चार सौ बार चल चुकी होगी।'

'फ्यू!' बिल्ली ने कहा, 'ये तो बहुत सारे आघात (strokes) हैं, क्या नहीं हैं, 'हे भगवान, मैं कभी ऐसी किसी चीज को नहीं सुलझा पाई!' और काली–सफेद बिल्ली ने, पुनः नवीनीकृत प्रशंसा के साथ, बाबा घड़ी की ओर देखा।

'हॉ,' अपने विषय को गर्म करते हुए, और अपने लोलक को और जोर से पीटते हुए, बाबा घड़ी ने कहा, *'परंतु ब्रह्मांड के लोलक का तंत्र, पूरी तरह से भिन्न है, क्योंकि, अपनी गणना के सम्बंध में हम, चौबीस घंटों के साथ व्यवहार करते रहे हैं, परंतु हमको याद रखना चाहिए कि इस पृथ्वी के परे, वास्तविक समय में, विश्व हर चक्र में, दस लाख सात सौ अट्ठाइस हजार वर्ष चला जाता है, और सभी चक्र चार के समूह में चलते हैं, जैसे कि मेरा घंटे का आघात भी चलता है, एक चौथाई, आधा और तीन चौथाई। इसलिए तुम देखती हो, कि हम एक अच्छी परंपरा का अनुसरण कर रहे है। ब्रह्मांड चौकड़ी में चलता है और इसलिए वैसे ही, बजने वाली हम घड़ियॉ भी।'*

काली और सफेद बिल्ली ने अपना सिर हिलाया, मानो कि वह हर चीज, जो कही गई थी, को समझ चुकी हो, मानो कि ये सारा ज्ञान, पूरी तरह से उसकी सामर्थ्य में था, और तब उसने कहा, 'परंतु, बाबा घड़ी, उसके बारे में क्या, जबकि पेंडुलम अपने झोके (swing) के अंत की ओर हो? तुमने कहा था कि ये एक सेकंड के एक भाग के भी, एक भाग के लिए रुकता है। उस सम्बंध में क्या, जिसे तुमने 'यथार्थ् समय (real time)' कहा था?'

बाबा घड़ी, अपने आप में मंद मंद मुस्कराई और उसने कहा, *'आह! हॉ, वास्तव में, परंतु जब हमें दस लाख सात सौ अट्ठाइस हजार वर्ष, खेलने के लिए मिलते हैं, तब हम, हर कंपन के अंत में, अनेक वर्षों के लिए, लोलक का रुकना बर्दाश्त कर सकते हैं, क्या हम नहीं कर सकते? परंतु ये सब ऐसा महासागर है कि अनेक मनुष्य, इसे समझ नहीं सके, और न ही अनेक घड़ियॉ इसे समझ पाईं। हम तुम्हें इस, सभी ज्ञान के साथ विस्फोटित दिमाग, नहीं देना चाहते, नन्हीं बिल्ली, इसलिए शायद हमें उस विशेष विषय को छोड़ देना चाहिए।'*

'परंतु, बाबा घड़ी, एक चीज है, जिसे मैं विशेषरूप से पूछना चाहती हूँ,' नन्हीं काली–सफेद बिल्ली ने कहा, *'यदि झूले के एक तरफ देवता और दूसरी तरफ शैतान है, तो उन्हें कुछ भला या कुछ*

---

21 अनुवादक की टिप्पिणी : ग्लासगो (Glasgow), क्लाडे (Clyde) नदी के किनारे बसा हुआ एक बंदरगाह है। स्कॉटलैंड (scottland) की निचली भूमि में ये शहर, विक्टोरिया काल की अपनी कलाकृतियों और वास्तुकला के लिये प्रसिद्ध है। 18वीं से 20वीं शताब्दी के बीच, ये बहुत उन्नत शहर रहा। व्यापार और जहाज बनाने के उद्योगों के कारण, आज ये राष्ट्र का सांस्कृतिक केन्द्र है यहॉ स्कॉटिश ओपेरा, स्कॉटिश बैले और स्कॉटलैंड का राष्ट्रीय नाट्यघर संग्रहालय और अन्य मनोरंजन के प्रतिष्ठान है। ये स्कॉटलैंड का सबसे बड़ा शहर है और यूनाईटेड किंगडम (UK) का चौथा सबसे बड़ा आबादी वाला ग्लासगो का बंदरगाह, विश्व के बड़े बंदरगाहों में से एक है।

बुरा करने के लिए समय कैसे मिल जाता है।'

बाबा घड़ी के चेहरे के सामने वाला कॉच, चांदनी में प्रखरता से चमका, और तब एक या दो पलों के बाद, उसने उत्तर दिया, 'जब हमें ये सारे वर्ष, एक कंपन के लिए मिलते हैं, तो हम हर कंपन के अंत में, लगभग दो हजार वर्ष झेल सकते हैं, इसलिए हमें किसी दो हजार वर्ष के एक अंतराल पर अच्छा, और अगले दो हजार वर्ष के अंतराल पर बुरा मिलता है, और तब अगला कंपन, फिर से, अच्छा लायेगा, और उसके बाद, जो बुरा लाता है, वह कंपन करता है। परंतु, बाबा घड़ी ने शीघ्रतापूर्वक कहा, *'मुझे रुकना चाहिए, नातिन घड़ी का और मेरा भी, अर्द्धरात्रि के घंटों को बजाने का समय आ गया है, जबकि पूरी प्रकृति परिवर्तन करने के लिये मुक्त है, जब दिन मर जाता है और एक नया दिन जन्म लेता है, और लोलक का झूलना, पहले अच्छे की ओर, तब बाद में, बुरे की ओर, और तब बुरे से अच्छे की ओर होता है—मुझे क्षमा करें'* और बाबा घड़ी, अपने भाषण में सहसा रुक गई, जबकि उसके अंदर के पहिए घड़घड़ाये और गिरते हुए भारों ने शोर किया, और बाबा घड़ी के लंबे डिब्बे में से, अर्द्धरात्रि का घंटा झनझनाने की आवाज आई और उसके बाद, उसने गंभीर स्वर में, बारह बार चोट की, और तब नातिन घड़ी के समीप गूंज हुई और उसने वफादारी के साथ, गूंज और आघातों को दोहराया।

बगल से, छोटी मेज के ऊपर यात्री घड़ी स्वयं के प्रति बड़बड़ाई और उसने कहा, *'वे दोनों, क्या खूब, अच्छी मुखर जोड़ी हैं। वे पूरे समय, आपस में बतियाती रहती हैं। वाह!'*

अध्याय–नौ

कोई वायरस (virus), सूक्ष्मदर्शी से देखे जाने के लिए, अत्यधिक छोटा होता है, और एक मनुष्य प्राणी की त्वचा पर रहने के लिए, पृथ्वी पर जितने जिन्दा मनुष्य हैं, उससे अधिक संख्या में, दूसरे अनेक जीवित प्राणी, जैसे विरी (viri)[22], बैक्टीरिया (bacteria), इत्यादि वहाँ हैं, भुजा के हर एक वर्ग सेंटीमीटर क्षेत्रफल में, ऐसे लगभग चार हजार प्राणी भीड़ बनाकर रहते हैं और भुजाओं (arms), सिर (head), कांख (armpit) और उरुसंधि (groin) पर, ये आंकड़ा बीस लाख से अधिक भी हो सकता है।

वैरा (Vera) वायरस, सभी समस्याओं, जो विश्व के मनुष्य कहे जाने वाले लोगों को परेशान कर रहीं थीं, के ऊपर सोचती हुई, अपने रोमकूप (pore) की घाटी में बैठी हुई थी। उसके बगल से, उसकी निकटतम वायरस दोस्त, ब्रूनहिल्डे (Brunhilde) बैठी हुई थी। वे प्रसन्नता से कांपीं, जैसेकि केवल जैली–जैसी विरी कर सकती थी। तब वैरा ने कहा, *'ओह, मैं भ्रम की एक ऐसी स्थिति में हूँ, मुझे अपने सजीव आंकड़े देने के लिए कहा गया है, और मैं लोगों से ऊपर कैसे हो सकती हूँ, जबकि मैं भव्य पच्चीस नैनो मीटर की हूँ? ओह, हम इसे मैट्रिक प्रणाली में क्यों नही बदल देते, और यदि ऐसा किया गया होता, तो वह बहुत सरल हो सकता था।'*

ब्रूनहिल्डे, हिंसकरूप से, डगमगायी और इसका अर्थ हंसना था। और तब उसने कहा, *'ठीक है, तुम्हें लोगों को नैनो मीटर का सजीव आंकड़ा बताने की आवश्यकता है। अभी उन्हें बता दो कि एक नैनो मीटर, एक मीटर का एक अरबवाँ हिस्सा होता है, यदि वे फिर भी बेवकूफ हैं कि वे नहीं जानते कि मीटर क्या होता है–हम सब जानते है कि ये एक चीज होती है, जिसे बिजली वाला पढ़ता है–केवल ये कहो कि, ये एक मिलीमाइक्रोन* (millimicron) *के बराबर होता है। बेझिझकरूप से, वैरा, मैं सोचती हूँ कि तुम तिल का ताड़ बना रही हो।'*

'तुम इतनी मूर्ख (asinine) कैसे हो सकती हो, ब्रूनहिल्डे?' वैरा ने, पर्याप्त कटुता के साथ, मुंहतोड़ जवाब दिया, *तुम जानती हो कि, यहाँ कोई तिल का पहाड़* (molehill) *नहीं है, और जहाँ तक तिलों का सवाल है, ठीक है, उन्हें अभीतक खोजा नहीं गया है।'* उसने छींका–यदि कोई वायरस छींक सकता है– और फिर से जैली जैसी खामोशी में सो गयी।

मानव नामक 'विश्व,' एक अतिविशिष्ट स्थान था। इस विश्व के सभी निवासी घाटियों या रोमकूपों (pores) में रहते थे, क्योंकि, कुछ उल्लेखनीय कारण से, जिसे कोई कभी समझ नहीं सका, विश्व, कुछ निश्चित स्थानों को छोड़कर, एक बड़े अजीब से कंबल, या बादल या कुछ वैसी ही चीज के साथ, पूरी तरह ढका रहता था। ये, आड़े–तिरछे बुने हुए, अपने बीच ऐसा स्थान रखते हुए कि कोई क्षणभंगुर वायरस, कुछ साल दिये जाने पर, उस अवरोध में होकर उस ओर छलांग लगा सकता था, और इस अजीब पदार्थ की सतह से आकाश को देख सकता था, बड़े बड़े खंबे दिखाई दे रहे थे। परंतु ये, वास्तव में, उल्लेखनीय था क्योंकि, अक्सर पूरे विश्व में बाढ़ आ जाती। लाखों वायरस आबादी, क्षण भर में ही डुबो दी जाती, और वैरा, ब्रूनहिल्डे जैसे लोग और उनके कुछ निश्चित मित्र, जिन्होंने रोमकूप घाटियों में जीवित रहने की कला सीख ली थी, वे ही बचे रह जाते।

किसी का, अपना ऐंटिना घाटी के ऊपर उठाना, और सभी लाशों को देखना, जो पड़ौसी घाटियों के बीच समतल स्थान में, कचड़े की तरह पड़ी होती थीं, दिल दहलानेवाला दृश्य हुआ करता था। परंतु कोई कभी भी ये नहीं समझा सका कि ये क्या था। वे जानते थे कि समय के निश्चित अंतरालों पर, अधिकांश विश्व को ढकने वाले महान अवरोध, हटा दिये जायेंगे और तब बाढ़ आ जायेगी, और तब दूसरा अवरोध आयेगा, जो हिंसकरूप से आंदोलित होगा। उसके बाद, फिर भी, एक अगला अवरोध आयेगा और थोड़े समय के लिए शांति। वैरा वायरस और उसके मित्र, रोमकूपों की अपनी घाटी

22 अनुवादक की टिप्पिणी : विरी (viri), वाइरस (virus) का अमानक बहुवचन है, जो गणना के मामलों में उपयोग में लाया जाता है। मानक बहुवचन (viruses) है।

में, एक ऐसे स्थान पर बैठे हुए थे, जो कभी ऐसे अवरोध से प्रभावित नहीं हुआ। वे अपने ऊपर आकाशों को देख सकते थे, और बैरा ने इस मौके पर ऊपर देखते हुए कहा, *'मैं अक्सर आश्चर्य करती हूँ, ब्रूनहिल्डे, क्या हमारे विश्व के अलावा, कोई दूसरे विश्व हैं?'*

एक नया स्वर फूटा, बनीयानवैरा (Bunyanwera)[23] नाम का एक सभ्य वायरस, जो युगांडा की संस्कृति (Ugandian culture) से पैदा हुआ था, या कम से कम, ये उसके पूर्वजों की प्रजाति–स्मृति (racial memory) में रहा होगा, अब वह, मनुष्य कहे जाने वाले विश्व का मात्र दूसरा निवासी था। उसने कहा, *'ओह बकवास, वैरा, बकवास, तुम पूरी अच्छी तरह जानती हो कि यहाँ हमारे जैसे हजारों लाखों विश्व हैं। क्या हमने कुछ अंतरालों पर उनकी झलकी नहीं पाई है? परंतु तब, हम नहीं जानते कि वहाँ उनके ऊपर कोई जीवन था, क्या हम जानते थे?'*

चौथी ध्वनि ने पुकारा, *'ठीक है, मैं सोचती हूँ कि ये विश्व, विशेषरूप से, हमारे लिए बना था। हमारे जैसे जीवन के साथ, दूसरा कोई विश्व अस्तित्व में नहीं है। मैं सोचता हूँ कि भगवान द्वारा, पूरा विश्व, केवल हम वायरसों के लिए बनाया गया था। उन लाभों की तरफ देखो, जो हमें प्राप्त हैं, बुद्धिमत्ता की कोई भी ऐसी शक्ल नहीं है, जिसकी हमारे साथ तुलना की जा सके, हमारे पास आसपास छितराई हुई विशिष्ट घाटियाँ हैं, और यदि वे विशेषरूप से, हमारे लिए नहीं बनाई गई होतीं, तो वे आसपास कैसे आईं?'* वक्ता, काटूग्वामा (Catu Guama), एक ज्ञानी (erudite) प्रकार का था, वह थोड़ा सा आसपास रहा था, वह पास की, अगले रोमकूप की घाटी तक भी गया था, इसलिए दूसरे उसकी राय को आदर के साथ सुनते थे। परंतु तब अचानक ही, बुनियानवैरा फूट पड़ा, *'ओह बकवास, बकवास, भगवान जैसी कोई चीज नहीं है, वास्तव में, भगवान है ही नहीं। मैं समय समय पर, अपने लिए छोटी छोटी चीजें किये जाने की प्रार्थना करता रहा हूँ, और यदि भगवान होता, क्या तुम सोचते हो कि वह अपने बच्चों में से किसी को, पीड़ा झेलने देता? मुझे देखो, मेरी जैली का एक अंश कुचल गया है, ये तब हुआ, जब मैं घाटी के सर्वोच्च बिंदु के काफी समीप पहुँच गया था और अवरोध के एक खंड ने, पीठ की तरफ से मुझे रगड़ दिया था। नहीं, वास्तव में कोई भगवान नहीं है, और यदि होता, तो उसने मेरी पीठ को अच्छा कर दिया होता।'*

कुछ समय के लिए, वहाँ स्तब्ध शांति रही, तब वैरा ने कहा, *'ठीक है, मैं इस सम्बंध में नहीं जानता, मैंने भी प्रार्थना की है परंतु मुझे प्रार्थनाओं का कोई उत्तर सुनाई नहीं दिया और मैंने कभी देवदूत वायरसों को आसपास हवा में उड़ते हुए नही देखा। क्या तुमने देखा है?'* दूसरे, एक पल के लिए शांति में बैठे, और तभी एक सर्वाधिक भयानक आपदा (catastrophe) आई; आकाश में से एक बड़ी 'कुछ चीज' ने नीचे धावा बोला और सभी बड़े खंबों को जिस पर वे छाया के लिए भागदौड़ कर रहे थे, उखाड़ फेंका। *'ओह मेरे भगवान मैं, ओह मेरे भगवान मैं',* जैसे ही महान *'कुछ चीज' साफ हुई, ब्रूनहिल्डे ने कहा, 'वह एक बंद धोखा था, क्या ये नहीं था, हम उस बार लगभग साफ हो गये होते!'*

परंतु बाहरी अंतरिक्ष से एक खतरे से निकलने पर–ये एक उड़नतश्तरी (UFO) रही होगी, उन्होंने सोचा– दूसरा मामला हुआ। एक सहसा चुभती हुई बाढ़, उन पर गिरी और उन्हें सदमा पहुँचाने वाली एक कीटाणुनाशक (anticeptic) गंध, उन पर उड़ेली गई, और तत्काल ही वैरा, ब्रूनहिल्डे, बुनियानबैरा और काटूग्वामा ने अस्तित्व में होना समाप्त कर दिया, जैसे ही मानव कहे जाने वाले विश्व ने, कटु स्तम्भक (astringent) अपने चेहरे पर थपथपाया।

कुमारी चींटी (ant) शांति से एक बड़े पत्थर पर बैठी थी। उसने अपने पंखों को सावधानीपूर्वक

---

23 अनुवादक की टिप्पिणी : बनीयामवैरा (Banyamwera), एक वायरस (virus) है, जो मनुष्यों और पीत ज्वर (yellow fever) के मच्छरों को समानरूप से प्रभावित करता है, इसका नामकरण पश्चिमी युगांडा (western Uganda) के बनीयामवैरा शहर के नाम पर किया गया है, जहाँ इस प्रकार की प्रजाति 1943 में खोजी गई थी। न्गारी वाइरस (Ngari virus), को केन्या (Kenya) और सोमालिया (Somalia) में महामारी के रूप में फूटे ज्वर का कारण माना जाता है। ब्रूनहिल्डे वाइरस (Brunhilde virus), को मनुष्यों में पोलियो का कारण माना जाता है। काटू गुआमा वाइरस (CATU Guama virus),, मस्तिष्क ज्वर का कारण है।

साफ किया और सुनिश्चित किया कि उसकी सभी टांगें साफ और मजबूत थी। उसे यह सुनिश्चित करना पड़ा कि वह पूर्णतः उतनी पूर्ण दिखाई दे रही थी, जितनी कि वह हो सकती थी, क्योंकि वह, एक सैनिक चाची के साथ, जिसको अप्रत्याशित छुट्टी दे दी गई थी, सैर पर जाने वाली थी। वह अपनी मित्र, बेर्था ब्लेकबीटल (Bertha Blackbeetle) की ओर मुड़ी, जो दोपहरी की धूप की गर्मी में झपकी ले रही थी। *'बेर्था, आप महान हैं!'* उसने कहा, *'मेरी भलीभांति जॉच करो, क्या तुम करोगी? सुनिश्चित कर लो कि हर चीज वैसी ही है, जैसा इसे होना चाहिए था।'*

बेर्था उठ खड़ी हुई और उसने अपनी एक ऑख खोली, और सावधानी के साथ, कुमारी चींटी की ओर देखा। *'मेरी, ओह मेरी, तुम निश्चितरूप से, सूजी हुई लगती हो।'* उसने कहा, *'हमारा सैनिक लड़का, जब वह तुम्हें मिलेगा, सीधे ठोकर खा जायेगा। परंतु तुम जानती हो, यह अत्यधिक जल्दी है, बैठो और धूप का मजा लो।'*

वे साथसाथ बैठीं और उन्होंने अपने सामने के निर्जन विश्व को देखा। वहॉ बड़ेबड़े पहाड़ थे, बड़ेबड़े पहाड़, जो ऊॅचाई में, कुमारी चींटी से बीसियों गुने बड़े रहे होंगे, और उनके बीच में सूखी शुष्क जमीन थी, देखे जाने के लिए, घास का एक तिनका भी नहीं, कोई खरपतवार नहीं, बंजरपन और मिट्टी में विशेष प्रकार के विस्तृत चिन्हों को छोड़कर कुछ नहीं।

कुमारी चींटी ने ऊपर आकाश की तरफ देखा और कहा, *'बेर्था, अपने जीवनभर, मैंने अपना खुद का एक सैनिक लड़का चाहा है और मैंने प्रार्थना की है कि मुझे एक ऐसा मित्र मिलना चाहिए। क्या तुम्हारा ख्याल है कि, मेरी प्रार्थना का उत्तर दिया गया है?'*

बेर्था ने अपने एंटीनाओं (antennae) में से एक फड़फड़ाया, और तब धीमे से और सावधानी से कहा, *'जी, मैं नहीं जानती, मैं खुद भगवान पर विश्वास नहीं रखती, यदि कोई है, तो उसने कभी मेरी प्रार्थनाओं को नहीं सुना। जब मैं काफी जवान थी, वास्तव में, जब में यौवन अवस्था में थी, मैं अक्सर भगवान से प्रार्थना, जिसके बारे में मुझे काफी कुछ कहा गया था, किया करती थी, परंतु मेरी प्रार्थनायें कभी प्रत्युत्तरित नहीं की गईं, और मैं इस निष्कर्ष पर आई कि मैं–पूरी तरह से, तुम जानती हो–अपना समय व्यर्थ गंवा रही थी। भगवान में विश्वास करने में क्या भलाई है, यदि वह हमें, ईश्वर की तरह से पर्याप्त, थोड़ा सा प्रमाण भी नहीं देता? यही है जो मैं कहती हूँ।'* आलस के साथ उसने पूरा चक्कर घूम लिया और फिर से बैठ गई।

कुमारी चींटी ने सावधानीपूर्वक, अपनी सामने की टांगों को सिकोड़ा, और तब कहा, *'ये वास्तव में, एक समस्या है, तुम जानती हो बेर्था, ये वास्तव में एक समस्या है। मैं आश्चर्यचकित हूँ कि प्रकाश के वे सारे बिन्दु जिन्हें हम रात को देखते हैं, दूसरे विश्व हैं, और यदि वे दूसरे विश्व हैं, क्या तुम्हारा ख्याल है कि वहॉ कोई रहता है? यदि ये एकमात्र विश्व है और इस पर हम एकमात्र लोग है, यह सोचने में हास्यापद है। तुम क्या सोचती हो?*

बेर्था ने आह के साथ सांस बाहर निकाली, और तब कहा, *'ठीक है, मैं नहीं जानती कि दूसरे विश्व हैं भी या नहीं। मैं समझती हूँ, कि ये कुछ एकदम अलग चीज है। कुछ महीने पहले, मैं किसी दूसरे कीट से मिली थी और उसने बताया था–वह पंख वाला कीट था–कि वह काफी लंबा उड़ चुका था–लंबी लंबी दूरी तक, और तब वह एक बहुत बड़े स्तंभ के पास आया, ओह इतना बड़ा स्तंभ कि मैं विश्वास भी नहीं कर सकी कि वह मुझे क्या कह रहा था, और उसने मुझे बताया कि हर रात को, एक निश्चित समय पर, स्तंभ की चोटी चमक उठती थी। अब मैं विश्वास नहीं कर सकती कि ऐसा विश्व भी होगा, जो केवल तभी चमकता है, जब हमारे विश्व में अंधेरा होने लगता है। तुम क्या सोचती हो?'*

कुमारी चींटी अधिक और अधिक भ्रमित होती जा रही थी। *'ठीक है, मुझे हमेशा सिखाया गया था कि ये विश्व हम कीटों के लिए बना हुआ था, मुझे हमेशा बताया गया था कि यहॉ, हम कीटों से बड़ा, किसी प्रकार का जीवन नहीं है, अर्थात् तुम और मैं, बेर्था। इसलिए यदि ये सत्य है, यदि हमारे*

पुजारी ठीक हैं, तब निश्चितरूप से, कोई भी चीज, हमसे अधिक चतुर नहीं हो सकती, और उन्हें हमसे बहुत अधिक चतुर होना पड़ेगा, यदि वे, केवल तब, यह विश्व अंधकारमय हो जाये, अपने विश्व को अस्तित्व में घुमा सकते हों। मैं नहीं जानती, किसका विश्वास किया जाये, परंतु मेरा ख्याल है कि इसके पीछे कोई बड़ा उद्देश्य है और तुम्हारी तरह से, भगवान से प्रार्थना करते हुए, जिसने कभी हमको उत्तर देने का कष्ट नहीं उठाया, मैं थोड़ी सी थक रहीं हूँ।'

समय गुजरता गया और परछाईयॉ लंबी होने लगीं। एक छोटी दूरी से, एक चींटी की आवाज ने पुकारा, *'हे कुमारी चींटी, तुम कहॉ हो? मेरे पास तुम्हारे लिए एक संदेश है।'* कुमारी चींटी अपनी टांगों पर खड़ी हुई और बड़े पत्थर की कोर के ऊपर आगे बढ़ी। 'हॉ, हॉ ये क्या है?'' वह एक दूसरी चींटी की ओर देखते हुए, दूसरी चींटी से कुछ दूरी पर खड़े होते हुए, नीचे मिलने को आई।

दूसरी चींटी ने ऊपर देखा और अपने दो एंटिनाओं के साथ कुलबुलाई, और तब उसने कहा, *'तुम्हारा सैनिक लड़का चला गया और तुम्हें छोड़ गया। उसने कहा कि कुल मिलाकर उसका ख्याल था, कि तुम उसके लिए ठीक चींटी कन्या नहीं थी, इसलिए वह फूहड़ नौजवान, जो वहॉ ऊपर रहता है, की तरह, उतनी तेजी से चला गया'* और वह इशारा करती हुई घूम गई। कुमारी चींटी, एक धमाके की आवाज के साथ गिरी, उसका पूरा संसार उसके साथ टूट गया। वह सैनिक लड़के के आने की, और उससे प्रेम करने की, प्रार्थना करती रही थी, और तब वे मिलकर एक घोंसला बनाते। परंतु अब–उसके लिए जीवन में बचा ही क्या है?

जैसे ही एक भयानक धमाका, आते हुए भूकंप की तरह का धमाका, जमीन की ओर आया, कुमारी चींटी और बेर्था, दोनों ने अचानक ही चलना प्रारंभ किया। वे, ये देखने के लिए कि क्या हो रहा था, पूरी सीमा के साथ प्रयास करते हुए, अपने पैरों पर खड़ी हुईं, परंतु इससे पहले कि वे चल सकें, अंधेरी आकृतियॉ दूरी पर झपट पड़ीं और कुमारी चींटी और उसकी दोस्त, और संदेशवाहक चींटी, जैसे कि स्कूली बच्चे शाम को क्लास छोड़कर जाते हुए, घर की ओर जाते रास्तों पर, अपने खेल के मैदानों पर आते समय सिमट जाते हैं, चटनी के रूप में कुचल दी गईं।

देहात में कहीं दूर, घास ऊँची खड़ी थी। वह सुंदर थी, स्वस्थ घास, इतनी हरी, जितनी कि होनी चाहिए थी, धूप ने इसे गर्म कर दिया था और वर्षाओं ने इसे पोषित किया था और अब ये क्षेत्र किसी की भी प्रफुल्लता के लायक था। क्षेत्र, जो उसके निवासियों को असली जंगल दिखाई देता था, की गहराइयों में, खेत की दो छोटी चुहियॉ, पृथ्वी पर, घास की डंडियों के आसपास खेल रही थीं, और तब, कुछ मोटी डंडियों पर चढ़ीं और एक से दूसरे पर कूदीं। एक ऊँची कूदी और ठीक घास की चोटी के ऊपर उछली। जैसे ही वह, खुशी की चीखों के साथ लुढ़कती हुई आई, वह एक बूढ़े चूहे के पैरों पर गिरी। *'सावधान रहो, जवान,'* बूढ़े चूहे ने कहा, *'तुम अत्यधिक उल्लसित हो, तुम जानती हो। इस विश्व में, ऐसी कोई दूसरी मौजमस्ती (gaiety) नहीं है। शीघ्र ही एक बड़ा रहस्य घटित होगा, किसी बड़ी मशीन, जिसका हम में से किसी ने अनुमान भी नहीं किया है कि यह क्या है, के धावा बोलने से पहले, हमारा पूरा जंगल उलटपुलट हो जायेगा। इस घास की हालत से, मैं देख सकता हूँ कि हमारे पास अधिक लंबा समय नहीं हैं, इसलिए अच्छा हो कि हम अपने बिलों (burrows) में लौट जायें।'* बूढ़ा चूहा, एक चतुर बूढ़ी चुहिया, मुड़ी और ठुमक कर चली। दोनों जवान चुहियाओं ने एक दूसरे की ओर देखा और तब उसकी ओर देखा, उसकी वापस जाती हुई आकृति को देखा। तब एक ने कहा, *'ओह, क्या ये दीन, पुराना, बेकार खेल नहीं है।'* दूसरी ने कहा, *'हॉ, मैं अनुमान करती हूँ कि वह बच्चों को पसंद नहीं करती, वह हमेशा हमसे गुलामों की तरह, मेवा और वैसे ही दूसरे पदार्थ मंगवाते, और इसके लिए हमें कुछ नहीं पाते हुए, बने रहना चाहती है।'*

उस समय के लिए, खेत की युवा चुहिया साथ साथ खेलीं, और तब जमती हुई ठंडी हवा ने उनको ध्यान दिलाया कि शाम शुरू हो रही थी, इसलिए उन्होंने अंधेरा होते हुए आकाश को, एक

चौंधियाती हुई नजर के साथ देखा, वे साथ साथ, जल्दी से अपने घर की ओर चलीं।

सांझ में, वे आत्मा में सम्वाद करते हुए, घास के टुकड़े को कुतरते हुए, यदाकदा पूरी तरह सुनिश्चित होने के लिए ऊपर की तरफ देखते हुए, कि रात के उल्लू उन्हें नहीं देख पायें, अपने बिल के मुंह में बैठीं। कुछ समय बाद, रजत के चंद्र की गोल पुतली ने, अपनी फिसलन को, अंधेरे आकाश के आरपार प्रारम्भ किया। एक छोटे चूहे ने दूसरे से कहा, *'आश्चर्य, वहॉ ऐसा क्या है? मुझे आश्चर्य है कि वहॉ, उस बड़ी चीज के ऊपर, खेत की कोई चुहिया हो सकती है, जिसे हम अक्सर देखते है?' 'ओह मूर्ख मत बनो,'* खेत के दूसरे चूहे ने कहा, *'वास्तव में, वहॉ इस दुनियॉ के सिवाय कुछ नहीं है।'* तब उसने अपनी आवाज में अनिश्चितता का एक स्वर जोड़ा, *'ओ हॉ, मैं अक्सर वैसा ही सोचता हूँ, जैसा कि तुम, मैं अक्सर सोचता हूँ, ठीक है, इस दुनियॉ के अतिरिक्त, वहॉ खेत की चुहियों के साथ, विश्व होने चाहिए। मैं जानता हूँ कि हमारे पुजारी हमें बताते हैं कि ये दुनियॉ विशेषरूप से खेत की चुहियों के लिए बनी थी, और हम खेत की चुहियों की तुलना में कोई दूसरी आकृति नहीं है।'*

'आह हॉ,' खेत के दूसरे चूहे ने कहा, *'परंतु तब पुजारी हमें कहते है कि हमें प्रार्थना करनी चाहिए। ठीक है, मेरे भगवान, मैंने काफी कठोर प्रार्थना की, मैंने ताजा पनीर और वैसे ही दूसरी चीजों के लिए प्रार्थना की, परंतु मुझे प्रार्थना का उत्तर, कभी नहीं, कभी नहीं मिला। मेरा ख्याल है यदि वहॉ भगवान होता, तो खेत के एक युवा चूहे के लिए, अक्सर, ताजा पनीर के एक टुकड़े को नीचे डालना, ये इतना साधारण मामला था। तुम्हारा क्या ख्याल है?'* वह आशा करते हुए, अपने साथी की ओर घूमा परंतु दूसरे ने कहा, *'ठीक है, मैं नहीं जानता, मैं सुनिश्चित हूँ। मैंने भी वैसे ही प्रार्थना की थी, परंतु मुझे कभी प्रमाण नही मिला कि वहॉ, कोई खेत का चूहा भगवान है, और न तो मैंने कभी किन्हीं खेत की चुहिया परियों को, आसपास उड़ते हुए देखा है।'*

'नहीं,' दूसरे ने कहा, *'केवल ये रात के उल्लू और उन जैसे ही लोग।'* उस गम्भीर विचार पर, वे तुरंत मुड़ गये और नीचे अपने बिल में गोता लगा गये।

रात्रि चलती गई और अंधेरे के विभिन्न प्राणी, भोजन की तलाश करते हुए बाहर आये, परंतु खेत की नन्हीं चुहियायें, सुरक्षितरूप से, अपने बिलों में छिपी हुई थीं। सुबह, चमकता हुआ दिन उगा और हवा में गर्मी थी। खेत की नन्हीं चुहियायें, अपने रोजमर्रा के कामों के लिए चल दीं। उन्होंने अपनी मांद को छोड़ दिया और वे घास के हरे जंगल में, ये देखने के लिए कि दिनभर के लिए, वे क्या खाना पा सकती थीं, दूर तक गईं।

अचानक ही वे जमीन में दुबक गई, उनके अंदर का खून, ऐसा महसूस हुआ, मानो जमकर बर्फ बन चुका था। एक सर्वाधिक नारकीय, अपार्थिव शोरगुल, उनकी ओर आ रहा था, एक ऐसा शोर, जैसा उन्होंने पहले कभी नहीं सुना था। वे चलने से अत्यधिक डर हुईं थीं। एक ने, जल्दी जल्दी, दूसरे से फुसफुसाकर कहा, 'जल्दी, जल्दी, हम बचाव की प्रार्थना करें, हम मुक्ति की प्रार्थना करें। और ये अंतिम शब्द थे, जो खेत के नन्हे चूहों ने कहे, क्योंकि किसान अपनी फसल कटाई की मशीन को चलाकर, सीधा उनके ऊपर ले आया था और उनके शरीर कटकर चिथड़े हो गये थे और कटी हुई घास के साथ हवा में उड़े।

अपनी सपाट छत और कंगूरों वाले पार्श्वों वाले महान पिरामिड से, तुरहियों की गर्जना, उनकी बेशर्म आवाजें, घाटी में होकर गूंजती हुईं और फिर से पिरामिड, जो वास्तव में, एक पवित्र मंदिर था, के चरणों में, गूंजती हुई आईं।

लोगों ने, भय में, एक दूसरे को देखा। क्या वे बिलंवित हो गये थे? क्या हो रहा था? ऐसी गर्जनाऐं केवल संकटकाल में ही होती थीं या जब मोटे, गंदे (slovenly) पुजारियों को, लोगों से कुछ कहना होता था। एक सहमति के साथ, उन्होंने उस सब को, जो वे कर रहे थे, छोड़ दिया, और पिरामिड की नींव की ओर जाने वाले, अच्छी तरह कुचले हुए रास्ते के साथ, जल्दी की। यहॉ

चौड़ी–चौड़ी सीढ़ियॉ, शायद पिरामिड के ऊपर जाने का तीसरा रास्ता, और पूरे रास्ते पर, आसपास, लगभग बालकनियों जैसे कुछ उभार बाहर निकले हुए, विस्तार थे, या दीवारों वाला घूमने का रास्ता, शायद, एक अच्छा शब्द होगा, और इन दीवारों वाले रास्ते या बाल्कनियों के साथ, पुजारी अपने आराम के क्षणों को बिताने का अभ्यास कर रहे थे। वे, हाथ पीछे की ओर बांधे हुए या अपने बड़ी आस्तीनों के अंदर ढंके हुए, दो–दो करके साथ जायेंगे। वे, भगवान के शब्दों पर विचार करते हुए, ब्रह्मांड के रहस्यों पर चिंतन करते हुए, दो दो करके गये। यहॉ ऐंडीज (Andies) में, इतनी ऊॅचाई पर, साफ वातावरण में, रात में तारों को देखना इतना आसान था, जितना कि दूसरे विश्वों में विश्वास करना, परंतु घाटी की जनसंख्या, महान चरणों में ऊपर आना चालू हो रही थी और मंदिर के प्रमुख भाग में बढ़ रही थी।

सुगंधित धुओं के इतने उच्चरूप से आवेशित, मंद उजाले वाले आंतरिक भाग में, लोगों को थोड़ी खांसी हुई, और यहॉ–वहॉ, केवल ताजी से ताजी हवा के अभ्यस्त, एक देशी आदमी ने, जैसे ही सुगंधियों के कड़वे धुंए ने उस पर हमला बोला, चुस्ती के साथ अपनी ऑखें मलीं, चूंकि उनमें से पानी आना शुरू हो गया था।

रोशनियॉ मंदी थीं, परंतु मंदिर के एक सिरे पर, पॉलिश की हुई, एक बड़ी कांस्य प्रतिमा खड़ी थी, एक बैठी हुई मानव–आकृति, और फिर भी, नहीं–ये पूरा मानव नहीं था, कुछ नर्म तरीकों में ये 'भिन्न' था। ये अतिमानव (superhuman) था, परंतु इसने अनेक कहानियों को ऊॅचा चढ़ाया था, और इसके आधार के आसपास टहलते हुए लोग, उसके घुटनों की आधी ऊॅचाई तक भी नहीं पहुॅच सके थे।

भीड़ (congregation) प्रविष्ट हुई, और जब प्रभारी पुजारी ने देखा कि बड़ा हॉल लगभग पूरा भर चुका था, वहॉ एक घड़ियाल की गहरी गूंजती हुई आवाज आई। सुगंधित धुंए से अप्रभावित, तीखी ऑखें, बड़े घड़ियाल को, कांपते हुए, भगवान जैसी आकृति के दायें हाथ की ओर कांपते हुए देख सकीं। आवाज का बढ़ना जारी रहा, परंतु घंटे को कोई भी पीट नहीं रहा था, उससे गजों दूरी तक, कोई भी, कुछ नहीं कर रहा था, परंतु आवाज का बढ़ना जारी रहा। और तब, मनुष्य के हाथों के बिना, मंदिर के बड़े दरवाजे बंद हो गये। एक क्षण के लिए, वहॉ शांति थी, और तब भगवान के घुटने पर, लहराती हुई पोशाकों को पहने हुए, एक उच्च पुजारी वहॉ प्रकट हुआ। उसके हाथ और भुजायें, उसके सिर के ऊपर तक उठी हुई थीं। उसने नीचे की ओर, लोगों को देखा और कहा, *'भगवान ने हमसे बोला है, भगवान, उस मदद से, जो तुम अपने मंदिर को देते हो, असंतुष्ट हैं। तुम में से अनेक लोगों ने अपना तिथे (tithe) रोक लिया है, भगवान तुमसे बात करेगा।'* इसके साथ ही वह मुड़ा और अपने घुटनों पर (चलते हुए) महान आकृति के धड़ की प्रतिमा *(torso)* के सामने गया। तब आकृति का मुंह खुला और उसमें से एक गूंज निकली। लोग अपने घुटनों पर झुक गये, लोगों ने अपनी ऑखें बंद कर लीं, और अपने हाथ जोड़ लिए, और तब गूंज ने कठोर कठोर ध्वनि को मार्ग प्रशस्त किया, *'मैं तुम्हारा भगवान हूॅ'* आकृति ने कहा, *'मैं, अपने सेवकों, आपके पुजारी को प्रदर्शित की गई श्रद्धा में कमी के बढ़ने पर, निराश हूॅ। जबतक कि आप अपने चढ़ावे में, अधिक आज्ञाकारी और अधिक उदार नहीं हैं, आपको प्लेग (plague)और प्लेग के समान जानवरों की महामारियों (murrains) और अनेक घावों (sores) और फोड़ों (boils) के द्वारा सताया जायेगा, और तुम्हारी फसल, तुम्हारे सामने सूख जायेगी। अपने पुजारियों की आज्ञा मानो। वे मेरे सेवक हैं, वे मेरे बच्चे है, आज्ञा पालन करो, आज्ञा पालन करो, आज्ञा पालन करो।'* स्वर मंदा पड़ गया और मुंह बंद हो गया। उच्च पुजारी फिर से अपने पैरों पर आया और उसने अपना चेहरा भीड़ के सामने घुमाया। तब उसने अपनी ताजी, नई मांगों का समुच्चय (set) प्रस्तुत कर दिया, अधिक खाना, अधिक धन, अधिक सेवायें, मंदिर की कन्याओं के रूप में, अधिक युवा महिलायें। तब वह लुप्त हो गया। वह वापस नहीं लौटा और दूर चला गया, वह गायब हो गया, और तब दरवाजे फिर से बंद कर दिये गये। वहॉ बाहर, हर तरफ पुजारियों की पंक्तियॉ थीं और हर एक, हाथों में इकठ्ठे करने वाला एक कटोरा लिये हुए था।

मंदिर खाली था। मूर्ति खामोश पड़ी थी, परंतु नहीं, नहीं, उतनी शांत नहीं, क्योंकि मंदिर के एक आगंतुक पुजारी (visiting priest) को, एक बहुत बहुत नजदीकी मित्र के द्वारा आसपास दिखाया जा रहा था। मूर्ति में से, फुसफुसाने और खड़खड़ाने की आवाजें आईं, और आगंतुक पुजारी ने उसके ऊपर टिप्पणी की। उसके मित्र ने उत्तर दिया, *'ओह हॉ, वे अभी एक ध्वनि सम्बंधी* (acoustics) *परीक्षण कर रहे हैं। तुमने हमारी मूर्ति के अंदर नहीं देखा है, क्या तुमने देखा है? मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें दिखाऊँगा।'*

दोनों पुजारी, साथसाथ मूर्ति के पीछे गये, और निवासी पुजारी ने अपने हाथ, एक निश्चित तरीके से, श्रृंगार (ornamentation) पर दबाये। एक छिपा हुआ दरवाजा खुला और दो पुजारी उसमें प्रविष्ट हुए। मूर्ति ठोस नहीं थी, इसमें प्रकोष्ठों की एक श्रंखला थी। वे अंदर गये और जबतक कि वे छाती के तल तक, ऊपर नहीं पहुँचे, सीढ़ियों की एक श्रंखला पर चढ़े। यहॉ वास्तव में, एक बड़ा मजबूत कमरा था; वहॉ एक बेंच थी और उसके सामने बैठने का एक स्थान, और बैठने के स्थान के सामने एक माउथपीस (mouthpiece) था, जो नलियों की एक घुमावदार श्रंखला को, विस्तारपूर्वक ले जाता था, जो गले तक ऊपर जाती थी।

एक तरफ, वहॉ बैठने के दो स्थान और उत्तोलकों (levers) की एक श्रंखला थी। निवासी पुजारी ने कहा, *'वे दोनों उत्तोलक, दो पुजारियों द्वारा संचालित किये जाते हैं, वे जबड़ों को सक्रिय बनाते हैं और हमें इतना अधिक अभ्यास है कि हम जबड़ों को, भाषण के साथसाथ, एकदम ठीक समय पर चला सकते हैं।'* वह चलता गया और उसने कहा, *'यहॉ देखो, पूरे समय, बिना अपने आपको देखे जाते हुए, वक्ता भीड़ को देख सकता है।'*

आगंतुक ऊपर चला और उसने ऑखों की तंग झिरियों से बाहर की तरफ देखा। वह बड़े मंदिर को देख सकता था, वह सफाई करने वालों को, फर्श को पोंछने में व्यस्त देख सकता था। तब वह यह देखने के लिए मुड़ा कि उसका मित्र क्या कर रहा था। उसका मित्र माउथपीस के सामने बैठा था, उसने कहा, *'हमारे पास एक विशिष्ट पुजारी है। उसके पास एक बड़ा अधिकारपूर्ण स्वर है, उसे कभी बाहर के दूसरे लोगों से मिलने नहीं दिया गया क्योंकि, वह हमारे ईश्वर की आवाज है, जब आवश्यकता होती है, वह यहॉ बैठता है और इस माउथपीस में होकर अपना संदेश कहता है। सबसे पहले वह यहॉ से स्लाइड को हटाता है, और तब उसकी आवाज मुंह से होकर, बाहर जाती है और जबतक ये स्लाइड अपने स्थान पर है, यहॉ कही गई कोई भी चीज, बाहर नहीं सुनी जा सकती।'*

फिर से, वे हर समय बातें करते हुए, साथसाथ, नीचे की ओर, मंदिर के मुख्यभाग में चले। निवासी ने कहा, *' तुम जानते हो, हमें ये करना है। मैं नहीं जानता कि क्या कोई भगवान है कि नहीं, मैं अक्सर आश्चर्य करता हूँ, परंतु मैं पूरी तरह विश्वस्त हूँ कि ईश्वर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं देता। मैं यहॉ चालीस साल से हूँ, और मुझे कभी नहीं मालूम पड़ा कि किसी प्रार्थना का उत्तर दिया गया है, परंतु हमें अपने प्रभुत्व को बनाये रखना है।'* आगंतुक ने जवाब दिया और कहा, *'हॉ, मैं अपनी ऊँची चोटी पर रात में खड़ा होता हूँ और आकाश को देखता हूँ, और मैं प्रकाश के सभी छोटे बिंदुओं को देखता हूँ, और मैं आश्चर्य करता हूँ कि क्या वे स्वर्ग के फर्श पर छेद हैं या क्या ये सभी कल्पना हैं। क्या कोई स्वर्ग है? या वे प्रकाश के छेद, दूसरे विश्व हैं? और यदि दूसरे विश्व हैं, तो वे वहॉ कैसे पहुँचे?'*

निवासी ने उत्तर दिया, *'हॉ, मुझे स्वयं अनेक संदेह हैं, नियंत्रण करने वाला कोई अस्तित्व होना चाहिए, परंतु अपने खुद के अनुभव से मुझे ऐसा लगता है कि वह प्रार्थना का उत्तर कभी नहीं देता है। यही कारण है कि एक हजार या अधिक वर्षों पहले, धातु की ये प्रतिमा बनाई गई थी, ताकि हम पुजारी लोग अपनी शक्ति को, लोगों के ऊपर अपनी पकड़ को बनाये रख सकें, और संभवतः उनकी मदद कर सकें, जबकि ईश्वर ने उनको अनदेखा (ignore) किया था।'*

मेरा विश्वास है कि पूरा जीवन कंपनों से बना हुआ है, और कंपन मात्र एक चक्र है। हम कहते हैं कि कोई चीज कॉपती है। ठीक है, हमारा आशय है कि ये ऊपर जाती है और ये नीचे जाती है, और ये फिर ऊपर जाती है और फिर नीचे जाती है। यदि तुम एक कागज पर एक लाइन खींचो, तो तुम अपनी पहली लाइन से मुड़ती हुई और वापस नीचे आती हुई और ऊपर जाने के लिए मुड़ने से पहले, कुछ दूरी तक नीचे जाती हुई, दूसरी लाइन खींच सकते हो। यहॉ हमें, उसके समान, जो प्राणीलय (biorhythm) में, या विद्युत धारा के प्रत्यावर्ती प्रकार के संकेतों में उपयोग किया जाता है, एक कंपन, कंपन का एक चित्रमय प्रदर्शन, एक चक्र मिला। परंतु सभी जीवन, इसके समान है। ये एक लोलक के झूलने के समान है। ये एक उदासीन बिंदु में होकर, उदासीन बिंदु के एक तरफ से ऊपर की ओर, दूसरी ओर समान दूरी तक जाता है, और तब लोलक फिर से झूलता है, और समय के बाद समय समय पर, इस प्रक्रिया में होकर गुजरता है।

मेरा विश्वास है कि पूरी प्रकृति चक्रों में होकर गुजरती है। मेरा विश्वास है कि हर चीज, जो अस्तित्व में है, ऊपर से नीचे, धनात्मक से ऋणात्मक तक, भले से बुरे तक, प्रत्यावर्ती गति करता हुआ एक कंपन है, और यदि तुम इसके बारे में सोच सको, कि बुरा पाये बिना कोई भला नहीं होगा, क्योंकि भला बुरे का विरोधी है, और बुरा भले का विरोधी है। मैं ईश्वर में विश्वास करता हूँ, मैं ईश्वर में पक्का विश्वास करता हूँ, परंतु मैं ये भी विश्वास करता हूँ कि, व्यक्तिगत आधार पर, हमारे साथ व्यवहार करने के लिए, ईश्वर अत्यधिक व्यस्त हो सकता है। मेरा विश्वास है कि यदि हम प्रार्थना करें, हम अपने अधिस्वयं (overself) से या यदि आप चाहें, अपनी सर्वोकृष्ट आत्मा से, प्रार्थना करें, परंतु वह भगवान नहीं है।

मैं विश्वास करता हूँ कि दो भगवान हैं, अच्छे का भगवान (God of good)–धनात्मक (positive), और बुरे का भगवान (God of bad)–नकारात्मक (negative)। बाद वाले को हम शैतान कहते हैं। मेरा विश्वास है कि ठीक निश्चित अंतरालों के बाद–लोलक के विरोधी झूलों (swings) में–भले का भगवान, पृथ्वी और सभी जीवित चीजों पर शासन करता है, और तब हम स्वर्णयुग (Golden Age) में होते हैं, परंतु लोलक झूलता है, चक्र चलता चला जाता है, और तब भले ईश्वर की शक्ति, धनात्मक पहलू की शक्ति, घटती है और जैसे ही ये उदासीन बिंदु, जहॉ अच्छे और बुरों की शक्तियॉ बराबर हैं, के पार जाने के बाद, तब झोंके के दूसरे पक्ष का समर्थन करने के लिए, बुरा, शैतान, ऊपर जाता है। और तब हमें वह मिलता है, जिसे हम कलियुग, तितर–बितर करने का युग, वह युग, जिसमें हर चीज गलत चलती है, कहते हैं, और आज के उग्रवादियों (vendals) को, युद्धों को, राजनेताओं को, पृथ्वी की ओर देखते हुए, क्या हम मना कर सकते हैं कि हम अभी कलियुग में नहीं हैं? हम हैं। हम झोंके की शिखर की ओर आ रहे हैं, और परिस्थितियॉ और खराब होंगी, जबतक कि अंतिम झोंका, अपने बुरे के सर्वोच्च बिंदु पर नहीं होगा, वास्तव में, परिस्थितियॉ और खराब होंगी। युद्ध, हड़तालें, भूकंप, बुराई की शक्तियों को, बिना रोके हुए, खो जाने दो, और तब, हमेशा की भांति, लोलक अपनी दिशा बदलेगा, गिरेगा, और तब बुराइयों की शक्तियॉ मंदी होंगी, और वहॉ पृथ्वी पर, अच्छाई का, एक पुर्नउत्थापन (resurgence) होगा।

तब एक बार फिर, जबकि उदासीन बिन्दु (neutral point), जब भले और बुरे बराबर हैं, पर पहुंचा और गुजारा जाऐगा, (will be reached and passed) और लोलक अच्छाई की ओर ऊपर चढ़ेगा और जैसे ही ये ऊपर चढ़ता है, चीजें अच्छी, और अच्छी, होती जायेंगी। शायद तब, जब हमारे पास स्वर्णयुग होगा, इस ब्रह्मांड का ईश्वर, हमारी प्रार्थनाओं को सुनने में सक्षम होगा और सुनेगा, हो सकता है, वह हमें कुछ प्रमाण, कि वह हमें, यहॉ इस विश्व में बसाये जाने के सम्बंध में चिंता करता है, देना भी बर्दाश्त कर सके। मेरा विश्वास है कि वर्तमान समय में, संचार माध्यम, प्रेस, टेलीविजन और शेष सभी, बुराइयों को बढ़ाने में, अत्यधिक रूप से योगदान देते हैं, क्योंकि हम प्रेस में भी पढ़ते हैं कि कैसे

सात वर्ष की आयु के बच्चों को आत्महत्या करना सिखाया जाता है, वैंकुवर (Vancouver) में दस साल की आयु के बच्चे, हत्यारों के गिरोह बना लेते हैं।[24] मेरा विश्वास है कि प्रेस को दबाया जाना चाहिए, और टेलीविजन, रेडियो और फिल्मों को सेंसर किया जाना चाहिए।

परंतु भगवानों के सम्बंध में। हॉ, मेरा विश्वास है कि भगवान है, वास्तव में, मेरा विश्वास है कि भगवानों की विभिन्न श्रेणियॉ (grades) हैं। हम उन्हें मनु (Manu) कहते हैं, और लोग, जो भगवानों के विचार को नहीं समझ सकते उनको, एक बड़े विभागीय भंडार (departmental store) की परिस्थितियों को देखना चाहिए। इससे कोई फर्क नहीं पडता कि भंडार का कौन सा नाम, आप चुनते हैं, सुपर बाजार के भंडारों की एक बड़ी श्रंखला मान लें। सबसे ऊपर भगवान, अध्यक्ष या महाप्रबंधक है—निर्भर करते हुए कि आप किस देश में रहते हैं और कौन सी शब्दावली उपयोग में लाते हैं। परंतु चोटी पर का व्यक्ति, सबसे अधिक शक्तिशाली होता है, एक वह, जो कुछ भी वह कह देता है, उसको पूरा किया जाना चाहिए। फिर भी, ये व्यक्ति, संचालक मंडल का अध्यक्ष या अध्यक्ष या महाप्रबंधक, अपनी अत्यधिक शक्तियों के साथ इतना अधिक व्यस्त है कि, उसे कार्यालय के सबसे छोटे लड़के, या सबसे छोटे अदने से क्लर्क, जो खाना बांटता है और उसे थैलियों में रखता है, से व्यवहार करने के लिए कोई समय नहीं है। ये विशेष व्यक्ति, सुपर बाजार का भगवान, हमारे ब्रह्मांड का प्रमुख मनु, स्वयं भगवान का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके नियंत्रण में अनेक भिन्न भिन्न विश्व हैं। वह इतना महत्वपूर्ण, इतना शक्तिशाली, इतना व्यस्त है कि वह अलग अलग विश्वों के साथ व्यवहार करने में सक्षम नहीं है, वह, अलग अलग देशों, और निश्चितरूप से अलग अलग व्यक्तियों, अलग अलग पशुओं, के साथ व्यवहार करने में सक्षम नहीं है, क्योंकि चीजों की स्वर्गिक योजना (celestial scheme of things) में, पशुओं के भी उतने ही अधिकार होते हैं, जितने कि मानवों के।

सुपर बाजार का अध्यक्ष या प्रबंधक, हर चीज को स्वयं नहीं देख सकता, इसलिए वह अपने अधीन प्रबंधकों, और पर्यवेक्षकों और अधिवेक्षकों की नियुक्ति करता है, और ब्रह्मांड के तंत्र में, यही मनु के संगत (corrosponds) है। ईश्वर सर्वशक्तिशाली (all mighty) है, और हमारी खुद की योजना में, पृथ्वी का मनु, प्रबंधक है, जो पृथ्वी के पूरे प्रबंध के लिए उत्तरदायी है। उसके अधीन अधीनस्थ मनु, यदि आप कहना चाहें, पृथ्वी के हर महाद्वीप के पर्यवेक्षक हैं। पृथ्वी के हर देश के मनु या पर्यवेक्षक, देशों के भाग्य का मार्गदर्शन करते हैं, वे उसे, जिसे राजनीतिक व्यक्ति करते हैं, प्रभावित करते हैं, यद्यपि नेता लोग, किसी मनु के सहायता के बिना, उनका पर्याप्त घपला बना देते हैं!

एक प्राणी है, बिल्ली, जिसे 'भगवान के नेत्र'' के रूप में जाना जाता है। बिल्ली कहीं भी जा सकती है, कुछ भी कर सकती है, कुछ भी देख सकती है, क्योंकि आसपास दबे पॉव घूमती हुई बिल्ली पर कौन ध्यान देता है? लोग कहते हैं, *'ये केवल बिल्ली है, ये कुछ नहीं है।'* और बिल्ली अच्छे और बुरे की निगरानी करती है, और उसे सूचित करती जाती है। बुरी शक्तियॉ बिल्लियों को नियंत्रित नहीं कर सकतीं। बिल्लियों के पास एक स्वर्गिक बाधा होती है, जो बुरे विचारों को रोकती है, यही कारण है कि एक शताब्दी में, बिल्लियॉ स्वर्ग के प्राणियों की भांति सम्मान पाती हैं, और दूसरी शताब्दी में, उनका शैतान के शिष्य के रूप में निरादर किया जाता है, क्योंकि शैतान लोग, बिल्लियों से, जो खराब व्यवहारों को सूचित करती हैं, छुटकारा पाना चाहते हैं और ऐसा कुछ नहीं है, जिसके सम्बंध में शैतान कुछ कर सकें।

---

24 अनुवादक की टिप्पिणी : वर्तमान में, इस क्षेत्र में अंतर्जाल (internet) एक बहुत बड़ी और निर्णायक भूमिका निवाह रहा है, निस्संदेह रूप से सूचनाओं के आदान प्रदान के लिये, बड़ा सस्ता, सर्वसुलभ, त्वरित माध्यम है, परन्तु चूँकि हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, अंतर्जाल भी बुराइयों को फैलाने में अपनी सक्रिय भूमिका निवाह रहा है, और अब तो यह मोबाइल फोन पर भी उपलब्ध है। पीड़ारहित आत्महत्या (painless succide) करने की विधियॉ, चोरी करने, जेब काटने के कुशल एवं सुरक्षित तरीके, नशीली दवायें, तस्करी के प्रशिक्षण, आतंकवादियों की भर्ती (recruitment of terreorists), अश्लील फिल्में (pornographic films), बच्चों को आत्महत्या के लिये प्रेरित करने वाले ऑनलाइन खेल, सबकुछ तो यहॉ सहज ही उपलब्ध हैं। कहा जाता है कि अंतर्जाल और यू–ट्यूब पर अधिकांश जानकारियॉ भ्रामक और असत्य होती हैं, तथापि अधिकृत सूचनाओं के आदान प्रदान का यह एक सर्वसुलभ माध्यम है।

वर्तमान काल में, पृथ्वी को नियंत्रित करने वाला मनु शैतान है। वर्तमान समय में, शैतान का पृथ्वी पर पूरा नियंत्रण है, वर्तमान समय में अधिक भला नहीं हो सकता। स्वयं के लिये, शैतान जैसी बुराइयों के उस समूह, साम्यवादियों के रूप में देखें। उनके बहकाने वाले 'धर्म' के साथ, पूरी संस्कृ तियों को, और उनके ऊपर जो काफी मूर्ख हैं, वे अपनी बुराइयों की संस्कृति में शामिल होने के लिए, कैसे अपना वर्चस्व पाने का प्रयास करते हैं, देखें। परंतु अंततः शैतान पृथ्वी को छोड़ने को मजबूर होगा। अपने कृपापात्रों को, ठीक वैसे ही जैसे कि एक व्यापारी को, जो असफल होता है, अपना व्यापार समेटना पड़ता है, वापस लेने के लिए मजबूर होगा। शीघ्र ही, एक समय होगा जबकि लोलक अपनी दिशा उलट लेगा, और उसकी उल्टी दिशा से बुराई कमजोर पड़ेगी, अच्छाई को बल मिलेगा, परंतु वह समय अभी नहीं है। हम लगातार बढ़ते हुए खराब समय का मुकाबला कर रहे हैं, जबतक कि लोलक, वास्तव में, झूलता नहीं है।

इस पर विचार करें; आप लोलक को देखें, आप सोचते हैं कि ये हमेशा चलता रहता है, परंतु ऐसा नहीं है, आप जानते हैं, ये अपनी समान गति पर भी नहीं चल रहा है, क्योंकि लोलक अपनी ऊँचाई पर है, हमें कहने दें, दायें हाथ की ओर, और तब वह बढ़ती हुई गति से नीचे गिरता है, जबतक कि यह सबसे नीचे बिंदु, जहॉ इसकी गति अधिकतम होती है, तक नहीं हो जाता। परंतु तब दूसरी तरफ चढ़ने वाले लोलक का वजन, लोलक की भुजा को धीमा कर देता है, और कंपन के अंत में, पूरी निश्ंचितता के साथ, कुछ समय के लिए, लोलक रुक जाता है, पूरी निश्चितता के साथ, लोलक फिर से दूसरी तरफ चढ़ने के लिए गिरने से पहले, कुछ पर्याप्त समय के लिए रुकता है।

आपके समय संदर्भ के ऊपर निर्भर करते हुए, हम ये कहने में समर्थ हैं कि एक औसत घड़ी के साथ, विराम, केवल एक सेकंड के एक अंश के लिए है। परंतु यदि हम दूसरे समय में जायें, जहॉ सेकंड, वर्ष या शायद सहस्त्रों वर्ष है, तब वह समय, जिसके लिए लोलक रुकता है, स्वयं में दो हजार वर्ष भी हो सकता है। और यदि लोलक, खराब पक्ष में रुकता है, तो इससे पहले कि लोलक और उसका चक्र नीचे, नीचे, नीचे, जाएें और फिर से दूसरी तरफ भले और समान अवसर को देने के लिए, ऊपर जायें, ये अत्यधिक खराब भी कर सकता है।

स्वर्ण युग, किसी ऐसे के समय में नहीं होगा, जो अभी जीवित है। हममें से बचे हुए उन लोगों, जो वरिष्ठ नागरिक हैं, के पूरे वर्षो में, हालात, निश्चितरूप से, और खराब होंगे और खराब होते जायेंगे। परंतु बच्चे या नाती, वास्तव में, स्वर्णयुग का प्रारंभ देखने के लिए रहेंगे और उनसे अनेक लाभों को प्राप्त कर रहे होंगे। परंतु महान चीजों में से एक, जिसको किये जाने की आवश्यकता है, वह है धार्मिक प्रणालियों को पूरी तरह बदल डालना। अब ईसाई, ईसाइयों के विरुद्ध लड़ते हैं, और ईसाई धर्म, वास्तव में, चूंकि ये सालों में इतना विकृत हो गया था, कि ये सभी में, सर्वाधिक युद्धवत् (war like) धर्म है। उत्तरी आयरलैंड में, कैथोलिक ईसाई, प्रोटेस्टेंटों (protestants) की हत्या कर रहे हैं और प्रोटेस्टेंट, कैथोलिकों (catholics) की हत्या कर रहे हैं। फिर, यहॉ यहूदियों (jews) और मुसलमानों (moslems) के बीच युद्ध है और इससे क्या फर्क पड़ता है कि कोई किस धर्म का अनुयायी है? सभी रास्ते, एक ही प्रकार से घर को पहुॅचने चाहिये। ये, यत्र तत्र, थोड़े से विचलित होते हैं, परंतु सभी धर्मों को घर की ओर नेतृत्व करना चाहिए। इससे क्या फर्क पडता है कि एक व्यक्ति ईसाई है और दूसरा एक यहूदी? इससे क्या फर्क पड़ता है कि ईसाई धर्म, एक समय में, सूदूरपूर्व के धर्मो के संयोजन से, क्राइस्ट के द्व ारा बनाया गया था? धर्म को, उन लोगों की सटीक आवश्यकता के अनुसार बनाया जाना चाहिए, जिनको ये शिक्षा देने वाला है।

धर्म, वास्तव में, अत्यधिक भिन्न होना चाहिए। इसे समर्पित व्यक्तियों द्वारा पढ़ाया जाना चाहिए, उन लोगों के द्वारा नहीं, जो जीने का आसान सा रास्ता और एक सुखदायक निश्चित आमदनी चाहते हैं, जैसा कि आजकल मामला दिखाई देता है। कोई भेदभाव, और निश्चितरूप से, कोई धर्मप्रचार नहीं

होना चाहिए। मैं अपने कटु मूल्य से जानता हूँ कि मिशनरी, असली विश्वासकर्ताओं के शत्रु होते हैं। मैं जानता हूँ कि चीन, भारत, और अनेक दूसरे स्थानों में—विशेषकर अफ्रीका में, मात्र इस कारण से, कि मिशनरी मुफ्त सुविधायें देते हैं, लोग ईसाइयत में बदलने के नाटक करते हैं। हमें ये भी ध्यान रखना चाहिए कि वे मिशनरी, अपने पाखंडी मन के द्वारा, देशी लोगों पर कपड़े, अनुपयुक्त परिधान, पहनने के लिए जोर डालते हैं, और वे मिशनरी वास्तव में, उन लोगों में, जो पहले से ही, अपनी खुद की प्राकृतिक अवस्था में थे, जो पूरी तरह से ऐसी बीमारियों से निष्प्रभावित (immune) थे, क्षयरोग और दूसरी मारक बीमारियॉं लाये।

हमें ये भी ध्यान रखना चाहिए, कि शायद, स्पेन की न्यायिक जॉंच, जहॉं भिन्न धर्मों के लोगों को प्रताड़ित किया गया था, जिन्दा जलाया गया था, क्योंकि वे उन्हीं कल्पनाओं या विचारों में विश्वास नहीं कर सके, जिनमें कैथोलिक विश्वास करते थे या उनमें विश्वास करने का बहाना करते थे, एक नीति थी।

स्वर्ण युग आयेगा। हमारे समय में नहीं, परंतु बाद में। शायद, जब हमारे विश्व के ईश्वर को, उस अच्छे चक्र के अवधि के मध्य, अधिक फुर्सत होगी। वह मानवों और पशुओं की थोड़ी अधिक जॉंच करने का विचार कर सकता है। पृथ्वी के बागवान, निस्संदेह, सदाशयी (well intentioned) हैं, परंतु हर कोई सहमत होगा कि संपत्ति के स्वामी के लिए, हर बार अंदर आना और ये देखना कि उसके बागवान क्या कर रहे हैं, और शायद यहॉं—वहॉं, एक या दो परिवर्तनों का आदेश देना, आवश्यक होता है।

मैं ईश्वर में आस्था रखता हूँ, परंतु ये भी विश्वास करता हूँ कि ईश्वर से अपनी छोटी सी इच्छाओं के लिए, प्रार्थना करना और प्रार्थना करना और प्रार्थना करना व्यर्थ है। वह अत्यधिक व्यस्त है, और किसी भी मामले में, समय की इस अवधि में, हमारा चक्र या लय या लोलक नकारात्मक दृष्टि में है, और नकारात्मक दृष्टिओं की अवधि में बुराइयॉं, नकारात्मकता, और बुरा चालू है। और इसलिए ऐसा है—ठीक है, यदि आप चाहते हैं, तो बदले में, अपने अधिस्वयं से प्रार्थना करें। और यदि आपका अधिस्वयं सोचता है कि ये आपके लिए, और आपके अधिस्वयं के लिए—ठीक है! आप इसे पा सकते हैं। तब तक, शायद, आपको इसकी इच्छा नहीं होगी।

अध्याय–दस

मार्गरेट थगलवंक (Margaret Thugglewunk) ने सावधानीपूर्वक एक ऑख खोली और डर के साथ, दिन की पूरी रोशनी में झांका। 'हे मेरे भगवान! उसने कराहा, *'जिंदा रहने के लिए, एक लड़की को क्या क्या करना पड़ता है!'* धीमे से उसने अपनी दूसरी ऑख खोली और तब दिन के पूरे प्रकाश का पूरा प्रभाव पाया। उसके सिर में से दर्द फूट पड़ा इसलिये उसने सोचा कि ये फट जायेगा। तब वह, जैसे ही उसने अपने हाथ, अपनी पीठ के पीछे रखे, वह कराही। दर्द भयानक था। कुछ क्षणों के लिए, वह वहॉ, जो पिछली रात को हुआ था, उसे याद करने का प्रयास करते हुए, पड़ी रही *'ओ हॉ,'* उसे याद आया, *'मैं उस मुस्कराती हुई संविदा (contract) के पीछे थी, और उस भयानक आदमी ने कहा, यदि मुझे, उससे कुछ अधिक संविदायें चाहिए, तो मुझे रात को उसके साथ रुकना पड़ेगा। हे मेरे भगवान, जो कुछ भी मेरे साथ हुआ? मैं सीधा यौन झेल सकती हूँ परंतु मैंने महसूस किया कि मैं एक बुरे स्वभाव वाले हाथी के साथ, बिस्तर में थी।'* उसने कराहा और कराहा और अंत में, लड़खड़ाती हुई स्नानगृह में गई और थककर, बैठक (seat) पर गिर पड़ी। काफी मिचलियॉ (retching) और उल्टियॉ (vomiting) आने, और जी मिचलाने के बाद, उसने अन्यमनस्क भाव से, अपने केशविन्यास को, जो इस प्रक्रिया में कुछ भी हो रहा था, एक गीली तौलिया से धोया। अंत में, उसने कुछ हद तक सुधार महसूस किया और अपनी ओर देखा। जैसे ही उसने ऐसा किया, वैसे ही उसका चेहरा गुस्से से काला पड़ गया, *'ये कोई अच्छा नहीं है।' 'निकम्मा पति,'* उसने कहा, *'सुबह अपने काम पर जाने से पहले, मैंने उससे जगह साफ करने को कहा था।'* अपने पति के विचार पर वह फिर से कांप गई, और स्नानगृह में से बाहर रसोईघर की ओर दौड़ी।

हतप्रभ होते हुए (bemusedly), उसने आसपास देखा और तब उसकी आंखों ने, दूध की एक बोतल पर टिकाई हुई एक पर्ची को पाया। *'मैं एक मुक्तनारी (liberated women) के साथ रहते रहते थक गया हूँ।'* टिप्पिणी में आगे था, *'समान अवसर बहुत दूर तक जा सकते हैं, और जब आप रातों रात, कई आदमियों के साथ शारीरिक सम्पर्क बना रहीं हैं, जो मुझे बाहर जाने देता है। आप मुझे फिर कभी नहीं देख पायेंगीं।'*

उसने पर्ची को अपने हाथों में लिया और जानबूझकर उसको देखा। तब उसने इसे पलटा, और उसे प्रकाश में थामकर रखा और अंत में, ऊपर के पृष्ठ को नीचे पलट दिया, मानो कि उसे कुछ प्रेरणा आयी। परंतु नहीं, कोई प्रेरणा नहीं, कोई आनन्द नहीं, कोई दुख भी नहीं। वह मात्र उन दूसरी महिलाओं में से एक दूसरी थी, जो अपने आपको मुक्तमहिला, सभ्यता का सबसे खराब अभिशाप, कहती हैं।

मैं उन लोगों में से एक हूँ, जो पूरी तरह से निंदा करते हैं और इन औरतों से विमुख हैं। वे पत्नियॉ नहीं हैं, वे केवल बेकार की रिसाव हैं, जो दौड़ में नीचे गिरती जा रहीं हैं।

1914 या लगभग वैसे ही, ब्रिटेन में एक बड़ी दुखांत घटना घटी। ओ हॉ, महायुद्ध शुरू हो गया था, महान विश्वयुद्ध, परंतु वैसे ही दूसरा युद्ध भी प्रारंभ हुआ; लिंगों का तथाकथित युद्ध। औरतें, बच्चों को पैदा करने के लिए बनी थीं, जो मानवजाति को जारी रखती थीं, परंतु 1914 में औरतें कारखानों में गई और आदमियों की अटारियों पर चढ़ीं। शीघ्र ही, वे शराब पीने लगीं और धूम्रपान करने लगीं और ऐसी गंदी भाषा का उपयोग करने लगीं, जो कोई आदमी कभी उपयोग नहीं करता, भले ही वह कितना भी दुष्ट क्यों न हो। शीघ्र ही, औरतें कब्जे में ले रही थीं और यह कहते हुए कि उन्होंने एक खराब व्यवहार किया, पेट में दर्द झेल रहीं थीं, परंतु कभी किसी औरत ने यह नहीं कहा कि वह क्या चाहती है। ऐसा लगता है, वह लगातार गिरना और कुल मिलाकर, प्रजाति के जारी बने रहने के लिए कोई विचार नहीं करना चाहती है।

तब वे भी है जो सुश्री (Ms.) हैं, जिसका पृथ्वी के विज्ञान में, कोई अर्थ नहीं है परंतु, वास्तव में,

यदि वे इससे एक गूढ़ चेतावनी ग्रहण करें, ये प्रदर्शित करता है कि औरते मर्दानी हो रही हैं और शीघ्र ही वे नंपुसक (बॉझ) हो रहीं होंगी।

वास्तव में, ये शब्दों के लिए अत्यधिक भयानक है कि कैसे कुछ नौजवान महिलायें, किसी भी आदमी के साथ बिस्तर पर जातीं हैं, जो कई बार उनकी कल्पना को ले लेता है। कईबार, ये प्रक्रिया में आदमी के साथ लगभग बलात्कार, का मामला होता है, और जब विवाह के अंतर्गत, या उसके बाहर, बच्चा पैदा होता है, बच्चा पैदा होने के लगभग पहले, मॉ वापस कारखाने या दुकान की ओर या जो कुछ भी ये हो, की ओर दौड़ती है, और बच्चे को, किसी बच्चा पालने वाली की कृपाओं के ऊपर छोड़ दिया जाता है। जैसे ही बच्चा बड़ा होता है, उसे शक्तिशाली और बड़े बच्चों के वर्चस्व में छोड़ दिया है। शीघ्र ही, वहॉ आसपास चलते हुए गिरोह बन जाते हैं—इसको सुनो, जो 15 जुलाई 1976 के अलहरटान (The Alhertan) से है। ये वास्तव में, एक निचोड़ मात्र है,। ये कहता है, 'मारने/डकैती डालने वाले बच्चे, भाड़े पर उपलब्ध।' सामान्य परिचय इत्यादि के बाद, लेख कहता जाता है, *'वैंकूवर के किसी भाग में, दस वर्ष की आयु का बच्चा है, जिसने अपने आप को, 'ठेके पर हत्या करने के लिए' अपराध लोक (underwotld) को उपलब्ध करा दिया है।'*

ऐसा लगता है कि दस साल की आयु का ये नौजवान साथी, सौ लडकों के गिरोह का नेता है, जो भुगतान किये जाने पर, आदेशित व्यक्ति की हत्या कर देगा।

कुछ सप्ताह पहले एक समाचार पत्र में खबरें थीं कि एक और भी छोटे लड़के ने हत्या कर दी थी, और तब से एक दूसरा प्रकरण है, जिसमें एक बच्चे ने अपनी तथाकथित मित्र की हत्या कर दी थी।

पुराने दिनों में, माता घर पर ही रहा करती थी और परिवार को पालती थी, और वह ये सुनिश्चित करती थी कि वे शिष्ट नागरिक बनें, सुनिश्चित करती थी कि वे ऐसे बच्चे बनें, जो आज्ञाकारी हों और एक मां के लिये इससे बड़ा क्या काम हो सकता था, जो घर पर रहेगी और एक उपयुक्त परिवार को बड़ा करेगी और सुनिश्चित करेगी कि परिवार की देखभाल की जाये। ये स्पष्ट है कि इन औरतों में से अनेक, जो घर पर नहीं रुकेंगीं, मात्र बुरी शक्तियों के द्वारा प्रभावित की जा रही हैं।

प्रथम विश्वयुद्ध में औरतें कारखानों, कार्यालयों में गईं, और सेनाओं में भी शामिल हुई, इसलिए विज्ञापन से जुड़े लोगों ने पाया कि अब उनके लिए आमदनी का दोहरा स्रोत था, जिनके लिये उन्होंने विज्ञापन दिये और शीघ्र ही, अर्थव्यवस्था इस तरह ढल गई कि औरतों के लिए काम करना आवश्यक था—या इस प्रकार ये सतह पर प्रकट हुई। सभी विज्ञापनदाताओं ने जोर दिया कि, औरतें इसे, उसे, या किसी दूसरी चीज को भी खरीदने से, इतना कुछ कर सकतीं थीं, और वास्तव में, वे और डुबाने वाले फंदे, जाल में फंस गईं।

सरकारों ने भी, पाया कि जब औरतें काम करती हैं और अच्छा धन पैदा करती हैं, तब अधिक आयकर मिलता है, क्रयकर के रूप में अधिक धन आता है, और इसीप्रकार का शेष सब। और औरतें, अभी भी, पूरी तरह से मूर्ख बनती चली जा रहीं हैं कि वे अपने स्वाभाविक व्यवसाय को खो रही हैं, और बदले में, उन चीजों को, जिनका उनके लिए, कोई सांसारिक उपयोग नहीं है, खरीदने के लिए, ऋणी होने के लिए बाहर जाती हैं।

कुछ औरतों का, आजकल, बिलकुल कोई स्वाद (taste) नहीं होता, उनको परिधानों के संज्ञान का हल्का सा भी ख्याल नहीं होता, वे सोचती हैं कि फैशन का शिखर, हर दिन ताजा ब्लाउज और स्कर्ट में बाहर जाना है, चीजें, जो कभी नहीं, कभी नहीं, खरीदी गईं हैं, और सामान्यतः, सबसे सस्ता संभव सामान, उस पर भड़कीले प्रादर्शों को दिखाता हुआ सामान, होता है।

क्या आपने हाल ही में, किसी औरत, अर्थात् अपेक्षाकृत जवान औरत को देखा है? क्या आपने

उनके सपाट वक्ष और उनके तंग कूल्हे देखे हैं? तब वे बच्चों को कैसे पैदा करने वाली हैं? निस्संदेह, चिमटी की सहायता से, और तब उनके मस्तिष्क विकृत और चुभते हुए हो जायेंगे।

क्या आपने देखा है कि आजकल विवाह कैसे बरबाद हो रहे हैं? कुछ औरतें, एक आदमी के साथ, मात्र एक झोपड़ी और वे उतना यौन, जितना उन्हें चाहिये, चाहतीं हैं और यदि कोई आदमी, किसी भी प्रकार से, कुल मिलाकर, उनके पास से गुजरता है, वे उसके फंदे में फंस जाती हैं और वे समीपस्थ आदमी के पास, बाहर जाती हैं, जो उन्हें रखेगा।

शाश्वत विश्व में, नर सिद्धांत (male principle) और मादा सिद्धांत (female principle), दो विपरीत ध्रुव हैं, और संसार को आबाद स्थान के रूप में, चलते रहने के लिए आवश्यक है कि आदमी और औरतें एक दूसरे से असमान हों, अन्यथा औरतें बांझ हो जायेंगी और कोई अर्थ नहीं, कितनी ही बार वे प्रयास करें, कोई बात नहीं वे कितना भी कठिन प्रयास करें, फिर भी, कोई संतान नहीं होगी।

शायद हमको बाहर जाना चाहिए, और विज्ञापन देने वाले लोगों के प्रति हिंसक चीजें करनी चााहिए, वे जो औरतों को प्रजाति के विनाश के पथ पर ललचाते हैं। ओह हॉ, ऐसा हो सकता था, संभावनाओं के आकाशिक अभिलेख में, ये स्पष्ट किया गया है कि ऐसी बात हो सकती है। ये लाखों वर्ष पहले हुआ था।

बहुत दूर, प्रजाति की स्मृति के भी एकदम परे, एक सभ्यता थी, जो अत्यधिक ऊँचे मानकों तक पहुंची। लोग जामुनी रंग के थे, और वे आवश्यकरूप से, मानव नहीं थे, वास्तव में, एकदम मानव नहीं, क्योंकि औरतों के छः स्तन थे, आजकल की तरह दो नहीं, और कुछ दूसरे छोटे अंतर भी थे।

वहॉ सभ्यता का मानक अत्यधिक ऊँचा, और एक अत्यंत गर्म पारिवारिक जीवन था, परंतु तब औरतों ने निश्चय किया कि उन्हें घर पर नहीं रुकना चाहिए और परिवार को नहीं उठाना चाहिए, उन्हें पति या बच्चों के सम्बंध में परेशान नहीं होना चाहिए, वे सतायी जा रहीं थीं–उन्होंने ये कभी नहीं कहा कि कैसे, न कभी उन्होंने ये कहा कि वे वास्तव में क्या चाहती थीं, परंतु स्पष्टरूप से उनके मन में कुछ गलत चीज घुस गई थी। और इसलिए, उन्होंने शादी को तोड़ दिया, और जैसे ही बच्चा पैदा हुआ, उसे किसी घर की ओर, जो इस अवांछित बच्चे को ले सकता था, धकेल दिया गया। शीघ्र ही प्रजाति की गुणवत्ता नष्ट हो गई, भृष्ट हुई और बुद्धि क्षीण हो गई।

कुछ समय में औरतें पूरी तरह बांझ हो गई– और प्रजाति मर कर समाप्त हो गई।

क्या आप बागवानी के सम्बंध में कुछ चीज जानते हैं? क्या आपने कभी अत्यंत पसंद किये जाने वाले सेब का पेड़ देखा है, जिसकी उपेक्षा की गई हो? एक समय, सेब का वह पेड़, अपने टिकाऊपन, अपनी मिठास, अपने रंग और अपनी हर चीज के लिए, पुरुस्कार प्राप्त सेबों को पैदा करता था। परंतु तब यदि ये कुछ समय के लिए उपेक्षित कर दिया जाये, तो आप को केंकड़े जैसी शक्ल का, मुरझाया हुआ, विकृत, सिकुड़न वाला सेब प्राप्त होगा।–245

क्या आपने कभी अच्छी नस्ल के घोड़े देखें हैं, जिनकी उपेक्षा की गई और जिन्हें जंगली बांझ खच्चरों के साथ प्रजनन करने दिया गया हो? ठीक है, मैं आपको बताऊॅगा कि क्या परिणाम हुआ, कुछ पीढ़ियों के बाद, पशु निम्नतम में से भी निम्नतम प्रकार का हो गया, क्योंकि प्रजनन की श्रृंखला में, यही चीजें नीचे जाती हुईं, हर चीज सबसे खराब अंश के रूप में प्रजनित होती हुई दिखाई दी।

और ऐसा ही मानवों के साथ भी है। बच्चों की उपेक्षा की जाती है, उनमें कोई अनुशासन नहीं होता, इसलिए हमें हथियारबन्द गिरोह मिलते हैं, हम बदमाश पाते हैं–हर चीज जो खराब और भद्दी है। हमें बलात्कारी, और कटे फटे और अंग भंग बूढ़े लोग मिलते हैं।

अभी हाल में ही एक प्रकरण हुआ था, जिसमें दो औरतों को एक बूढ़ा आदमी मिला, जो अपंग था, उसकी टांगें कृत्रिम थीं, इसलिए थोड़े से सेंटों के लिए, जो आदमी के पास उसकी जेबों में थे, औरतों ने उसे पीटा और उसकी कृत्रिम टांगों को तोड़ दिया और आधे से अधिक नंगा करके वीरान

सड़क पर छोड़ दिया। अभी हाल में ही, औरतों के लिप्त होते हुए, एक दूसरा प्रकरण हुआ था; दो औरतें, एक बूढ़ी पेंशनशुदा औरत के द्वारा कब्जे वाले एक घर में गईं। वे जबरदस्ती से अंदर घुसीं और उन्होंने बूढ़ी औरत को पीटा और उन्होंने उसको तभी छोड़ा जब उसने अपने जीवन से पलायन कर, मर जाने का नाटक किया। औरतों ने–यदि उन्हें औरतें कहा जा सके, घर को लूट लिया और सभी पैसा, जो उस औरत के पास था, लूटकर, उसे पूरी तरह से कंगाल कर दिया। बूढ़े पेंशनशुदा लोगों के पास, जीवित रहने के लिये अधिक कुछ नहीं होता!

क्या आप जानते हैं कि अनुशासनहीन बच्चे, क्या बनने के लिए बढ़ते हैं?

क्या आप जानते हैं कि क्या होता है, जब बच्चों को, किशोर अवस्था में, किसी अनुशासन के बिना, रोजगार पाने के प्रयास के किसी विचार के बिना, बढ़ने दिया जाता है?

विली (Willy) भेड़िये ने, अर्द्धरात्रि की सड़क पर लंबे लंबे डग भरे। नियोन रोशनियों की दिखावटी चमक कंपकंपाई और जैसे ही दीपकों के धारक (lamp holders) हिले, झुके, और फिर से हिले, लुपलुपाये, और रात में, हवा में भड़क उठी। ये वेतन वाला दिन था, और इस विलंबित घंटे में भी, अनेक लोग घर के बाहर थे। वेतन के दिन से सब प्रकार का लाभ उठाने के लिए तैयार, खरीदारी के मॉल (shopping malls), जब ये धन का प्रवाह, बहने के लिए तैयार था, बहुत देर तक खुले रहे।

विली, भेड़िया, एक छद्म चरित्र था, उन अत्यंत अवांछित लोगों में से एक था, जो जंगल में से, रविवार सुबह, झटका खाते हुए और एक पियक्कड़ पागल की तरह डगमगा कर चलते हुए, भोर सुबह के पथ पर, बाहर रेंग आते हुए दिखाई देते हैं। उसके मां बाप के पास भी, उसके लिए कोई समय नहीं था, और अंततः उसे पैतृक छत की शरण से भी निकाल दिया गया था।

पिताजी काम करते थे, माताजी काम करतीं थीं, विली, जो कुछ भी चुरा सकता था, उसे चुराते हुए वह घर पर ही रहता था। यदि उसके पिता की जेबी पुस्तिका (pocket book) उसके हाथ लगी, जब वह मूर्ख, बूढ़ा पियक्कड़ आदमी वापस आता, तब जो कुछ वह ले सकता था, उसे लेने के लिये, अपनी मां के बटुए को उठाने के लिए, विली हमेशा तैयार था, और जो भी मुद्रा उसे मिलती, वह उसको छिपा लेता और जब उसे अभियुक्त माना जाता, वह अपने पिता के ऊपर इसका दोषारोपण करता। आसपड़ौस में विली की काफी अच्छी प्रतिष्ठा थी। वह हमेशा अंधेरी गलियों में, कार के दरवाजे को देखने का प्रयास करते हुए कि, उनमें से किसका ताला बन्द है, और उनमें से कौन खुला है–भद्देपन से चलता था। ठीक है, विली, पहियों पर से, दस्ताने के हिस्से में से, या पहियों पर से हब की छोटी टोपियां भी, जो कुछ भी चुराया जा सकता था, देखने के लिये वहॉ होता था।

उसके मां बाप उससे परेशान थे। अंत में, ये समझते हुए कि विली उनकी नहीं सुनेगा, जानते हुए कि उसे स्कूल से बाहर निकाल दिये जाने के बाद, वह किसी नौकरी को पाने के लिए कुछ नहीं करेगा, उन्होने उसके लिए दरवाजे बंद दिये और तालों को बदल दिया और ये भी सुनिश्चित किया कि खिड़कियॉ भी तालाबंद थी। इसलिए विली कुछ दूर तक सड़कों पर चलता गया। वह रोजगार दिलाने वाले ऐजेंसी पर भी गया, और उसने काम न लेने के लिये अनेक नकली कारण अपनाये, और तब चुराई हुई जेबी पुस्तक में से, एक भिन्न नाम प्राप्त किया। उसने कल्याणकारी लोगों से भी धन प्राप्त किया। परंतु–विली भेड़िये ने, हिंसक नजरों के साथ, सड़क पर नीचे की ओर, लंबा डग भरा और अवसर की तलाश की, इसप्रकार उसका सिर, कभी इधर तो कभी उधर घूमा। उसने सामने देखा और तब उसने पीछे देखा। जैसे ही उसने सामने की तरफ फिर देखा, वह अचानक ही तन गया और उसने अपनी चाल को बढ़ा लिया। अपने सामने अगले कोने पर मुड़ते ही, एक नवयुवती औरत, अनेक अनेक व्यस्त कार्यालयों में विलंब तक कार्य करने वाली एक कर्मी, एक भारी बैग को ले जाते हुए थी।

विली ने, इसे आसानी से लेते हुए, तेजी से डग भरे। उसने देखा कि वह सड़क को पार करने की प्रतीक्षा कर रही थी, और ठीक तभी, जब वह पार करने वाली थी, उसके सामने की बत्ती लाल हो

गई, विली झपटा और उसके पास पहुॅच गया। उसने अपनी एक टॉग उसके सामने फिसला दी और अपने सीधे हाथ से उसने उसके गले का पिछला हिस्सा दबाया। वह अपने माथे को फुटपाथ के मोड़ से टकराती हुई, एक लठ्ठे की तरह से औंधे मुंह गिर गई। विली ने, उसके सुन्न हाथों से, उसका हेंडबैग झपटा और अपनी छलांग को तोड़े बिना, दौड़ता चला गया। एक अंधेरी गली में, एक कोने की ओर मुड़ते हुए, एक अपार्टमेंट इमारत के बगल बगल जाते हुए, उसने अपने कंधे को देखा कि क्या कोई उसका पीछा कर रहा था। उसने नौजवान औरत को, लाल धब्बों को फैलाते हुए, लाल जो हरे से नियॉन प्रकाश में काले दिख रहे थे, जमीन पर पड़े देखा। मंद मंद मुस्कान के साथ, उसने उसका बटुआ, अपनी चमड़े की जैकेट में खिसका दिया, जिप लगाकर जैकेट के सामने को बंद किया और आसपास घूमने लगा मानो कि उसे दुनियॉ में कोई चिंता नहीं थी, मानो कि वह दुनियॉ का सर्वाधिक भोलाभाला व्यक्ति हो। तब वह पिछली गली के और अधिक अंधेरे वाले हिस्से में आया। वहॉ एक गैराज था, जो कुछ समय से वीरान था। ये सुरक्षा के साथ बंद किया गया था, परंतु गैराज के लोगों का धंधा समाप्त हो गया था और वे अपनी संपत्ति को बेचे जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। गैराज में तालाबंदी की गई थी परंतु इसके बंद होने से कई सप्ताह पहले, विली ने एक अतिरिक्त चाबी चुरा ली थी, वह गैराज में गया था, और उसने 'पुरुष प्रसाधन' में जाने के लिये चाबी की मांग की, और जैसे ही सहायक चाबी को खूंटी पर से उठाने के लिए मुड़ा, विली ने दरवाजे की चाबी को छीन लिया, जो नगदपंजी (cash register) के पास पड़ी थी।

अब विली गैराज में गया और सामने के दरवाजे में रेंगकर अंदर घुसा। यहॉ काफी रोशनी थी, क्योंकि गैराज में खिड़की से होकर, सड़क की एक बत्ती, ठीक बाहर सड़क पर, तेजी से जल रहीं थी। विली फर्श पर रेंगा और हैंडबेग का सामान फर्श पर गिर गया। मंद मंद मुस्कुराते हुए, उसने जो कुछ भी पैसा पाया, एक तरफ रख दिया, और तब उसने विशिष्ट चीजों को, जिसे महिलायें अपने हैंडबेग में रखती हैं, देखते हुए, पत्रों के एक बड़े ढेर को, जो भी उस बटुए के अंदर थे, बड़ी कठिनाई के साथ पढ़ते हुए, दूसरे सामान को छान मारा। अंत में, ये निर्णय करते हुए कि पर्स में और अधिक कीमती सामान नहीं था, उसने शेष चीजों को ठोकर मारकर, बगल से रखे कचरे ढेर में कर दिया।

औरत, बेपरवाह पैदल पथ पर, भौंचक्की हुई और खून बहाती हुई पड़ी थी। उसके पीछे से रात का भारी आवागमन घूम रहा था, रात्रि क्लबों और सिनेमाओं में से आने वाला आवागमन, घर वापस लौटते हुए देर रात के कामगार, और अपनी पाली में जाते हुए दूसरे श्रमिक। परिचालक गुजरने वाली कारों को बचा रहे थे, और उन्होंने अपनी चाल को बढ़ा दिया, ताकि वे उसमें संलिप्त न हो जायें। पैदल पथ पर कुछ पैदल यात्री हिचकिचाये और ताकने के लिए रुके, और टहलते गये। किसी भंडार के दरवाजे से, एक व्यक्ति ने आगे की ओर कदम बढ़ाये। उसने ये सब देख लिया था, वह विली को डरा सकता था, परंतु तब फिर, उसने शामिल नहीं होना चाहा, उसके पास पुलिस को धन्यवाद देने के लिए कोई कारण नहीं था, वह उनकी मदद क्यों करे? इसके बारे में विचार किया, उसे उस नौजवान औरत की सहायता क्यों करनी चाहिए? वह उसे नहीं जानता था। इसलिए वह आलस के साथ सामने की तरफ टहल चला, उस (औरत) के द्वारा रोके जाने पर, वह सामने की ओर झुका और उसकी आयु का अनुमान लगाने के लिए, आश्चर्य करते हुए कि वह कौन थी, उसकी ओर देखा, और तब नीचे पहुॅचा और उसकी जेबों में से ये देखने के लिए कि क्या कुछ चीज वहॉ थी, अनुभव किया। जेबों में कुछ नहीं था, इसलिए उसने उसके हाथों को देखा और तब उसने देखा कि, सगाई की एक अंगूठी और परिधान की एक अंगूठी, उसकी दो उंगलियों में थीं। बेरुखी से उसने उसे उतार लिया और अपनी जेब में डाल दिया। तब, सीधा होते हुए–आश्चर्य करते हुए कि क्या वह जीवित थी या नहीं–उसने अनुमान से, उसे एक पैर के साथ धक्का दिया और तब वह छायाओं में पीछे वापस चला गया।

कालगेरी की झुग्गी झोपड़ियों में, आडंबरी आबादी का आधा जीवन, दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई

अपराध दर के साथ, और समाचार पत्रों के बड़े बड़े प्रमुख शीषर्कों में चीखने के साथ, कि कुछ किया जाना चाहिए, असुखद तरीके से घूम रहा था। लगातार बढ़ते हुए बलात्कारों के सम्बंध में, बढ़ती हुई डकैतियों (muggings) के सम्बंध में लेख थे, परंतु सामान्य आबादी इस सब से बेखबर थी, वे केवल तभी दुखी होते थे, जब उन पर पड़ती थी। कालगेरी का रात्रि जीवन, उबलता हुआ, खौलते हुए अपराधों के धक्कों के साथ उबलता हुआ, सतह खुले में, किसी भी समय फूटने को तैयार, पहले की तरह चलता रहा। रात को पार्क बंद करने की बातें, रात को पुलिस गश्त बढ़ाने की बातें, केवल बातें हुई, इससे अधिक कुछ नहीं। शहर पहले की तरह चलता रहा और दिन के बाद दिन, रात के बाद रातें गुजरतीं गयीं।

फिर अर्द्धरात्रि के घंटे। दूरी पर एक घड़ी झनझना रहीं थी। समीप ही, एक कार का भोंपू आग्रहपूर्वक (insistently) महीन आवाज (shrill) में बज उठा। एक खड़ी हुई कार में, चोरी की किसी घटना ने, खतरे की घंटी को बजा दिया था, इसलिए कार तेज और महीन आवाज में चीख रही थी और ये चीख अनदेखी चलती गई, किसी ने परवाह नहीं की, कोई भी आदमी संलिप्त (involve) नहीं होना चाहता था।

फिर से अर्द्धरात्रि के घंटे। विली, भेड़िये ने, अर्द्धरात्रि की गलियों में छलांगें भरीं। जैसे ही वह दौड़ा उसकी, कभी एक समय की कछुए की गर्दन वाली (tortled-neck) सफेद जरसी पर, खाने के अनेक अवशेषों के धब्बे, हिलेडुले और फैले, और उसने पहले की तरह, चारे की तलाश में आसपास घूर कर देखा। जो वह चाहता था, उसको देखते ही, वह सर्तकता के तनाव में आ गया और उसने अपनी चाल को बढ़ा दिया। उसके सामने, थोड़ी दूरी पर, रात में एक भारी बैग को ले जाती हुई एक छोटी बूढ़ी महिला ने, उलट पलट की। स्पष्टतः वह अपंग, लाचार थी, शायद, गठिया से पीड़ित हो सकती थी, परंतु वह हांफ रही थी, मानो कि, वह मुश्किल से ही, एक पैर के पहले दूसरे को रख पाई हो, लौट–पलट करते हुए, यद्यपि उसे अपनी यात्रा पूरी करने में कठिनाई हो रही थी। *'ठीक है, वह नहीं होगी!'* विली अपने आप में खुशी से मुस्कराया।

शीघ्र ही, उसने उसे पकड़ लिया। अभ्यस्त सरलता–अनेक सफल हमलों के बाद विकसित किये हुए एक कौशल–के साथ, बेचारी बूढ़ी महिला के सामने, उसने एक टांग खिसकाई और तब एक संतुलित हाथ, उसे आगे धकेलने, उसे अपने मुंह के बल गिराने और उसका बटुआ छीन लेने के लिए, उसकी पीठ पर आया। परंतु ओह, आश्चर्य! छोटी बूढ़ी महिला ने डुबकी लगाई और अपने ईटों से लदे भारी बैग के साथ, विली के सिर पर झूल गई।

एक खराब पल के लिए, विली ने इसे आते देखा, तब एक कुचलती हुई टकराहट के साथ, इसे सिर के बगल से पकड़ा। उसने चमकदार रोशनियॉ देखीं। उसे एक कष्टदायक (excruciating) पीड़ा हुई और वह चीखा, और तब उसके सामने पूरी दुनियॉ काली हो गई, और अपने सभी पहले शिकारों की भांति, वह जमीन पर औंधे मुंह गिर पड़ा और मुंह के बल लुढ़का।

जैसे ही छोटी बूढ़ी महिला ने एक पैर विली की पीठ के ऊपर रखा, भोर होने के समय, गोबर के ढेर पर एक मुर्गे की भांति, अपनी आनंद की चीत्कार निकाली, संवेदनहीन, लापरवाह तमाशबीनों ने, इस व्यस्त रात्रि में, उदासीन आश्चर्य के साथ घूर कर देखा। तब उसने इसे फिर किया और अल्हड़ (jaunty) कदम के साथ, टहलती हुई चली गई।

रात्रि चलती गई। एक मिनट, एक घंटा? विली के लिए, ये क्षण नहीं था। अंत में, आसपास गश्त करती हुई एक पुलिस की एक गाड़ी, फुटपाथ पर गंदे से बंडल पर रुकी। कार का दरवाजा खुला, और अपनी बंदूक पर हाथ रखे हुए, पुलिस का एक बूढ़ा सिपाही बाहर आया। वह आगे चला और उसकी पीठ के ऊपर एक लापरवाह पैर ने, शरीर को धकेल दिया। पुलिस के सिपाही ने टकटकी लगाकर नीचे देखा। तब–पहचान। उसने अपने साथी को बुलाया जो अभी भी कार में था, *'ओह, ये तो*

विली है, वह अंत को प्राप्त हो ही गया।'

कार पर लौटते हुए, क्योंकि वह निरीक्षण करने वाला था, उसने माइक्रोफोन को उठाया और ऐंबुलैंस (ambulance) को आने के लिए और बुरी तरह जख्मी एक व्यक्ति को ले जाने के लिए कहा।

पड़ौस के अपार्टमेंट के अंधेरे में, उस चौराहे के सामने रुख करते हुए, छोटी बूढ़ी महिला, अपनी खिड़की पर परदे के पीछे से झांकती हुई बैठ गई, और जैसे ही उसने विली को अनौपचारिक ढंग से ऐंबुलैंस में फेंके जाते हुए देखा–ऐंबुलैंस के आदमी भी ठीक से उसे जानते थे–कपड़े उतारने और बिस्तर पर जाने से पहले, वह हॅसी, और हॅसी, और हॅसी।

आकाशीय अभिलेख, उस सब का एक अभिलेख है, जो पूरा का पूरा, उस विश्व में हो चुका है, जिस विश्व पर ये लागू होता है, जिसको कुछ लोग, जब वे सूक्ष्मलोक में जाते हैं, देख सकते हैं। ये पहले गैसीय गोले से लगाकर, अर्द्धगलित (semi-molten) अवस्था तक, विश्व की उत्पत्ति को प्रदर्शित करता है। यह प्रत्येक चीज, जो हो चुकी है, को दिखाता है। ये ठीक वैसा ही है, मानो संसार एक व्यक्ति हो, और उस व्यक्ति के माता–पिता हों, जिनके पास सिनेमा का एक कैमरा हो, जो उसके जन्म से लगाकर मृत्यु तक, पूरे जीवन भर काम करता रहा हो, इसलिए आवश्यक ज्ञान रखनेवाला एक व्यक्ति, किसी भी समय, फिल्म की रील को चला सकता है, और पता कर सकता है कि कब, कहॉ और कैसे, क्या हुआ था, ये वही है, जो सभी विश्वों के साथ होता है।

इसके अतिरिक्त, संभावनाओं का एक अभिलेख है, एक अभिलेख, ये प्रदर्शित करते हुए कि जो होने की आशा की जाती है, वह होगा, परंतु अलग अलग देशों का व्यवहार, जो होगा उसे सुधार सकता है। उदाहरण के लिए, अभी सुदूरपूर्व (far east) में भूचाल आया था, और चीन टूट गया था। ठीक है, व्यक्तिगतरूप से, मैं विश्वास करता हूॅ कि ये बहुत बड़ी सीमा तक, भूगर्भ के अंदर, अमेरिका और साइबेरिया में किये गये सभी परमाणु बम परीक्षणों के कारण हुआ है। ये किसी संरचना से टकराने, और ये पाते हुए कि आभासीय रूप से कोई नुकसान नहीं हुआ, जैसा है, परंतु तब ढांचे के किसी दूरस्थ भाग पर दरार या फटाव प्रकट होते हैं। हवाई जहाजों के इंजीनियर इसे जानते हैं, कि जब, किसी जहाज की एक खराब उतरान (landing), नुकसान पैदा कर सकती है, जिसके कारण उसकी पूंछ में चटकन दिखाई देती है!

अनेक वर्षों पहले, मुझे किसी सनकी (cultist) व्यक्ति द्वारा, एक योजना में आने के लिए, जो उसके पास थी, कहा गया था। वह लोगों को ये विचार बेचने जा रहा था कि, वह–अपने ब्रीफकेस के साथ सूक्ष्मलोक में जायेगा, सम्भवतः–सूक्ष्मलोक में परामर्श लेगा, और सूचना के साथ वापस आयेगा, जिसे तब वह, काफी बड़ी धनराशि के लिए, प्रश्नकर्ता को बेचेगा। उसने मुझे इसके सम्बंध में लिखा, और ये कहते हुए योजना में लाने का प्रयास किया कि हम, न कुछ समय में, लखपती हो जायेंगे। मैंने मना कर दिया, और यही कारण है कि मैं अभी भी गरीब हूॅ।

औरतों के आकाशीय अभिलेख दिखाते हैं कि नारीमुक्ति के सम्बंध में, ये चीजें नही होनी चाहिए थीं। ये सब घृणा, सब कटुता, जो औरतों ने इसके सम्बंध मे प्रदर्शित की है, नहीं होनी चाहिए थी। अब, जहॉ तक मेरी अच्छी तरह जानकारी है, अधिकांश औरतें शिष्ट व्यक्ति (decent people) होती हैं, और यदि वे इस मुक्ति आंदोलन में जाती हैं, तो ये केवल मौज के लिए है, और वे इसे अत्यधिक गंभीरता के साथ नहीं लेतीं। परंतु पागलों की कुछ निश्चत संख्या है, औरतें, जो अपने नाम के आगे 'सुश्री (Ms.)' जोड़ती हैं, जिसका अर्थ, मैं समझता हूॅ, है, 'अधिकांश मूर्ख (Mostly stupid)' और ये अधिक उपयुक्त है, ये वह है जो वे हैं–अधिकांश मूर्ख। परंतु उस "सुश्री" को अपने नाम के आगे रखने में "कुमारी" या "श्रीमती", या अपने नाम के आगे कुछ नहीं लिखने से वे गलत कंपनों को, जो कि सभी अस्तित्वों के निचोड़ हैं, उत्पन्न कर रहीं हैं। वे अपने खुद के लिए, खराब कंपन उत्पन्न कर रहीं हैं।

यदि चीजें इसी प्रकार चलती रहीं जैसा कि ये औरतें चाहती प्रतीत होती हैं, शीघ्र ही दूसरी शक्तियॉ ताजी व्यवस्थायें करेंगी, वे सोचेंगीं कि वे पृथ्वी के लोगों को, उनकी खुद की मूर्खता का वास्तविक स्वाद चखायेंगी और तब ये उस स्थिति का उत्क्रमणन (reversion) होगा, जो बहुत पहले गुजरी हुई सभ्यता के साथ हुआ था, एक सभ्यता, जो पृथ्वी पर काफी समय पहले अस्तित्व में थी, जिसका, सिवाय आकाशिक अभिलेखों के, अब कोई अभिलेख नहीं है।

उस सभ्यता में, जब सभी लोग, काले, पीले, भूरे, या सफेद के बजाय, जामुनी (purple) खाल वाले हुआ करते थे। औरतों ने मानवजाति के साथ, अति अस्तित्व वाले पृथ्वी के बागवानों, जो इस विश्व की देखभाल करते हैं, या जो ऐसा करने वाले माने जाते हैं, के एक निश्चित समुदाय के साथ, धोखा किया। ऐसा लगता है, बाद में, वे अपने काम से काफी नीचे गिर गये हैं। परंतु, कैसे भी, औरतों ने कुछ पुरुष बागवानों को बरबाद किया, इससे बागवानों की पत्नियों के बीच, काफी कलह हुई। परंतु उनके संयोग से पृथ्वी पर एक नई प्रजाति पैदा हुई, और इस पर औरतों का वर्चस्व था। औरतों ने सभी नौकरियॉ ले लीं, और वहॉ तुच्छ नौकरों को छोड़कर आदमियों के लिए–लगभग गुलाम–उन लोगों के लिए, जो नपुंसक थे, थोड़ी सी दूसरी नौकरियॉ बची थीं। परंतु विशेष विलासगृहों (luxary houses) में अत्यंत पौरुषयुक्त, वीर्यवान (पुरुष) थे। वे आवश्यक बच्चों को देने के एकमात्र उद्देश्य के लिए, वहॉ थे।

ओह हॉ, ये सब पूरी तरह सत्य है, ये ऐसा परम सत्य है कि मैं आपको अत्यंत गम्भीरता के साथ कहता हूँ, कि यदि आप मेरी सभी सत्रह–पुस्तकों को पढ़ें और यदि आप चीजों का अभ्यास करें, मैं आपको बताता हूँ, तब यदि आपके इरादे शुद्ध हैं और आप सूक्ष्मलोक में जा सकते हैं और आप इस पृथ्वी के आकाशीय अभिलेखों को देख सकते हैं। आप व्यक्तियों (individuals) के आकाशीय अभिलेखों को नहीं देख सकते, क्योंकि–ठीक है, ये आपको *'प्रतियोगिता में'* अनुचित लाभ देगा। जैसा मैं विश्वास करता हूँ, वे रोमन कैथोलिक चर्च में कहते हैं, इससे पहले कि आप व्यक्तिगत एक हजार साल के समीपवर्ती आकाशीय अभिलेख को देख सकें, आपको विशेष विधान (dispensation) करना होगा, परंतु उस लंबे विगतकाल में, जब मातृसत्ता (matriarchy) थी, औरतें, बहुत कुछ हद तक वैसे ही जैसे कि साम्यवादी गुलामों को काम करना पड़ता है, काम में व्यस्त थीं और तब सर्वाधिक सुंदर रूप से बनी हुई औरतें, औरतों में सर्वाधिक स्वस्थ, या वे, जो नेताओं के अत्यंत निकट संपर्क में थीं, आनंद के लिए या आवश्यक प्रकरणों में वंशबृद्धि के लिए भी, प्रजनक गृहों (stud houses) में जा सकती थीं।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि पृथ्वी पर आजकल कैसा होगा, यदि ऐसी ही चीज हो? क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि विज्ञापन करने वाले लोग, भोलीभाली औरतों के लिए क्या चीज निकालेंगे? *'पॉली का आनंद गृह (Paully's House of Pleasure)–सर्वाधिक शक्तिशाली आदमी उपलब्ध, अपनी पसंद का चुनें, आप कौन सा रंग पसंद करती हैं, कौन सी धाप (shade) आप पसंद करती हैं, आकार आपकी खुद की पसन्द के अनुसार। उचित शुल्क, क्लब की सदस्यता के लिए विशेष शर्तें।'*

परंतु कैसे भी, हमेशा ही ऐसा मामला है, आप्राकृतिक समाज, अंत में, समाप्त हो जाता है। इसलिए ऐसा हुआ कि मातृप्रधान सत्ता समाप्त हो गई। ये इतना असंतुलित था कि अंत में उलट–पुलट हो गया और वह पूरी सभ्यता मर गई।

क्या आप जानते हैं कि ये क्यों असंतुलित थी? अपनी कार की बैटरी पर विचार करें, अपने रेडियो की बैटरी या कोई भी चीज जिसमें धनात्मक और ऋणात्मक होता हो, पर विचार करें। कल्पना करते हुए कि आप किसी विशिष्ट अज्ञात तरीके से, ऋणात्मक को धनात्मक की तुलना में अधिक शक्तिशाली बना सकते हैं, तब पूरी चीज असंतुलित हो जायेगी, क्या ऐसा नहीं होगा, क्या ये कुछ समय बाद काम करना बंद नहीं करेगी? ये वही है, जो विशेष जामुनी प्रजाति (purple race) के साथ हुआ। जीवन की मांग है कि, संतुलन के लिए, समान धनात्मक और समान ऋणात्मक होंगे, वहॉ समान भलाई

और समान बुराई होगी। वहॉं समान पुरुषत्व और समान स्त्रीत्व होंगे, जिसके बिना संगत जीवन में कोई संतुलन नहीं हो सकता, और नारी मुक्ति वाले प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ने का प्रयास कर रहे हैं, वे मानव की पारिस्थितिकी (ecology) को बरबाद करने का प्रयास कर रहे हैं, और ये काम ही नहीं करेगा। प्रेरकों के लिए, ये तमाम अत्यंत खराब कर्म करने के समान है, क्योंकि, उन परेशानियों को देखें, जो वे पैदा कर रहे हैं; वे लालची हैं, और लालच, इस विश्व के बड़े अभिशापों में से एक है। स्वर्णिम नियम ये है कि, हमें दूसरों के प्रति वह व्यवहार करना चाहिए, जो हम दूसरों से अपने प्रति चाहते हैं। प्राप्त करने की अपेक्षा, देना ही अधिक अच्छा है। यदि आप देते हैं, तो अच्छे कर्म कमाते हैं, परंतु यदि आप असंगतता (disharmony) और कलह (strife) को आंदोलित करने का प्रयास कर रहे हैं, तब वास्तव में, ये अत्यंत खराब कर्म बनाता है।

मैं हमेशा ही उन औरतों के मामले में अत्यधिक आनंदित होता हूॅं, जो शादी कर लेती हैं, परंतु एक संतुलित इकाई बनाने के लिए अपने पति का नाम नहीं लगातीं। यहॉं कनाडा में, कनाडा के प्रधानमंत्री के पवित्र पद के एक प्रत्याशी हैं और उस व्यक्ति की एक पत्नी है, जो उनके नाम का उपयोग नहीं करती, वह अपने आपको सुश्री (Ms.) कहती है। मेरा विश्वास है, ये मैक टियर (MacTear) या वैसी ही कुछ है और ये किसी को भी, आंसू बहाने के लिए पर्याप्त है। परंतु किसी देश के प्रमुख के यहॉं, आप संतुलित परिवार कैसे रख सकते हैं, जबकि परिवार के दो प्रमुख सदस्य, एक इकाई नहीं बनाते? आप नहीं कर सकते।

तब फिर, यदि औरतें पत्नियॉं नहीं बनना चाहतीं, तब वे शादी क्यों करती हैं? यदि वे पत्नियॉं नहीं बनना चाहतीं और वे फिर भी बच्चे चाहती हैं—ठीक है, वैसे ही जैसे कि पशुओं के लिए हैं, प्रजनन केन्द्र स्थापित कर दो, क्योंकि यदि औरतें वैसी हैं, तब वे वास्तव में पशु हैं। मेरा विश्वास है कि केवल दस मिनट या ऐसे ही संदिग्ध आनंद की तुलना में, बच्चे को लाने में कुछ अधिक (आनंद) है। मेरा विश्वास है कि औरतों को, प्रकृति के द्वारा, मां बनने के लिए ही आज्ञा दी गयी थी, जो बच्चों का पालन कर सकें, और यदि वे केवल बच्चे पातीं हैं और तब उन्हें, अधिकांशतः उतनी जल्दी, जितने में वे बात कर सकें, फुटपाथ पर दफना देती हैं, तब वे प्रेमरहित जीवों की प्रजाति का प्रजनन कर रही होंगीं, ये वह है, जो आज वर्तमान है। अब हमारे पास बच्चों के गिरोह हैं, हत्या की इच्छा रखने वाले बच्चों के गिरोह, जो पेड़ों को तोड़ते हुए, पौधों को उखाड़ते हुए, कोई भी काम, जिससे कि वे नरक बना सकें, उद्यानों में जाते हैं। गुजरे हुए दिनों में, पत्नियॉं, वास्तव में, पत्नियॉं थीं, वे अपने पतियों के साथ खड़ी होती थीं, वे अपने पतियों को मदद करती थीं। पति, जीवनयापन के लिए बाहर जाते थे, पत्नी, घर पर परिवार को पालने के लिए, और मानव जाति के नवीनतम सदस्यों को प्रशिक्षण देने के लिए, घर पर रहती थी।

वास्तव में, पूंजीवादियों को इस सब के लिए भुगतान करना चाहिए, क्योंकि, धन के भूखे ये लोग सोचते हैं कि यदि औरतें काम करती हैं तो दुगुना धन आयेगा। निश्चतरूप से, धन को पाना ठीक है—मेरे पास, ये कभी अधिक नहीं रहा, परंतु मैं, इन पूंजीपतियों, जो चंद टुकड़ों को पकड़ने के लिए सभ्यता का नाश करते हैं, की तुलना में ईमानदार रहना चाहूॅंगा। विज्ञापन व्यवसाय वाले लोग, अपने क्रेडिट कार्डों के साथ, उनकी मासिक किश्तों के तंत्र और सबकुछ के साथ, ऐसे ललचाने वाले प्रस्ताव देते हैं कि कमजोर इच्छा शक्ति वाले लोग, ललचा जाते हैं और ललचाने पर, वे गिरते हैं और कर्जे में औंधे होकर डूब जाते हैं, कर्जा, जिसको वे केवल एक या दो या तीन भी, नौकरियॉं करने पर ही जारी रख सकते हैं। जब मैं विंडसर (Windsor) में रहता था, मैं एक आदमी को जानता था, जो चार नौकरियॉं करता था और उसने अपने आपको जल्दी से कब्र में डाल दिया। उसकी पत्नी दो काम करती थी, इसतरह उन दोनों के बीच छः काम थे, और वे इतने अधिक कर्जे में थे कि जब आदमी मरा, हर चीज ऋणदाताओं द्वारा जब्त कर ली गई। इसलिए, बजाय किसी भी चीज, जिसे वे देख लें, को

पकड़ने के लिये, ठीक वैसे ही, जैसे कि एक बिगड़ा हुआ बच्चा झपटता है, और पागल की तरह चिल्लाता है, यदि कोई चीज उससे रोक ली जाये, लोग अधिक तर्कसंगत ढंग से, अधिक मितव्ययी होकर क्यों नहीं रहते।

मैं प्रबलतम रूप से, नारी स्वतंत्रता के खिलाफ हूँ, जैसे कि मुझे आशा है, मैं स्पष्ट कर चुका हूँ, क्योंकि मैंने इस भयानक चलन, या जो कुछ भी इसे कोई कहना चाहें, के परिणाम देखे हैं। मैंने इसे आकाशिक अभिलेखों में देखा है, और मेरे पास ये कहते हुए, कि इन औरतों ने किस प्रकार की दीनता पैदा की है, हजारों पत्र आये हैं।

अब हम, मानवता के भाग्य के एक चौराहे पर आ पहुँचे हैं, और यदि लोग उचित निर्णय नहीं लेते तो एक स्थाई समाज नहीं होगा। हमको जीवन से, धर्म के प्रति, ये अर्थ नहीं रखता कि किस प्रकार का धर्म हो, मोड़ लेना होगा, मैं ईसाइयत, या यहूदी धर्म या इस्लाम धर्म या हिन्दू धर्म या किसी विशेष चीज की, नहीं सोच रहा हूँ, इससे कोई फर्क नहीं पडता कि ये कौन सा धर्म है। हमें एक ताजा धर्म चाहिए क्योंकि पुराने (धर्म), काफी दीनता के साथ असफल हो गये हैं। ईसाइयत में, उदाहरण के लिए, ईसाइयत क्या है? क्या ये कैथोलिक आस्था है? क्या ये प्रोटेस्टेंट है। और ईसाइयत कौन सी है? और यदि दोनों ही ईसाई हैं, तब उत्तरी आयरलैंड में वे लड़ क्यों रहे हैं, तब, फिर, ईसाइयों और मुस्लिमों में बैरुत (Beirut)[25] में लड़ाई क्यों है, और तब रूसी हैं, जिनके ईश्वर की एकमात्र आकृति, साम्यवाद है। और जो परिस्थितियॉं हम चीन में सुनते हैं, उनके अनुसार, ठीक है, मैं नहीं समझता कि मैं बाहर जाना और देखना चाहूँगा कि वहॉं कैसी चीजें होती हैं, परंतु एक अच्छा धर्म लाना होगा। पुजारी, जो मनुष्य के बजाय, मात्र पुजारी हैं, जो कुछ किये बिना, अधिक धन प्राप्त करना और आराम का जीवन चाहते हैं, उन लोगों के बदले में कुछ अच्छे पुजारी लाने होंगे। यही वह है, जो आजकल वे हैं।

जैसा मैंने पहले कहा, हम एक चौराहे पर हैं। हमें चुनना पड़ेगा कि क्या हम एक संतुलित समाज चाहते हैं, एक वैसा, जिसमें आदमी और औरतें, समानता से सहभागी के रूप में साथ साथ काम करते हैं, और जिसमें औरतें संभवतः, उनको सिखाने के लिए, अधिक बड़े और पथभ्रष्ट बच्चों की ओर बाहर उछालने के बजाय, अपने बच्चों की देखभाल करती हैं। ये समाज को उलटने जा रहा है। रूस में ऐसा होता था कि सब बच्चों को ले लिया जाता था, और उन्हें राज्य द्वारा पालने के लिए, घरों में रखा जाता था, जबकि पिता और मातायें, कारखानों, खेतों या सामुदायिक गृहों में काम करती थीं। ठीक है, ये सिद्ध हो चुका है कि वह उतना अच्छा नहीं है, रूसी मातायें, अब अपने बच्चों के साथ होना चाहती हैं, वे अब घर पर रुकना चाहती हैं और अपने बच्चों का नियंत्रण पाने के लिए, अब वे रूस में भयंकर आवाज उठा रहीं हैं। कोई नहीं जानता कि परिणाम क्या होगा।

---

25 अनुवादक की टिप्पिणी : बेरुत (Beirut), लेबनान की राजधानी और सबसे बड़ा शहर है, इसकी आबादी का कोई स्पष्ट अनुमान नहीं है, परंतु इसकी आबादी 10 से 20 लाख के बीच है। ये दुनियॉं के सबसे पुराने शहरों में से एक है, जो 5000 वर्ष से भी पहले बसाया गया था। शहर के पूर्वी किनारे पर बेरुत नदी दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है। मई 2015 में बेरुत को, अधिकारिकरूप से, विश्व के सात नवीन आश्चर्यजनक शहरों में से एक, के रूप में चिन्हित किया गया। दूसरे छै शहर हैं, विगान (Vigan), दोहा (Doha), डरबन (Durbun), हवाना (Havana), कुआला लमपुर (Kuala Lumpur) और लापाज (La Paz)। 1982 के लेबनान युद्ध में, पश्चिमी बेरुत का अधिकांश भाग, इजराइली फौजों द्वारा नष्ट कर दिया था। 1983 में फ्रांसीसी और अमेरिकी बैरकों के ऊपर बमबारी हुई। 1990 में युद्ध समाप्ति के बाद से, लोगों ने बेरुत को फिर से बनाना प्रारंभ किया। 2006 आते–आते, इजराइल–लेबनान मतभेद की अवधि में, शहर ने कुछ हद तक पर्यटन सांस्कृतिक और प्रतिभा केन्द्रों के रूप में, मध्यपूर्व के देशों में अपनी धाक जमाई। यहॉं पारिवारिक मामले जैसे कि शादी, तलाक और पैतृक सम्पत्ति के मामले अभी भी, धार्मिक अधिकारियों द्वारा निपटाये जाते है। बेरुत में स्टॉक एक्सचेंज, बैंकें और अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है। बेरुत में लेबनान यूनिवर्सिटी, उच्च शिक्षा के लिये एकमात्र सार्वजनिक संस्था है। परंतु बेरुत में अमेरिकी विश्वविद्यालय का मुख्यालय है। अमेरिकी विज्ञान और तकनीकी विश्वविद्यालय बेरुत, अरब यूनिवर्सिटी, लेबनान अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय जैसी उच्च शिक्षण संस्थायें भी है।

बूढ़े हिटलर (Hitler)[26], जिसके पास वास्तव में, पागलपन के कुछ विचार थे, के पास, विशेष प्रजनन केन्द (breeding stations) थे। आपने शायद, इस सबके बारे में पढ़ा होगा, यदि आपमें से कुछ ने नहीं पढ़ा हो, तो यहॉ उसका एक संक्षिप्त विचार है, जैसा ये वास्तव में था :

दल के नेता लोग, हर समय, दल के अधिक वफादार, बहुत स्वस्थ सदस्यों, जो अच्छे मां बाप हो सकते थे, की ताकझांक में रहते थे। और तब, जबकि एक वफादार स्वस्थ जवान आदमी, और एक वफादार जवान औरत मिल जाती थी, तो उन्हें बडे महलों में भेजा दिया जाता था। वहॉ उनको अच्छा खिलाया जाता था, अच्छी तरह देखभाल की जाती थी, और जब वे थोड़े तैयार हो जाते थे, क्योंकि जर्मनी का राशन, उन दिनों काफी गंदा था, जवान आदमियों और जवान औरतों को मिलने दिया जाता था, और अपने सहभागियों को चुनने दिया जाता था। जब वे अपने सहभागियों को चुन लेते थे, और उनका चिकित्सीय परीक्षण हो जाता था, तो उन्हें पूरे एक सप्ताह के लिए, साथ रहने दिया जाता था। ठीक है, आप जानते हैं, क्या होता है जब एक युवा पुरुष और एक युवा महिला, किसी प्रतिबंध और रुकावट के बिना, पूरे एक सप्ताह के लिए, साथ रुकते हैं, इसलिए कहने के लिए, और हर चीज, जो वे करते थे, शासन द्वारा अनुमोदित थी। ठीक है, और ऐसे संयोग से बच्चा उत्पन्न हो जाता था, उसे मां से दूर कर दिया जाता था, और और उस समय उपलब्ध, नाजी तकनीकी जानकारी के साथ, पालन–पोषण करने के लिए, विशेष घर में भेज दिया जाता था। इसका आशय ये था कि वे एक अतिविशिष्ट प्रजाति (super race) के नाभिक (nucleus) बनें।

पच्चीस साल बाद, ये सभी निश्चित आविष्कर्त्ता, जो हुआ था उसके प्रश्नों में घिर गये, और बच्चों में से अनेक, अब, वास्तव में, बड़े हुओं (grown up) की पहचान की गई है, और लगभग बिना किसी अपवाद के, ये बच्चे निम्न मानसिकता वाले पाये गये। कुछ, वास्तव में, मंदबुद्धि थे, जो प्रदर्शित करता है कि हिटलर भी एक आदमी और एक औरत को, थोड़ा सा भी हिलाकर, साथ नहीं रख सका, और एक भी सामान्य बच्चा नहीं पैदा करा सका।

जब तक हम वर्ष दो हजार में पहुॅचते हैं, ये ज्ञात हो जायेगा कि क्या इस पृथ्वी के लोग खरपतवार की तरह साफ होने वाले हैं और ताजा स्टॉक रोपा जाने वाला है। परंतु यदि औरतें घर में रुकेंगी, जैसा कि आशय था, पत्नियॉ तथा मातायें बनेगी, तब ये विशेष प्रजाति स्वर्णिम युग की ओर जारी रह सकती है। यह, आप महिलाओं और नारी मुक्तवादियों–जो महिलायें नहीं हैं–पर निर्भर करता है। आपकी पसंद क्या होने वाली है? खरपतवार के रूप में वर्गीकृत? या परिवार में स्थायित्व के साथ, स्वर्ण युग में ले जाये जाने के लिए?

26 अनुवादक की टिप्पिणी : एडोल्फ हिटलर (Adolf Hitler) का जन्म, 20 अप्रैल 1889 को आस्ट्रिया (Austria) में हुआ था। हिटलर, एक प्रसिद्ध राजनेता और तानाशाह था। वह सन् 1933 से सन् 1945 तक, जर्मनी का शासक रहा। हिटलर स्वयं को आर्य मानता था। उसका कहना था कि आर्य जाति, सभी जातियों में श्रेष्ठ है, और जर्मन आर्य हैं, उन्हें विश्व का नेतृत्व करना चाहिए। वह 'राष्ट्रीय समाजवादी जर्मन कारगार पार्टी' (National Sozialistische Deutsche Arbeiter Partei) का नेता था। इस पार्टी को प्रायः 'नाजी पार्टी (Nazi Party)' के नाम से जाना जाता था। हिटलर यहूदियों (jews) और साम्यवादियों (communists) से घृणा करता था, उसने बड़े पैमाने पर यहूदियों का नरसंहार कराया। इसलिये इनके सभी अधिकारों को छीनने के लिये, उसने 1918 में नाजी दल की स्थापना की। उसने स्वास्तिक को अपने दल का चिन्ह बनाया, जो हिन्दुओ का शुभ चिन्ह है। इस दल ने, प्रथम विश्वयुद्ध की हार के लिये, यहूदियों को दोषी ठहराया। द्वितीय विश्वयुद्ध में इटली, जर्मनी और जापान एक तरफ थे, जबकि शेष पूरा विश्व, जो भी युद्ध में शामिल था, वह दूसरा पक्ष था। द्वितीय विश्वयुद्ध के लिये, प्रमुखत : हिटलर को जिम्मेदार माना जाता है। द्वितीय विश्वयुद्ध तब हुआ, जब उनके आदेश पर नाजी सेना ने पोलैंड पर आक्रमण किया। फ्रांस और ब्रिटेन ने, पोलैंड को सुरक्षा देने का वादा किया था। अतः वादे के अनुसार, उन दोनों ने नाजी जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। 1934 में हिटलर ने अपने आपको सर्वोच्च न्यायाधीश घोषित कर दिया, और उसी वर्ष हिंडेनवर्ग (Paul Von Hindenburg) की मृत्यु के पश्चात्, वह राष्ट्रपति बन बैठा। 1933 में हिटलर ने राष्ट्रसंघ को छोड़ दिया। हिटलर ने 'माइन काम्फ (मेरा संघर्ष)' शीर्षक से अपनी आत्मकथा भी लिखी है। जब रूसियों ने बर्लिन ने पर आक्रमण किया तो हिटलर ने बर्लिन में 30 अप्रैल 1945 को आत्महत्या कर ली।

अध्याय– ग्यारह

मुझे ऐसा लगता है कि इस पुस्तक में, हम अधिभौतिकी (metaphysics) से व्यवहार कर रहे हैं, आत्मायें, प्रेत आत्मायें, इत्यादि, इसलिए शायद, आपको–अत्यधिक गंभीरता से नहीं–सराय के रखवाले की बिल्ली की इस कहानी को बताना दिलचस्प होगा।

सराय का ये रखवाला, काफी अच्छा और कानून को मानने का पक्षधर व्यक्ति था। उसके पास एक अच्छा बूढ़ा बिल्ला (tomcat) था, जो उसके पास वर्षों तक रहा था और ये भला बूढ़ा बिल्ला–मैं सोचता हूँ, कछुए की खोल का बिल्ला (tortoiseshell) या कुछ वैसा ही था–परंतु कैसे भी, वह रोकड़ (cash register) के पास, एक छड पर ही बैठा करता था। एक दिन बिल्ला मर गया और सराय का रखवाला, जो उसका बहुत शौकीन था, पूरी तरह से तबाह (dislocate) हो गया, और तब उसने स्वयं से कहा, *'मैं जानता हूँ, मैं क्या करूँगा! मैं बूढ़े बिल्ले की दुम काट लूंगा और उसे कॉच के डिब्बे में मढ़वा दूंगा और उसे उसकी स्मृति में, छड पर रखूंगा।'*

इसलिए, सराय के रखवाले का एक मित्र था, जो एक धर्म प्रचारक था, उसने बूढ़े टॉम की पूंछ काट ली और बूढ़े टॉम का शेष भाग दफना दिया गया।

सराय के रखवाले के बिल्ले, बूढ़े टॉम ने, बहुत अच्छा जीवन जिया था। उसने सभी लोगों की बातचीत, जो सराय में और छड़ के पास आते थे, सुनी थी, और उसने उन लोगों के साथ सहानुभूति व्यक्त की थी, जो कहते थे कि उनकी पत्नियॉ, उन्हें नहीं समझतीं, और उसी प्रकार की सभी चीजें। इसलिए बूढ़ा टॉम, इतना अच्छा बिल्ला होने के कारण, स्वर्ग को गया : वह मोतियों वाले दरवाजों पर पहुँचा और उसने दरवाजे पर थपकी दी, और वास्तव में, वे उसे प्रवेश देकर प्रसन्न हुए। परंतु तब–ओह दीनता, दीनता, ओह क्या सदमा! – दरवाजे के रक्षक ने कहा, *'ओह हे मेरे भगवान, टॉम, तुम्हारे पास अपनी पूंछ नहीं है। तुम्हारी पूंछ के बिना, हम तुम्हें यहॉ प्रवेश नही दे सकते, अब, क्या हम दे सकते हैं?'*

बूढ़े टॉम ने आसपास देखा और उसे ये जानकर बड़ा झटका लगा कि उसकी पूंछ गुमी हुई थी और उसका जबड़ा इतना अधिक लटक गया था कि, उसने स्वर्ग के चारागाह पर लगभग लीक डाल दी। परंतु द्वार के रक्षक ने कहा, *'बताओ क्या, टॉम क्या तुम वापस जाओगे और अपनी पूंछ लाओगे और तब हम उसे तुम्हारे लिए उसे चिपकायेंगे और तब तुम स्वर्ग में आ सकते हो। परंतु अभी के लिए, यहॉ से दफा हो जाओ, मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा।'*

इसलिए सराय के रखवाले के बिल्ले ने, अपनी बायीं भुजा के ऊपर घड़ी को देखा और उसने देखा कि ये लगभग मध्यरात्रि थी। उसने सोचा, *'ओह जी, अच्छा हो मुझे जल्दी करनी चाहिए और क्योंकि बॉस अर्द्धरात्रि को बंद कर देता है, डंडे को, और वह सब, डाल देता है, मुझे जल्दी करनी चाहिए।'*

इसलिए वह पृथ्वी की ओर वापस दौड़ा और पूरे सराय के रास्ते पर आने की जल्दी की। तब उसने दरवाजे पर जोर से थपकी दी और वास्तव में, सराय बंद हो चुकी थी। इसलिए बूढ़े बिल्ले ने, दोबारा, उस तरीके से, जिससे कि उसने कुछ निश्चत पसंदीदा ग्राहकों को थपकी देते देखा था। और कुछ क्षणों के बाद दरवाजा खुल गया, और वहॉ सराय का रखवाला आकर खड़ा हुआ। आदमी झटका खाता हुआ दिखा और उसने कहा, *'ओह टॉम, तुम यहॉ क्या कर रहे हो? हमने तुमको आज दफना दिया था, तुम इस तरह वापस नहीं आ सकते, तुम मर चुके हो, क्या तुम नहीं जानते?'*

बूढ़े बिल्ले ने, दुखी होकर सराय के रखवाले को देखा और कहा, *'बॉस, मैं जानता हूँ, ये लगभग अर्द्धरात्रि है और आपके हिसाब से काफी देर हो गई है, परंतु मैं स्वर्ग तक गया था और उन्होंने मुझे वहॉ रुकने नहीं दिया क्योंकि मेरे पास मेरी पूंछ नही थी, इसलिए यदि आप मुझे केवल मेरी पूंछ मुझे वापस दे दें, और आप इसे बांध सकें, यदि पसंद करें– मैं वापस स्वर्ग को चला जाऊँगा और वे*

मुझे अंदर ले लेंगे।

सराय के रखवाले ने अपना हाथ अपनी ठोड़ी पर रखा, एक रवैया, जो वह अक्सर अख्तियार करता था, जब वह गहरे विचार में होता था। जब उसने एक ऑख घड़ी पर डाली (परंतु वास्तव में, केवल लाक्षणिकरूप से, क्योंकि उसने अपनी ऑख वहॉ रखना पसंद नहीं किया होता, वह उसे खो सकता था, और साथ साथ घड़ी को भी तोड़ सकता था) और तब उसने कहा, *'ठीक है, टॉम, मैं हमेशा इतना दुखी हूँ, लड़के और तुम सब कुछ जानते हो कि मैं कितना कानून से बंधने वाला हूँ, और तुम जानते हो कि यह समय के बहुत बाद में है; और कानून मुझे समय के बाद, आत्माओं की सेवा नहीं करने देगा।'*

ठीक है, उसके बाद, हमें इस गंभीर लेखन कार्य को वापस शुरू कर देना चाहिए, जो इस पुस्तक का अंतिम अध्याय है। इसलिए–

पुराने भूमध्यसागर के सीमावर्ती इन छोटे देशों में से एक में से एक सज्जन–ये ग्रीस या रोम या कुछ वैसा ही था, इस पल मैं नहीं जानता कि वह कहॉ था–परंतु ये सज्जन, अपने नुक्कड़ मंच (soapbox) पर खड़े हुए। प्लिनियस सेकंडस (Plinius Secundus) उसका नाम था, और वह वास्तव में, एक अत्यंत चतुर व्यक्ति था, उसे होना ही था, आप जानते है, उसे अत्यंत चतुर होना ही था, क्योंकि, उसके नाम–सेकंडस–का अर्थ है, कि वह पहला नहीं, परंतु दूसरा था। आपने शायद, कार किराये पर देने वाले इन प्रतिष्ठानों को पढ़ा होगा, जो समाचार पत्रों में इतना भड़कीला विज्ञापन देते हैं, विशेषरूप से, वहॉ एक है, जो विज्ञापित करता है कि वे दूसरे हैं और इसलिए उन्हें अपेक्षाकृत कठोर श्रम करना पड़ता है। ठीक है, प्लिनियस सेकंडस ने भी वही किया। उसे, प्लिनियस प्राइमो (Plinius Primo) से अधिक चतुर बनने के लिए, कठिन परिश्रम करना पडा था।

वह अपने नुक्कड़ मंच (soapbox) पर खड़ा हुआ। वह नहीं जानता था कि ये किस ब्रांड का साबुन (soap) था, ऐसा इसलिए था, क्योंकि विज्ञापन देने वाले लोगों ने, उन दिनों में, हर चीज पर इतना अधिक लेवल चस्पा (branding) नहीं किया था, परंतु वह, वहॉ कुछ कुछ अनिश्चितता पूर्वक, डगमगाता खड़ा हुआ क्योंकि मंच ढीला था, और प्लिनियस सेकंडस ढीला नहीं था। एक क्षण के लिए उसने, वेपरवाह भीड़ पर, आसपास देखा, और तब उसने कहा, मित्रो, परंतु वहॉ कोई उत्तर नहीं मिला, किसी ने नहीं देखा। इसलिए उसने अपना मुँह दोबारा खोला, और इसबार वह पूरी तरह से गरजा, *'मित्रो, मुझे अपने कान उधार दे दो (friends, land me your ears)!'*

उसने सोचा कि लोगों को उनके कान उधार देने के लिये कहना, अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण था, क्योंकि वह उन्हें बहुत ही अच्छी तरह जानता था, वह जानता था कि वे अपने कानों को नहीं काटेंगे और चले जायेंगे, यदि इस प्रकार उनके कान रोक लिए गये, तब उनके स्वामी लोगों को रुकना पड़ेगा और वह, जो उसे क्या कहना था, उन्हें सुनाना चाहता था।

फिर भी कोई जबाव नहीं। वह, भगदड़ मचाती हुई भीड़ को देखते हुए, फिर एक क्षण के लिए रुका, पूरा नरक–यहॉ, यहॉ–वहॉ और हर जगह भी, आने के लिये, मुड़ चुका था। तब उसे एक नया तरीका अपनाना पड़ा; *'रोमन, ग्रीक, अमेरिकन मित्रो'* परंतु तब वह भ्रम में रुका, उसका मुँह अभी भी खुला हुआ, उसे अचानक ही शर्म से झेंपते हुए याद आया कि, अमेरिका, शताब्दियों से अभी तक खोजा नहीं गया था। तब, ये देखते हुए कि किसी ने उसकी गलती नहीं पकड़ी, वह अपने भाषण पर चलता चला गया।

अब, वास्तव में, मैं एक बहुत दयालु व्यक्ति हूँ, कुछ लोग सोचते हैं कि मैं चिड़चिड़ा बूढ़ा हूँ, कुछ लोग सोचते हैं, मैं कठोर चेहरे वाला बूढ़ा हूँ, इत्यादि। मैं इसे जानता हूँ, क्योंकि वे मुझे ऐसा लिखते हैं और कहते भी है। परंतु कैसे भी, यहॉ नीचे, प्रिमियस सेकंडस ने जो कहा, उसका अनुवाद है। वास्तव में, ये अनुवाद आपके लिए किया गया है, आप, और न हीं मैं, उसकी भाषा को नहीं

समझेंगे।

डॉक्टरों की भूलों (अनदेखी) के लिए कोई कानून नहीं है। डॉक्टर, अपने मरीजों के सिहरनयुक्त शरीरों पर, मरीजों की जिम्मेदारी पर सीखते हैं। वे माफी के साथ, हत्या कर देते हैं और विकलांग बना देते हैं और वे मरीज, जो मरा, को दोष देते हैं, परन्तु अपने इलाज को नहीं। हम, उन डॉक्टरों, जो इस आदेश (dictum) को नहीं मानते हैं कि उन्हें कोई बुराई नहीं करनी चाहिए, उन्हें मरीज को सांत्वना देनी चाहिए, जबकि इलाज प्रकृति करती है, के ऊपर नियंत्रण रखने के लिए कुछ करें।

क्या आप कभी ये सोचने के लिए रुकेंगे कि दवाइयाँ क्या घपला करती हैं? ये है, आप जानते हैं, ये वास्तव में, सदमा पहुँचाने वाला घपला है। आजकल, एक औसत डॉक्टर, एक औसत मरीज को देखने के लिए, नौ मिनट लेता है, उस समय में से, जबकि मरीज डॉक्टर के सामने आता है और मरीज डॉक्टर को छोड़ देता है, नौ मिनट। व्यक्तिगत संपर्क के लिए कोई अधिक समय नहीं, मरीज को जानने के लिए कोई अधिक समय नहीं ।

हाँ, आजकल ये बहुत भयंकर चीज है। ये सोचा गया था कि डॉक्टर पीड़ित के लिए इतना कुछ करेंगे, परंतु अब, अभिलेखित चिकित्सीय इतिहास (recorded medical history) के पांच हजार वर्ष बाद, कोई भी डॉक्टर सिर के जुकाम को ठीक नहीं कर सकता, यदि कोई डॉक्टर सिर की सर्दी (head cold) का इलाज करता है, तो जुकाम दो सप्ताह बाद समाप्त समझा जा सकता है, परंतु यदि कोई चतुर मरीज डॉक्टर के पास नही जाता और मामले को पूरी तरह प्रकृति के ऊपर छोड़ देता है, तो जुकाम चौदह दिनों में ठीक हो सकता है।

क्या आपने कभी सोचा है कि औसत डॉक्टर अपने मरीज को कैसे तौलता है? वह पूरे एक मिनट के लिए, ये खोजने का प्रयास करते हुए कि मरीज कितना जानता है, मरीज को सावधानीपूर्वक देखता है, क्योंकि वर्षों–वर्षों तक, और अभी भी अनेक वर्षों पहले तक, विद्वान एस्क्यूलेपियस (Aesculapius, the wise)[27] इस निष्कर्ष पर पहुँचा था कि कोई मरीज जितना ज्यादा जानता है, डॉक्टर में उसका विश्वास उतना ही कम होता है।

यदि इस विश्व में चीजें ठीक चली होतीं और यदि उद्यमी किशोरों, नारी मुक्ति आदि के द्वारा समर्थित, कलि के राज्य ने इतनी प्रगति नहीं की होती, तो चिकित्सा के क्षेत्र में बड़े विकास हो गये होते। उदाहरण के लिए प्रभामंडल की फोटोग्राफी (aura photography), जो किसी भी प्रशिक्षित व्यक्ति को, रोग का निदान, बीमारी के शरीर पर आक्रमण करने के पहले ही बता देती है, और तब समुचित कंपनों, या आवृतियों या चक्रों–जो चाहे कहें–को लगाने पर, मरीज बीमार होने से पहले ही, ठीक हो सकता था, ऐसा कहने के लिए।

परंतु शोधकार्य को ठीक तरह चलाने के लिए, मेरे पास पर्याप्त धन नहीं आया। ये एक उत्सुकतापूर्ण तथ्य है कि कोई भी घटिया (crummy) वकील, अपने एक घंटे के समय के लिए चालीस डॉलर बसूल सकता है, बसूल करता है और पा जाता है, और एक टायपिस्ट, एक पेज के एक छोटे पत्र को टाइप करने के तीन डॉलर मांगती है, वह भी उसे पा जाती है। और लोग, पेय, मनोरंजन आदि के लिए, ढेरों नगदी (oodles of cash) का भुगतान करते हैं, परंतु जब शोधकार्य में सहायता करने का नंबर आता है–नहीं, वे *'ऑफिस में दे चुके हैं,'* या वैसा ही कुछ। इसलिए प्रभामंडल को पढ़ने का विज्ञान, जैसी मैंने आशा की थी, जारी नहीं रह सका। मैं किसी भी व्यक्ति का प्रभामंडल, किसी भी समय, देख सकता हूँ, परंतु देखने वाले ये **आप** नहीं है, क्या ये ऐसा है? इसे देखने वाला, आपका डॉक्टर भी नहीं है, क्या है? और मैंने इस विचार पर काम किया है कि कोई भी, उपयुक्त उपकरण के द्वारा, मानव प्रभामंडल को देखने में समर्थ होगा।

---

27 अनुवादक की टिप्पिणी : एक नायक और चिकित्सा तथा निदान का रोमन देवता, एस्क्यूलेपियस (Aesculapius), अपोलो का पुत्र था, और हाइजिया (Hygeia) तथा पनासिया (Panacea) उसकी पुत्रियाँ थीं।

जब कोई प्रभामंडल को देख सकता है, आप मनोभाजित (schçophrenic) लोगों को देख सकते हैं, वे कैसे दो में विभाजित हो जाते हैं। ये फुलाये हुए, उन लंबे गुब्बारों में से एक को प्राप्त करने, और तब अचानक ही बीच में से विभाजित किये हुए के समान है, ताकि आपको दो गुब्बारे मिल जायें। या कोई–प्रभामंडल के माध्यम से, वास्तव में–शरीर में कैंसर (cancer) के आगमन को–देख सकता है, और तब, कंपन, रंग, या ध्वनि के तरीके से सही प्रतिविष (antidote) दिये जाने पर, इससे पहले कि ये शरीर पर आक्रमण कर पाता, कैंसर को रोका जा सकता था। बहुत कुछ है, जो मरीज की मदद करने के लिए किया जाना चाहिए था।

आजकल, बड़े कष्टों में से एक, दिखाई देता है कि हर कोई, धन की भूख से पीड़ित है। आपको स्कूल या कॉलेज में जवान लोग मिल जायेंगे, वे टिप्पणियों की तुलना करते हैं, ताकि वे निर्णय कर सकें कि कौन सा व्यवसाय–कानून, चर्च या चिकित्सा, उन्हें सबसे अधिक धन और सबसे अधिक आराम देगा और आजकल, चिकित्सा में ऐसी चीजें हैं कि दंत चिकित्सक सबसे अधिक धन कमाते दिखते हैं!

जीवनचक्र के इस भाग का, वास्तव में, जो तात्पर्य था कि डॉक्टर लोग, वास्तव में, समर्पित लोग होने चाहिए, लोग जिनके दिमाग में धन का विचार न हो, तथ्यरूप में, आशय ये था कि 'चिकित्सीय भिक्षु (madical monks)' आदमी और औरतें होनी चाहिए, जिनके पास अपने साथी आदमी और औरतों को मदद करने के अतिरिक्त कोई दूसरा विचार न हो। उनका संरक्षण राज्य द्वारा किया जाना चाहिए था, जो तर्कपूर्ण ढंग से उनकी आवश्यकता को पूरा करता। उनको आयकर की मांगों और वैसी ही चीजों से, सुरक्षित रखा जाना चाहिए था और तब वे बुलाये जाने पर हाजिर रहने चाहिए थे, और उनको घर पर मरीज देखने जाना चाहिए था।

क्या आपने कभी सोचा है कि डॉक्टर, जो किसी मरीज को कार्यालय में बुलाता है, शायद, उसे चार घंटे प्रतीक्षा में रखता है, और तब उसे कुल नौ मिनट के लिए देखता है–डॉक्टर, मरीज के इतिहास का अभिन्न ज्ञान कैसे पा सकता है? डॉक्टर मरीज के अनुवांशिक प्रादर्शों को कैसे जान सकता है? और ये, डॉक्टर–मरीज के बीच का सम्बंध नहीं है, ये खराब सामान को, मरम्मत के लिए, कारखाने ले जाये जाने के अधिक समान है। ये उसी तरह से अव्यक्तिगत (impersonal) मामला है, और यदि डॉक्टर सोचता है कि मरीज, नौ मिनट से अधिक के लिये परेशानी पैदा करने वाला है, ठीक है, वह मरीज को अस्पताल में भेड़ देता है, जो किसी चीज को कारखाने वापस भेज देने और कुछ समय के लिए उसे खाने में रख देने के अधिक समान है। इलाज का पूरा तंत्र ही गलत है, और आने वाले स्वर्णयुग में कुछ चीज, जिसका मैंने परामर्श दिया है, होनी है, वह यह है कि सभी डॉक्टर पुजारी या कम से कम किसी धार्मिक क्रम से जुड़े हुए होंगे। वे समर्पित व्यक्ति होंगे, और वे बुलाये जाने पर नियमित पारियों के साथ उपलब्ध होंगे, क्योंकि कोई भी, उनसे एक दिन में छब्बीस घंटे काम कराने की अपेक्षा नहीं करता, परंतु लोग उनसे एक दिन में छः घंटे से अधिक काम करने की आशा अवश्य रखते हैं, जैसा कि वे अब करते हैं।

अब, भयानक, भयानक चीजों में से एक ये है कि डॉक्टरों के पास अनेक परीक्षण कक्ष होते हैं। कोई डॉक्टर, अपने कार्यालय में, गलियारे के एक सिरे पर बैठेगा और गलियारे की लंबाई में विस्तारित, हर एक में एक मरीज अंदर होने के साथ, चार, पॉच या छः छोटे छोटे प्रकोष्ठ हो सकते हैं। डॉक्टर, एक मरीज के साथ, जल्दी जल्दबाजी में परामर्श देता है, और तब उसे एक प्रकोष्ठ में भेज देता है। जबकि मरीज कपड़े उतार रहा होता है, या डॉक्टर के लिए तैयार होता है, डॉक्टर उतने बीच में, सभी प्रकोष्ठों में हो आता है, और ये वास्तव में, मुर्गियों के दड़बों की तरह से, जहॉ मुर्गियॉ, एक के ऊपर एक परतों में, पंक्तियों के बाद पंक्तियों में दड़बों में रखी जाती हैं, और उनको खिलाया जाता है और मोटा किया जाता है–एक सिरे से खाना जाता है, और दूसरे सिरे से अंडा टपकता है, बड़े पैमाने

पर उत्पादन का मामला है। ठीक है, मरीजों के साथ ऐसा ही दिखाई देता है। डॉक्टर की विद्विता के शब्द, एक सिरे से, अर्थात् कानों से, अंदर जाते हैं, और या तो मेडीकेयर (medicare) से अथवा मरीज से, भुगतान लगातार धारा प्रवाह में प्रवाहित होता है। अब ये चिकित्सा तो नहीं है।

डॉक्टर, हमेशा अपनी शपथ पर नहीं चलता। अक्सर वह अपने क्लब हाउस में जाता है और बूढ़ी श्रीमती अमुक अमुक के मामले पर चर्चा करता है या अपने मित्रों के साथ हँसता है कि वह पुराना मित्र कैसे चाहता था, और जिसे वह कर नहीं सका, इसलिए उसके विवाह को क्या होने जा रहा है? आप जानते हैं, ऐसा कैसे है!

मुझे ऐसा लगता है कि डॉक्टर अपना व्यवसाय (अभ्यास) करने का लायसेंस पा लेते हैं और तब वे अपनी पाठ्य–पुस्तकों को, हमेशा हमेशा के लिए बंद कर देते हैं और उससे आगे की कोई भी शिक्षा, दवाई बनाने वाली कंपनियों के प्रतिनिधियों (pharmaceutical representatives), जो हर डॉक्टर के पास जाते हैं और अपनी बिक्री को बढ़ाने का प्रयास करते हैं, के माध्यम से आती है। प्रतिनिधि, वास्तव में, अपने प्रतिष्ठान की दवाओं के, अपने पक्ष के पहलुओं को, बढ़ा–चढ़ा कर कहते हैं, परंतु उनके दुष्प्रभावों (after effects), उनके लक्षणों पर, जो हो सकते हैं, कभी चर्चा नहीं करते।

जर्मनी के उस मामले को देखें, जब गर्भवती औरतों को भयानक दवाई दी गई थी, और परिणामित बच्चे अपंग, शायद बिना भुजाओं और टांगों के, और कुछ वैसे ही, पैदा हुए थे।

जन्म नियंत्रण गोलियों के साथ भी, कोई वैसा ही पाता है। औरतें अपने आप को ठगी हुईं (hocused) और पूरी बातों से सम्मोहित पाती हैं कि वे अमुक–अमुक जन्म नियंत्रक गोलियों के लेने से, पूरा मजा ले सकतीं हैं और वादक को कुछ नहीं देना पड़ता। ठीक है, वास्तविक व्यावहारिक जॉचें प्रदर्शित करती हैं कि, इसके गंभीर दुष्परिणाम, कैंसर, मिचली आना, और उसी प्रकार की तमाम चीजें, हो सकते हैं। इसलिए अब, दवा बनाने वाले प्रतिष्ठान, अपने लाक्षणिक (metaphorical) ड्रॉइंग बोर्डों पर वापस चले गये हैं और वे चतुर वीजाणु (sperm) पर अंकुश लगाने और उसे उत्सुक अंडाणु (ovum) के साथ हाथ मिलाने से रोकने के दूसरे तरीके खोजने का प्रयास कर रहे हैं।

जब समय आता है, वहाँ जन्म नियंत्रण के अचूक (infallible) तरीके होंगे–नहीं, मैं परहेज करने की नहीं कहता! वास्तविक तरीका होगा एक प्रकार का पराध्वनिक उत्सर्जक (ultrasonic emtter), जो आदमी या औरत की एकदम सही आवृति के साथ लयबद्ध (tune) किया जायेगा, और इसका प्रभाव, शुक्राणु (sperm) को खूंटी पर ही रोक देने का होगा, ताकि ये उतना वीर्यवान (virile) न हो सके, वास्तव में, शुक्राणु और अंडाणु (ovum) दोनों को ही, यदि कोई जानता है कैसे, पराध्वनियों (ultrasonics) द्वारा उदासीन किया जा सकता है, और ये भागीदारों को, न ही मर्द को, न ही औरत को, किसी प्रकार का कष्ट नहीं पहुँचायेगा परंतु यह वह कुछ चीज है, जो यदि कभी स्वर्णकाल हुआ तो, स्वर्णकाल में आयेगी।

दर्द एक भयानक चीज है, क्या ऐसा नही है? और वास्तव में, दर्द के नियंत्रण के लिए, डॉक्टर या दवा बनाने वाले लोग, किसी निश्चित वास्तविक हल के साथ नहीं आये हैं। थोड़ी सी एस्प्रिन (asprin) कुछ नहीं करती है। संभावित दुष्परिणामों के साथ, डेमेरोल (Demerol) केवल एक अत्यंत अस्थाई चीज है। और तब आप, मॉरफिन (morphine) या मॉरफिया (morphia) परास में आते हैं और आप इसका व्यसन (addiction) पा सकते हैं। परंतु मेरा विश्वास है, कि शोधकर्त्ताओं को सबसे पहले इस सिद्धान्त को विचार में लेना चाहिए कि, दर्द केवल तंत्रिका तंत्र (nerve system) वाले प्राणियों के द्वारा ही अनुभव किया जा सकता है, इसलिए उन्हें, दर्द के स्थल और ग्राहक तंत्रिकाओं (receptor nerves) के बीच अवरोध डालने के लिए कुछ चीज करनी पड़ेगी।

एक मरीज के रूप में, अस्पताल में मेरे खुद के अनुभव ने, मुझे चिकित्सीय विश्व की प्रंशसा करने के लिए तैयार नहीं किया क्योंकि, मैं वास्तविक भयानक दर्दों के साथ, तत्काल ही बीमार हो गया

और हम भ्रम की अवस्था में थे क्योंकि समीपवर्ती अस्पताल में, तकनीशियनों या परिचारकों की हड़ताल, या उस प्रकृति की कोई दूसरी चीज थी और वे मरीजों को नहीं ले रहे थे, इसलिए मामा सान रा–आव (Mama San Ra-ab) रोगीवाहन वाले लोगों के संपर्क में आई।

अब, जैसा मैं पहले कह चुका हूँ, कालगेरी एम्बुलेंस सेवा (Calgary Ambulance Service) निश्चितरूप से, एकदम अद्वितीय है। एम्बुलेंस के आदमी उच्च प्रशिक्षित और सौहाद्रपूर्ण है, केवल ये ही नहीं, वे मरीज का बड़ा ख्याल भी रखते हैं। मैं अपनी एम्बुलेंस के आदमियों की अत्यधिक प्रंशसा नहीं कर सकता। मुझे पक्का विश्वास है, कि क्लियो और टैडी रंपा, उनमें से प्रत्येक का चुंबन करने की अपेक्षा करते हैं और तब वे कह सकते थे कि उनका चुंबन सियामी बिल्लियों द्वारा किया गया, जो उनके लिए शुभ आशीष ला सकतीं हैं, क्या वे नहीं लायेंगी?

शीघ्र ही वहाँ भोंपूओं की चीखें आईं, जो, जैसे ही एम्बुलेंस ने दरवाजे के बाहर ब्रेक लगाये, एक जाम (choke) के साथ रुक गईं। अत्यंत तेज चाल के साथ, एम्बुलेंस के दो आदमी, बड़े काले थैलों को लिए हुए अन्दर आये। वे एम्बुलेंस के साधारण आदमी नहीं थे, वे चिकित्सा सहायक (paramedics) थे और चिकित्सा सहायक, इस पूरे समूह में सबसे अच्छे होते हैं। उन्होंने कुछ प्रश्न पूछे और तब उन्होंने अपने थैलों को खोलने की चिंता नहीं की, इसके बजाय वे अपनी शिविका (stretcher) को पहिए पर चलाकर ले गये और उसे मेरे बिस्तर के बगल से लगाकर रखा। पूरी सावधानी के साथ, मुझे स्ट्रेचर पर लाया गया, और तब हम स्वचालित सीढ़ियों (elevator) पर नीचे और तब बाहर सड़क पर गये, जहाँ लगभग उतनी ही तेजी के साथ, जितनी तेजी के साथ इसे कहा जा सकता है, मुझे एम्बुलेंस में डाला गया। मामा सान रंपा, ड्राइवर के साथ सामने बैठी और दूसरे चिकित्सा सहायक मेरे बगल से बैठे। मैं एक एकदम नई एम्बुलेंस को पाने के लिए सौभाग्यशाली था। ये पहली बार था कि इसका उपयोग किया गया, और ये अभी भी, नये रंगरोगन और नये कीटाणुनाशक से, थोड़ी सी महक रही थी।

हम कालगेरी की सड़कों के साथ कार चला कर गये और मैं आपको अस्पताल का नाम नहीं बताने वाला हूँ, क्योंकि, मेरे विचार में, ये अलबेर्टा (Alberta) का सबसे खराब अस्पताल है, इसलिए हम इसे सेंट कुत्तों की लाश (St. Dogs-body's) का कहें। किसी की भी भाँति, ये नाम उतना ही अच्छा या उतना ही खराब है। मैं एक बहुत उपयुक्त नाम को सोच सकता था, परंतु मुझे डर है कि मेरे सम्माननीय प्रकाशक शर्मसार हो जायेंगे (क्या कोई प्रकाशक शरमा सकता है?) और मुझसे परिवर्तन कराना चाहेंगे।

शीघ्र ही, एंबुलेंस चलकर एक स्थान, जो अंधेरा, उदास छोटी गुफा सा लगा, में पहुँची। मेरे दृष्टिकोण से, मेरी पीठ पर सपाट, ऐसा लगा कि मुझे भार उठाने वाली मशीन के द्वारा, बगल से एक तरफ खाड़ी वाले, किसी अधूरे कारखाने (unfinished factory) में, ले जाया जा रहा था। वहाँ एकदम ठंडा भी था। परंतु जैसे ही हमारी आँखें अंधेरे को देखने की अभ्यस्त हुईं, एम्बुलेंस के लोगों ने मुझे बाहर निकाला और पहिए वाली गाड़ी पर चलाकर गलियारे में ले गये, और हर आदमी, जिसको मैंने देखा, उदासी के दौरे में प्रतीत हुआ। मैंने सोचा, *'ओ मेरे भगवान! गलती से वे मुझे मृतक संस्कार वाले घर (funeral Home) में ले आये होंगे।'*

मामा सान रा'आब, घटिया (crummy) से, छोटे से कार्यालय में, जहाँ उसे मेरे सम्बंध में पूरी जानकारियाँ देनी थीं, कहीं गायब हो गई और तब मुझे आपात्कालीन (Emergency) खंड में धकेल दिया गया, जो परदों, जो हमेशा नहीं डाले जाते थे, को समर्थित करती हुई प्लेट लगी कुछ डंडियों के साथ, एक लंबा हॉल दिखाई दिया, और तब मुझे आपात्कालीन चिकित्सा विभाग में, एक प्रकार की अस्पताल की खाट (cot) जैसी चीज में, स्थानांतरित कर दिया गया।

चिकित्सा सहायकों में से एक ने मेरी परेशानियों को समझते हुए ने कहा, *'नर्स, उसे एक वानर छड़(monkey bar) की जरूरत है।'* वानर छड़, वैसी ही एक चीज है, जो बिस्तर के सिर के ऊपर, तीन

फुट तक विस्तारित होती है, और इसमें, प्लास्टिक चढ़ा हुआ, छोटी चेन पर निर्भर करता हुआ, त्रिकोणीय आकार का धातु का एक टुकड़ा होता है। ये मेरे जैसे, कमर से नीचे के लकवे के मरीजों (paraplegics) को, अपने आपको बैठे हुई स्थिति तक उठा सकने में मदद करने के लिए लगाया जाता है। मेरे पास, वर्षों तक, एक था, और जबतक मैं अस्पतालों में रहा, मेरे पास हमेशा ये (रहता) था, परंतु इसबार जब चिकित्सा सहायक ने कहा कि मुझे एक वानर छड़ की आवश्यकता है, तब नर्स ने निश्चित से भी अधिक निश्चित होते हुए कहा, *'ओह, उसे वानर छड़ की आवश्यकता है, क्या वो औरत है? ठीक है, उसे यहाँ कोई नहीं मिलेगा!'* और इसके साथ ही वह बोली और छोटे प्रकोष्ठ में से बाहर चली गई। दोनों चिकित्सा सहायकों ने, सहानुभूति के साथ मुझे देखा, और ये कहते हुए अपने सिर हिलाये, *'ये हमेशा ही, ऐसी ही है!'*

अब प्रतीक्षा करने का समय आया। मैं इस छोटे से प्रकोष्ठ में फंसा हुआ था, और मेरे बगल से हर तरफ दूसरे पलंग थे। मैं कभी ये गिनने में समर्थ नहीं हो सका कि वहाँ कितने पलंग थे, परंतु मैं काफी आवाजें सुन सकता था, हर आदमी अपनी समस्याओं पर चर्चा कर रहा था, और सार्वजनिकरूप से, उत्तरों को सुन रहा था। कपड़े के पर्दों में से कुछ, खींचे भी नहीं गये थे और किसी भी मामले में, वे ऊपर की तरफ, और नीचे की तरफ भी खुले हुए थे। वहाँ बिल्कुल भी, कोई निजता (privacy) नहीं थी।

वहाँ एक भययुक्त हास्य की घटना हुई—मुझे हास्य की घटना लगी। दायीं ओर के बगल वाले बिस्तर पर एक बूढ़ा आदमी था, उसे अभी अभी सड़क से उठाकर, लाया गया था और एक डॉक्टर उसके पास गया और उसने कहा, *'ओह बाबा, भगवान, तुम दोबारा से नहीं ? मैंने तुम्हें शराब पीने से मना किया था, तुम शीघ्र ही मरे पाये जाओगे यदि तुम शराब से दूर नहीं रहते।'*

वहाँ काफी फुसफुसाहट, बड़बड़ाहट और कुलबुलाहट हुई और तब बूढ़ा आदमी एक दहाड़ के साथ फूट पड़ा, *'मैं शराब नहीं छुड़वाना चाहता, तुम मेरा इलाज मत करो, तुम नालायक! मैं केवल कांपने का इलाज कराना चाहता हूँ!'* डॉक्टर ने, त्याग की भावना में, अपने कंधे उचकाये—मैं इसे एकदम साफ देख सकता था—और तब उसने कहा, *'ठीक है, मैं तुम्हें एक इंजेक्शन लगाऊँगा, जो तुम्हें थोड़े समय के लिए सीधा कर देगा और तुम घर जा सकते हो, परंतु दोबारा यहाँ कभी वापस नहीं आना।'*

कुछ मिनटों के बाद, जब मैं अपनी अस्पताल की खाट पर लेटा हुआ था, एक परेशान नर्स दौड़ती हुई गलियारे के नीचे आई। वह तेजी से मेरे खुले हुए प्रकोष्ठ में दौड़ी और मुझे बिना एक शब्द कहे हुए—और बिना ये देखे हुए कि मैं कौन था, या मुझे क्या आवश्यकता थी, उसने मुझे ढकने वाली चादर को फाड़ दिया, मेरे पजामे को पकड़ा और खींच दिया और मेरे पहले से न विचारे गये पुठ्ठे (rump) में, त्वचा के नीचे (hypodermic) इंजेक्शन ठूंस दिया। तब लगभग बिना तोड़े हुए लंबे डग भरते हुए, उसने त्वचा के नीचे की सुई को खींचा, अपने पैरों पर मुड़ी और चली गई। अब ये एकदम सत्य है; मैं तबसे ही हमेशा आश्चर्य करता रहा हूँ, क्या मुझे बगल वाले बूढ़े शराबी का इंजेक्शन ठोक दिया गया, मुझे किसी ने नहीं बताया है कि क्या किया जाना है, मुझे किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा, परंतु मैं केवल ये जानता हूँ कि मुझे किसी चीज की एक सुई (shot) सीधे मेरे पुठ्ठे में लगा दी गयी—ठीक है, महिलायें उपस्थित हो सकती हैं, परंतु आप जान जायेंगे कि मुझे कहाँ लगाया गया।

कुछ समय बाद एक कुली आया और मुझसे बिना एक शब्द कहे, खाट का एक सिरा पकड़ा और मुझे बाहर खींचना शुरू कर दिया। 'मैं कहाँ जा रहा हूँ? मैंने पूरी तरह सकारण पूछा, जैसा मैंने सोचा। परंतु उसने केवल मेरी ओर आँखें तरेर कर देखा और मुझे लंबे लंबे गलियारे में खींचता चला गया। *'तुम देख लोगे, जब हम वहाँ पहुँच जाएंगे'* उसने कहा। *'ध्यान रखो, मैं कोई साधारण कुली नहीं हूँ, मैं तुम्हारी मदद ही कर रहा हूँ। वास्तव में, मैं............हूँ।'* और उसने किसी दूसरे विभाग का उल्लेख किया।

मैंने हमेशा विश्वास किया और हमेशा बताया गया है कि डॉक्टर या नर्स या इलाज से संबंधित किसी भी व्यक्ति का कर्तव्य, मरीज को ये बताना है कि कोई चीज, मरीज के साथ क्यों की जा रही है, और क्या किया जा रहा है, अंततः मरीजों के नितंब में सुईयां ठोक देना और उसे आश्चर्य करते हुए छोड़ देना कि ये सब किस सम्बंध में था, एक गंभीर मामला है।

हम गलियारे में नीचे जा रहे थे और एक पादरी प्रकार का व्यक्ति साथ आ रहा था। उसने मुझे देखा और वह जमे हुए चेहरे वाले यंत्रमानव (robot) में बदल गया और अपने चेहरे को छिपा लिया। मैं उसकी बिरादरी का नहीं था, देखिए, इसलिए उसने एक दिशा में दौड़ने की जल्दी और मुझे दूसरी दिशा में खींचा गया। पलंग की स्ट्रेचर रुकी और एक चरमराती (squeaky) आवाज ने कहा, *'वो?'* कुली ने केवल सिर हिलाया और दूर चला गया और मुझे जो एक्सरे विभाग सिद्ध हुआ, के बाहर छोड़ दिया गया।

कुछ समय बाद कोई साथ आया और मेरे पलंग को–एक शंटिग करने वाले इंजन की तरह से एक धक्का दिया–और मैं एक्सरे के कमरे में लुढ़क गया। पलंग को, एक मेज के विरुद्ध धक्का दिया गया था और मुझे कहा गया था, *'वहाँ आगे बढ़ो।'* ठीक है, मैंने अपने ऊपर के आधे भाग को मेज पर व्यवस्थित किया, और तब एक छोटी लड़की, जो वहाँ थी–की तरफ मुड़ा, मैंने उसे देखा और आश्चर्य किया कि इतना छोटा प्राणी, ऐसे स्थान में, क्या कर रहा होगा। उसके मौजे सफेद थे और उसकी मिनी स्कर्ट, माइक्रो मिनी स्कर्ट थी, और उसके ––––––एक स्थान, जिस पर मुझे त्वचा के नीचे वाली सुई लगाई गई थी, के ठीक ऊपर तक जा रही थी। मैंने कहा, *'क्या तुम मेरी टांगों को, मेरे लिये, उठाने में, बुरा मानोगी, मैं अपने आप इसे नहीं कर सकता।'* वह मुड़ी और आश्चर्य में खुले हुए मुँह से मेरी ओर देखा, और उसने बड़े दंभपूर्ण ढंग से कहा, *'ओह नहीं!"* उसका स्वर भय और आदर की ओर मुड़ गया और उसने कहा, *'मैं एक टेक्नीशियन हूँ, मैं आपकी मदद करने के लिये नहीं हूँ!* इसलिए उसने मुझे परले सिरे का कष्ट दिया–पीड़ा के बराबर कष्ट–परंतु मैंने अपने टखनों (ancles) को पकड़ने की व्यवस्था की और अपने दाहिने हाथ से, उन्हें मेज पर खींचा।

एक शब्द के बिना, टेक्निशियन ने अपनी एक्सरे मशीन को जोर से बंद किया–बटनों को सेट करते हुए इत्यादि इत्यादि और तब वह एक सीसेयुक्त कांच (leaden-glass) के पर्दे के पीछे गई और उसने कहा, *'सांस खींचो–रोको! सांस निकालो।'* मैं वहाँ लगभग दस मिनट, जबतक कि फिल्म विकसित की गई, रुका और तब बिना किसी शब्द कहे, कोई आदमी साथ आया और अस्पताल के पलंग को, वापस एक मेज के विरुद्ध लगाया। *'अंदर आओ–'* उसने कहा। इसलिए एकबार फिर, अत्यधिक प्रयास के साथ, मैंने अपने आपको अस्पताल के पलंग पर खींचने की व्यवस्था की, उसके बाद इस औरत ने पलंग को एक्सरे विभाग के बाहर धक्का दे दिया और लुढ़काकर दीवार के विरुद्ध दौड़ने दिया।

वहाँ दूसरी प्रतीक्षा थी और तब अंततः कोई साथ आया, पलंग के ऊपर कार्ड को देखा, और बिना एक भी शब्द कहे हुए, आपात्कालीन विभाग में धकेल दिया, जहाँ मुझे, ठीक वैसे ही जैसे कि गाय को उसके खूंटे पर ठेला जाता है, एक प्रकोष्ठ में फिसला दिया गया।

अंत में तीन या चार घंटे बाद, मुझे एक डॉक्टर द्वारा देखा गया, परंतु ये तय किया गया कि वे मेरे लिए कुछ नहीं कर सकते थे, अस्पताल में, औरतों के विभाग में एक के सिवाय, कोई पलंग खाली नहीं था– मेरे सुझाव कि मैं उसे ले लूंगा, का अच्छा स्वागत नहीं किया गया।

इसलिए मुझे फिर से घर वापस जाने के लिए कहा गया, क्योंकि वहाँ ऐसा कुछ नहीं था, जो वे मेरे लिए कर सकते और *'मैं घर पर ही ठीक था' 'वहाँ आपकी देखभाल अच्छी तरह होगी'* दूसरे ने कहा, और, मेरा विश्वास करें, उन्हें, मुझे समझाने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

मामा सान रा'व, एक ठंडे, ठंडे प्रतीक्षाकक्ष में, एक कठोर सीट पर, मेरा ख्याल है, पूरे

समय, एक मरुस्थलीय प्रायद्वीप (desert island) के तट पर बहिष्कृत (castaway) अनुभव करती हुई बैठी रही, परंतु अंत में, वह आपात्कालीन विभाग में आने में सक्षम हुई और तब मुझे घर ले जाने के लिए के लिए एम्बुलेंस भेजी गई। यहाँ से सेंट डॉग बॉडी'स डेढ़ मील दूर है, और सेंट डॉग बॉडी'स से मेरा घर वापस डेढ़ मील, यदि मैं ठीक से गुणा कर सकता हूँ, कुल मिलाकर तीन मील। परंतु उस छोटे से निरर्थक ट्रिप की लागत, सत्तर डॉलर आई, एम्बुलेंस के आदमियों की कोई गलती नहीं, परंतु यह वह है, जो किसी आपात्कालीन बुलावे के लिए, नगरपालिका वसूल करती है।

इसलिए अब मैं किसी दूसरे प्रांत को प्राथमिकता देते हुए, कालगेरी के बाहर, किसी दूसरे स्थान को देख रहा हूँ, क्योंकि मैं, कालगेरी में, चिकित्सीय इलाज की क्रूरता से तबाह किया गया हूँ। मैं कालगेरी में, चिकित्सीय विश्व की चीजों की लागत से सदमा खाया हुआ हूँ, ये मुझे एक दूसरे बिंदु की ओर ले जाता है, मेरा विश्वास है कि चिकित्सा का अभ्यास, केवल समर्पित लोगों के द्वारा ही किया जाना चाहिए। मेरा विश्वास है कि छल आवरण चाहने वाले लोगों और कामचोरों को, मरीजों के बीच से उखाड़ दिया जाना चाहिए, क्योंकि अत्यधिक संख्या में, मरीज, आपात्कालीन अस्पताल में जाना पसंद करते हैं और प्रतीक्षा कक्ष में बैठते हैं, मानो कि ये देहाती क्लब हो, सिवाय इसके कि कोई भी देहाती क्लब, कभी भी, इतना असुखद नहीं था। मेरा ये भी विश्वास है कि डॉक्टरों और नर्सों, और हाँ, कुलियों भी–को मरीजों का अधिक ख्याल रखना चाहिए, और यदि वे स्वर्णिम नियम, *'दूसरों के साथ वैसा व्यवहार करो, जैसा अपने प्रति चाहते हो,'* को देखते हैं और उसका पालन करते हैं, कुल मिलाकर, तब ये उतना बुरा विश्व नहीं होगा, क्या होगा?

मैं आकस्मिक विभाग भी चाहूँगा, जहाँ निजता थी, क्योंकि मैंने अपने दायीं ओर वाले बूढ़े की कहानी सुनी और मैंने अपने बगल में बायीं ओर वाली जवान महिला की कहानी भी सुनी; उसे, जिन्हें मैं नाजुकतापूर्वक, केवल अपने पति के साथ, यौन समस्यायें कह सकता हूँ, की मरीज थी, और हम कहें, वह थोड़ी उखड़ी हुई थी, इसलिए उसकी जाँच करने वाले डॉक्टर ने उसकी निजता की बिलकुल चिंता नहीं की–और उसे तेज आवाज में सलाह दी, और उससे एक ऊंची आवाज में, नितांत निजी प्रश्न पूछे, और मुझे पक्का विश्वास है कि बेचारी औरत, उतनी ही स्तब्ध हुई होगी, जितना कि मैं।

परंतु मामा सान रा'व, बटरकप राउस, क्लियो और टैडी के साथ, फिर से घर पर, मुझे व्यस्त होने और दूसरी पुस्तक, सत्रहवीं, जिसका शीर्षक है "मेरा विश्वास है", लिखने का, 'एक बुलावा' मिला। ठीक है, आप जानते हैं, मेरा विश्वास है कि ये पुस्तक को समाप्त करने का अच्छा बिंदु है, क्या ये नहीं है?

समाप्त